No – ६१५५
पत्र – ४६७



ॐश्रीगणेशायनमः श्रीरघुनाथजीसहाई अथउत्तरा
र्द्धप्रारंभः गीतध्यायः प्रथमभैरवरागवर्णनम् खट्रा-
जांशग्रहंन्यासं खट्राजादिकमूर्छना संपूर्णोभैरवंग्रा
नः गीयंतेशारदामतम् इतिशारदामतेन शिवमत
हनूमान्मत भरतमत वीररस रागिनीदेवशाख·
वीररसेव्यंजित रोम हर्षी निरुध्य संवंध विलास बाहू
मांशु प्रचंड किल दंड रागो देशाख राग कथितो मु
निंद्रैः गांधारांश ग्रहे न्यास केचित ऋषभ इतिस्मृता
संपूर्ण मता ज्ञेया सारंग देवेन भाषित कानडा सह्या
संयुक्ता सारंग स्वर मिश्रिता देशाख जायते यत्र द्विती
य महराई दिने·

१

प्रातःकाल विष्णोदेवता आध्याशक्तिः अग्नितत ह्रीं
बीज शिवऋषि मंत्रः धूप दीप नैवेद
अलापवश्यं सरगमवश्यं औडव भैरव प्रकारः
सरगम छोटा इतिआभोगः मार्गेभैरवरागवर्णनं

संगीतशास्त्र॥ गीत वाद्य और नृत्य यही तिनोको एक कट्ठा करणेसे संगीत कहा जाताहै और जिस शास्त्रमे इसका खुलासा बयान लिखाहै पण्डित लोग उसको संगीत शास्त्र कहतेहै॥नाद॥ संगीत शास्त्रके दो भाग है एक क्रिया भाग और शास्त्र भाग गीतका मूल नाद (आवाज) और काल नाद दो तरहेका एक वर्णात्मक दुसरा ध्वन्यात्मक बात कहना मंत्र पढना और स्तुत करना वगैरहको वर्णात्मक नाद कहतेहै और सेरफ आवाजको ध्वन्यात्मक नाद कहतेहै॥श्रुति॥शोरत॥शकूल॥ नादसे शोरत पयदा होताहै श्रुति स्वरका सूक्ष्मांश पदार्थ शोरत बाइशहै उसके नाम यहीहै॥—॥ तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दो वती दयावती रंजनी रतिका रौद्री क्रोधी वज्रिका प्रसारिणी प्रीति मार्जनी क्षिति रक्ता सन्दीपनी आलापनी मन्दती रोहिणी रम्या उग्रा और क्षोभिणी॥षड्जादिसप्तस्वर॥शोरतसे स्वर पयदा होताहै स्वर सातहैं जिस तरह षड्ज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत और निषाद॥गीतंवाद्यंनृत्यंच त्रिभिःसंगीत मुच्यते॥ परन्तु यही सात स्वरका मुक्तसार सात हरफमे बयान किया जाताहै सा रे ग म प ध नि॥और॥ संगीत शास्त्रमे

गी॰ व॰
१

एक एक स्वरको एक एक धातु कहतेहैं वही सात स्वर विकृत होनेसे
उसको बारा होतिहै सा ऋ ऋ ग ग म म म प ध ध
नि नि ॥ स्वर दो तरहसे विकृत होताहै एक तीव्र और दोसरा कोमल
स्वर अपने स्थानसे कुछ उचा होनेसे उसको तीव्र नीचेसे आनेसे कोम
ल कहा जाताहै तीव्रका निशान यहीहै॥(^) पताकाहै और कोमल
का निशान यही त्रिकोण यही सब निशान स्वरके उपर रकखाहै
(△) से ऋ ॥ समक षड्जसे निषाद तक सात स्वरका पर पर
गति होनेसे समक कहा जाताहै यही समक लिखनेके एक सिधि
लकीर खिंचि जातिहै उसी लकीरके नीचे उसी तरहसे स्वर लिखा जा
ताहै: सा ऋ ग म प ध नि — ॥ समक तिनप्रकारकाहै
इयाने उदारा मुदारा और तारा आदमीके गलेसे तिन समकसे ज्यादा
स्वरसेहि बड़ा सक्ता नीचा उदारा जिसका निम्न समक कहतेहैं उस
को लिखनेका निशान स्वरके नीचे नीचे एक एक बिंदु रहेगा ।॰
सा ऋ ग म प ध नि बीचका मुदारा जो मध्य समक होता
है वही समक निश्चय लकीरके नीचे लिखा जाताहै सा ऋ ग
म प ध नि — उपरका तारा जिसको उच्च समक कहतेहैं उसी

सप्तकके उपर बिंदु रक्खा गयाहै सं रें गं मं पं धं निं
सब आदमी ओंके कण्ठसे पुरे तिन सप्तक निकलाना मुस्किलहैं
इसी सबबूसे आगेर सप्तक तक व्यवहार किया जाताहै अउतार सप्तक
इसी तरहसे लिखे जाताहै जैसाः सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़ ।
सा रे ग म प ध नि सां रें गं मं पर्यंत सप्तक
बहुतहै अंगरजी पियानो और देशी कात्यायन वीणामे बहुत सप्तक
निकलतेहै ॥ ग्राम ॥ जिस स्वरको अवलम्बन करके सप्तक स्वरु होता
है उसीको ग्राम कहतेहैं । ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्छनादेः समाश्र
यः तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः द्वितीयो मध्यमग्रा
मस्तयोर्लक्षणमुच्यते षड्जग्रामः पंचमेच चतुर्थश्रुतिसंस्थिते स्वी
पान्तश्रुतिसंस्थेऽस्मिन् मध्यमग्रामइष्यते ॥ षड्जग्राम ॥ सा रे ग
म प ध नि सा ॥ मध्यमग्राम ॥ म प ध नि सां रें गं
मं ॥ गंधारग्राम ॥ ग म प ध नि सां रें गं लेकिन चलन् व्य
वहारमे तिन सप्तकके जो तिन षड्जहै उनीको तिन ग्राम कहतेहै
पण्डित लोकोने किसी किसी ग्रन्थमे पंचमकेभी ग्राम कहेहै ॥
मात्रा ॥ वरण उच्चारणकी कालके मात्रा कहतेहै मात्रा पांचप्रकार

गी॰ व॰
२

जैसा ह्रस्व दीर्घ प्लुत अर्द्ध और अणु एक वर्णमे एक मात्रा दोमे दो तिन
मे तिन व्यंजन वर्णमे अर्द्ध इसमे आधी मात्रा और एक वर्णके चौथे हि
स्सेमें अणु मात्रा होताहै इसी पांच प्रकार मात्रेंके निशान पांच तरह
केहै जैसा एकमात्राका॥ (।) एकदण्ड दोमात्राका (।।) दोदण्ड तिन
मात्राका (।।।) तिनदण्ड अर्द्धमात्राका (ॅ) अर्द्धचंद्र अणुमात्राका (×)
इसमरु चिन्ह इसे औरभी सूक्ष्म मात्रा होताहै इनही सब मात्राके निशा
न स्वरोंके उपर रखा गयेहै सा ऋ ग म प
तिमयोः श्रुतिमेकैकां गांधारंचेत्समाश्रयेत् यदाधस्त्रिश्रुतिः षाड्जी
मध्यमश्चापित्रिश्रुतिः पञ्चमैकश्रुतिं निद्धि श्रुती सैक श्रुतिं श्रितः
गांधारग्राममाचष्टे तदानं नारदो मुनिः ॥ जब कभी एक मात्रा
मे दो या तिन वा अधिक स्वर आयके जेनका समान काल हो तो स
व स्वरोको पर जुदा जुदा मात्राका चिन्ह ना लगा के पहलि स्वरपर
मात्राका चिन्ह देकर दोसरा सब स्वरको (⌐ ¬) इस बन्धनी चिन्ह
मे घेर देतेहैं | सा | ऋ | सा | ऋ | ग | मा | ऋ | ग | म | ॥
आद कोइ कोइ जगहमे इस माफिक होताहै के मात्रा चिन्ह कोइ स्वर
पर नही रहताहै फकत जगहमे रहतेहैं॥ | सा | सा | ऋ | सा | रे | ग |

यही सब स्वरोंका मात्राका हिस्सा इस माफिक होगा सा॑ँ सा॑
ऋ॑ट सा॑ ऋ॑ट ग॑ आद अनुलोम सात स्वरोंकी जब उंच गति हो
तिहै तब उसको अनु लोम अथवा आरोही कहतेहै सा ऋट ग म
प ध नि सा ॥ विलोम ॥ यही सात सा जब नीचे उतरतेहै तब उन्
को विलोम अथवा अवरोही कहतेहै सा नि ध प म ग रे सा
इसकी तसरी साधन कहिके पहिला पत्रमे लिखि गेइहै ॥
और अनुलोम और विलोम इन दोनोकी तसरीभी साधन कहिका दोसरा
जगहमे लिखि गेइहै ॥ ॥ गमक ॥ स्वर कम्पनका नाम गमक । गमक
का निशान यही ॥ (൬) गज कुम्भ यही निशान स्वरोंका उपर रक्
खा जाताहै सा॑ एक गमक होनेसे एक सा॑ दोगमक होनेसे दो ज्यो
सा— सा ॥ मूर्छना ॥ अथवा मिड़ एक स्वर वा वरमे दुसरे स्वर त
क जाके अपना भावान्तर होनेका नाम मूर्छना मूर्छनाका नि
शान (〰〰) यही तरंगित रेखा स्वरोंका नीचे दि जायेगी ज्यासा—
ऋट ग ऋट ग म ऋट ग म प ॥ अर्थात जिसस्वरमे मूर्छना
खतम होगी तरंगित रेखाभी उस स्वरतक रहेगी ज्यासा—
ऋट ग म ॥ अर्थात ऋट से मूर्छना स्वर होके मध्यमतक यही

गी॰ व॰
३

3

तरंगित रेखा जायेगी ज्यासा— ग म प ध। गान्धारसे स्वर होकर धैव
ततक जायेगी जिस स्वरसे मूरछना स्वरु होगी उसे स्वरके नीचे गानेका
कोई अदाव और उसके स्वरके नीचे एक एक शून्यकार रहेगा ज्यासा—
ऋ ग म सेरेफ स्वर साधनके समय जिस स्वरसे मूरछना स्वर होगी
उसी स्वरको आलम्ब करके और सब स्वर उसी स्वरके तानसे
वाहार करना चाहिए संस्कृत शास्त्रमे तिन सप्तकका एकिस (२१) स्वरों
को एकिस मूरछना कहतेहैं एकिशु मूरछनाके नाम यहीहै १
ललिता २ मध्यमा ३ चित्रा रोहिणी ५ मतंगजा ६ सौविरी ७ षण्ड
मध्या ८ पंचमा ९ मत्सरी १० मृदुमध्या शुद्धा १२ अन्ता १३ पलावती
तीव्रा रौद्री ब्राह्मी १७ वैस्नवी १८ खेदरी १९ सुरा २० नादावती २१
विसाला विक्षेप   एक स्वरसे दुसरे स्वरतक आरोही गतिमे जल
द मूरछना होनेसे उसको विक्षेप कहतेहैं परन्तु यन्त्रोंका हिसा
व ज्यादाहै विक्षेपका निशान यहीहै (>) यही निशान स्वरके उपर
रहेगा ज्यासा— सा ग म ध ऋ नि वगैरह परन्तु स्वरके
नीचे मूरछनाका निशान रहैहै नहि रहेगा   प्रक्षेप एक स्वरसे दु
सरे स्वरतक अवरोही गतिमे जलद मूरछना होनेसे उसको प्रक्षेप

कहतेहैं इसका निशान इयहै (<) यही निशान स्वरोंके उपर रक
खतेहैं न्यासा॰ | पँ ग | नि | पँ | ॥ इसी प्रक्षेप और विक्षेपका साधन स
हजहै उसीसे मूर्छना साधनका पिछाड़ि यही ग्रंथमे यही सब सा
धन दि जायेगी ॥ ताल ॥ सब मात्रा बराबर लयमे छन्दके हिसाबसे जब
आवेगी तब इसको ताल कहेंगी तालमे दो प्रधान स्थानहैं आघात
और विराम आघातका निशान (१) और विरामका निशान (०)
इयहै ताल जहांसे शुरु होताहै उसीका नाम सम समका निशान
इयहै (+) परन्तु चलनमे सब स्थानसे ताल शुरु हो सकता ॥
ठुमरी ॥ मात्राका ताल ध धेधा किटि तेधा किटि काओयाली या
जलद तेताला अथवा द्रुत त्रिताली ४ चारमात्राका ताल ॥ धा
धिन्धा धाधिन्धा तितिन्ता ताधिन्धा मध्यमान अठ मात्राका ताल
धिड्डा धिधि धिड्डा धिधि धिता तिति तिड्डा धिधि ॥ एकताला ॥ ८
मात्राका ताल ॥ धिनि धाग धुना तेटे धाग धुना ॥ पटताल ॥ ४
मात्राकाताल धा धि ना ॥ सुलफाकता ॥ ५ मात्राका ताल ॥
धाधिन नागदित धिनिनाक गदी धिनिनाक ॥ चौताल ॥ ८ मात्रा
का ताल ॥ धागे दिनता कतागि दिनता तेटिकता गदिधिनि ।

गी॰ बं॰
४

4

तेओरा ३।।० (साढेतिन) मात्राका ताल धागे तेटे तेटे धागेतेटे गदिगि
नि ।। झपताल ।। ७ सात मात्राकाताल ।। धा दिन् धा धिन्ना खिटि ताक्
धा धिन्ना ।। झपताल ।। मतान्तरे ।। ९ ।। मात्राकाताल ।। धागे धागे दिन् ताके
धागे दिन् स्लथ त्रिताली ।। या धिमा तेताला ।। ८ ।। दीर्घ ।। या ।। पोले ह्रस्व ।।
मात्राका ताल ।। धा धि न्ना त्रे के धा धि न्ना घुन् घुन् ना तेटि खे ता
गेदा धिनि ।। आडा ४ मात्राका ताल उसको ठेकाका बीचमे चार दीर्घ औ
र चार अण मात्राहै धाधि ता धि ता ति ति ता धि धि धा तेओट ७ धि
मात्राका ताल इसको ठेकामे दो साढे और दो दीर्घ मात्रा देताहै ।।
धि द्रा धा धिधि धाधा ति ताता धि धि धाधा ।। राग ।। जो ध्वनि विशेष
स्वर विभूषित होकर बराबर लयमे गमक मूरछनादि जोगसे वादी विवा
दी सम्वादी और अनुवादीके हिसाबसे कण्ठ अथवा यंत्रमे पयदा होता
उसको राग कहतेहै राग और रागिणी इन् दोनोको आकसर राग क
हतेहै रागका नाम तिन है उसीका वर्णन किया जाताहै जैसा
औडव खाडव और सम्पूर्ण जो राग पांच सुरसे पयदा होताहै उसका
नाम औडव जैसा सारंग सा रे म प नि हिंडोल
सा ग म ध नि किसि मतसे हिंडोलको छय रागका ।

विरूमे गातेहैं जो राग छय स्वरसे पयदा होताहै उसका नाम खाडव
उदाहरण जैसा सा रे ग प ध नि विभास सा ऋ ग प ध
नि भूपाली सा रे ग प ध नि विभास और भूपाली इन दोनो
मे मध्यम वर्जितहै परन्तु यही दोनो रागका उत्थापन वादी सम्वादी
और अनुवादी भेदसे इन दोनो रागका मूरत भेद हो जाताहै और इसी
तरहसे बहुत रागोंका स्वरूप भेद हो सक्ता मेघ सा ऋ ग म
प नि मेघ रागमे धैवत वर्जितहै जो राग सात स्वरमे पयदा हो
ताहै उसका नाम सम्पूर्ण जैसा खम्बाज सा ऋ ग म प ध नि
भैरवी सा ऋ ग म प ध नि नटनारायण सा ऋ ग म
प ध नि ॥ संस्कृत शास्त्रमे श्री भैरव पंचम वसन्त मेघ और
नटनारायण इन्ही छय रागोंकी प्रधान कहतेहैं इन्ही छय रागो
की प्रतिरागकी छय छय भार्य्याहै जिनको ३६ रागिनी कल्पनाकी
गयेहै जैसा श्रीरागकी भार्य्या मालश्री त्रिवणी गौरी केदारी मधु
माधवी और पहाडी भैरवरागकी॥भार्य्या॥भैरवी बंगाली सैन्धवी
रामकिरी गुजरी और गुणकिरी॥पंचमकी भार्य्या॥विभास भूपाली क
र्णाटी पटहंसिका मालवी और पटमंजरी॥ वसन्तरागकी भार्य्या॥

देशी। देवगिरी। वैराटी। टोरिका ललिता और हिंडोली ॥ मेघरागकी भार्या॥ मलारी। सोरठी सावेरी कौशिकी गान्धारी और हर शृंगार। नट्‌नारायणकी भार्या॥ कामोदी कल्याणी आभीरी नाटिका सारंगि और हाम्बिरी इन्ही सब रागिणीओंके प्रचलित नाम नीचे लिखे जाते हैं॰ मालश्री त्रिवन् केदारा मधुमात गौरी पाहाड़ी बंगाली सिंधु रामकेली गुणकेली गुर्जरी भैरवी विभास भूपाली करणाटी वड़हंस मालव पा मारोया पटमंजरी देश्रागिरि देशी वराड़ी टोड़ी ललित हिंडोल मल्लार् सोरठ सावेरी कौशिक गान्धार् हर शृंगार कामोद कल्याण आभीरी नाटिका सारंग और हाम्बिर इन्ही छय राग और छत्रिस रागिणीके सिवाय पंडित लोगने बहुत तरहके राग रागिणीकी सृष्टि कियाहैं ।॰ पण्डितोंने राग रागिणीओंके गानेके वास्ते ऐसा हिसाब रक्खाहै ज्यासा भैरव राग प्रातःकालमे सारंग राग मध्याह्न कालमे सुलतान राग अपराह्न कालमे॥ श्रीराग सायंकालमे केदारी रागिणी प्रहर भर रातमे ऐसेही गानेका समय निर्णय कियाहै परन्तु इस ग्रंथमे लुम भूपाली खाम्बाज भीमपलाश्री इमन् वेलावली विभास सिन्धु परज योगिया मेच देश्रा॰ झिंझिट वेहाग इमन् कल्याण प्रदीपिका॥॰

हिण्डोल॥ ललित देश सुरट मोहिनी शंकरा गुजरी टोडी देस्त्रोसार हंसावनी
सारंग वडहंस सारंग भैरवी भैरव श्रौर हामिर यही रूपक रागोका गाना
लिखा गयेहै इनमेंसे इमन् वेलाग्रोल विभास ललित मोहिनी पर
ज योगिया सिंधु भीमपलाश्री वगैरह दिनमे गातेहै भूपाली इमन क
ल्याण वेहाग शंकरा प्रदीपिका श्रौर हिण्डोल वगैरह राग रातमे गातेहैं
श्रौर मेघ देश सुरठ वगैरह वर्षाकालमे गानेका दस्तुरहै लुम खाम्वाज
देस्त्रो फिंफिट वगैरह गानेका समय नहि यही सब रूपकका रागहै ।
वादीविवादीलक्षणम्॥ जिस रागमे जो स्वर सब स्वरसे ज्यादा लागताहै उसी
स्वरको उसी रागका वादी स्वर कहतेहै कोइ कोइ ग्रंथकार उसी वादी
स्वरको राजा या अंश कहतेहै उसी वादी स्वरमे रागोंका सुरत् (चेहरा
मालुम होतिहै जो स्वर वादी स्वरसे कम श्रौर श्रौर स्वरसे ज्यादा रागमे
लागतेहै उसी स्वरको मंत्री (उजीर) इयाने सम्वादी कहतेहै जो स्वर
वादी श्रौर सम्बादी स्वरसे जिस रागमे कम लागताहै उसी स्वरका नाम अनु
वादीहै इयाने भृत्य (नफर) जिस रागमे जो स्वर वेलकुल लागता नहि
जिस स्वर लागनेसे रागका चेहारा (सुरत्) भ्रष्ट होताहै उसको विवादी
या शत्रु (दुशमन) कहतेहै जिस स्वरसे कोइ गान या कोइ राग सुरू
होताहै उसका नाम ग्रह स्वर कहतेहै जिस स्वरमे कोइ रागका खतम

होना उसी स्वरका नाम न्यास स्वर वरणि श्रोर धातु मात्राके जोगसे जव कराटसे उच्चारण होताहै तव उसको गीत कहा जाताहै जैसा श्लोकमे चार चरण र हतेहै ऐसाही गीतमेभी चार चरण श्याने तुक होतेहै प्रथम चरणका नाम श्रास्थायी श्रास्थायी [illegible]मे जिस रागका गाना गाने होगा उसी रागका चेहरा खोड़ा हो जाता दुसरे चरणका नाम श्रन्तरा तिसरे चरणका नाम संचारी चौथे चरणका नाम श्राभोग कहा जाताहै वहुत गानेमे सेरफ श्रास्थायी श्रोर श्रन्तरा रहे उसमे संचारी श्रोर श्राभोग वेलकुल रहते नहि गीतवहुत तरहके ज्यासा श्रालाप ध्रुपद प्रवंध वगैरह ॥ श्रालाप ॥ कराटसे खोलि राग गानेका नाम श्रालाप उसी पुस्तकमे सारगम तेलाना खेयाल ध्रुपद विस्नुपद टप्पा वगैरह कएक किसिमका गाना लिखा गेया ॥ सरगम ॥ सात स्वरोंके नाम वाजानेके वोल श्रोर तेने नेने नेते तेरे वगैरह श्रालापके वोलसे जो गान तैयार होताहै उसका नाम सरगम नेते तेरे श्रालापकी वोल श्रोर किसी तरहका वरणन श्रोर वजानेके वोल यही कएक चीजोमे तेलेना तैयार होताहै कोइ कोइ गानेवाला सारगमका वोल लागा देतेहै ॥ खेयाल ॥ हर पकरसे भाव श्रोर कोमल वरणनसे खेयाल तैयार होताहै खेयालका संस्कृत नाम लहचारिका ॥ ध्रुपद ॥ कोइ देवताका स्तवरणन राजा लोगोंका यशावरणन श्रोर युद्धादि वरणनसे

भारी ताल भारी रागोंमें गम्भीर रचनामें ध्रुपद तैयार होताहै ध्रुपद बड़े
प्राचीन समयकाहै ॥ विष्णुपद ॥ जिस गानेमें सेरफ रामजीका और कृष्णजी श्री
का स्तुत वर्णन होताहै उसका नाम विष्णुपद इसमें रचना करुणा रसमिला
होना चाहिए विष्णुपदका चरण या तुकका कुछ ठिकाना नहि इसमें
इच्छा धीन बहुत तुक रहतेहैं ॥ सूरदास बाबाजी नाम करके एक
साधुने ऐसा नया तरहका गानाको स्रष्टि कियाथा और टप्पा हाल्के
के राग और तालमें टप्पा तैयार होताहै और इसका भाव और रचनाभी
भी हाल्का होना चाहिए ॥ ऐसाबीणाबजानेचाहिए॥

गी॰ ब॰
१

अनुलोम॥ सा ऋट ग म प ध नि सा॥ विलोम॥ सा नि ध प म ग
ऋट सा॥ अनुलोम॥ सा ऋट ग म प ध नि सा॥ विलोम॥ सा नि ध
प म ग ऋट सा॥ अनुलोम॥ सा ऋट ग म प ध नि सा॥ विलोम॥ सा
नि ध प म ग ऋट सा॥ अनुलोम॥ सा ऋट ग म प ध नि सा
विलोम॥ सा नि ध प म ग ऋट सा॥ अनुलोम॥ सा ऋट ग म प ध
नि सा॥ विलोम॥ सा नि ध प म ग ऋट सा॥ अनुलोम॥ सा ऋट ग म
प ध नि सा॥ विलोम॥ सा नि ध प म ग ऋट सा॥ मिश्रसाधन॥ सा
ऋट ग म प ध नि सा नि ध प म ग ऋट सा सा ऋट ग
म प ध नि सा॥ विलोम॥ सा नि ध प म ग ऋट सा॰
मिश्रसाधन॥ सा ऋट ग म प ध नि सा नी ध प म ग ऋट सा
सा ऋट ग म प ध नी ऋट सा सा नी ध प म ग ऋट सा
मिश्रसाधनं॥ सा ऋट सा सा ऋट ग ऋट सा सा ऋट ध म म ऋट सा सा
सा ऋट ग म प ध नि सा नि सा ऋट ग म ध सा प
मिश्रसाधन॥ सा नि सा ऋट सा सा ऋट सा सा ध ध नी ध ध सा
सा ऋट सा सा ऋट ग म ध प सा नि सा नि ध ध म ध
नि सा सा नि सा सा म नी ऋट ग म प ध नि सा सा नि ध

प ध नि सां सां नी ध प म प ध नि सां सां नि ध
प म ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग ऋ
ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग ऋ सा ऋ
ग म प ध नि सां ॥ मिश्रसाधन ॥ सा ऋ सा सा ऋ ग सां
सा ऋ ग म प सा सा ऋ ग म प ध सा सा ऋ ग म प
ध नि सा सा ऋ ग म प ध नि सा सा ॥ मिश्रसाधन ॥ सां
ऋ ग म प ध नि सां सां
नि सा सा नि ध सा सा नि ध प सा सा नी ध प म सा
सा नि ध प म ग सा सा नि ध प म ध ऋ सा सा
नि ध प म ग ऋ सा सा ॥ अनुलोम ॥ सां ऋ ग म प ध नी
सां ॥ विलोम ॥ सां नि ध प म ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म
प ध नि सां ॥ विलोम ॥ सां नि ध प म ग रे सां ॥ अनुलोम ॥ सा रे
ग म प ध नि सां ॥ विलोम ॥ सां नि ध प म ग रे सा
अनुलोम ॥ और विलोम ॥ सां रे ग म प ध नि सां नि ध प म ग
ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ विलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि सां नि ध प म
ग ऋ सां ॥ अनुलोम ॥ विलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि सां नि

गी॰ वा॰ ८

ध प म ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि सा सा
विलोम ॥ नि ध प म ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि
सा सा नि ध प म ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि
सा ॥ विलोम ॥ सा नि ध प म ग ऋ सा ॥ मिश्रसाधन ॥ सा सा ऋ नि
ग ध म प सा सा नि ऋ ध ग प म ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म
प ध नि सा ॥ विलोम ॥ सा नि ध प म ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा
ऋ ग म प ध नि सा ॥ विलोम ॥ सा नि ध प म ग ऋ सा ॥
अनुलोम ॥ सा ऋ ग म प ध नि सा ॥ विलोम ॥ सा नि ध प म
ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ सा ग सा म सा प सा ध सा
नि सा सा ॥ विलोम ॥ सा नि सा ध सा प सा म सा ग सा ऋ
सा सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ऋ ग ग म म प प ध ध
नि नि सा सा नि नि ध ध प प म म ग ग ऋ ऋ
सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग ऋ ग म ग म प म प ध प ध
नि ध नि सा विलोम सा नि ध नि ध प ध प म प
म ग म ग ऋ ग ऋ सा ॥ अनुलोम ॥ सा ऋ ग म ऋ

ग म प ग म प ध प ध नि सां॥ विलोम॥ सां नि ध प नि ध प
म ध प म ग प म ग ऋ म ग रे सा॥ अनुलोम॥ सा ऋ ग म प
ध नी सां सां नि ध प म ग ऋ सा अनुलोम॥ सा ऋ ग म प ध
नि सां॥ विलोम॥ सां नि ध प म ग ऋ सा॥ अनुलोम सा ऋ ग म
प ध नी सां॥ विलोम॥ सां नि ध प म ग ऋ सा॥ विलोम॥ सा ऋ
ग म प ध नि सां॥ विलोम सां नि ध प म ग ऋ सा सा
ऋ ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग ऋ सा॥ अनुलोमविलोम॥
सा ऋ ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग ऋ सा॥
सारगम॥ लुम॥ सम्पूर्ण॥ ताल मध्यमान॥ आस्थायी॥ म ग सा ऋ ग म ग
ऋ सा नि सा ध नि सा ऋ ग ऋ ग म प म ग ऋ
सा नि सा ऋ ग ऋ सा सा अन्तरा॥ ऋ ऋ म म प प नि
सा ऋ ग म ग ऋ सा नि ध प म ग ऋ ग म प म
ग ऋ सा नि ध नि सा ऋ ग म प ध नि ध प म ग
ऋ ग म ग ऋ सा सारगम॥ भूपाली॥ ओडव॥ ताल॥ मध्यमान॥ आस्थायी॥
ध ध प प ग ऋ ग ऋ सा ऋ ग ध ध सां ऋ ग सां
ध प ग प प ध सां ध प ग ऋ॥ अन्तरा॥ प ध ध सां सां

गी॰ व॰
५

सा सा ध ऋ सा सा सा सा ग ऋ ग ऋ ऋ सा सा ध
सा ध सा ध ध प म प ध प ध सा सा सा सा ऋ
नि सा ध नि ध प ध प ग ऋ ॥ सूरगम ॥ खाम्बाज ॥ सम्पूर्ण ॥ ता-
लमध्यमान ॥ आस्थायी ॥ सा नि ध प सा नि ध प म ग म प सा
नि ध सा म ग म प ध नि सा ऋ ऋ सा नि ध प
सा नि ध प म ग म प ॥ अन्तरा ॥ म म ध नि सा नि सा
सा सा नि सा ऋ सा नि ध प सा नि ध नि ध प ध
प म ग म सा म ग म प ध नि सा ऋ ऋ सा नि ध
प सा नि ध प म ग म प ॥ सारगम ॥ भीमपलाश्री ॥ सम्पूर्ण ॥ ताल
मध्यमान ॥ (ग नि) आस्थायी ग ग ऋ सा नि सा ग म प म
ग ऋ सा नि ध प म ग म प म ग ऋ सा अन्तरा ॥
ध ध प प म ग म प नि सा सा नि ध प म ग ऋ सा
तेलेना ॥ लुम ॥ सम्पूर्ण ॥ तालमध्यमान ॥ देर ना ना देरे दानि दिम तान्ना ना
ना ना देर देर तोम देर देर तोम देर ना देरे ना ना ना ना ना देर ना देर
ना ताना ना देर देर तोम देर देर ताना ना देर देर दानि तोम देर देर ना
ना ना ना ना ना ता ना देरे ने ना दिम दिम ता नुम ना ना ना ताना

ना तोम् देर् देर् देर् दानि धा किटि धा धा किटि ताक् तेरे किटि धा
धा किटि ताक् तेरे किटि धा धा ।।।। ॥ अथ स्थायी ॥ म ग सा ऋ ग
देर् ना ना दे

म ग ऋ सा सा ध नि सा ऋ ग ऋ ग म प म
ना नि दिम् ना नो ना ना ना देर देर तोम् देर देर तोम् देर

नि ध प सा नि ध प म ग ऋ ग सा ऋ ऋ
ना दे रे ना ना ना ना ना देर् ना देर् ना ना ना

प म ग ऋ ग सा ऋ ग ॥ अन्तरा ॥ ऋ ऋ ऋ म म प
ना देर देर तोम् देर् देर ना ना ना देर् देर दा नि तोम्

नि सा ऋ ग म ग ऋ सा सा ऋ सा नि ध
देर देर ना ना ना ना ना ना ना ना दे रे ने

प म ग ऋ प ध प म सा नि ध प म
ना दिम् दिम् ना नुम् ना ना ना ना ना ना तोम् देर्

ग ऋ ग सा ऋ ग ग ऋ ग म म प सा
देर् देर दा नि धा कि टि धा धा कि टि ताक ते

सा सा सा नि ध प प म म म ग ग ऋ
रे कि टि धा धा कि टि ताक ते रे कि टि धा

ग
धा

॥ बेहाग ॥ सम्पूर्ण ॥ ताल मध्यमान ॥ जगमे फूठें देखें प्रीत जगमे फूठें देखें प्रीत आप् नाहिं सबसों सब लागे क्यादारा क्यामित जगमे मेरो मेरो सबहिं कहबहैं हितसों बांधे चित अन्तकाल छुटनके नाहिं कउ रुया अचरज देय रीत ॥ अथ स्थायी ॥ ग ग ग प म ग ऋ सा
ज ग मे फु ठे दे खें प्री

ग ग ग ग प म ग ऋ सा सा सा सा
त ज ग मे फु ठे दे खें प्री त आ प

सा ग ग म प नि नि नि नि सा सा
ना हिं स ब सों स ब ला गे क्या दा

गी॰ व॰
१०

सां प प म म म ग ॥ अन्तरा ॥ प प नि नि सां सां सां सां
र क्या ति त ज ग मे मे रो मे रो स ब हिं क
सां सां सां सां सां सां ऋट सां नि ध सां नि प प ग
ह ब हिं द्वि त सौं बा ये चि ० ० त अ न का
ग ग म प नि नि सां सां सां सां सां सां सां
ल धु न के ० ना हिं क उ ध्या अ च र
प प म म ॥ ॥ ध्रुवपद ॥ इमनकल्याण ॥ सम्पूर्ण ॥ तालचौताल ॥ (मि)
ज हेय री त।

सधे मुद्रा सधे वाणी सधे संगत सधे तान सधे अच्छर सधे ग्राम सधे सांचिले आकार आरोही अवरोही उलट पालट विलास कर औडव खाडव संपूरण तिनके वे औरे सधनि ॥ आस्थाई ॥

सा ध प प ध म म म प ग ग म ग ग
ऋट ग ऋट ग प प प म ऋट ग ऋट सा नि
ऋठ सा सा ध सा ऋट सा ऋट ग ग ग ऋट सा
सा सा नि म प नि म प ग ऋट ऋट सा ऋट सा
॥ अन्तरा ॥ सा सा सा सा सा सा नि ऋट सा सा
ऋट सा ऋट ऋट ऋट सा ग ऋट ग ऋट सा नि ध
ध प ध ध ध ध सा नि ध प प ग ऋट ऋट
ग ऋट सा सा सा ग प प प प म नि ध ध

ध प ध सा । ध । प । म । ग । ऋ । सा ॥ ९ ॥

ध्रुवपद॥ खम्माज—॥ संपूर्ण॥ तालचौताल॥ वंशी धुन सोमा कार वाजत श्री वृंदावन रंग झुमड रही सघन गरजत वादर विमान रहस रहस वरखत गोपी गण दामिनी दमकत नयना रतनारे पर भोंहे सोहे धनु समान चमर चारवीक नेश कांचन वरण विराजित तनु प्यारि औरे प्यारे देउ शोभित छवनकी छटा कुंदन वहूम देउ विहरत मुखमा देखो ले जैसें वरखा ऋतुमे निकसत औरे छपत भाग ॥ ९ ॥

आस्थायी॥ नि सा सा सा सा नि नि ध म ग म प ध सा

सा म ग ग ग ग म सा म म म म नि ध नि

सा सा सा म ग म ऋ ग सा सा नि ऋ सा नि नि

ध नि प म । अन्तरा॥ म म ध नि सा सा सा सा

सा सा सा नि सा ऋ सा सा सा नि ऋ सा नि नि

ध ध ध नि म म म म नि ध नि सा नि सा ग

ग ग म ऋ सा सा नि ऋ सा नि ध नि प ध ॥

संचारी॥ सा सा नि सा ऋ सा नि नि ध म म प प

सा नी नि ध ध प म म ग म ऋ ऋ सा सा

गौं० ३० ११

ग ग म प म म ग ग म रे रे रे सा सा

म म म प प सा नि ध ध म ॥॥

आभोग॥ म ध म नि नि सा सा नि नि सा सा

नि सा रे रे सा सा नि सा नि ध ध नि ध

नि म म म म नि ध नि सा सा सा म

ग म रे ग सा सा नि रे सा नि ध नि ध प

ध्रुवपद॥ वेहाग॥ खाडव॥ तालचौताल॥ राजा रामचंद्र चढिहैं त्रिकुटपर लंका गढ दुरगमगात जवहिं बम्ब बाजेरि प्रथम श्रवण ठंकपोरे रावण ज्ञननाद मारो कुंभकरण रण विदार देव गगन गाजेरि दशो दिश सौरभे प ल्हतल वितल तलातल रसातल पातालतल जेते किन्नोका ज चढि विमान सैन्य साजे कोट कोट मान लफे वादनि विलास आ श अवध भूप राजेरि ॥॥ आस्थायी॥ सा नि प प म ग रे

सा सा नि नि सा ग ग रे सा सा सा सा

सा ग ग म ग प प नि नि सा सा सा

नि प म ग प नि ॥॥ अंतरा॥ प प प नि नि

नि सा सा सा सा नि नि नि सा सा नि प म ग

ग सां ग ग म प प नि नि नि सां सां नि नि
कु म्भ क र ण र ण वि ० दा र दे व ग ग

प म ग प नि ग ग सा ग प प प प नि
न ना ० जै रि दे शो दि श शो र भे प स

नि नि सा सा सा नि प म म ग ग सा सा
त ल वि त ल त ला त लु र सा त ल

ग ग ग ग ग म प म ग ग ऋ सा नि
पा ना त ल जै ० तै ० कि श्रा ० ० की

सा प नि सा सा ॥आभोग॥ प प प नि नि सां सा
० ० ० ० ज व ठि वि मा न तै म

सा सां नि नि सा सा नि नि म ग ग सा ग
सा जै की ट को ठ मा न ल कै वा ह नि

ग म प प नि नि सां सा सा नि प म
वि ० ला स श्री स म्र व ध भू प ता

ग प नि ॥ तेलाना॥ वेहाग॥ सूलफाग॥ तालकाओयाली॥ तोम् तोम् ताना
० जै रि

देरे ना दिम् दिम् तानम् तानाना ना ना ना ना देर् देर् दानि तोम् देर्
देर् धे तोम् तोम् देर देर देर देर देर् देर देर् दानि ना देरे देरे ना ताना
ताना ना ना ना ना ना ना धा किटि किटि धा किटि किटि धुम् किटि
किटि धुम् किटि किटि केञन धा॥ आस्थायी॥

सां नि सा नि ध प प म ग म ग ऋ सा
तोम् तोम् ता ना दे रे ना दिम् दिम् ता नम् ० ०

सा सा सा सा सा सा सा सा सा ग म
ता ना ना ना ना ना ना देर् देर् दा नि

गी॰ व॰
१२

प नि नि धं नि निं निं नि सा सा ग ग म ग
तोम् देर देर धे तोम् तोम् देर देर देर देर देर देर देर देर

सा सा ॥ अन्तरा॥ प प प नि नि नि सा सा म
द नि ना दे रे दे रे ना ना ना ना

म ग ग ऋ सा सा सा सा सा सा सा सा
ता ना ना ना ना ना ना धा कि टि कि टि

ग प प म प नि नि नि नि नि नि सा
धा कि टि कि टि धुम् कि टि कि टि धुम् कि

सा सा सा सा सा
टि कि टि केड़ान धा

॥ खेयाल॥ प्रदीपिका॥ संपूर्ण॥ झांपताल॥

शिखरगढ चंद केलाश निहता चंदाप्रभा किरण ज्योति प्रजाल
चंद मकरंद फुल फले परि मलसुगंध द्विविया वदन तनु मदनु पजाल
लाल मोतियनमे छोटे चंदाकिरण शोभाल छंद अभिछंद गाये नायक
गोपाल॥ अस्थाई॥

सां ऋं ऋ ऋ नि सां सा नि सा ऋं
शि ख र ग ढ चं द के ला स

ग ऋ सा सा नि प पं नि सा ऋ ग म प
नि हृ ता ० चं दा प्र भा ० कि र

प ग म ग ऋ सा नि नि सां सां सां मां
ण ज्यो ० ति ० प्र जा ल च दं म कं

सां सां नि सा ऋ ऋ सा नि प ग ग ग ग
र द फु ल फ ले ० ० प रि म ल

म ग ऋ सा सां धं ध प म म ग ग ग
सु ग ० न्धु द्वि बि या व द न त नु न

प म ग ग ऋ सा नि ॥॥ संचारी॥
द नु म जा ० ० ल

नि सा ऋ सा सा नि सा सा ग ग ग म म ग ऋ
लाल मो ति यन् से छो टे वं द कि र ण शो भा ०

सा ॥ आभोग ॥ सा सा सा सा सा सा सा ऋ ऋ सा नि
ल छ न्द श्र भि छ न्द गा ० ये ०

प ग म ग ऋ सा नि ॥ ध्रुवपद ॥ इमन ॥ वेलावली ॥ संपूर्ण ॥
ना य के ण ल

तालचौताल ॥ (मै) परमेश्वर पुरुषोत्तम पद्मनाभ पद्मापति पंकजदल लोचन प्रभु पुण्डरीक माल पवि माला प्यारे वसुधाके अर्थ धर्म काम मोक्ष पंकजदलदृष्टि पतंग काम चट जाइवि ॥ आस्थायी ॥ ग ग
प र

ग ऋ सा सा सा सा नि ऋ सा सा सा ऋ ग म
मे ० श्व र पु रु षो ० त म प द्म ना ०

प म ग ग ऋ सा सा सा ग म प प नि
भ ० पद पद मा ० प तिं पं क ज द ल लो

ध नि प प ध नि सा सा नि सा ध प ध
० ० च न प्र भु पु ण्ड री क

प म ग ग म प म प प ध नि ध सा सा
मा ० ल प वि ० मा ला प्या रे

अन्तरा

गी॰ व॰
१२

सा सा सा सा सां ऋ ग म प म ग म ऋ
व ह धा के श्र थि ध मि ० का ० म

ऋ सा सां सा सा सा सा सा नि सा ध ध
मो न पं क ज द ल हे ० नि ० प

ध नि प ध नि ध सा सां प ध पं गं ऋं
त ० ग का ० ० ० म च ट जा ० ०

ग म प म ॥ ॥ ध्रुवपद ॥ विभाष ॥ सूलफाक्ता ॥
इ ० रि ०

जय वांछित सुर मण्डल नुत उज्ज्वल पाण्डुर हे खण्डपरशो कृत ताण्डव परितन अमरधुनी रुचि मण्डित हे आखण्डल मणिखण्ड स- मप्रभ भुजग निचय तनु भूषण हे अम्बुद धुम्बि कलेवर गिरि निभ विगलित भूषण हे ॥ ॥ आस्थायी ॥

सा सा सां ध प ध ध
ज य वां छि त

प प ग प ग ग ऋ सा सा ध सा ऋ
सु र म ० ण्ड ल नु त उ ० ज्ज्व ल

ग प प ध प ग प ग ऋ सा गं ग
पा ण्डु र हे ० ० ० ० ० ० ख ण्ड

प प ध सा सा सां ऋ सा सा सा सा सा
प र शो कृ त ता ण्ड व प रि त त

सां ऋ ऋ ऋ गं ऋ सा सा ध सा ध प ग ऋ
अ म र धु नी ० रु चि म ० ति त है ०

सा ॥ अन्तरा ॥ पं ध सा सा सा सा सा ऋ ध सा सां
० आ ख ण ल म णि ख ० ण स म

सा सा सा ऋ ऋ ऋ सा ऋ गं पं गं ऋ
म भ भ ज ग नि च प त तु भू प

सा सां ध सा ध ध प ग ऋ ग प प ध
ण हे अ ० मु द तु म्नि क ले ० व र

सा सा सा सा सा ग ऋ सा सां ध प ग ऋ
गि रि नि म वि ग लि त भू प ण है ०

सां ॥ ॥ विलपद ॥ खम्बाज ॥ जलद तेताला ॥ हलधर नव नयनं कमनीयं आ-
सव पान मधुर मरुण द्युति चंचल मेचक तारं लज्जित मान्ध विलीन
मधुव्रत शोणित कमल मुदारं ॥ अस्थाई ॥ सा नि सा सा नि नि
ह ल धु र न व

ध ध म प ध म ग म ॥ अन्तरा ॥ म ध नि सां सां सा
न य नं क म नी यं आ स व पा न म

सां सा नि सा सा सां सां सां नि सां ऋं ऋ ग
धु र म रु ण द्यु ति चि च्चं ल मे ०

ऋ सा नि सां नि नि ध म म म म ग म प
च क ता ० ० र ० ल जि त मा न्धा वि ली

ध नि नि सां सां सां सा म ग म ऋ ग ऋ सा
० न म धु व्र त शो ० णि त क म ल म्

गी·व·
१७

नि सा नि नि ध ॥ः॥ ध्रुवपद॥ सिंधु॥ तेत्रोरा॥ शिखर मण्डल मणि शोभित कुण्डलैक विराजितं चण्ड कर स्रत दण्ड खण्डन परितं त्रिदशा चिंतं यादवाब्ध्य दुग्ध वारिधि कुमुद सुन्दर मीश्वरं भावयामि भवन्त मनिशं ब्रह्म रूप मन स्वरं ॥३॥ आस्थायी॥

सा सा सा ऋ ऋ ग म म प नि नि प म म
शि ख र म ण्ड ल म णि शो भि त कु ण्ड ले

ग म म म ग ग ऋ सा नि सा सा सा ऋ
० क वि रा ० जि तं च ण्ड क र स्र त

सा नि ध प म प सा नि ध प प म ग प म ॥
द ण्ड ख ण्ड न प रि तं ० त्रि द शा ० चिं तं

अन्तरा॥ म म प प ध नि नि सा सा सा सा सा नि
या द वा ब्ध्य दु ग्ध वा रि धि कु मु द

सा सा ऋ सा नि नि ध प प प प प प ध प
सु न्द र मी श्व रं ० भा व या मि भ ० व

प प म प सा नि ध प म म म ग प म ॥ः
म नि शं ब्र ० ह्म रू ० प म न ० स्व रं

विष्णुपद॥ मरज॥ – एकताला॥ अरुणा मित युगल दृग् विशाली कृत वतंसं करुणा कर विपुल बाहु मुकु रुकुत रतंसं चरणावनतो भवन्त माशयामि मीचने शरणा गतमपि विधेहि कलित विविध लोकने॥ आस्थायी॥

नि नि नि सा सा नि ध ध प म म प ध ध म ग
अ रु णा मि त यु ग ल दृ ग् वि शा ली कृ त व

ऋ सा सा सा सा ग ग म ध ध नि सा सा
तं सं क रु णा क र वि पु ल बा हु मु

सा सा नि ऋ सा नि ध ध ध म ध ॥ अन्तरा॥ म ध धं नि
ऊ हृ ० हे त र ० त है ० ० च र ण व

नि सां सा सा सा सा नि नि सा सा सा ऋ नि ध
न नो भ व ल मा ० ण या मि मे ० च ने

म म म ग ग म ध ध नि सा नि सा सा सा
श र ण ग त म पि वि ये हि क लि त वि

सा सा सा ऋ नि ध म ध ॥ २॥
वि ध लो ० क ने ० ०

विष्णुपद॥ योगिया॥ मध्यमान॥ जय जय जनकसुतानाथ व राघव लिखिल भूषेवन जनरंजन हे॥ तरुण सुधाकर मुकुट शरासन शरकर कुण्डल मंडन हे। त्रिभुवल भुजबल भूषण हृषण मुख खर सैनिक खण्डन हे॥ शरणागत जनतारण संततं करुण वितरण तर्जित हे॥ निजरमापहरण नारायण नारायण स्वपमुत्तर हे॥ १८॥

ऋ म म म प प प प पं ध नि ध प म ग ग ग ऋ
ज य ज य ज न क सु ता ० ० ० ध व रा ० घ व

सा सा ऋ ऋ प म म ग ग ऋ ग ऋ ऋ सा प प
० लि खि ल भु व न ज न ० र ज न हे त रु

म प ध सा सा सा सा ऋ ग ऋ सा नि ध ध प ध
ण सु धा ० क र मु कु ट श ० ० स ० न श

ध ध ध ध प प म म म प ॥ प प म प ध सा
र क र कु ण्ड ल मं ड न हे ० रि भु व ल भु जे

सा सा ऋ ऋ ऋ सा नि ध प प प ध ध ध प प
ब ल भू ष ण हृ ० ० ष ण ० मु ख ख र सै नि

म म ध प म ग ऋ सा प प म प ध सा सा सा
क खं ० ण्ड न हे ० ० श र णा ० ग त ज न

गी·व·
१५

15

सा ऋट ग ऋट ऋट सा सा नि ध प प ध ध प ध प प म

म म प ध सा सा सा सा ऋट ऋट सा सा नि ध ध प

ध ध प ध प म म ध प म ग ऋट सा ॥ विभुपद ॥ वि

राग हुंरी अविकल शारद शशधर वदनं कुन्द कुसुम परिहास करदनं मदन सुदाधिक सुन्दर चितकायं स्मितल वक्षस सुन्दर मायं रघुकुल तिलक समर कृतभासं वंदे राममशि वचय नाथं नारायण नरपति कृत गीतं सुखयतु अमर वृन्द सुखपीतं ॥ आस्थायी सा सा नि नि सा ग

अ वि क ल शा र

ग ग म प म ग ऋट सा प प ध प म ग ग ग म प

द शा श ध र व द नं कु न्द कु सु म प रि हा ० ०

म म ग ऋट सा प प नि नि सा सा सा सा सा ऋट सा

स क र द नं॥ म द न सु दा धि क सु र चि त

नि प नि प प प ध प म ग ग ग प म म ग ऋट सा

का ० यं स्मि त ल व क्ष ० त सु ० सु ० ल र ० ० यं

प प नि नि सा सा सा सा सा सा ऋट सा नि प प प

र घु कु ल ति ल क सु म र क त भा सं वं दे

ध प म म ग ग प म म ग ऋट सा ॥ः

० ० ० म म शि व व य ना ० था

प नि सा सा सा सा सा ऋट सा सा नि प नि प प प ध

ना ० य ण न र प ति कृ त गी ० तं सु ख य तु

प म ग ग प म म म ग ऋट सा ॥ः

अ म र वृ ० न्द सु ख पी ० तं॥

॥ध्रुवपद॥मेघखाडव॥ताल॥चौताल॥ आजी पाओ सरितु साखि लागत सोहा
जिरि वरए वरए वादर घीतल बुंदेपओन पोरवाइया करि खेर पम्य व
गपम्य पहिदल जरिवेल नइचढत गरज गरज आइरि षालिताउम
डे आइ जंग जोरए दियानारे पथिक चलन हार वरखा कि अधिकारि
जिन छवि वकेस्वामि तुमनिके जानत मानो मेन साज चढत इंद्रको
दोहाइरि ॥आस्थायी॥

ऋ ऋ प प प प प प नि प नि प
आ जी पा ओ स रि तु सो खि ला गो

म म प प सा नि प म म ऋ ऋ ऋ सा सा
० त सो हा जि रि व र ए व र ए वा

ऋ ऋ प नि प प म ग प म म ऋ ऋ ऋ ऋ
द र घी ० त ल बुं ० ० ० दे प ओ न पो

म ऋ सा ऋ सा ॥अंतरा॥ नि सा सा सा नि सा ऋ सा
० र ० वा इ या क रि च हीं ० ० खे र

नि सा सा म प नि सा सा ऋ सा नि प म प
प ० म्य व ग पे ० म्य प हि द ल न रि

नि सा ऋ म ग म ऋ ऋ ऋ सा सा नि प नि प
वे ल न इ ० ० ० च ढ त ग र ज ग र

म म ऋ म ऋ सा ॥संचारी॥ ऋ ऋ प प प प प म
ज आ ० ० इ रि षा लि ता उ म डे आ ०

नि प नि प नि म प प सा नि प म ऋ प प
० इ जं ग जो ० र ए दि या ना ० रे प थि

प म ऋ ऋ सा नि सा ऋ म प प नि म म प
क ० ० ० हा र व र खा ० कि अ धि ० का री

आभोग ॥ म प पं नि सां सां ऋट सां नि सां म प सां नि
जि न ह रि ० ब के स्वा मि उ म नि

सां ऋट सां सां नि प नि प म प सां नि सां ऋट ऋट म
० के ० जा ० न त ० मा नो मे ० ० न हा ०

ग म ऋट म ऋट सां सां नि प प म नि प म ऋट म ऋट
० ० ज ब ठ त हे क्रे को ० नी हा ० ० हे

सां ॥ विस्नुपद ॥ दिश्रो ॥ छि छिटी ॥ सम्पूर्ण ॥ तालतुमरी ॥ जय नारायण ब्रह्म सनातन
नि

श्रीपति कमलाकान्तम् ॥ नाम अनन्त कहा लागे बरनु शेषन पारहल
नाम ॥ मछ कछ शूकर नरहर प्रभु वामनरूपधरन्तम् ॥ परशुराम ॥
होहो रामचंद्र हो लीलाकोटीधरन्तम् ॥ होयबलभद्र सब दैत्य संहारे
कंसके केशगहन्तम् ॥ जगन्नाथ जगमग चिन्तामणि बैठे हे निचिन्त ॥
कल्की होय कलंकयो हरिहे जगदीश गुणवन्तम् ॥ दशमस्कंदा भाग
वत गावे सुर शरण भगवन्तम् ॥

आस्थायी ॥ ऋट ग ग ग ग म म प म ग ग म प प
जय ना रा य ण ब्र ह्म स ना त न श्री प ति

प प प म ग ऋट सां सां सां सां सां सां सां सां॰
क म ला का न्त म् ना म अ न ल क हा

नि नि ध ध प ध नि नि नि ध प म ग ऋट
ला गि ब र नु शे ष न पा र ल ह न

सां ॥ प प ध सां सां सां सां सां सां सां सां सां
म् म छ क छ शू क र न र ह र प्र

सां सां सां सां सां नि नि ध सां नि नि ध प सां
भु वा म न रू प ध र न्त ० म् प

सा सा सा सा सा सा नि नि नि ध प ध नि नि ध
र श रा म श्री हि रा म चं द्र हो ली ला को टि

प म ग ऋ सा प प ध ध सा सा सा सा सा सा सा
ध र नी ० मृ हो मृ व ल भ द्र स व दे स स

सा सा सा सा सा सा नि नि सा नि ध प सा सा सा
हा रे कं स के के प ग ह नी ० मू ज ग ना

सा सा सा नि नि नि ध प प ध नि ध प म ग रे
य ज ग म ग चि ला म णि वे हे हे नि वि लो ०

सा ॥ ॥ प प ध सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा
मू क लु की हो य क लं क यो ह रि हे ज

सा सा नि नि नि ध सा नि नि ध प सा सा सा सा
ग दी श गु ण व ० ० नो ० मू द य स स्कं

सा नि नि नि नि ध प ध नि नि नि नि प प म ग
दा भा ग व त गा वे सू र श र ण भ ग व

ऋ सा ॥ हिंदोल श्रोडव तालतेश्रोरा ॥

ना देर् देर् तोम् देर् तोम् देर् नारे ताना देरे ना दिम् दिम् श्रोदानि दानि दानि देर् ना देर् देर् ताना गाये श्रोडव राग सव गुणियन समाफ हिंडोल ॥

सा ग ग म ध ध ध सा नि ध नि ध म ग सा
ना देर् देर् तोम् देर् तोम् देर् ना रे ता ना दे रे ना दिम्

सा सा नि ध सा सा ग ग नि नि ध म ग सा सा ॥
दिम् श्रो दा नि दा नि दा नि दे रे ना देर् देर् ता ना

श्रन्तरा ध म ध सा सा सा सा सा सा सा सा सा नि नि
गा ये श्री ड व रा ग स व गु णि य न

नि ध ध नि ध म ग सा ग ग म ध नि नि म ध
स मा फ हिं डो ल

नि सा नि नि ध नि नि ध ध म म ग ग म सा ॥ ❖ ॥

ध्रुवपद ॥ भूपाली ॥ खाडव ॥ पटताल ॥ मुषलायुधविबुधा विबुधधरणीधृतमुखरे ब्ररणरुतापतिवदनासि लम्बित सम्भ्रम तर्जितविधुमुखरे ॥ मुकुटार्पितविकटोज्ज्वलमुनिगणनतनुनिर्जितहिमभूधर रे ॥ जयरोहिणी सुत सुरमएडलनुत ॥ ॥ आस्थायी ॥

ग ग ग ग ग ग प ऋ ग प
मु ष ला यु ध वि बु धा वि बु

ध सा सा सा ध ध प प ग ऋ ग ऋ सा ऋ ग ग ग
ध ध र णी धृ त मु ख रे ~ ~ ~ ~ ~ व रु ण

प ध सा सा सा ध ऋ सा सा सा सा ऋ ऋ ऋ सा ऋ ग
सु ता प ति ~ व ~ ना सि ल म्बि त स म्भ्र म त्ने ~ र्जि

ग ऋ सा ऋ सा सा ध ॥ संचारी ॥ सा सा ध प प ग ऋ ग
त वि धु मु ख ~ ~ मु कु टा र्पि त वि क टो

ग ध सा सा सा सा ऋ ऋ सा ध ध प प ग प प
ज्ज्व ल मु नि ग ण न तु नि र्जि त हि म भू ध र

ग ऋ सा ऋ ॥ आभोग ॥ सा ऋ ग प ध सा ऋ सा ध प
रे ~ ~ ~

ग ऋ सा ग ग प ऋ ग ऋ सा ऋ ऋ ऋ सा ध ध प

प ग ग ग ऋ ऋ सा ऋ ॥ विलपद ॥ देशी फिफिर ॥ संकर्ण ॥ ताल

कान्श्रोयाली माथे पर मकुट श्रुतिकुएडल विशाल लाल ॥ श्रलक कुटिल सोहली मदगति कञ्चनिकलित कटि किंकिनि विचित्र तट पीताम्बर अंगमे विराजेयुति वैजनि ॥ कहे जय दयाल प्रभुनि मेरो मन हरलिनि मन्द मन्द बाजे गोविंद पाय पयजनि ॥ ॥१॥

चढना अभरोही उतरना आरोही स्वरूपम् सा रे गा

मा पा धा नी अभरोहीस्वरूपम् सा नी ध प म ग रे

इस करके इस ग्रामका विशेष वर्णनकही किया और तीन

ग्रामके तीन लोक और तीन गुण और तीन देवता तस्यव

र्णनम् ॥ रजोगुणते और भूलोक अर्थात् नाग लोकते

खङ्जकी उत्पती गायत्री छंद इतिमंदरग्रामः ॥ सत

गुणते और भूलोकते अर्थात् मर्त्यलोकते मध्यम ग्रामकी

उत्पती पंक्तिछंदः ॥ इतिमध्यमग्रामः । तीसरी तम गुण

सं॰
सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
११

स्वर्लोक अर्थात इंद्रलोकती गंधार ग्रामकी उत्पती अनुष्टुपछं

दः॥ इतितारग्राम॥॥ अरु ग्राम किसको कहतेहै ग्राम नामदे

इस्थितीका जो स्वर इस्थितरहै तिसको ग्राम कहतेहै तिस

के द्वारा संपूर्ण स्वरोंकी उत्पतीहै वीणा नाम जोहै तिस पर

राग अलापनी क्या वजावनेके अतरहै ॥ ततरी रेना ता नरी

इनन आनन उदन तुम तुम गत वजावनेके अत्तर डिड

डा डिड डा डा डारा द्दा॥॥॥ इतिगत अतारम्॥ इजो इसके

साथ नवेशाहै इस पर स्वरूप दंड और सार और किली॰

ग्रौर तोंभी ग्रौर गुलू जो तोंभोके ऊपर लगा कर दंडके साथ जो

उंदेनी ग्रौर तार दान जो धारका स्वरूपहै स्वरधरी संयुक्त ।

वना होवाहै तिस ग्रनुसार वना करके नवेषकी दंडकी स्वरूपमे

चौगुणा दंड लंबा ग्रौर मुष्टी प्रमाण मोटा वनाकेर नवेशा दो

सेरके ग्रनुस्वार करणा॥इतिसावदमतेन॥ सरव संगीत ग्रंथ भा

वेन वर्तमान प्रमाणेन श्रीमहाराजाधि राजेंद्र श्रीमन्महाराजा

साहिब जम्बू काश्मीराद्य नीमनाधि देशाधिपदीश ग्राज्ञा ग्रनु

स्वार संगीत रणवीर प्रकाशसार ग्रलामनी वीणा योयनविधी

९॰
सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
१२

प्रकारः समाप्तम्॥ शुभमस्तु सर्वे जगताम्॥

अथ चलत वीणा ॥ अर्थात् ॥ सितार प्रकार वर्णनम् ॥ द्वितीयोध्याय प्रारंभः

वीणाको देखकरके सुगम हेत अमीर खुशरोने जो कवी फा
रसीका होवाहै चलत नाम उपवीणा जिसको सेतार कहते हैं॰
यथा योग वनाई और सितार कछपी वीणाका ओटावहै जो वी
णाका और सेतारका भेदहै तिसका वर्णन वीणाकी तीन सप्त
क होतेहै और सात तार होतेहै सेतारकी अढाई सप्तक और ती
न तार होतेहै और वीणा दो नखोंसे वजतेहै अरु सेतार एक न
खसे वजतेहै ॥ इति संगीतमतेन ॥ अब बुधिवान कलावंत तन्त्र

सू॰
सं॰ र॰
ग्र॰ सा॰
१३

कारोने जो संगीत कलाको शास्त्र अनुसार जानती है तिनोने

और रंगीनी और रागरागनी कि अलापनिकि हेतो पांच तार ।

तथा सात तार सोलां १९ संदरी तथा अठांरा १८ संदरी तथा वोनी

तथा २॰वीस संदरी वांधकर वनाई है असलमे अमीर खुसरवी

ठाठ चौदा १४ संदरी और तीन तारकाहे तिसका वर्णन आगे

आवेगा ॥ अथ सर्वप्रकारठाठ ॥ सेतारवर्णनम् ॥ प्रथम चतुर्दश संदरी

ठाठवर्णनम् पहली संदरी मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी

धैवत ४ चौथी निषाद ५ पंचमी खरज स्वर ६ छैमी ऋषभ ॥

७ सप्तमी गंधार ८ अष्टमी मध्यम ९ नवमी पंचम १० दशमी धैवत ११ ग्यारमी निषाद १२ बारमी षरज १३ तीरमी ऋषभ १४ चौदमी गंधार ॥ अथ ठाठ स्वरप्रस्तरम् ॥ म प धा नी सा रि गा ।

मा पा धा नी सा रि गा ॥ इति चतुर्दशी ॥ सुंदरी ठाठ वर्णनम् ॥

अथ षोडषी सुंदरी ठाठ वर्णनम् पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धैवत ४ चौथी निषाद ५ पंजमी खरज ६ छठेमी ऋषभ ७ सप्तमी गंधार ८ अष्टमी मध्यम ९ नवमी तरतीवर मध्यम जिसको कटरा मध्यम कहतीहे १० दशमी

पृ.
सं. १.
प्र. सा
१५

पंचम ११ ग्यारमी धैवत १२ बारमी निषाद १३ तीरमे षरज १४
चौदमी ऋषभ १५ पंद्रमी गंधार १६ सोलमी मध्यम ॥ अथ
ठाठस्वर अंतरं सा पा धा नी सा रि गा मा पा धा सा
नी सा रि गा मा ३ इति षोडशी ठाठ वर्णनम्.
अथ अष्टादशी सुंदरी ठाठ वर्णनम्. पहिली मध्यम २ दोस
री पंचम ३ तीसरी धैवत ४ चौथी उतरा कोमल पंचम नि
निषाद ६ छठमी खरजस्वर ७ सातमी ऋषभ ८ अष्टमीगंधार
कोमल ९ नवमी शुद्ध गंधार १० दशमी मध्यम तीव्रतर ११

ग्यारमी मध्यम १२ बारमी पंचम १३ तीरमी धैवत १४ चौद

मी निषाद १५ पंद्रमी खरज १६ सोलमी ऋषभ १७ सतार

मे गंधार १८ अठारमे मध्यम ॥ अथअष्टादशसुंदरीअलवम् ॥

मा पा धा धा नी सा रि ग मा म मा पा धा नी सा

रि गा मा ॥ इतिअष्टादशसुंदरीगावर्णनम् ॥ अथएकोनविंशतिठा

कसुंदरी वर्णनम् पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीस

री कोमल धैवत ४ चौथी शुद्ध धैवत ५ पंचमी कोमल नि

षाद ६ छठमी निषाद शुद्ध ७ सतमी खरज ८ अष्टमी ऋषभ ९

सं॰ र॰
ग्र॰ सा॰
१५

नवमी गंधार ९ दशामी शुद्ध गंधार १० ग्यारमी मध्यम ११ बारमी मध्यम नरतीवर १२ तीरमे पंचम १३ चौदमी धैवत १४ पंद्रमी निषाद १५ सोलमी षरज १६ सतारमी ऋषभ ॥१७॥ अठारमी गंधार १८ उनीमध्यम ॥१९॥ अथएकोनविंशतिस्वराग्रनाम॥ म प ध धा नी नी सा रि ग गा म मा पा धा नी सा रि गा मा

द्वितीयप्रकारः॥ म प ध धा नी नी सा रि ग म म पा धा नी सा रि गा मा पा ॥इतिएकोनविंशतिस्वरगावर्णनम्॥

अथविंशतिसुंदरीनाम स्वरवर्णनं॥ १ पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम॰

३ तीसरी धैवत ४ चौथे शुद्ध धैवत ५ पंचमी निषाद कोमल

६ छठेमी शुद्ध निषाद ७ सप्तमे खरज ८ अष्टमी ऋषभ ९

नवमी गंधार कोमल १० दसमे शुद्ध गंधार ११ ग्यारमी म

ध्यम १२ बारमी तरतीवर मध्यम १३ तेरमी पंचम १४

चौदमी धैवत १५ पंद्रमी निषाद १६ सोलमी षरज १७

सतारमे ऋषभ अठारमी गंधार १९ उनीसमी मध्यम २० वी

स पंचम ॥ अथ अलाप ॥ म प ध ध नी नी सा रि ग गा म

मा पा धा नी सा रि गा मा पा ॥ द्वितीयप्रकारः ॥ ॥



पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धैवतकोमल ४
चौथी सुद्ध धैवत ५ पंचमी निषाद ६ छठमी सुद्ध निषाद ७
सप्तमी खरज ८ अठमी कोमल ऋषभ ९ नवमी सुद्ध ऋष-
भ १० दशमी कोमल गंधार ११ ग्यारमी सुद्ध गंधार १२ बारमी
मध्यम १३ तीरमी तरतीवर मध्यम १४ चौदमी पंचम १५
पंद्रमी धैवत १६ सोलमी निषाद १७ सतारमी षरज १८ अ-
ठारमी ऋषभ १९ उनीसमे गंधार २ बीसमी मध्यम ॥॰
अथ्यान्तरं॰ म प ध ध नी नी सा रि रि गगा ममा पाधा

नी सा रि गा मा॰ ॥ इति विंशति सुंदरी ठाव द्वितीय प्रकारः वर्णनम् ॥

तस्य विधी कथनम् अब आगे जो मुख्य प्रकार शास्त्र म

र्यादा सर्व संगीत शास्त्रोंकि आज्ञा अनुसार है जिसको॰

चलत वीणा कहते है बनानिकि विधी संयुक्त वर्णन किया

जाता है एक दंड तनकी लकडीका पंजनाली ४५ अंगुलीया

लंबा आदसे अंत तक तार बननेके जगा तक तोंभे समेत ३

स प्रकार बनाने ३८ छत्ती अंगुलीया लंबा दंडलीकर उसको सि

रसे अर्थात आदसे लेकर अंत तकर नाली षोदनी परनालि

सू॰
सं॰ १॰
अ॰ सा॰
८

की तरा साफ करके उसकी उपर पटरी लंबी २६ छब्बी अंचीया

और साडितीन अंचीया चौड़ी और तीन काकज मोटे साफ

करके सरेश लगाकर उसनालीके उपर जोड़ देनी और उस

की साथ एक पटरी चार अंची लंबी और आधी अंची चौड़ी॰

दोकाकजमोटी गज दंसकी वा तूनकी लकड़ीकी बनीकि ॰

भार तलवारकी तौरे उस दंड पर पटरीके साथ तारोंका आ

धारकि वास्ते जोड़नी एक पटरी लकरीकी साडि तीन अंची

चौड़ी और आधी अंची लंबी तीन काकज मोटी उस तार आधार॰

वाली पटरीकि आगे एक और पटरी चार अंची लंबी और आधी

अंची चौडी दोकाकज मोटी उसमे पांचछेद इसप्रकार करके

एक छेद वामे अंग अधी अंची छोडकि पासिसे चौराईकि ८

अर्धवीच वाजकी तार परोनि वास्ते और एक अंची छोडकर

पहिलि छेदकि समान चार छेद दो अंचीयोंमें करके उसतार

आधारके पटरीकि पासकी पटरीकि साथ तार आधार वतः

जोडदेनी ८ आठ अंचीया लंबी और साडि तीन अंची चौडी तीन

काकज मोटी एक और पटरी जिसमे दो छेद दो कीली तारके

पृ॰
सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
१८

लगाने वास्ते ईसे प्रकार एक छेद तार परोनी वाले पटरीहै
ओससे दो अंगुलीकी फासलीपर और दोसरा छेद उस छेदसे
दो अंगुलेकि फासले पर करके दंडकी नालीपर जोड़देनी और
दो अंगुलीया नीचेसे दंडकी नालीकी ओल नोंभैमे लगानेके
वास्ते अर्थात् जोड़नी वास्ते बनानी कुल ३९ छती अंगुली दंड
होवा जिसकि १०८ एकसौ आठ दर्जे होवे तीन अंगुली गोलो ।
गाहोम उपरसे दंडकि प्रमाण चोडा ४ चार अंगुली और नीचेसे
चोड़ा नोंभेकि प्रमाण लकरीका जिसका नाखपा आगे लि

खो जावेगा तिस अनुस्वार बीचसि खोद करके गोंभ जके तरा

और नीचेसे असी वधाकरके जिसतरा अमारतोंमें जीसको

जीवी भाषामें छजा कहतेहैं तोंभीकि जोड्नीकि वास्ते

वधाक्कर वनावना और तोंभा गलसि जुदा करके फेर पेट

से चीरकरके प्यालीकी सूरत उजो गोला उसके वधाव छजेसे

अंदर जोड्देना उसके कोंकोंसे और एक पटरी लकरीकी य

वार काकज मोटी सफा उस तोंभेकी माफेक जिसको नभली

कहतीहैं सूरेपासे जोड्देनी और उसकी साथ टंड जोहैं नाली

पृ॰
सं॰ २॰
प्र॰ सा
१९

जिसको जोड़देना और तोंबेकी अंतमें एक लकड़ीकी कीली
बनाईकि जिसका स्वरूप आगे होवेगा वास्ते तारो बननेकी
बना कर लगा देनी तबलीका विस्तार २ नव अंगुलीया चाहिये २२
सत्ताई दर्जे कोल १२५ एकसो पंती दर्जेमें सेतार बनावना ति
सेमें स्वर और स्वरधरी लगावनी इसप्रकार करके एक दर्जे पर
चोटी १० दस दर्जेपर एक छेद दंडकी मध्यमे और जोडिकी ता
र बांधनिकी कीली लगाने वास्ते दोसरा छेद १६ सोलां दर्जे
पर मध्यमे पहिली छेदसे नीचे वाए और वाजकी तार बांधनीके

कीली लगानीके वास्ते छेद करणा २२ वें दर्जेकी उपर तार

दान पटरी रखनी पंजी दर्जेकी उपर तार आधार पटरी रख

नी ३० तीस ३१ एकत्रे दर्जेकी उपर बीच मध्यम स्वरकी सुंद

री बांधनी ३५ पंती ओर छती दर्जेकी बीच पंचम स्वरकी

सुंदरी बांधनी ४५ पंजताली ओर ४८ दर्जेकी बीच धैवत

स्वरकी सुंदरी बांधनी ५४ चोरवंजा ओर पंच वंजा निषाद

स्वरकी सुंदरी बांधनी ५८ अठा वंजा ओर ५९ दर्जे खरज स्व

रकी सुंदरी बांधनी ७६ छहात्र ओर सत हात्र दर्जे रिषभ स्वरकी

सू॰
सं॰ र॰
ग्र॰ सा
४

सुंदरी बांधनी ७२ और त्रहत्तर दर्जे गांधार स्वरकी सुंदरी बांधनी ७५

पंजहत्तर ७६ छहत्तर मध्यम स्वरकी सुंदरी बांधनी ७८ और उनासे

दर्जेकी उपर कटवा मध्यम नरतीवर स्वरकी सुंदरी बांधनी॰

एकासी ८२ ब्यासी दर्जेकी उपर पंचम स्वरकी सुंदरी बांधनी

८६ छयासी ८७ सतासी दर्जेकी उपर धैवत स्वरकी सुंदरी

बांधनी ९० नवी और ईकानवी दर्जेकी उपर निषाद स्वरकी

सुंदरी बांधनी ९३ त्रयानवि और ९४ चुरानवि दर्जेकी उपर

खरज स्वरकी सुंदरी बांधनी ९६ छयानवे और ९७ सतानवे॰

दर्जेकी बीच रिषभ स्वरकी सुंदरी बांधनी ९९ नवासमे ओर १००

एकसो दर्जेकीबीच गंधार स्वरकी सुंदरी बांधनी १०१ एकसोए

क ओर १०२ एकसो दोके दर्जेकीबीच मध्यम स्वरकी सुंदरी बांध

नी मध्यम १०२ एकसो दोदर्जे वालीमे २२ बाई दर्जेनीची स्वरकी

ओर स्वर धरीसे तीसं दर्जे नीचे तार बांधनीकी जगा ईस प्रका

र सेतारकी बनाना चाहिईं अरु दोसरा प्रमाण ९० नवे अंगुली

आादते अंतनकर कुल सेतार चाहिईं जिसके २२ बाई चपे

ओर अधा चपा चपा चार अंगुलीका होनाहै बनानी इसप्रकार०

चार चप्पे आदते उतरके दंडके ऊपर तार दानवाली पटरी लगा
नी एक अंगुली उससे नीचे दंडके ऊपर तार आधारवाली पटरी
लगानी इस पटरीसे नीचे ३ तीन अंगुली मध्यम स्वरकी पहली
सुंदरी बांधनी अरु इससे तीन अंगुली नीचे पंचम स्वरकी दो
सरी सुंदरी बांधनी इससे नीचे पांच अंगुली पर धैवत स्वरकी
तीसरी सुंदरी बांधनी इससे चार अंगुली नीचे निषाद स्वरकी
चौथी सुंदरी बांधनी इससे दो अंगुली नीचे पांचमी सुंदरी ख
रज स्वरकी बांधनी उससे चार अंगुली नीचे ऋषभ स्वरकी

छठमी सुंदरी बांधनी इससे तीन अंगुली नीचे गंधार स्वरकी

सातमी सुंदरी बांधनी इससे दो अंगुल नीचे मध्यम स्वरकी सुं

दरी आठमि बांधनी इससे नीचे दो अंगुली कड़छा मध्यम

जिसको तरतीवर कहतेहैं उसकी ९ नवमी सुंदरी बांधनी

उसकी नीचे दो अंगुली पंचम स्वरकी दसमी सुंदरी बांधनी

उसके नीचे तीन अंगुली ११ ग्यारमी सुंदरी धैवत स्वरकी

बांधनी उससेनीचे दो अंगुली निषाद स्वरकी सुंदरी १२ बारमे

बांधनी उससे नीचे एक अंगुली खरज स्वरकी सुंदरी तेरमी १३

मू॰
सं॰ र॰
ग्रं॰ सा॰
२२

बांधनी उससे नीचे २ दो अंगुली ऋषभ स्वरकी सुंदरी १४ चौद

मी बांधनी उससे नीचे दो २ अंगुली गंधार स्वरकी सुंदरी १५

पंद्रमी बांधनी उससे नीचे १ एक अंगुली मध्यम स्वरकी सुं

दरी १६ सोलमी अंतकी बांधनी इससे १५ पंद्रा अंगुल नीचे

स्वर धरी राखनि नवलीके उपर मध्यमे इससे ९ नव अंगुली

नीचे तोंभेके अंतमें तार बांधनेकी अंकुरी लगाने और तार

दानसे जो पहला आदका तार दानहै उससे ४ चार अंगुली

उपर बाजकी तारका जिसको मध्यम कहतेहैं किली लगाव

नेका छेद करणा उसकी ऊपर ४ चार अंगुलीके फासली

पर दोसरी तारकी कीलीका छेद करणा और दंडकी द-

क्षिण और तार दानसे उपर ५ पंज अंगुलीके फासलेपर १

एक कीली दोसरी जोडेकी तार बांधनेकी वास्ते और उस

से चार अंगुलीकी फासले पर खरजकी तार बांधने कि वा

स्ते छेदकरणा और एक छेद पंजमे· और छेमे सुंदरीकि

बीच दंडकी दक्षिण और जिसको पपीया बोलतेहैं तार

बांधनेकि वास्ते कीली लगानिको छेद करणा एक छेद

23

बारमी सुंदरी और ११ ग्यारमे सुंदरीकी बीच दोसरी तार पछी

ईकी बांधनीको छेद करणा इस प्रकार सात कीलीयां सा

तो तारोकी नाम वर्णन असलमे तीन तार है तिसका नाम

पहिली बाजकी तार जिसको मध्यम बोलती है दोसरी औ

र तीसरी दोनो जोड़ेकियां तारा जिनको खर्जो बोलती हैं

और दोसरा प्रकार पंजतार बजाने चाहिई तिनका नाम एक

बाजके तार मध्यम दोसरी और तीसरी खर्जकी तार जि

नको जोड़ा कहते है चौथी और पांचमी पंचमोके तार ॥

तीसरा प्रकार सात तार चढ़ानिका पहिली बाजकी तार
जिसको मध्यम बोलतीहै दोसरी और तीसरी दोनो जोड़ो
कियं तारा जिनको खर्जा बोलतीहैं और दोसरा प्रकार
पंजतार चढ़ाने चाहिंई तिनका नाम एक बाजके तार म
ध्यम दोसरी और तीसरी खर्जकी तार जिनको जोड़ा क
हतीहै चौथी और पांचमी पंचमोंके तार और दो षष्ट्यांकी·
तारा जिनको खर्जा बोलतेहै और इनका प्रकार पीछे आ
चुकाहै इनो वर्णनहै ढाई बाढकाहै इसमें तीन सप्तक हो

सू॰
सं॰र॰
प्र॰सा॰
३४

सकैहै इसप्रकार खर्जोंकीतारें जो दोसरी तीसरी है तिनको

आदकी सुंदरी जो मध्यम स्वरकी पहिली है तिसके ऊपर

धांई हथकी तर्जनी अंगुलसे, जो अंगोठे साथकी है तारको

दभाकर दक्षिण हाथके तर्जनीसे वजावना तब पहिलि-

ग्राम मंद्र नामाके खड्जस्वर पहिली होती है और जो उ

नी तारोंको दोसरी सुंदरी पंचम स्वर पर दभाकर उसे जो उ

पर वर्ण किया गया है वजावनिसे मंद्र ग्राम नामाके ऋ

षभ स्वर दोसरे होती है अरु उनी तारोंको तीसरी सुंदरी धेवत

इसपर इसे प्रकार जो ऊपर वर्णन कियाहै बजावनेसे मंदर

ग्रामनामकी गंधारस्वर तीसरी होतीहै और खाली बाजकी

तार दबावनेसे भिना बजावनेसे मध्यम स्वर उतरा मंदर ग्रामकी

चौथी स्वर होतेहै और कड़ा मध्यम जिसको नर तीवर मध्य

म कहतीहै मंदर नाम ग्रामकी सेनारकी पहिली सुंदरीहै औ

र पंचम मंदर ग्रामके सेनारकी दोसरी सुंदरी और धैवत ती

सरी सुंदरी और निषाद चौथी सुंदरी इसप्रकार पहिली स

प्तक मंदर नाम ग्रामके होतेहै दोसरी सप्तक मध्य नामग्राम

सू॰
सं॰ १॰
म॰ सा॰
२५

25

द्वितीयके सेतारकी पंजमे सुंदरी ओर मध्यग्रामकी पहिली सुर खर्ज होतेहे ओर सेतारकी छठमी सुंदरी ओर मध्यग्रामकी दोसरी सुर ऋषभ होतेहे ओर सेतारकी सातमे सुंदरी मध्यग्रामके तीसरी सुर गंधार होतीहे सेतारकी आठमे सुंदरी मध्यग्रामकी चौथे सुर मध्यम होतीहे ओर सेतारकी ९ नवमी सुंदरी मध्यग्रामकी मध्यम तरतीवर जिसको कडुवा बोलतीहे ओर सेतारकी १० दसमी सुंदरी ओर मध्यग्राम पंजमे सुर पंचम होतेहे सेतारके ११ इग्यारमे सुंदरी मध्यग्रामके छठमे सुर धैवत होतेहे ओर सेतारके

बारमे सुंदरी मध्यग्रामकी सातमे स्वर निषाद होतीहै और

सेतारकी तेरमे सुंदरी तारग्रामके पहली स्वर खर्जहै और

सेतारके १४ चौदमी सुंदरी तारग्रामकी दोसरी स्वर ऋषभ॰

और सेतारकी पंद्रमी सुंदरी तारग्रामकी तीसरी स्वर गंधार

होतेहै और सेतारकी १६ सोलमी सुंदरी तारग्रामकी चौथी

स्वर होतेहै जब चौथी स्वरको एक मूर्छनाके मींड देवे तब

तारग्रामकी पंचम स्वर होतेहै जब पूरी मींड देवे तीन मूर्छे

नाकी मध्यम स्वरमे दो अगला उतरके नीचे मध्यम स्वरमे

मू॰
सं॰ १॰
म॰ मा॰
२८

तव तार ग्रामकी छठेमे स्वर धैवत होतेहै जब उसको दूरी मींड

देवे तो मूर्छनाके उस अस्थान पर तव तारग्रामकी सातमी स्वर

निषाद होतेहै ॥ इतितीनसप्तकभेदवर्णनम्॥ अथतीनग्रामस्वरुत्पत्ते

वर्णनम्॥ प्रथम मंदरग्राम वर्णनम् पंचमकी चौथी श्रुती पर

जो स्वर ठहरी उसको मंदरग्राम कहतेहै अर्थात् खरजग्राम

जब पंचमकी तीसरी श्रुतीपर स्वर ठहरि तव उसको मध्य

ग्राम कहतेहै अर्थात् मध्यस्वरका औेर निषाद जव शुद्ध खरज

की एक श्रुती लीवे तवतारग्राम अर्थात् गंधार ग्राम होताहै

द्वितीयोप्रकारः॥ धैवत तीनश्रुती पर खरज ग्राम होताहै और

चार श्रुतीका जबधैवत होवे तब मध्यम ग्राम होताहै औ

र जब निखाद खरजकी श्रुती एकलीवे तब गंधार ग्राम हो

ताहै॥ इतिग्रामउत्पतीवर्णनम्॥ जब बाजकी तारको तार आधारसे

एक दरजा नीचे मध्यमकी पहिली श्रुती वज्रका नामापर

तर्जनी अंगुल बामे हाथकीसे दबाकर दहणे हाथकी

तर्जनी अंगुलसे तारको बजावे तब तीवरगंधार पहिली

सप्तकका होताहै और तारआधारसे दो दर्जे नीचे मध्यमकी

दोसरी श्रुती प्रसारनी नामापर उसप्रकार जो उपर लेखागयाहै
तारको बजावे तब अतीतीवर गंधार होताहै उसको पूरब म
ध्यम कहताहै जब उससे दोदर्जे नीचे मध्यमकी तीसरी श्रुती
प्रीती नामापर उसे प्रकार तारको बजावे तब तीवर गंधार हो
ताहै उसको कोमल मध्यमभी कहतीहै चौथी श्रुती मध्यम
के मार्जनी नामापर शुद्ध मध्यम होताहै अरु पहिली श्रुती
पंचमकी रती नामापर तीवर मध्यम होताहै अरु पंचमकी
दोसरी श्रुती रक्ता नामापर अतीतीवर मध्यम अर्थात् चढा

मध्यम होताहै अरु उसको पूरब पंचमभी कहतेहै अरु पं

चमके तीसरे श्रुती संदीपने नामापर तीवर मध्यम होता

है उसको कोमल पंचमभी कहतेहै अरु चौथे श्रुती अला

पनी नामापर शुद्ध पंचम होताहै धैवतकी पहिली श्रुती

मंधती नामापर श्रुती तीवर पंचम और पूरब देवत होताहै

दोसरी श्रुती रोहिणी पर नाम तीवर पंचम और कोमल धै

वत होताहै तीसरी श्रुती धैवतकी रम्या नामापर शुद्ध धैवत

होताहै निषादकी पहिली श्रुती उग्रा नामापर तीवर धैवत



९
सं॰ २
प्र॰ सा
२८

होताहै उसको पूर्व निषाद कहितीहै उससे नीचे उतराकि उ

त्रा और लोभनीकी बीच तर तीवर धैवत होताहै और लोभनी

दोसरी श्रुती निषाद ऊपर शुद्ध निषाद होताहै खरजकी

पहिली श्रुती तीवरा नामापर तीवर निषाद होताहै और

खरजकी दूसरी श्रुती कुमुदवती नामापर अती तीवर नि

षाद होताहै और उसकी काकली संज्ञा होतेहै खरजकी

तीसरी श्रुती मंदा नामा पर तंतीवर निषाद होताहै उसकी

कैशकी संज्ञा होतेहै अरु कोमल खरजभी इसको कहतीहै

खरजकी चौथी श्रुती छंदोवती नामापर शुद्ध खरज होता

है दयावती ऋषभी पहिली श्रुती पर पूरव ऋषभ होता

है और दोसरी श्रुती रंजनी नामापर कोमल ऋषभ होताहै

तीसरी श्रुती रतिका पर शुद्ध ऋषभ होताहै और उसको पूर

व गंधारभी कहतेहै और गंधारकी पहिली श्रुती रौद्रे नामा

पर तीवर ऋषभ होताहै उसको कोमल गंधारभी कहतेहै

अरु गंधारकी दोसरी श्रुती क्रोधा नामापर अती तीवर ऋष

भ और शुद्ध गंधार होताहै इसी प्रकार तीन सप्तककी स्वरोंमे

सं. र.
म. सा
२९

तीवर श्रुती तीवर कोमल तम तीवर काकली कोशाकी श्रा

दिक भेद जान लीना ॥१० इतितीव्रादिभेदस्वरवर्णनम्

अथवाऽऽविकृतस्वरभेदवर्णनम् स्वरके चार संज्ञा होता

है च्युत १ ककोल २ बंध ३ विकृत ४ अथचतुर्भेदवर्णनं

ऋषभस्वर खरजकी एक श्रुती छंदोवती नामा चोथी श्रु

तीको लिवे तब खरजकी च्युत संज्ञा होतीहे और जब खर

जकी दोसरी श्रुती कुमुद वती नामा निषाद लीवे तब खरज

की अच्युत संज्ञा होतेहे अरु निषादकी उस जगा काकुली

संज्ञा होतेहै अरु ऋषभ जो तीन श्रुतीकाहै एक श्रुती ख

रजकी लीकर चार श्रुतीका होवे तब उसकी विकृत संज्ञा

होतेहै अरु गंधार जो दो श्रुतीका स्वरहै एक श्रुती म:

ध्यमकी लीकर तीन श्रुतीका होवे तोविकृत संज्ञा होते

है गंधारकी और तब गंधार मध्यमकी दो श्रुती लीवे और चा

र श्रुतीका होवे तब उसके अंतसंज्ञा होतेहै अरु पंचम मध्यम

की एक श्रुती लीवे तब उसके च्युत संज्ञा मध्यमके होतेहै·

तब दो श्रुती मध्यमकी गंधारहीमे आई मिले तब मध्यमके

पू॰
सं॰र॰
प्र॰सा॰
३॰

अच्युत संज्ञा होतेहै अरु पंचम अपनी तीसरी श्रुती संदीपनी
नामापर आवे तव अच्युत पंचम संज्ञा होतेहै अरु जव पंचम
अलापनी श्रुती छोडकर तीन श्रुतीका होवे तव पंचमकी
अच्युत संज्ञा होतेहै जव पंचम मध्यमकी एक श्रुती लीवे
तव पंचमकी कौशक संज्ञा होतेहै जव धैवत पंचमकी ए
क श्रुती लीकर चार श्रुतीका होवे तव धैवतकी विकृत
संज्ञा होतेहै अरु जव धैवतकी एकश्रुती निषाद लीकर
तीनश्रुतीका होवे तव निषादकी कौशक संज्ञा होतेहै॰

नव निषाद खरजकी दो श्रुती कुमुद वती नामाकरके लीये

नव निषादकी काकुली संज्ञा होतेहै ॥ इतिवारांविकृतभे

दवर्णनम् ॥ सप्तस्वरशुद्ध और १२ बारां विकृतस्वर ईसभ मि

लकरके १९ उनीस्वर होतेहै और इनके चारभेदहै एक वादी

दोसरा संवादी तीसरा अनुवादी चौथा विवादी वादी राजा सं

वादी मंत्री अनुवादी चाकुर अवादी शत्रु ईजो चार भेदहैं वा

स्ते रागीकी स्वरूप देखानिकि यथा योगहै कैसे चार प्रकार

का राग होताहै औडभ षाडभ संपूर्ण संकीरण औडभ पां

सू॰
सं॰ १॰
म॰ ला
३१

पांच स्वरका होताहै षाडव ६ छेस्वरका होताहै और संपूरण
सात स्वरका होताहै और संकीर्ण राग मिला वह्को कहतेहै
अथवादीआदिकअर्थम् ॥॰ वादी उस स्वरको कहतेहै जि
ससे रागकी उत्पतीहो और संवादी ओस स्वरको कहतेहै जो
स्वररागको शोभादेवे और अनुवादी ओस स्वरको कहतेहै जि
नकी लगने करके नाराग बिगरी ना सौरी अरु विवादी उसस्व
रको कहतेहै जिस स्वरकी लगनीसे रागभी भेगड जावी अरु
जिस रागमें जो स्वर वर्जितहै उसको विवादी कहतीहै ॥॰

इतिवादेस्वरादिक अर्थस्वरूपवर्णनम् अथवादीआदिकस्वरज्ञा
नम् ॥ खरज स्वरका मध्यम और पंचम स्वर संवादी होताहै अ
र्थात् जिस रागमै खरज स्वर वादी होताहै उस रागमै मध्यम और
पंचम संवादी होताहै औ ऋषभ और गंधार धैवत और निषाद ईचा
रो अनुवादी होताहै अरु जब निषादकी काकली संज्ञा होवे तब
अवादी होताहै ॥ इतिखरजस्वरवादीअवादीवर्णनम् ॥
अथऋषभस्वरवर्णनम् जिस रागमै ऋषभ स्वर वादी होवे उसमै
धैवत संवादी होताहै खरज मध्यम पंचम निषाद उसमै अनुवा
दी होतेहै अरु गंधार उसका अवादे होताहै इतिगंधारवर्णनम् ॥
अथमध्यमवर्णनम् जिसरागमै मध्यम स्वर वादे होवे उसका खर
ज और निषाद संवादे होताहै ऋषभ और गंधार अन्तर और पंचम
ईअवादे इसकि होतेहै और गंधार शुद्ध और धैवत और शुद्ध पंच
म ईअनुवादे होतेहै इतिमध्यमस्वरवर्णनम् ॥ जिस रागमै
गंधार स्वर वादे होवे उसमै निषाद संवादे होताहै और ऋषभ अ
वादे होताहै खरज मध्यम पंचम धैवत ईअनुवादे होतेहै ॥
इतिगंधारवर्णनम् अथपंचमवर्णनम् ॥ जिस रागमै पंचम

स्वर वादी होवे उसमे खरज संवादे होताहै ऋषभ गंधार मध्यम धैवत नि षाद ई इसकि अनुवादे होताहै इसका अवादी स्वर कोई नही होताहै ।। इतिपंचमवर्णनम् ।। अथधैवतस्वरवर्णनम् जिस रागमे धैवत स्वर वादी होवे उसमे ऋषभ संवादी होताहै इतिधैवतस्वरवर्णनम् अथनिषादवर्णनम् जिसरागमे निषाद वादी होवे उसमे गंधार औार म ध्यम संवादी होतीहै ऋषभ औार पंचम अनुवादी होताहै औार धैवत अ वादी होताहै इतिनिषादवर्णनम् इतिउने ७ स्वरवर्णनम् ।। अथमूर्छनाभेदस्वरप्रतेवर्णनम् फ्रतिकि विश्राम स्थावको मूर्छना कहतीहै अरु मूर्छना एकस्वरके तीन होतेहै तन्नकारोमें इसका नाम मीडु कहतीहै अरु इलम मूसीकेमे इसको जरम कहतीहै खरज स्वरके मूर्छनाके नाम आमोदनी प्रमोदनी विमोदनी ३ ऋषभ स्वर मूर्छनाकि नाम दीघी प्रीच्चा अभ्रंगी ३ गंधार स्वर मूर्छना समुखी अचित्रा स्वावा ३ मध्यम स्वरमूर्छनाके नाम आरामणी कामणी अभ्राम नी ३ पंचम स्वरके मूर्छनाके नाम कोमली निर्मिली जमली ३ धैवत स्वरके मूर्छनाके नाम अस्लारनी अहारनी आधारनी ३ निषाद स्वरके मूर्छनाके नाम लज्जा संकोची कपिला ३ इतिसमस्वरमूर्छनानाम

पु॰ सं॰ ३॰ म॰ स्ना ३२

वर्णनम्   सितारके वजावनेके अक्षर अरु तिनका स्वरूप प्रमाण वर्ण
नम् सितारके गत वजावनेकी टाई अक्षर असलमेंहै तिनकानाम ढ
कार रिकार संबंध ड़कार जिसको ड़ुकार बोलतीहै और अर्ध अकार ति
तिनके तलकारोंने आठ अक्षर वनाई इसप्रकार करके डिड़ ड़ा डिड़
ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ८ इनअक्षरोंको इकत्र करके यथा क्रम पूर्वक जिस
का वर्णन आगे आवेगा वजावनेमें पहिली आउर्द होतेहै जिसको अ
स्थाई कहतेहैं इसके चार प्रकार होतेहै अस्थाई अन्तरा आभोग ईकुल वं
ती अक्षरोंका होताहै जिसको पंगती छंद कहतीहै इसप्रकार डिड़
ड़ा डिड़ ड़ा ड़ा ड़ा ड़ाड़ा ड़ा ॥पहिलीआवुर्द॥ डिड़ ड़ा डिड़ ड़ा ड़ाड़ा
ड़ा ड़ा दूसरीआवुरद डिड़ ड़ा डिड़ ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा तीसरीआ
वुरद डिड़ ड़ा डिड़ ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ॥इतिचौथीआवुरद॥
वजावना चाहिई इसको गतकहतेहैं सो इजोप्रकार पीछे इसध्यायमें
वर्णन किया गयाहै जिसका नवेषा आगे इसके साथ अलग अलग
वनाकर लगाया जाईगा उससे चार गुण वधीक वनाकरके उसको न
वेषा जोड़देना॥अथअक्षरस्वरूपवर्णनम्॥श्रीमन्महाराजाधिराज जीने
लोकोंकेउपकार हेतु तलजो सितार जिसकी सरगम वजावनेके तानके

८०
सं० र०
प्र० सा०
३३

वासते ई नो ठिड ग ठिड ग ठ्रा उग्रा ठ्रा आदिकअंतरहै तिनके और आवृती निवृतीके और मींड़के और पलटा और तान और ग्राम और तमके स्वरूप बनाईदे इनको देखकर गत बजावनीका ज्ञानहोताहै॥ अथठि ड्स्वरूपम्॥ ठिड ऽ॥ अथठास्वरूपम्॥ ∧॥ अथठ्रास्वरूपम्॥ —
अथठाठ्रास्वरूपम् ∿ अथआवृतीस्वरूपम् ⌒ अथनिवृतीस्व रूपम् ⌐ अथमध्यस्वरूपम् ० अथमींड़स्वरूपम् + अथपलटा स्वरूपम् ξ अथतानस्वरूपम् ∿ अथग्रामस्वरूपम्॥ ⊓ ⊓⊓ ⊓⊓⊓
अथस्वरस्वरूपम् खरज १ ऋषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ स रे ग म प ध नि ७ अथतारस्वरूपम् ०।० अरु । अलापअंतरम् ननरी ईना आनन उनन उआनाम अद ननरी तानरी नना उननना आनरा नन नर नाना नाम अदन नम् आ नन नुम् नन नरी नना नरी र नना ननान आन नान आन नान आन रान ननोम् आनन नन ननान ननोम् ननोम् नन नरी नना आननान ननोम् ननाना नोम् इतिअलापअंतरम्॥ इतिसर्वसंगीत ग्रंथभावेनचतमतप्रमाणेन चल तवीणाप्रकारासंगीतरत्नाकीरप्रकाशसारद्वितीयोध्यायः समाप्तः शुभम्॥

अथ तृतीयोध्यायः प्रारंभः प्रथम भैरवराग वर्णनं वनिकेवासते तादवना

निकेप्रकार चारमत गीतकेहै मतवर्णनम् प्रथमशिवमत द्वितीया

हनुमानमत तृतीयाभरतमत चौथेशारदामत इनामतनाकि चारऋ

षि चारनाइक चारविनयोग चारछंद चारदेवता चारनाइका अलग अ

लगहै तिनकावर्णन अथशिवमतवर्णनम् परमात्मादेवता पंक्तिछं

द यंगबीजं अग्नितत्व हाहागंधर्व श्राअलंकार सामवेद सरस्वतीशा

क्ति शान्तिरस वैजोनायक मोघ्धानायका इतिशिवमतवर्णनम्

अथहनुमानमतवर्णनम् विष्णुदेवता वैष्णवी शक्तिः गायत्रीछंद हा

अलंकार ऊंगंबीजं वायुतत्व उहूगंधर्व कात्यायनिऋषि तानसेननायक

मध्यानायका इतिहनुमानमतवर्णनम् अथभरतमतवर्णनम्

परमात्मादेवता प्रकृतिछंद हुंबीजं ईअलंकार वायुतत्व भरतऋषि

हरिदासनायक हंसशक्तिः प्रगल्भानाइका इतिभरतमतेनवर्णनं

अथशारदामतवर्णनम् ब्रह्मादेवता गायत्रीशक्तिः पृथ्वीतत्व श्रीं

बीजं तंमरुगंधर्व नारदऋषिः मुग्धानाइका इअलंकार अनुष्टुप्छंद

इतिशारदामतवर्णनम् इनकि चारवानि होतीहै पहिली नोहार

वानी वैजोनाइक दोसरा भरतमत डागरवानी हरदासनायक तीसरी

९॰
सं॰ र॰
प्र॰ मा॰
२४

सारदामत खंडारवानी ॥॰ चौथी हनुमानमत गोवर् हारवानी तानसेन
नायक ॥ इतिचतुर्मतवर्णनम् चारोमतोके चारप्रकारकि रागचलनि
किविधि होतीहे चारप्रकारकि वंशावलि होतीहे तिसकाप्रकार व
र्णन कियाहे अथशिवमतअनुसाररागवंशावली प्रथम श्रीराग दोस
रावसंत तीसरा अडोरु चौथेपंचम पंचमामेघ छठमा नटनारायण इनकि
यां छै८ छै८ इस्त्री ॥ अथश्रीरागइस्त्रीनाम प्रथमटंकमल्हार दोस
रागोजरी तीसरीत्रिवन चौथीगौरी पंचमेकिदारी छठमी मधुमाधवी॰
इतिश्रीरागइस्त्री ॥॰ अथवसंतरागभार्यावर्णनम् ॥ प्रथमदेशी ॥१
दोसरी देवगिरी तीसरीवैराटी चौथीटोडी पंचमीललिता छठमीहिंड
ली ॥॰ इतिवसंतरागरागनीवर्णनम् अथअडोरुरागइस्त्रीवर्णनम्
प्रथमविभास दोसरीभूपाली तीसरी करनाटी चौथेवडहंसका पंचमी मा
लसीरी छठमीभैरवी ॥॥ इतिअडोरुरागभार्याकथनम् ॥ अथमेघरागभार्यावर्णनं ॥
प्रथम मल्हारी दोसरी सोरठी तीसरीसावीरी चौथी कौशकी पंचमी गंधा
री छठमीपजेटमंजरी ॥ इतिमेघरागभार्यावर्णनम् ॥ अथनटनारायणभार्यावर्णनम् ॥
प्रथमकामोदी दोसरीकल्याने तीसरी आभीरी चौथेनाटक पंचमी सारंग
छठमी नटहमीर ॥ इतिनटनारायणभार्याकथनम् ॥ इतिशिवमतेन ॥

अथभरतमतसंगीतदामोदरनारायणोक्त ॥ भरतमालानुसाररागनामानि ॥ प्रथम भै
रव द्वितीयवसंत तृतीयमालकौंश चतुर्थश्रीराग पंचम मेघराग छेमे
नटनारायण ॥ अथषट्रागस्त्रीनामानि ॥ प्रथम भैरवी दोसरीकौशकी २
तीसरी विभास चौथिविलावली पंचमीबंगाली ॥ इतिभैरवराग ॥ स्त्री ॥
पहलीहिंडोली दोसरीदेशाख तीसरीआलोल चौथि प्रथममंजरी पंच
मीमल्हार ॥ इतिवसंतरागस्त्रीनामानि ॥ पैहिलीधोरी दोसरीखमकरी ती
सरीवराटी चौथी खंभावती पंचमीकर्नाटी ॥ इतिमालकौंशरागस्त्रीनाम ॥
पैहिलीगंधारी दोसरी देवगंधारी तीसरीमालश्री चौथीशावी पंचमी
रामकली ॥ इतिश्रीरागस्यभार्या ॥ पैहिलीललिता दोसरीमालसी तीसरी
गौरी चौथीनाटी पंचमीदेवकरी इतिमेघरागस्यभार्या पैलिती १
नारायणि दोसरीआभीरी तीसरीकामदी चौथीगुजरी पंचमी कुकुभ
इतिनटनारायणरागस्यस्त्री ॥ इतिभरतमतेन ॥ अथहनुमानमतेन ॥ संगीतपंचम सा
र संहितायांअनुसाररागवर्णनम् प्रथममालव दोसरी मल्लार ती
सरेश्रीराग ॥ चौथीमनवथक पंचमीहिंडोल छेमीकरनाट ॥ इतिरागानि ॥
अथरागणीषट्रागस्त्री ॥ पैहिलीधेवी दोसरीकेदारी तीसरी संध्या चौथी
मेघमाजारी पंचमीसिंदूसंविनः ॥ इतिमालवरागस्यस्त्रीनामानि ॥

पैहिली मलारी दोसरी ललता तीसरी पटमंजरी चौथी मधुपरी पंजमी तुपकरी इतिमलारराग रागनीनामानि ॥ पैहिली तानसी १ दोसरी मालसी तीसरी रामकली चौथी कुमारी पंजमी वेराटी ५ इतिश्रीरागरागनीवर्णनम् ॥ पैहिली कांबोली दोसरी नाटभाषा तीसरी नाटका चौथी गुणमंजरी पंजमी शावरवरी ॥ इतिमेत करागस्यरागन्या । पैहिली भैरवी दोसरी वंगहारी तीसरी मेच नानी चौथी पंचमी पंचमी अबातोई इतिहंडोलरागस्यइस्त्रीनामानि पैहिली चांदनी दूसरी सिंधवी तीसरी विभास चौथी विलावली पंजमी अपाटनी इतिकरनाटरागस्यस्त्रीनामानि ॥ इतिह नुमानमतनुसारीरागरागणीनामवर्णनम् ॥ अथशावराम मतरागरागनीसंगीतरत्नमालाअनुसारनामवर्णनम् मन्मथा आचार्ये पैहिली करनाट दूसरी मलोविख्यातनाटनामानि तीसरे देशीत विख्यातमलारनामः चौथी आतविख्यातदेशाखः पंजमी मोल विख्यातमालव छैमी वसंत इतिषट्रागनामाः ॥ अथरागन्यः पैहिली चांदनी दूसरी मालश्री तीसरी सिंधुवी चौ थी विलावली पंजमी अपाटनी छैमी विभास इतिकरनाटरागरागनी

पेहिली कांबोली दूसरी नाटभाषा तीसरी नाटका चौथी गुणमंजरी
पंजमी खिवखरी छेमी सुखरी इतिनाटनाटरागरागनी ॥ पे
हिली मलारी दूसरी ललिता तीसरी पटमंजरी चौथी मधुकरी पं
जमी रूपकरी छेमी देषा इतिदेषी ॥ अथमलाररागस्यरागनी
पेहिली गुजरी दूसरी रामकली तीसरी कुंदकरी चौथी स्वेदका पंज
मी तानसी छेमी वराटी इतिआतअर्थात् देषाखरागस्यभार्याकथ
नम् पेहिली शेवी दूसरी केदारी तीसरी संज्या चौथी मेघमाजारी
पंचमी कधुमचिंता छेमी लवणा इतिमोलो अर्थात् मालवरागस्य
प्रयावर्णनम् पेहिली भेरवी दूसरी रंगारी तीसरी मेघमानी चौथी पंच
म पंजमी अंबातोर् छेमी सनोटक ॥ इतिवसंतरागस्यरागनीनामः
इतिघागदामतीनसर्वसंगीतअनुसारनामकथ्यति अथदक्षणेविसु
नाटकः प्रथमेभेरवश्चैवद्वितीयेभूमपालिकाः तृतीयेपुंश्रीरागश्च
चतुर्थीपदुमंजरी १ पंचमेचवसंतश्चमालवरागस्यषष्टमे अपंरागस्य
पुंसंग्याकथ्यतेविसुनाटकम् २ अथवर्तमाननामानिभाषायांलिख्यते
प्रथम भेरव द्वितीय मालकोश तृतीये हंडोल चतुर्थी दीपक पंचम
श्रीराग छेमे मेघराग अथरागस्यरागनीनामानि पेहिली मधुमा

सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
३९

पवी दूसरी भैरवी तीसरी बंगाली चौथी वैराटी पंचमी सैंधवी इतिभै
रवस्यरागस्यअंगनः पेहिली टोडी दूसरी खंभावते तीसरी गौरी चौ
थी गुणकरी पंचमी कुकुभ इतिमालकौंशस्यभार्याणि ॥॰ पेहिली
विलावली दूसरी रामकली तीसरी देवशाख चौथे पटमंजरी पं
चमी ललित इतिहिंडोलस्यरागनीयम् पेहिलीकेदारि दूसरी
कानरि तीसरी देशि चौथी कामदी पंचमी नट इतिदीपकरागस्यश्री
यानामानि ॥॰ पेहिली वसंती दूसरी मालवी तीसरी मालसिरि चौ
थी असावरी पंचमी धनासीरि इतिश्रीरागस्यपंचभार्यायाम् ॥॰
पेहिली मल्हारी दूसरी देशकारि तीसरी गोपाली चौथी गुजरी पंच
मी टंकी इतिमेघरागस्यस्त्रीयाकथ्यते ॥॰ इतिहनूमानमतेन॰
अथशिवमतेन प्रथम भैरव दूसरा मालकौंश तीसरा हंडोल चौथी
श्रीराग पंचमी दीपक छटेमे मेघराग इतिपुरुषस्यरागः ॥॰
इतिसंगीतसिंगारतथाविस्तारस्याम् पेहिली भैरवि दूसरी आसा
तीसरी टोडी चौथीगुणकली पंचमी विभास इतिभैरवप्रथमरागस्य
पंचभार्याणि पेहिली रामकली दूसरी आसावरी तीसरी भ्याग चौथी
पटमंजरी पंचमी पारिजात इतिमालकौंशस्यपंचस्त्रींनामानि॰

पेहिली गुजरी दूसरी विलावली तीसरी वसंती चौथी पंचम पंचमी
सिंदूरी इतिहिंडोलरागस्यरागनीनामानि पेहिली धनासीरी दूस
री मालसिरी तीसरी गोरी चौथी तोलसीरी पंचमी जेतसिरी इति
रागरागस्यपंचपत्नीनामः पेहिली पूर्वी दूसरी पलासी तीसरी
कल्यानी चौथी यमन पंचमी मधुमाधवी इतिदीपकरागस्यराग
न्या: पेहिली मलारी दूसरी कामोदी तीसरे इमन चौथी सारंग पं
चमी सोरठ इतिमेघरागस्यरागनीनामः ॥ इतिशिवमतेन०
अथभारतमतेनरागनामकथनम् पेहिली भैरव दूसरी मालकोश
तीसरी हिंडोल चौथी श्रीराग पंचमी दीपक छठमे मेघराग इतिषड्रागः
पेहिली भैरवि दूसरी टोरी तीसरी विभास चौथी गुणकली पंचमी
विलावली इतिभैरवरागस्यस्त्रीं पेहिली आसा दूसरी रामकली
तीसरी मालसिरी चौथी पटमंजरी पंचमीसूही इतिमालकोश
रागस्य:रागनि पेहिली असावरी दूसरी वसंती तीसरी पूर्वी चौ
थी मधुमाधवी पंचमी खंभावती इतिहिंडोलरागस्यस्त्रीनामा
पेहिली धनासिरी दूसरीजेतसिरी तीसरी धोलसिरी चौथी सिंदूरी
पंचमी गोरी इतिश्रीरागस्यभार्या पेहिली प्रदीपकी दूसरीकामदी

शृ॰
सं॰ र॰
ग्र॰ सा॰
३७

तीसरी सोराष्ट्री चौथी विहाग पंचमी पलासी इतिदीपकरागस्यभार्या
पेहिली मलारी दूसरी सारंग तीसरी गौंड चौथी गुजरी पंचमी नाटी॰
इतिमेघरागरागनी ॥॰ इतिभरतमतेन पेहिली भैरवी दूसरी
मालकौंश तीसरी हिंडोल चौथी श्रीराग पंचमी दीपक छठे मे
घराग इतिशारदामतेनअनुक्रमेणपुरुषरागस्यषट्रागनामा ।॰
पेहिली भैरवे दूसरी आसा तीसरी विभास चौथी गुजरी पंचमी गु
णकरी इतिभैरवरागस्यइस्त्री पेहिली असावरी दूसरी टोडी
तीसरी सैंधवी चौथी कुकुभ पंचमी विलावली इतिमालकौंशरा
गस्यइस्त्रीवर्णनम् पेहिली पूर्वी दूसरी आभीरी तीसरी वहारवसं
ती चौथी विडंसका पंचमी रामकली इतिहिंडोलरागस्यइस्त्री ॥॰
पेहिली धनासीरी दूसरी मालसीरी तीसरी धौलसीरी चौथी ज्येत्
सीरी पंचमी गौरी इतिश्रीरागस्यइस्त्री पेहिली प्रदीपकी दूसरी
पट मंजरी तीसरी कामोदी चौथी देमकरी पंचमी भिहाग इतिदी
पकस्यइस्त्री पेहिली मलारी दूसरी सारंग तीसरी गौंड चौथी म
धुमाधवी पंचमी सोराष्ट्री इतिमेघरागइस्त्री ॥॰ इतिशारदामते
नरागरागनीनामानि ॥॰ अथरागस्यवंशनामवर्णनम् ॥॰

एक रागकि आठ आठ पुत्रहै जिसते षट् राग त्रिंशात् रागणी ३० अष्ट
चत्वारिंशात् ४८ षट् रागस्यपुत्रम् समोह चत्वारिंशोति ८४ श्रीश्री
१०८ सरस्वतिभगवतिजिनि नारद मुनीजीको अरु श्रीनारदजिने
नायक बैजोको रागोंका उच्चारण बीज मंत्र आवाहन आसन विनियो
ग छंद देवत्रटषी गंधर्व संयोग उपासनादेइ श्री श्री कृस्नचंदजिनी
१०८ एकसो अठ रासमंडलकीसमे गोप्पीयोंकी मुक्तद्वारा सोलीं ह
जार आठसो सठ ६० रागप्रकटकीया जिसमेसी चोरासि ८४ रागराग
नी इसजगतमे विख्यातहै अरु रागदो प्रकारके होतीहैं एक देशी
एक मार्गि मार्गि श्री रागहै जिनका वर्णन पिछ्छ कीयाहै ओर देशी
श्री रागहै जोदेश देशांतरोंमें अपने मर्यादा पर गायन करतेहैं अरु
जो तानसेन नायकने तीनसो सठ ६० रागरागनी कियेहै उनको देशी
कहतेहैं इनकावर्णन आगे आवेगा अथभैरवरागस्यपुत्रवर्णनं
प्रथम भंखार द्वितीय झंखार तीसरा विलावल चोथा गंधार पंचमा
लच्छाशाख छठमा भीमसाख सतमा सूहा अष्टमा देवगंधार ।।१
इतिभैरवपुत्रः अथमालकौशरागपुत्रनामानि प्रथमकौशीया
दूसरा भपहागरा तीसरा माधव चौथा षट् पंचमा करनाट छठमा मा

सू॰
सं॰र॰
ग्र॰सा॰
३८

लवा सप्तमा सिंदुरा अष्टमा हेम इतिमालकौंशरागस्यपुत्रः अथहिंडो
लरागपुत्रनामानि प्रथम वसंत दूसरा सामंत तीसरा अलैया चौथा श्या
म पंचमा संखराअहरण छ्टेमा संखराभरण सप्तमा मालिगौरा अष्टमा
भीम इतिहिंडोलरागस्यपुत्रः अथश्रीरागपुत्रनामानि प्रथम
पूर्वी दूसरा पूरिया तीसरा तैलंग चौथा मधुसूदन पंचमा जैत छ्टे
मा टंक सप्तमा मलोहा अष्टमातेम इतिश्रीरागस्यपुत्रः अथदी
पकरागपुत्रनामानि प्रथम कानरा दूसरा मारू तीसरा नटकिनर
चौथा केदारा पंचमा हमिर छ्टेमा सुगंदे सप्तमा कल्यान अष्टमा छा
यानाट इतिदीपकरागस्यपुत्रनामः अथमेघरागस्यपुत्रवर्णनम्
प्रथम दीपू दूसरा तोरिया तीसरा गौरा चौथा नटकीदार पंचमा गारा
छ्टेमा मुद्रिक सप्तमा रंगचुज अष्टमा मधुकार इतिमेघरागस्यपुत्रः
इतिवर्तमानरागस्यनामानिशारदामतअनुसारेणकथ्यते ॥८॥
अथतानसीनवर्णितनामरागः चारप्रकारका भैरव दो प्रकारका मा
लकौंश तीनप्रकारका हिंडोल २ दो प्रकारका श्रीराग २ दो प्रकारका
मेघराग २ दो प्रकारका दीपक छ्टेरागकी १५ पंद्रां राग प्रथमकी दे
दो २ प्रकारकि गुजरी २ दो प्रकारकि मधुमाधवी चारप्रकारकि भैरवी

दो प्रकारकि बंगाली तीनप्रकारकि बराटि २२ बांईप्रकारकि टोडी
तीनप्रकारकि खंभावति ३ तीनप्रकारकि गौरी २ दोप्रकारकि गुण
कली ३ तीनप्रकारकि कुकुभ २ दोप्रकारकि रामकलि २ दोप्रकारर
कि देशाख ३ तीनप्रकारकि पटमंजरी २ दोप्रकारकि ललित ४
चारप्रकारकि लेलिकदारी २ दोप्रकारकि कानरि ५ पांचप्रकारकि
कामुदि ५ पांचप्रकारकि नाटि २ दोप्रकारकि बसंती १ एक प्रकार
कि मालवि १ एकप्रकारकि मालसीरि २ दोप्रकारकि आसावरी ९
नवो प्रकारकि मल्हारी ३ तीनप्रकारकि देशाकारि २ दोप्रकारकि
भूपाली २ दोप्रकारकि टंकि ७ सातप्रकारकि सारंग २ दोप्रकारकि दे
वगिरि ४ चारप्रकारकि सोरठ २ दोप्रकारकि पंचम २० बीसप्रकार
कि बहार २२ बांईप्रकारकि पहाडी १ एकप्रकारकि विभास ॥

३८

38

कानरा १८ अठारांप्रकार १२ बारांप्रकारका कल्यान ७ सातप्रकारका विलावल २ दोप्र
कारका भंखोर ३ तीनप्रकारका कंखोर २ दोप्रकारका गंधार २ दोप्रकारका लछासा
ख ३ तीनप्रकारका भीसाख ३ तीनप्रकारका सोहा २ दोप्रकारका देवगंधार ३ तीन
प्रकारका कौसिया ४ चारप्रकारका व्यागरा २ दोप्रकारका माधव ३ तीनप्रकारका
षट् ४ चारप्रकारका कर्नाट् १ एकप्रकारका मालवा १ एकप्रकारका सिंहुरा २ दोप्रका
रका हेम २ दोप्रकारका वसंत २ दोप्रकारका सामन्त १ एकप्रकारका अलईया ३ तीनप्र
कारका प्रपाम ४ चारप्रकारका संखरा १ एकप्रकारका मालिगौरा ३ तीनप्रकारका भी
म २ दोप्रकारका पूर्वी २ दोप्रकारका हूजिया १ एकप्रकारका तैलंग २२ बाईप्रकारका
मधुसूदन २ दोप्रकारका जैत २ दोप्रकारका ढंग २ दोप्रकारका मलोहा २ दोप्रदोप्रकार
२ दोप्रकारका मारु ५ पंजप्रकारका नटकिन्नर ५ पंजप्रकारका कीदारा १ एकप्रकार
का हमीर १ एकप्रकारका स्वगंदेव २ दोप्रकारका छाया २ दोप्रकारका देश १ एकप्रकार
का तोरिया १ एकप्रकारका गाण्डा १ एकप्रकारका मुद्रीक १ एकप्रकारका रंगचोज २ दोप्र
कारका मधुकार् ३ तीनप्रकारकि जैजैवन्ती ५ पंजप्रकारकि योग २ दोप्रकारकि सोनि १
एकप्रकारकि काफि ४ चारप्रकारकि धनी और साठप्रकारकि उपराग ३६० तीनसोसाठ व
र्तमानराग हैं येकुल् राग जो हैं सोचार प्रकारकी होती हैं ओडव १ खाडव २ संपूरण ३ संकीर
ण ४ जो पांचस्वरसे बनताहै उसका नाम ओडव है और जो छेस्वरसी रागवनताहै उसको
खाडव कहतीहै ॥ और जो सातस्वरका बनता है उसको संपूरण कहते हैं ॥ और एकरागसे
दोसरी राग ॥ मिलकर रागवनताहै उसको संकीर्ण कहते हैं ॥ इतिरागनामानिवर्णनम् ॥१४॥
अथरागस्यउत्पत्तिवर्णनम् ॥ प्रथमभैरवरागस्य संपूर्णराग सातस्वरका पांचप्रकारकी इसकी
उत्पत्ति होती है प्रथम खर्जसे इसप्रकार खरज मध्य ग्रामवाला जिसको सुरबोलती हैं
निषाद मंदरग्रामवाला जिसको उतरा निषाद बोलते हैं पुनः खर्ज मध्य ग्राम वाला
पुनः निषाद उतरा फेर कोमलधेवत मंदर ग्रामवाला फेर निषाद उतरा फेर खरज म

स॰ २॰
म॰ सा॰
२५॰

३९

ध्यमग्रामवाला पुनः खड्ज पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला
पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः खड्जमध्यग्रामवा
ला॥ सा॥ निसा॥ नि॥ ध॥ नि॥ सासा॥ ग॥ मा॥ गा॥ रि॥ सा॥ इतिग्रहस्थाई॥ पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला गं
धार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः निषादमध्यमग्रामवाला पुनः कोम
लधैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः म
ध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः
गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मंध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यमग्रामवाला पुनः
रिषभकोमल मध्यमग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यमग्रामवाला॥ इतिअंतरा॥ अथाभोग॥ सा॥ ग॥ मा॥
नी॥ ध॥ प॥ म॥ म॥ ग॥ रि॥ गा॥ मा॥ गा॥ रि॥ सा॥ इत्यंतरा॥ पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः धैवत कोम
ल मध्यग्रामवाला न्द्रग्रामवाला पुनः निषाद मंधग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला
पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः
गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः को
मलधैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचममध्यम ग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला
पुनः गंधार मंध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला म
ध्यम मध्यग्रामवाला पुनः धैवत कोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्य ग्रामवाला पु
नः धैवत खड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्य ग्रामवाला
पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गांधार मध्यग्रामवाला
पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः गांधार मध्यग्रामवाला पुनः गांधारमध्यम ग्रामवाला
रिषभ मध्यम ग्रामवाला कोमल पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला॥ सा॥ ध॥ नि॥ सा॥ रि॥ ग॥ मा॥
ग॥ मा॥ नी॥ ध॥ प॥ म॥ ग॥ म॥ ग॥ म॥ ध॥ नी॥ सा॥ नी॥ ध॥ प॥ म॥ ग॥ रि॥ ग॥ म॥ ग॥ रि॥ सा॥ सा॥ नि॥ सा॥ नि
ध॥ नि॥ सा॥ रि॥ ग॥ म॥ ग॥ रि॥ सा॥ इतिआभोग॥ खड्जोपग्रहं न्यासंखड्जादिकमूर्छना संपूर्णाभैर
वंप्रातःगेयंतेशारदामतम्॥ टोडि गौरिरामकलीइतीनोममभागा इनदिमिला॥ किगमईईप्रक

२८

टेभेरेंराग॥ इतिशारदामतेन॥ अथद्वितीयप्रकार॥ रिषभ कोमल मध्यग्रामवाला निषाद मंदर ग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदर ग्रामवाला धेवत कोमल मंधर ग्रामवाला नि
षाद मंधर ग्रामवाला खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः गंधार
मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ
मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः गंधार
मध्यग्रामवाला पुनः गंधारमध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः निषाद
मध्य ग्रामवाला पुनः धेवतकोमल मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः
मध्यममध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवा
ला पुनः खड्जमध्यग्रामवाला पुनः निषादमंदर ग्रामवाला पुनःधेवतकोमल मंदरग्रा
मवाला॥ पुनः निषाद मंदर ग्रामवाला पुनः खड्जमध्यम ग्रामवाला॥ इतिअस्ताई॥ अथ
अंतरम॥ रि नि सा नि धा नि सा सा ग म क रे सा सा गा गा मा नी ना धा मा रे नि
सा नि धा नि सा॥ इतिअस्थाई॥ मधम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः
रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः
गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः
रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः
निषाद मंदरग्रामवाला पुनः धेवत कोमल मंदरग्रामवाला पुनः निषाद मंदर ग्रामवा
ला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः॥ इतिसंचा॥ अथअंतरा॥ मा ग रे गा गा मा ग रि सा
रे नि सा नि ना नि सा॥ इतिअंतरः॥ गंतारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला
पुनः निषादमध्यम ग्रामवाला पुनः धेवतकोमल मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यमग्रा
मवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ को
मलमध्यग्रामवाला पुनः रिषभ कोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदर ग्रामवाला
खड्मेज मध्यग्रामवाला निषादमंदर ग्रामवाला धेवत कोमल मंदर ग्राम वाला पुनः

स॰ र॰
प्र॰ सा॰
५०

निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इति त्रिभोग ॥ ॐ नमः स्वरस्मै ॥ ॐ तनोतन ॥
॥ गा ॥ रे ॥ नी ॥ धा ॥ प ॥ म ॥ ग ॥ रे ॥ रे ॥ नि ॥ सा ॥ नि ॥ ध ॥ नि ॥ सा ॥ रे ॥ नि ॥ सा ॥ नि ॥ धा ॥ नि ॥ सा ॥ इति त्रिभोग ॥
॥ द्विखभोग ग्रहन्यासं द्विखभ आदि मूर्छना ॥ भैरवं संपूर्णं प्रातः गीयते मनिषंकरः ॥ १ ॥
होइरा ॥ अंशन्यासग्रहतीनो मध्यम ऋषभ स्वरजान ॥ शिवमत भैरो प्रात हिमावत गुणी ह
जान ॥ १ ॥ इति शिवमतेन ॥ अथ हनुमानमतेन ॥ गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
पुनः गंधार मध्यग्रामवाला कोमल रिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला·
निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः
गंधार मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत कोमल
मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम म
ध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्य
ग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः कोमल रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः षड्
जमध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः म
ध्यम मध्यग्रामवाला पुनः ॥ इति अस्थाई वर्णितम् ॥ अथ अंतरा ॥ गा ॥ मा ॥ गा ॥ रे ॥ सा ॥ नि ॥ सा ॥ मा ॥ गा ॥
पा ॥ नि ॥ धा ॥ प ॥ म ॥ प ॥ मा ॥ गा ॥ मा ॥ गा ॥ रे ॥ सा ॥ नि ॥ सा ॥ मा ॥ इति अस्थाई ॥ गंधार मध्यग्रामवाला मध्य
म मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्राम
वाला गंधार तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत
मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पुनः
पंचममध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्य
म मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम म
ध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः
षड्ज ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः ॥ निषाद ॥ मंदर ग्रामवाला ॥ पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ पुनः ॥
मध्यम ॥ मध्यग्रामवाला ॥ इति अन्तः आभोगः ॥ अथ अंतरम् ॥ गा ॥ मा ॥ प ॥ नि ॥ सा ॥ गा ॥ रे ॥ नी ॥ धा ॥ नी ॥

धा॥ धा॥ मा॥ ध॥ मा॥ गा॥ गा॥ मा॥ ग॥ रे॥ सा॥ नी॥ सा॥ मा॥ इत्यन्तरः॥ गांधारंषग्रहंन्यासंगंधा
रादिकमूर्छना॥ संपूर्णांभैरवेगेयं मातयां हनुमान्मतम्॥१॥ दोहा॥ अंशग्रान्यासगंधा
रस्वरनिसकोविग्रहजान मातवि भैरवगाइये आपकहतहनुमान॥१॥ इतिहनुमा
नमतेनकथ्यते॥ अथभरतमतअन्तरस्वरतानम्॥ कोमलधैवत मंदर ग्रामवाला निषाद
मंदर ग्रामवाला षड्जमध्यम ग्रामवाला गंधार मध्यम ग्रामवाला मध्यम मध्य-
ग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला कोमल धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रा-
मवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवा-
गंधार मध्यग्रामवाला पुनः कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
पुनः कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्राम-
वाला पुनः निषाद मंदर ग्रामवाला पुनः कोमलधैवत मंदरग्रामवाला पुनः
निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला॥ इतिस्थाई॥ अथअन्तरम्॥
ध नि सा ग म नी ध ध ग म रे ग रे सा रे नि सा नि ध नी सा॥ इतिस्थाई॥
गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला निषाद
मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला कोमल धैवत मध्य
ग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पुनः निषाद म
ध्यग्रामवाला पुनः कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः
इत्यन्तरः॥ अथअन्तरम्॥ ग॥ मा॥ ध॥ नि॥ सा॥ नी॥ ध॥ प॥ ध॥ नी॥ ध॥ प॥ ध॥ नी॥ सा॥ इतिअन्तरः॥ नी ध
निषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम
मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमल धैवतमध्यग्रा
मवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला
कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार
मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला गंधा
रमध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्य ग्रामवाला ग्रं-

स॰र॰
म॰सा॰
२३५।(

पुनः कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला। षड्ज मध्यग्रामवा
ला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला कोमल धैवत मंदरग्रामवाला। निषाद मंदरग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला॥ इतिप्यारम्भोगः॥ अथ तानाः॥ नी ध॥ ध॥ म॥ ग॥ म॥ ध॥ नी॥ सा॥
नी॥ ध॥ ध॥ म॥ ग॥ म॥ रे॥ ग॥ रे॥ सा॥ रे॥ नि॥ सा॥ नि॥ ध॥ नि॥ सा॥ धनीसा॥ गमनी॥ धधग॥ मरे
ग॥ रेसारे॥ निसानी॥ धानीसा॥ गमध॥ नीसानी॥ धधध॥ नीधधा॥ नीधधा॥ मगम॥ धनीसा॥
इति आभोगः॥ धैवतांशग्रहन्यासं धैवतादिक मूर्छना निषान्तं भैरवं गेयं भारतमतेन
कथ्यते॥१॥ दोहरा॥ न्यासअंशग्रह धैवत सुरजानो संपूरणभैरव भरतविधानो॥१
रामकलि गौरी दोउ सीच भैरवोत्पत्ति कथ्यते कचिंद्धैवतसंमध्यपनीसरेगमसंतथा॥२
इति भरतमतेन॥ अथ कल्लिनाथमतेन॥ भैरवस्य उत्पत्तिर्लिख्यते॥ निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्राम
वाला निषाद मंदरग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला
कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला निषादमं
दरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवा॰
ला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्य
ग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमल धैवतमध्यग्रा
मवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला॥ इत्यस्थायी॥ निसनि रेसा रे नि
सानि धानिसा निसागाम धधाध मगा॥ इ॰॥ आ॰ गंधारमध्य ग्रामवाला मध्यम मध्यग्रा
मवाला गंधार मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला पुनः कोमलरिषभ म॰
ध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पुनः गंधार
मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रा
मवाला षड्ज मध्यग्रामवाला॥ इत्यन्तरा॥ अथ अन्तराः॥ गमगरे रेगमध गमग गरेसा नि
सा॥ इत्यन्तरा॥ गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला॰
षड्जतार ग्रामवाला निषादमध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला निषाद मध्यग्रा

२३

मवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला रिषभको
मल तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्
ज मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यमग्रामवाला को
मल मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला निषाद म
ध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला गंधार ता
रग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद
मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम म
ध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला नि
षाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदर ग्रामवाला
षड्ज मध्यग्रामवाला॥ निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
इत्याभोगः॥ अथ स्वरम्॥ गम धनीसा नी सा नीरे सा रे नीसा मधमा
धा नीसा नीगरेसा नीसा गमरेसा नीसा नीसा रेसारे रे निसा निधा
निसा॥ इत्याभोग॥ निषादांशग्रहंन्यासं निषादिकमूर्छना प्रातश्चभैर
वंगीयं कल्लिनाथमतेनच॥ दोहा॥ प्रातहि भैरवगाये ईकालीमतअनुस्वार
निषादन्यासलेअंशग्रहवंसेकियोउचार॥ १॥ इतिकल्लिनाथमतेन॥ इतिपंचमतअ
नुस्वारभैरवरागस्यवर्णनम्॥ समाप्तिसमागमम्॥ शुभम्॥

ॐ श्रीगणेशायनमः। ॐ नमोभगवतेवासुदेवाय ॐ नमोविघ्नहर्त्रेनमः ॐ नमोगुरुभ्योनमः ॐ नमोनमः ।
अथसंगीतरत्नाकरेतंत्रीध्यायप्रारम्भः सर्वसंगीतसारानुसारेणलिख्यते तत्रप्रथमकोर्थः तीनप्रकारकासंगीतहो
ताहे गीत १ वाद्य २ नृत्य ३ वाद्यकोतंत्रकहतेहे औरवाद्यचारप्रकारकाहोताहे तत १ वितत २ घन ३ शि
खर ४ औरइसवाद्यकीचारजातीहे ब्राह्मण १ क्षत्रिय २ वैश्य ३ शूद्र ४ औरइन्सोकेतीनभेदहोतेहे उत्तम १
मध्यम २ निकृष्ट ३ औरतीनइसकेलोककहतेहे इंद्र १ नाग २ मर्त्य ३ ततहे इंद्रलोकते वितत २ औरघन मा
र्त्यलोकमे शिखरनागलोकमें तत औरवितत अवघन अवशिखर ४ मध्यमतः ततलक्षणं अलाविनीवीणा
संपूर्णरागोकीइससेप्रतीतिहोतीहे तस्यावर्णनं ॥ वीणादावर्णन अवतालीअंचीया ४८ सूत्र २४ लंबाए
कदंड वासका वारिखका वातनकासीदा औरसफा और उसकेअंदरसे पोलाऊ कनिष्ठकाजोअंगुलीहे जिसको
चिच देशभाषामेकहतेहे और कश्मीरिभाषामे केसकहतेहे उसकेमध्यकेगंठ इतनाप्रमाण पोलानआदसे
अंततक दंडमेचाहिये ॥ अंचीनी विसे छोड़कर हरेकाप्रारंभ जिनकोमारकहतेहे उसदंडकी उपरजोडने औ
र २४ अंचीमें वाईसपरलगावने १२ अंचीमें पांचकीली तीनएकतरफ दुएकतरफ दुकीलीमध्यमेसारीकेपास
एकउपरलीमध्यम पंचमकीवीच एकदोनो ऋषभ चरि औरउतरिकेवीच दोसरिग्राममध्यके और दोनोंमे
र दोनोंमे गोल नीचेसे छेदकरके और उपरसे एकलकड़ी लाटोंके तरे पीचदार उनदोनोंतोंभोके
गलके उपर जोडदेनी उजोवीनका दंड है उसकोनीचे २ दोछेदकरने एक १ यारा अंचिके अंत
के उपर दंडके नीचलेपास दोसरा उजोकिलीहे ८ छेमेमधमकि सारकेपास ३८ छेसमे अंचीके उपर
छेदकरना उनछेदोमे पेचलगाने उनछेदोमे पदोनोतोंभे जोडदेने दंडकेसाथ और दंड गोलहोवे दंडके अं
तकेनीचे एक सरपरी तारोकेरखनेवास्ते सारपत्तिकी सूरत पत्ता संपुक जोडनीप और पंजछेद सर
परीके उपर दोछेद २ दोपत्तोंमे तार टकानेवास्ते करणा २२ और वाईसपर लकरीके चोरस नीचेसे गाहुम
उनके उपर फोलादी लोहेकी पट्टी लगाकर क्रमपूर्वक दंडके उपर मोममे जोडनीजिसका प्रकार
आगे आवेगा अथअंचीप्रमाण अंची २ अंगुलकी एकअंचीहोतीहे और २ दोअंचीका एकसूत्रहोताहे
१२ सूत्रोका एकगजहोताहे ॥ अथसूत्रप्रमाणम् ॥ चारअंगुली प्रमाणकानाम सूत्रहोताहे जिसको
वपाकहतेहे इसअनुसार माफक नकसेके अलाविनी वीणावर्णनवणी चाहिए अथस्वरनाम ॥
खडज १ ऋषभ २ गांधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ अथबाईसश्रुती वर्णन खडज
सरकी ४ चारश्रुती तीनश्रुती ऋषभकी दोश्रुती गान्धारस्वरकी चारश्रुती मध्यमस्वरकीचार पंचम
कीतीनश्रुती धैवतकी दोश्रुती निषादकी अथश्रुतीनाम श्रुती तीव्रा १ कुमुद्वती २ मंदा ३ छंदोव
ती ४ इतिखर्जश्रुती दयावती १ रंजनी २ रतीका ३ इतिऋषभश्रुती ॥ रौद्री १ क्रोधा २ इतिगान्धा
रश्रुती॥ वज्रिका १ प्रसारणी २ प्रीती ३ मार्जनी ४ इतिमध्यमश्रुती ॥ क्षिती १ रक्ता २ संदीपनी ३ आ
लापनी ४ इतिपंचमश्रुती ॥ मदंती १ रोहिणी २ रम्या ३ इतिधैवतश्रुती ॥ उग्रा १ क्षोभनी २ इतिनिषा
दश्रुती ॥ श्रुतीकाक्याअर्थहे श्रुतीकहनेहे स्वरकेकचे स्वरूपकोजिसकेउच्चारन करके स्वरकास्वरूप
एकास्वरहोनाहे उसकोश्रुतीकहतेहे इतिस्वरवर्णनम् ॥ अब स्वरदोप्रकारकाहे एकउतरा एकच
ढा जिसकोआरोही अवरोही कहतेहे आरोहीचढना अवरोहीउतरना जिसको संस्कृतमे आहती निह
ती आहतीचढना निहतीउतरना दोप्रकारकानादहोताहे आहत अनाहत व्यक्त अव्यक्त उत्तम ॥

सं० २
प्र० सा०
१

मध्यम ये जो नाद है तिसके स्वरूपको ये अलावनी वीणा संपूर्ण संगीतके स्वरूपको देखवती है अथः स्वरबंधनप्रकारः इसनरा दंडके ऊपर जो वर्णन कियाजाताहै तिस प्रकारकरके दंडके उपर सारीं जोडदेनी ॥ और तीनग्राम होते है तिनका नाम प्रथमग्रामनाम मंदर खरजस्वर दोसरा ग्राम मध्य मध्यमस्वर तीसरा ग्राम तार गंधारस्वर एतोवीणा है गात्र जो है शरीर तिसका उलटाव दारभी वीणा करके सरस्वतीजीने सभी स्वरोंका संयोगकरके बनाया है और नारदजीको दिया इसती इसका नाम नारदी वीणा तिसका दृष्टान्त दारवी गात्र वीणा च द्वेवीणे गानजातिषु सामिकी गात्रवीणा तु तस्याः श्रृणुत लक्षणं १ गात्रवीणा तु सा प्रोक्ता यस्यां गायंति सामगाः स्वरव्यंजनसंप्रोक्ता अंगुल्यांगुष्ठ रंजिता तस्य प्रकार ॥ मध्यम नारदान अष्टठाठ मध्यम १ पंचम २ ८ धैवत उत्रा ३ ९ धैवत ४ ७ निषाध उत्रा ५ ७ निषाध ९ षटज ७ रिषभ उत्रा ८ रिषभ ९ गंधार उत्रा १० गंधार ११ मध्यम १२ मध्यम १३ पंचम १४ धैवत उत्रा १५ धैवत १६ निषाध उत्रा १७ निषाध १८ षटज १९ रिषभ २० गंधार २१ मध्यम २२ इसको अष्टठाठ कहते है इसप्रकार ई स्वर जो सार पटरी बनी है दंडको ऊपर जोडनी एक अंचीको तीन दरजी २ कुल एकसो ४४ चौवताली दरजे दंडकि होवे २२ तेतीदरजोंके ऊपर नारदान २२ उनतालीस दरजिकी ऊपर मध्यमस्वर प्रथमकिसार ४४ चोवताली और पंजताली दरजे किवीच पंचम स्वरकिसार उनवंजा दरजेकि ऊपर उतरा धैवत स्वरकिसार ५८ छपवंजा दरजे कि ऊपर धैवतस्वर शुद्धकिसार ६१ ईकसठ दरजेके ऊपर निषाध उत्रा स्वरकिसार ६६ छेसठ दरजेकुपर निषाधस्वर शुद्धकिसार सत्तर दर्जेके ऊपर षटजस्वरकिसार ७५ पंजहत्तर दरजे कि ऊपर ऋषभ उतरा स्वरकिसार ७८ अठहत्तर दर्जेके ऊपर ऋषभ शुद्धस्वरकिसार ८२ ब्यासी दर्जेको ऊपर गंधार उतरे स्वरकिसार ८६ छयासी दर्जेकी ऊपर गंधार शुद्ध स्वरकिसार ९० नेबदर्जेके ऊपर पूर्वमध्यम स्वरकिसार ९४ चुरानवे दर्जेके ऊपर मध्यम शुद्ध स्वरकिसार ९७ सतानवे दर्जेके ऊपर पंचम स्वरकिसार १०१ एकसौ एक दर्जेके ऊपर धैवत उतरा स्वरकिसार १०४ एकसोचार दर्जेके ऊपर धैवत शुद्धस्वरकिसार १०६ एकसोछे दर्जेके ऊपर निषाद उतरेकिसार १०९ एकसोनो दर्जेके ऊपर निषाद शुद्ध स्वरकिसार ११२ और ११३ तीनांकेवीच षजस्वरकिसार ११५ एकसो पंद्रा दर्जेके ऊपर ऋषभ स्वरकिसार ११७ और ११८ अठारांकिवीच गंधार स्वरकिसार एकसोवीस १२० और एकीस दर्जेकेवीच मध्यमस्वरकिसार दंडके ऊपर सार जोडनी इसप्रकार दंडकि ऊपर सार लगानि चाहिये और सात तार इसप्रकारकरके बीनको पानी चढावनी फोलादको एक एक बाजकी तार और दो तार पीतलकी जोडा नामानि एक पंचम एक पंचम का एक उतरा और एक निशाद दोषरजा २ इसप्रकार तारनो जोडदेवे बजावे और तर्जनी अंगुलीकेसाथ बाजकी तार और कनिष्ठिकाकेसाथ जो चिकतारोंको छेडना यानि बजावना दक्षिण हाथके अंगुलीकेसाथ अरु वाम हाथके तर्जनी अंगुलीकेसाथ बाजकि तार यथायोग क्रमपूर्वक जो अंगुष्ठ वरणन होवेगा दभानी और कनिष्ठिकाकेसा प्रकार जो वृत्ति खटजकि तारे जो ग्राम थासे होती दंडके छेडनी अथ स्वर भेद वर्णनम् मध्यमकी परिलीष्की वन्त्रका नाम जो दंडकि चौनी ४४ और ४५ पंतीदर्जेपर होती है तर्जनी बांई हाथकीसे बाजकी तारको दबावे और दाई हाथके तर्जनीसे बजावे तीवर गंधार होता है और दोसरी प्रसारनीपर अतीतीव्र गंधार होता है ॥

सा स्वरमयी दास्तनी वीणा बनानी चाहिये तारससे छोटी तावडी यंत्रको दोयावडी बनानी होवे जो इसी प्रकार जो वृत्ति तकेया गया है उसे प्रकार ही दी उसदोही कोवांटली नो

और दूर्वमध्यमभीहोताहै और तीसरीश्रुती प्रीतीपर तीव्रतम गंधारहोताहै और कोमलमध्यम उसकोकह
तेहै चौथि श्रुती मार्जनीपर शुद्ध मध्यम होताहै इती श्रुती पहिली पंचमपर तीव्रमध्यम होताहै और दो
सरीश्रुतीरक्तापर होवे अतीतीवरमध्यम होताहै जिसको तरतीवर ग्रेमाहोताहै और कोमल पंचमभीक
हतेहै और तीसरी श्रुतीसंदीपनीपर तीव्रतम मध्यम होतेहै और उसकोकोमल पंचमकहतेहै चौथे
श्रुतीअलापनीपर शुद्धपंचम होताहै धैवतके पहलीश्रुतीमंदतीपर दूर्वधैवतहोताहै और दोसरीश्रुती
रोहिणीपर कोमलधैवत होताहै और तीसरीश्रुतीरम्यापर शुद्धदेवत होताहै निषादकी पहिली
श्रुती उग्रापर धैवततीवर अरु दुरव निषादहोताहै और दूसरीश्रुती छोभनीपर अतीतीव्र धैवत अरु शुद्धनिषा
दहोताहै खरजकी पहली श्रुती तीव्रापर तीव्रनिषाद होताहै दूसरी श्रुती कुमदवतीपर अतीतीव्रनिषाद जि
सकोकाकुलि कहतेहै होताहै दूर्वखरजभी कहतेहै अरु तीसरी श्रुतीमंदापर तरतीवर निषाद जिसको
कैशकी कहतेहै होताहै अरुकोमल खरज होताहै और चौथीश्रुती छंदोवतीपर शुद्धखरज होताहै ऋषभ
केपहली श्रुती दयावतीपर दुरव ऋषभ होताहै दूसरी श्रुतीरंजनीपर कोमलऋषभ होताहै तीसरी श्रुतीर
तिकापर शुद्धऋषभ होताहै अरु उसको दुरव मधारभी कहतेहै गंधारकी पहली श्रुतीरोद्रीपर तीवर ऋ
षभ और कोमल गंधार होताहै और दूसरी श्रुतीक्रोधापर अतीतीवर ऋषभ और शुद्धगंधार होताहै संपूर्ण
ठाटमे इसीप्रकार जानना चाहिये अरु ठाट दोप्रकारका होताहै एकचल दूसरा अचल चलकहतेहै जोचल
नेवालाहै तिसको सितार कहतेहै जिसका प्रसंगआगेआवेगा और अचल जो नचलनेवालाहै जिसका प्र
संगहोचुका इसको वीणा कहतेहै सोजोप्रकार उपर लिखाहै और नायकोमे वर्णन होवेगा तिसप्रकार बनानी
चाहिये और चारप्रकारका रागजोहै ओडव १ खाडव २ संपूर्ण ३ संकीर्ण ४ बजाणा चाहिये ओडव पांचस्वरको क
हतेहै खाडव छैस्वरको कहतेहै संपूर्ण सात स्वरको कहतेहै संकीर्ण एकरागमे दूसरे रागको मिलाना
तिसकोकहतेहै बजानाचाहिये और तीनग्राम होतेहै तीनो ग्रामोका वर्णन प्रथमग्राम खरजका मंद
रनामा दूसराग्राम मध्यमका मध्यनामा तीसराग्राम गंधार नारनामा [illegible] इनकी उत्पती
पहिली खरजग्रामकाउदय ऋषीमहादेव समासुरवकाल देवताब्रह्म नामअंगदाएदे ग्रामदा
नाममंदर सातइसकि मूर्छना तिन किनाम और देवता पहिली उतरमंदा यत्त तिसकादेवता २ दू
सरीरंजनी राक्षस तिसकादेवता तीसरी उतरायणी नाग तिसका देवता चौथी सुद्ध खरज
ब्रह्मा तिसका देवता पांचमे मतसकाता विष्णु तिसका देवता अश्वक्रान्ता अश्वनी कुमार देव
ता ७ सातमी अभिरुद्गता [illegible] द्वितीग्राममध्यग्राम् ग्राम दोउत्पते ऋतु ग्रीष्म ऋषी ना
रद समेमध्यान देवता विष्णुः अंगनामकंठ नाममध्य स्वरमध्यम सातइसकी मूर्छना पहिली
सौवीरा ब्रह्मा तिसकादेवता दूसरी हरिणाश्वा इंद्र तिसका देवता तीसरी कलोपनता पव
न तिसका देवता चौथी शुद्ध मध्यम गंधर्व तिसका देवता पांचमी मार्गी रुद्र तिसका देवता
६ छठमी पौर्वी अग्नि तिसका देवता सप्तमीऋषिका सूरज तिसका देवता ॥ गांधारग्रामलक्षणं

सं· १·
प्र· सा·
२

वर्षात्रटत्त अप्रमाणसमा गंधर्वत्ररषी शिवजी देवता कपालस्थान उत्पत्त गंधारस्य स्वर तार नाम सा-
नमूर्छना पहिली नंदा दूसरी विशाखा तीसरी समषी चौथी विचित्रा पंचमी रोहिणी षष्ठमे सुखा
सप्तमी अलापनी एसग्रामकी मूर्छना तथाग्राम इंद्रलोकमें भी वर्तमान है इसलोकमे नहीं है इस
लोकमें दो प्रकार वर्तमान है आरोही अभरोही आरोही चढना अभरोही उतरना आरोही स्वरूप
सा रि गा मा पा धा नी अभरोही स्वरूपम् सा नी धा पा मा गा रि इसप्रकारके इसग्रामका
विशेष वर्णननही किया और तीन ग्राम के तीन लोक और तीन गुण और तीन देवता तत्सवर्णनं
रज गुणते और भूर्लोक अर्थात् नागलोकते खड्ज की उत्पती गायत्री छंद इतिमंद्रग्राम:
सतगुणते और भूर्व लोकते अर्थात् मृत्युलोक मध्यम ग्रामकी उत्पती पंक्ति छंद: इतिमध्यम
ग्राम: तीसरी तमगुण स्वर्लोक अर्थात इंद्रलोकते गंधार ग्रामकी उत्पती अनुष्टुप छंद: इतिता
रग्राम: अरु ग्राम किसको कहते है ग्रामनाम है इक्षितीका जो स्वर इक्षितरहे तिसको कहती
हैग्राम तिसकी द्वारा संपूर्ण स्वरोंकी उत्पतीहै वीणा तत जोहै तिसपर राग अलापनी क्या वजावने
को अन्तरहै तनरी ई ना ना नरी ईनन आनन उदन तेमतेम् गत वजावनेकि अन्तर डिड डा डिड
डा ड्का डाडा ड्का इतिगतअन्तरम् ईजो इसकिसाथ नखशाहै इसपरस्वरूप दंड और सप और किली
और तोंभी और गुलू जो तोंभोके उपर लगाकर दंडके साथ जोड देनी और तार ग्राम जो प्रकारका स्वर
पड़ै स्वरपरी संयुक्त वना होवाहै तिस अनुसार वनाकरके नखधकी दंडकी स्वरूपसे चौगुणा दंड
लंबा और मुष्ठी प्रमाण मोटा वनाकर नखशादोसरेकी अनुस्वार करणा इतिनारदमतीन सरवसंग्र-
गीत ग्रंथ भावेन वर्तमेन प्रमाणेन जगन्नाथ गोस्वामी कृत श्रीमहाराजाधि राजेंद्र श्रीमन्महारा
जासाहिब जंबूकाश्मीराद्य नीभताधि देशाधिदीश आज्ञा अनुसार संगीत रत्नवीर प्रकाश सा-
र अलापनी वीणा वायनविधी प्रकार: प्रथमोध्याय: समाप्त: ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ।:–
श्रीकृष्णरघुनाथजी गोपालजी सहाय मंगलंकरोति गजाननम् शुभम् ::

नु

ॐ नमः सरस्वत्यै नमः अथ चलतवीणा अर्थात् सितार प्रकार वर्णनम् ॥ द्वितीयोध्यायप्रारंभः
वीणाको देखकरके सुगम हेतु अमीर खुसरु [illegible] ने जो कवी फारसीका हो
वाहे चलत ठाठ उपवीणा जिसको सितार कहतेहैं यथायोग्य बनाई और इसिता
र कछपी वीणाका अंश है जो वीणाका और सितारका भेदहै तिसका वर्णन
वीणाकी तीन सप्तक होतेहैं और सात तार होतेहैं सितारकी अढाई सप्तक और
तीन तार होतेहैं और वीणा दो नखोंसे बजतेहैं अरु सितार एक नखसे बजतेहैं
इतिसंगीतमतेन अब गुणवान कलावंत तत्रकारोने जो संगीत कलाको शास्त्र
त्र अनुसार जानतीहै तिनोने रंगीनी और रंगीनी रागरागनी कि अलापनि कि हेतो
कि पांच तार तथा सात तार सोलां १६ सुंदरी तथा अठारां १८ सुंदरी तथा १९ वोनी
तथा २० बीस सुंदरी बांधकर बनाईहै असलमें अमीर खुसरवी ठाठ चौदा १४ सुंद
री और तीनतारकाहै तिसका वर्णन आगे आवेगा ॥ अथ सर्वप्रकारठाठ सितार
वर्णनम् ॥ प्रथम १ चतुर्दश सुंदरी ठाठ वर्णनं १ पहली सुंदरी मध्यम दोसरी २
पंचम ३ तीसरी धैवत ४ चौथी निशाद ५ पंचमी खरज स्वर ६ छठेमी ऋषभ
७ सप्तमी गंधार ८ अष्टमी मध्यम ९ नवमी पंचम १० दसमी धैवत ११ ग्यारमी
निषाद १२ बारमी षरज १३ तीरमी ऋषभ १४ चौदमी गंधार अथठाठस्वरअंतरम्
मपधानी सा रि गा मा पा धा नी सा रि गा इतिचतुर्दशी सुंदरीठाठवर्णनम्
अथषोडषी सुंदरी ठाठ वर्णनं ॥ १ पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धैवत
४ चौथी निषाद ५ पंचमी खरज ६ छठेमी ऋषभ ७ सप्तमी गंधार ८ अष्टमी म
ध्यम ९ नवमी तरतीवर मध्यम जिसको कड़वा मध्यम कहतेहैं १० दसमी पं
चम ११ ग्यारमी धैवत १२ बारमी निषाद १३ तेरमी षर्ज १४ चौदमी ऋषभ १५
पंद्रमी गंधार १६ सोलमी मध्यम अथठाठस्वर अंतरं मा पा धा नी सा रि गा मा
मा पा धा नी सा रि गा मा ॥ इतिषोडशीठाठ वर्णनम् अथअष्टादशी सुंदरी ठा
ठ वर्णनम् १ पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धैवत ४ चौथी उतरी कोमल ४
चौथी धैवत शुद्ध ५ पंचम निषाद ६ छठेमी खरजस्वर ७ सातमी ऋषभ ८ अष्टमी

सं॰ र॰
म॰ सा॰
२
९

गंधार कोमल ९ नवमी शुद्ध गंधार १० दशमी मध्यम तीवरतर ११ एकादशी म
ध्यम १२ बारमी पंचम १३ तीरमी धेवत १४ चौदमी निषाद १५ पंद्रमी खड्ज १६
सोलमी ऋषभ १७ गंधार १८ अठारमी मध्यम अथ अष्टादश सुंदरी अंतरम् ॥
मा पा धा धा नी सा रि ग गा म मा पा धा नी सा रि गा मा इति अष्टादश सुंदरी ठा
ठ वर्णनं अथ एकोनविंशति ठाठ सुंदरी वर्णनम् पहिली १ मध्यम २ दोसरी पंचम
३ तीसरी कोमल धेवत ४ चौथी शुद्ध धेवत ५ पंचमी कोमल निषाद ६ छेमी ।
निषाद शुद्ध ७ सप्तमी खड्ज ८ अष्टमी ऋषभ ९ नवमी गंधार १० दशमी कोमल
१० दसमी शुद्ध गंधार ११ ग्यारमी मध्यम १२ बारमी मध्यम तरतीवर १३ तीरमी पं
चम १४ चौदमी धेवत १५ पंद्रमी निषाद १६ सोलमी खड्ज १७ सतारमी ऋषभ
१८ अठारमी गंधार १९ उनी मध्यम ॥ अथ एकोनविंशत स्वरा अन्तरम् मा प प
धा नी नी सा रि ग गा म मा पा धा नी सा रि गा मा ॥ द्वितीयप्रकारः म प प धा
नी नी सा रि ग म म पा धा नी सा रि गा मा पा ॥ इति एकोनविंशति स्वर ठाठ वर्णनं
अथ विंशते सुंदरी ठाठ स्वर वर्णनं १ पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धेव
त कोमल ४ चौथी शुद्ध देवत ५ पंचमी निषाद कोमल ६ छेमी शुद्ध निषाद ७ सप्त
मी खड्ज ८ अष्टमी ऋषभ ९ नवमी गंधार कोमल १० दसमी शुद्ध गंधार ११ ग्यारमी
मध्यम १२ बारमी तरतीवर मध्यम १३ तीरमी पंचम १४ चौदमी धेवत १५ पंद्रमी
निषाद १६ सोलमी खड्ज १७ सतारमी ऋषभ अठारमी गंधार १९ उनीसमी मध्यम
२० वीस पंचम ॥ अथ अन्तरं मा प प प नी नी सा रि ग गा म मा पा धा धा नी सा रि
गा मा पा ॥ द्वितीयप्रकारः १ पहिली मध्यम २ दोसरी पंचम ३ तीसरी धेवत
कोमल ४ चौथी शुद्ध देवत ५ पंचमी निषाद ६ छेमी शुद्ध निषाद ७ सप्तमी खड्ज
८ अष्टमी कोमल ऋषभ ९ नवमी शुद्ध ऋषभ १० दशमी कोमल गंधार ११ ग्या
रमी शुद्ध गंधार १२ बारमी मध्यम १३ तीरमी तरतीवर मध्यम १४ चौदमी पंचम १५
पंद्रमी धेवत १६ सोलमी निषाद १७ सतारमी खड्ज १८ अठारमी ऋषभ १९ उनीसमे
गंधार २० वीसमी मध्यम ॥ अन्तरं म प प प नी नी सा रि रि ग गा म मा पा धा नी सा
रि गा मा इति विंशति सुंदरी ठाठ रि गा द्वितीयप्रकारः वर्णनम् ॥ नस्य विधी कथ्यते

सं॰ र॰
श॰ सा॰
१०

10

फटसे नीरकरके प्यालीकी सूरत उन्नो गोलो उसके बचाव छज्जके ऊपर जोड़देना
वेसके कोक्योसे ओर एक पटरी लकरीकी ४ चार काकन मोटी सफा उस तोंभेकी
माफक जिसको तबली कहती है सरेशसे जोड़ देनी ओर उसकी साथ दंड जोड़दे ना
ली जिसको जोड़देना ओर तोंभेकी अंतमे एक लकड़ीकी कीली बनाईकि जिसका
स्वरूप आगे होवेगा वास्ते तारो बननेकी बना कर लगा देनी तबलीका विस्तार ९
नव अंगुलीया चाहिये २७ सताई दर्जे कोल १६५ एकसो पैंती दर्जेमें सेतार बनावना
तिसमें स्वर ओर स्वर परी लगावनी इसप्रकारकरके एक दर्जेपर चोटी १० दस दर्जेपर
एक छेद दंडकी मध्यमे [illegible] ओर जोडिकी तार बांधनिकी कीली लगाने वास्ते दोसरा
छेद १६ सोलां दर्जेपर मध्यमे पहिली छेदसे नीचे [illegible]ए ओर बाजकी तार बांधनीके
कीली लगानीके वास्ते छेद करणा २२ बई दर्जेकी उपर तारदान पटरी रखनी पंजी
दर्जेकी उपर [illegible] तार आधार पटरी रखनी ३० तीई ओर ३१ एकत्री दर्जे [illegible] बीच मध्यम स्व
रकी सुंदरी बांधनी ३५ पैंती ओर ३८ छत्ती दर्जेकी बीच पंचम स्वरकी सुंदरी बांधनी
४५ पंजताली ओर ४८ दर्जेकी बीच धैवत स्वरकी सुंदरी बांधनी ५४ चोर वंजा ओर
पंचवंजा निषाद स्वरकी सुंदरी बांधनी ५८ अठवंजा ओर ५९ खड्ज स्वरकी सुंदरी
बांधनी ६६ छट्ठाठ ओर सतठाठ रिषभ स्वरकी सुंदरी बांधनी ७२ ओर बहत्तर ७३ दर्जे
गांधार स्वरकी सुंदरी बांधनी ७५ पंजहत्तर ७८ छहत्तर मध्यम स्वरकी सुंदरी बांधनी
७८ ओर ७९ उनासे दर्जेकी उपर कटरा मध्यम तरती व स्वरकी सुंदरी बांधनी
८१ एकासी ८२ बासीदर्जेकी उपर पंचम स्वरकी सुंदरी बांधनी ८६ छआसी ८७
ओर ८७ सतासी दर्जेकी उपर धैवत स्वरकी सुंदरी बांधनी ९० नवी ओर इकानवी
दर्जेकी उपर निषाद स्वरकी सुंदरी बांधनी ९३ त्रआनवि ओर ९४ चुरानवि दर्जे
की उपर खड्ज स्वरकी सुंदरी बांधनी ९६ छआनमे ओर ९७ सतानमे दर्जेकी बीच रि
षभ स्वरकी सुंदरी बांधनी ९९ नरानमे ओर १०० एकसो दर्जेकीबीच गंधार स्वरकी
सुंदरी बांधनी १०१ एकसो एक ओर १०२ एकसोदोके दर्जेकीबीच मध्यम स्वरकी
सुंदरी बांधनी मध्यम १०२ एकसो दो दर्जे वालीसे २२ बाई दर्जेनीचो स्वर परी ओर स्वर
परीसे तीसं दर्जे नीचे तार बांधनीकी जगा इसप्रकार सेतारको बनाना चाहिये ॥

अब आगे जो मुख्य प्रकार शास्त्र मर्यादा सर्व संगीत शास्त्रोंकि आज्ञा अनुस्वार है
जिसको चलत वीणा कहतेहैं वनानेकि विधी संयुक्त वर्णन किया जाताहै एक
दंड तूनकी लकड़ीका पंजनाली ४५ अंचीया लंबा ४ चार अंचीया लंबा, आदसे अंतत
क तार वननेके जगातक तोंभे समेत इसप्रकार वनावे २८ छती अंचीया लंबा दंड
ली[illegible]कर उसको सिरसे अर्थात् आदसे लेकर अंततकर नाली खोदनी परनालिकी तरा सा
फ करके उसकी उपर पटरी लंवी २८ छवी अंचीया और साढ़ितीन अंचीया चोड़ी
और तीनकाकज मोटे साफ करके सरेशा लगाकर उसनालीके उपर जोड़देनी औ
र उसकी साथ एक पटरी चार अंची लंवी और आधी अंची चोड़ी दोकाकज मोटी ग
जदंनकी वा तूनकी लकड़ीकी वर्नीकिभार तलवारकी तरे उस दंड पर पटरीका
साथ तारोंका आधारकि वास्ते जोरनी एकपटरी लकड़ीकी साढ़ि तीन अंची चोड़ी
और अधी अंची लंवी तीन काकजमोटी उसतार आधारकि आ वाली पटरीकि आगे
एक और पटरी चार अंचीलंवी और आधी अंची चोड़ी दोकाकजमोटी उसमे पांच छेद इ
सप्रकार करके एकछेद वामे अंत आधी अंची छोड़कि पासिसे चोराइकि अर्धवीच
वाजकी तार परोनि वास्ते और [illegible] एक अंची छोड़कर पहिलि छेदकि समान चारछेद
दो अंचीयोंमें करके उसतार आधारके पटरीकि पासकी पटरी [illegible]केसाथ तार आधा
रवत् जोड़देनी ८ आठ अंचीया लवी और साढ़ि तीन अंची चोड़ी तीनकाकजमोटी ए
क और पटरी जिसमे दो छेद दो कीली तारकी लगाने वास्ते इसप्रकार एक छेद तार प
रोनी वा[illegible]ले पटरीहै आससे दो अंचीकी फासलीपर और दोसरा छेद उसछेदसे दो अंचे
कि फासलेपर करके दंडकी नालीपर जोड़देनी और दो अंचीया नीचेसि दंडकी नाली
की चोल तोंभेमे लगानेके वास्ते अर्थात् जोड़नी वास्ते वनानी कुल २८छती अंची
दंडहोवा जिसकि १०८ एकसौ आठ दर्जे होवे तीनअंची गोलो गोदोम् उपरसे दंडकि
प्रमाण चोड़ा ४ चार अंची और नीचेसि चोड़ा तोंभेकि प्रमाण लकरीका जिसका न
खशा आगे लिखा जावेगा तिस अनुस्वार् वीचसि खोदकरके गोंभजके तरा और
नीचेसि असी वथाकरके जिसतरा अमारजोंमे जीसको नोवी भाषामे छजाकहतेहै
तोंभोकि जोड़नीकि वास्ते वथावकर वनावना और तोंभा गलसि जुदा करके फेर

अरु दोसरा प्रमाण ९॰ नवे अंगुली आदते अंततकर कील सेतार चाहिई जिसके २२ बाई
चोपे और अथा चपा चपा चार अंगुलीका होताहे बनानी इसप्रकार चार चपे आदते उतर के
दंडके उपर तार थानवाली पटरी लगानी एक अंगुली उससे नीचे दंडके उपर तार आधारवा
ली पटरी लगानी इस पटरीसे नीचे ३ तीनअंगुली मध्यम स्वरकी पहली संदरी बांधनी
अरु इससे तीन अंगुली नीचे पंचम स्वरकी दोसरी संदरी बांधनी इससे नीचे पांच अंगुली
परधैवत स्वरकी संदरी तीसरी बांधनी इससे चार अंगुली नीचे निषाद स्वरकी चोथी सं
दरी बांधनी इससे दोअंगुली नीचे पांचमी संदरी खर्ज स्वरकी संदरी बांधनी उससे चारअंगु
ली नीचे ऋषभ स्वरकी छेमी संदरी बांधनी इससे तीन अंगुलनीचे गंधार स्वरकी सात
मी संदरी बांधनी इससे दो अंगुलनीचे मध्यम स्वरकी संदरी आठमि बांधनी इससे नीचे
दो अंगुली कहूछा मध्यम जिसको तरतीवर कहतेहे उसकी ९ नवमी संदरी बांधनी
उसको नीचे दो अंगुली पंचम स्वरकी दसमी संदरी बांधनी उसको नीचे तीन अंगु
ली ११ ग्यारमी संदरी धैवत स्वरकी संदरी बांधनी उससेनीचे ३ दोअंगुली निखाद स्वर
की संदरी १२ बारमी बांधनी उससे नीचे एक अंगुली खर्ज स्वरकी संदरी १३ तेरमी
बांधनी उससे नीचे २ दो अंगुली ऋषभ स्वरकी संदरी १४ चोदमी बांधनी उससे नीचे
दो २ अंगुली गंधार स्वरकी संदरी १५ पंद्रमी बांधनी उससे नीचे १ एक अंगुली मध्यम
स्वरकी संदरी १६ सोलमी अंतकी बांधनी॰ इससे १५ पंद्रा अंगुलनीचे स्वरपरीरषनि त
वलीके उपर मध्यमे इससे ९ नव अंगुली नीचे तोंभेके अंतमें तार बांधनेकी अं
कुरी लगाने ओर तार थानसे जो पहला आदका तारहोनहे उससे ४ चार अंगुली
ऊपर बाजकी तारका जिसको मध्यम कहतेहे किली लगावनीका छेद करणा
उसकी ऊपर ४ चार अंगुलीके फासले पर दोसरी तारकी कीलीका छेद करणा
ओर दंडकी दलणा ओर तार थानसे ऊपर ५ पंज अंगुलीकी फासलेपर १ एक की
ली दोसरी जोडेकी तार बांधनेकी वास्ते ओर उससे चार अंगुलीकी फासले पर पं
चमकी तार बांधनेकी किलीका छेद करणा ओर उससे चार अंगुलीकी फासले पर
खर्जकी तार बांधनेकि वास्ति छेद करणा ओर एक छेद पंजमे ओर छेमे संदरी
की किवीच दंडं दलिणा ओर जिसको पपीया बोलतेहे तार बांधनेकि वास्ते कीली ल
गानिको छेद करणा एक छेद बारमी संदरी ओर ११ ग्यारमे संदरीकी बीच दोसरी
तार पपीईकी बांधनीको छेद करणा इसप्रकार सात कीलीआं साती तारोकी

पहलीतारख
र्जकी मध्यम
स्वर मंदरग्रा
मका २ ता
रखर्जकी
जोडानामानि
२ तारपंचम
चछा ओतार
२ ता १ खर्ज
जा पपैया
नामानि

सं० २०
प्र० सा०
५

सतों तारोंका नाम वर्णन अस्सलमे तीन तार है तिनकानाम पहिली बाजकीतार जिसको
मध्यम बोलतीहै दोसरी और तीसरी दोनो ज्योड्योकियां तारा जिनको खर्जी बोलतीहै और दो
सरा तार मकार पंजतार चढाने चाहिये तिनकानाम एक बाजके तारमध्यम दोसरी और ती
सरी खर्जकी तार जिनको जोडा कहतीहै चौथी और पांचमी पंचमोंके तार. तीसराप्रकार
सातनार चढानिका पहिली बाजकीतार जिसको मध्यम बोलतीहै दोसरी और तीसरी दो
नो ज्योड्योकियां तारा जिनको खर्जी बोलतींहैं और दोसरा मकार पंजतार चढाने चा-
हिये तिनकानाम एक बाजके तारमध्यम दोसरी और तीसरी खर्जकी तार जिनको जो
डा कहतीहै चौथी और पांचमी पंचमोंके तार और दो पय्येयोंकी तारा जिनको खर्जी बोल
तेहै और इनका मकार पीछे आचुकाहै इनो वर्णितहै टाई डाठकाहै इसमे तीन समक
होसकेहै इसप्रकार खर्जीकीतारें जो दोसरी तीसरीमेंहै तिनको आदकी सुंदरी जो मध्य
म सुरकी पहिलीहै तिसके ऊपर वांई हाथकी तर्जनी अंगुलसे जो अंगोठे साथकीहै ताम
को दबाकर दक्षिण हाथके तर्जनीसे बजावना तब पहिलि ग्राम मंदर नामाके ख
डजस्वर पहिली होतीहै और जो उनी तारोंको दोसरी सुंदरी पंचम सुरपर दबाकर उ
से जो ऊपर वर्ण किया गयाहै बजावनिसे मंदर ग्रामनामाके ऋषभ सुर दोसर होती
है अरु उनी तारोंको तीसरी सुंदरी धैवत सुरपर इसप्रकार जो ऊपर वर्णन कियाहै
बजावनेसे मंदर ग्रामनामकी गंधार स्वर तीसरी होतेहै और खाली बाजकी तार दबा
वनेसे भिना बजावनेसे मध्यम सुर उतरा मंदर ग्रामकी चौथी सुर होतेहै और कड
ग्रामध्यम जिसको तरतीवर मध्यम कहतीहै मंदर नाम ग्रामकी सेतारकी पहिली सुंद
रीहै और पंचम मंदरग्रामके सेतारकी दोसरी सुंदरी और धैवत तीसरी सुंदरी और निषाद
चौथी सुंदरी इसप्रकार पहिली समक मंदर नाम ग्रामके होतेहै दोसरी समक मध्य
नामग्राम द्वितीयके सेतारकी पंजमे सुंदरी और मध्यग्रामकी पहिली सुर खर्ज होतेहै
और सेतारकी छेमी सुंदरी और मध्यग्रामकी दोसरी सुर ऋषभ होतेहै और सेतारकी
सातमे सुंदरी मध्यग्रामके तीसरी सुर गंधार होतीहै सेतारकी आठमे सुंदरी मध्यग्रा
मकी चौथे सुरमध्यम उ होतीहै और सेतारके ९ नवमी सुंदरी मध्यग्रामकी मध्यम
तरतीवर जिसको कड्रा बोलतीहै होतेहै और सेतारकी दसमी सुंदरी और मध्यग्राम
पंजमे सुर पंचम होतेहै सेतारके ११ यारमे सुंदरी मध्यग्रामके छेमे सुर धैवत होते
है और सेतारकी १२ बारमे सुंदरी मध्यग्रामकी सातमेसुर निषाद होतीहै ॥

और सेतारके तीवमे सुंदरी तारग्रामके पहली स्वर खर्जहै और सेतारके १४ चौदमी सुंदरी
तार ग्रामके दोसरी सुर ऋषभ और सेतारकी १५ पंद्रमी सुंदरी तार ग्रामके तीसरी सुर
गंधार होतेहै और सेतारकी १६ सोलमी सुंदरी तार ग्रामके चौथी सुरहोतेहै जब चौथीसुर
को एक मूर्छनाके मींड देवे तब तारग्रामकी पंचम सुर होतेहै जब दूरी मींड देवे तीन
मूर्छनाकी मध्यम सुरसे दो अंगुली उतरके नीचे मध्यम सुरसे, तब तार ग्रामकी छठेमे सुर
धैवत होतेहै जब उसको दूरी मींड देवे दोमूर्छनाके उसे अस्थानपर तब तार ग्रामकी सा
तमी सुर निषाद होतेहै इतितीनसप्तक भेदवर्णनम् ॥ ॥ अथतीनग्रामसउत्पतेवर्णनं॰
प्रथम मंदरग्राम वर्णनं॰ पंचमकी चौथी श्रुती पर जो स्वर ठहरी उसको मंदर ग्राम क
हतेहै अर्थात् खड्ज ग्राम जद पंचमकी तीसरी पर श्रुतीपर स्वर ठहरि तब उसको
मध्यग्राम कहतेहै अर्थात् मध्यम स्वरका और निषाद जब शुद्ध खर्जकी एक श्रुती लीवे
तब तारग्राम अर्थात् गंधार ग्राम होताहै ॥ द्वितीयप्रकारः ॥ ॥ धैवत तीन श्रुती
पर खड्ज ग्राम होताहै और चारश्रुतीका जबधैवतहोवे तबमध्यम ग्राम होताहै य
और जबनिषाद खर्जकी श्रुती एकलीवे तबगंधार ग्राम होताहै ॥ इतिग्रामउत्पतीव
र्णनम् ॥ ॥ जब वाजकी तारको तारधाधारसे एक दर्जानीचे मध्यमकी पहिली श्रुती
वज्रकानामापर तर्जनी अंगुल वामेहाथकीसे दभाकर दहण हाथकी तर्जनी अंगु
लसे तारको वजावे तव तीवर गंधार पहिली सप्तकका होताहै और तारधारसे दो द
र्जे नीचे मध्यमकी दोसरी श्रुती प्रसारनी नामापर उसप्रकार जो उपर लेखागयाहै
तारको वजावे तव अतीतीवर गंधार होताहै उसकोशुद्ध मध्यम कहताहै जवउस
से दोदर्जेनीचे मध्यमकी तीसरी श्रुती प्रीतीनामापर उसप्रकार तारको वजावे तम ती
वर गंधार होताहै उसको कोमल मध्यमभी कहतीहै चौथी श्रुती मध्यमके मार्जनी
नामापर शुद्ध मध्यम होताहै अरु पहिली श्रुती पंचमकी क्षतीनामापर तीवर मध्यम
होताहै अरु पंचमके दोसरी श्रुती रक्तानामापर अतीतीवर मध्यम अर्थात् चढामध्यम
होताहै अरु उसको शुद्ध पंचमभी कहतेहै अरुपंचमके तीसरे श्रुती संदीपने नामापर
तीतीवर मध्यम होताहै उसको कोमल पंचमभी कहतेहै अरु चौथे श्रुती अलापनी ना
मापर शुद्ध पंचम होताहै धैवतके पहिली श्रुती मंदती नामापर अती तीवर पंचम
और शुद्ध धैवत होताहै दोसरी श्रुती रोहिणीपर तम तीवर पंचम और कोमल धैवत होताहै

सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
५४

तीसरी स्रुती पैवतकी रम्या नामा पर सुद्ध पैवत होताहै निषादकी पहिली
स्रुती उग्रा नामापर तीवर पैवत होताहै इसको पूर्व निषाद होताहै कहिती
है उससे नीचे उतरकि उग्रा ओर क्षोभनीकी बीच तर तीवर पैवत होताहै ॥
ओर क्षोभनी दोसरी स्रुती निषाद उपर सुद्ध निषाद होताहै खरजकी पहिली स्रुती
तीवरा नामापर तीवर निषाद होताहै ओर खर्जकी दूसरी स्रुती कुमुदवती नामापर
स्रुती तीवर निषाद होताहै ओर उसकी काकुली संज्ञा होतेहै खर्जकी तीसरी स्रुती
मंदा नामा पर तेंतीवर निषाद होताहै उसकी कैशकी संज्ञा होतेहै अरु कोमल खर्ज
भी इसको कहतेहै खरजकी चोथी स्रुती छंदो वती नामापर सुद्ध खरज होता
है दयावती ऋषभकी पहिली स्रुतीपर पूरव ऋषभ होताहै ओर दोसरी स्रुती रंजनी
नामापर कोमल ऋषभ होताहै तीसरी स्रुतीरतिका पर सुद्ध ऋषभ होताहै ॥ओर
उसको पूरव गंधारभी कहतेहै ओर गंधारकी पहिलीस्रुत रोद्रै नामाकापर स्रुती
तीवर ऋषभ होताहै उसको कोमल गंधारभी कहतेहै अरु गंधारकी दोसरी स्रुती
क्रोधा नामापर स्रुते तीवर ऋषभ ओर सुद्ध गंधार होताहै इसप्रकारतीनकेसप्तककी स
रोंमै तीवर स्रुतीतीवर कोमल तम तीवर काकली कैशकी आदिक भेद जानलीना
इतितीवरादिभेदस्वरवर्णनम् ॥८॥ अथचारों विकृतस्वर भेद वर्णनम् ॥
स्वरके चार संज्ञा होताहै च्युत १ ककोल २ वंय ३ विकृत ४ अथचतुर्भेदवर्णनं॰
ऋषभ स्वर खर्जकी एक स्रुती छंदो वती नामा चोथी स्रुतीको लिवे तव खरजकी
च्युत संज्ञा होतेहै ओर जव खर्जकी दोसरी स्रुती कुमुद वती नामा निषाद लीवे
तव खरजकी अच्युत संज्ञा होतेहै अरु निषादकी उसजगा काकुली संज्ञा होतेहै
अरु ऋषभजो तीन स्रुतीकाहै एक स्रुती षर्जकी लीकर चार स्रुतीकाहोवे तव उस
की विकृत संज्ञा होतेहै अरु गंधारजो दो स्रुतेका स्वरहै एक स्रुती मध्यमके लीकर
तीनस्रुतीका होवे तो विकृत संज्ञा होतेहै गंधारकी ओर जव गंधार मध्यमके दो स्रु
ती लीवे ओर चार स्रुतीका होवे तव उसके अंतरसंज्ञाहोतेहै अरु पंचम मध्यमकी
एक स्रुती लीवे तव उसके च्युत संज्ञा मध्यमके होतेहै जव दो स्रुती मध्यमकी
गंधारहीमै आइमिले तव मध्यमकेअच्युत संज्ञा होते है अरु पंचम अपनी तीसरी
स्रुती संदीपनी नामापर आवे तव अच्युत पंचम संज्ञा होतेहै अरु तव पंचम अला

वेनी पनी श्रुती छोड़कर तीन श्रुतीका होवे तव पंचमकी अच्युत संज्ञा होतेहै
तव पंचम मध्यमकी एक श्रुती लीवे तव पंचमकी कौशाक संज्ञा होतेहै तव धै
वत पंचमकी एक श्रुती लीकर चार श्रुतीका होवे तव धैवतकी विकृत संज्ञा होतेहै
अरु तव धैवतकी एकश्रुती निषादली कर तीन श्रुतीका होवे तव निषादकी कौशाक
संज्ञा होतेहै तव निषाद खड़्जकी दोश्रुती कुमर वनी नामा करके लीवे तव निषाद
की काकुली संज्ञा होतेहै इति वारा विकृत भेद वर्णनम् ७ सातशुद्ध स्वर और १२ वारां
विकृत स्वर येईसभ मिलकरके १९ उनीस्वर होतेहै और इनके चारभेदहै एक
वादी २ दोसरा संवादी ३ तीसरा अनुवादी ४ चौथा विवादी वादीराजा संवादी मंत्री
अनुवादी चाकीर विवादी शत्रु ईजो चार भेदहैं वासे रागोकी स्वरूप देखानी कि य
थायोगहै ॥ कैसे चार प्रकारका राग होताहै औडव षाडव संपूर्ण संकीर्ण १
औडव पांच स्वरका होताहै षाडव ६ छेस्वरका होताहै और संपूर्ण सात स्वरका हो
ताहै और संकीर्ण राग मिला हुवाको कहतेहै अथवादी आदिक अर्थम् ॥
वादी उस स्वरको कहतेहै जिससे रागकी उत्पती हो और संवादी आस स्वरको कहते
है जो स्वर रागको शोभादेवे और अनुवादि आस स्वरको कहतेहै जिनकी लगाने करके
ना राग भिगरी नासोरी अरु विवादी उस स्वरको कहतेहै जिस स्वरकी लगानीसे रागभी
गभेगड़ जावी अरु जिस रागमें जो स्वर विवर्जितहै उसको विवादी कहतीहै १
इति वादि स्वरादिक अर्थ स्वरूप वर्णनम् ॥ अथ वादी आदिक स्वर ज्ञानम्
खड़्ज स्वरका मध्यम और पंचम स्वर संवादी होताहै अर्थात जिस रागमे खड़्
ज स्वर वादी होताहै ओस रागमें मध्यम और पंचम संवादी होताहै ऋषभ और गं
धार धैवत और निषाद ४ चारो अनुवादी होताहै अरु जव निषादकी काकुली
संज्ञा होवेहै तव विवादी होता ॥ इति खड़्ज स्वर वादी विवादी वर्णनम् ॥
अथ ऋषभ स्वर वर्णनम् ॥ जिस रागमे ऋषभ स्वर वादी होवे उसमे धैवत संवा
दी होताहै खड़्ज मध्यम पंचम निषाद उसमे अनुवादी होतेहैं अरु गंधार

सं॰ २॰
प्र॰ सा॰
१६

इतिमध्य॰

उसका अववादे होताहै इतिगंधारवर्णनम् ॥ अथमध्यमवर्णनम् जिस रागमे
मध्यम स्वर वादे होवे उसका खड्ज और निषाद संवादे होताहै ऋषभ और गंधार
अन्तर और पंचम इअववादे इसकि होतेहै और गंधार शुद्ध और धैवत और शुद्ध पंचम
इअनुवादे होतेहै, जिसरागमे गंधार स्वर वादे होवे उसमे निषाद संवादे होताहै और
ऋषभ अववादे होताहै खड्ज मध्य पंचम धैवत इअनुवादे होतेहै इतिगंधारवर्णनं
अथपंचमवर्णनम् जिसरागमे पंचम स्वर वादीहोवे उसमे खड्ज संवादी होताहै
ऋषभ गंधार। मध्यम। धैवत। निषाद इइसकि। अनुवादी होताहै इसका अववादी स्वर
कोइनही होताहै ॥ इतिपंचमवर्णनम् ॥ अथधैवतस्वरवर्णनम्॥ जिसरागमे धैव
त। स्वर। वादी। होवे उसमे ऋषभ संवादी होताहै खड्ज गंधार मध्यम पंचम इअनुवादी
होतीहै और निषादभी वादी विवादी होताहै॥ इतिधैवतवर्णनम्॥ अथनिषादवर्णनम्॥
जिसरागमे निषाद वादी होवे उसमे गंधार और मध्यम संवादी होतीहै। ऋषभ और पंचम
अनुवादी होताहै और धैवत अववादी होताहै॥ इतिनिषादवर्णनम्॥ इतिउने १९ स्वर
वर्णनम्॥ अथमूर्छनाभेदस्वरप्रतेवर्णनम्॥ फतीकि विश्रामस्थानको मूर्छना कह
तीहै अरु मूर्छना एक स्वरके तीन होतेहै तन्तकारोमें इसकानाम मीड् कहतेहै
अरु इल्ममूसीकीमे इसको जरभ कहतीहै खड्जस्वरके मूर्छनाके नाम आमोदनी
प्रमोदनी २ विनोदनी ३ ऋषभ स्वर मूर्छनाके नाम दीही १ शीघ्रा २ वक्रंगी ३ गंधार
स्वर मूर्छना सम्बली १ अविभ्रा २ साबा ३ मध्यस्वरमूर्छनाके नाम आरामणी १ का
मनी २ अभ्रामनी ३ पंचम स्वरके मूर्छनाके नाम कोमली १ निर्मली २ नमली ३
धैवत स्वरके मूर्छनाके नाम असारनी १ अहारनी २ आधारनी ३ निषाद स्वरके मूर्छ
नाके नाम। लज्जा। १। संकोची २ कपिला ३॥ इतिसप्तस्वरमूर्छनानामवर्णनम् ॥
सेतारके बनावनेके अक्षर अरु तिनका स्वरूप प्रमाण वर्णनम् सेतारके
गत बनावनेकी ढाई अक्षर अमलमेहै तिनका नाम डकार दिकार संपूर्ण ड
कार जिसको ड्रुकार बोलतीहै और अर्ध अकार तिनके तन्तकारोने आठ अक्षर
बनाई

13

इस प्रकार करके डिड १ डा २ डिड ३ डा ४ डा ५ डा डा डा ८ इन अक्षरोंको एकत्र करके
यथा क्रम पूर्वक जिसका वर्णन आगे आवेगा बजावनेसे पहिली आउर्द होतीहै
जिसको अस्थाई कहतेहैं इसके चार प्रकार होतेहैं अअस्थाई अन्तरा आ भोग इकुल
वंती अक्षरोंका होताहै जिसको पंगती छंद कहतीहै इसप्रकार डिड डा डिड डा डा
डा डा डा ॥ पहिली आउर्द ॥ डिड डा डिड डा डा डाडा डा ॥ दूसरी आउर्द ॥ डिड डा डिड डा डा
डा डा डा ॥ इत्या डिड डा डिड डा डा डा डा डा ॥ इति चौथी आवुर्द ॥ बजावना चाहिए इस
को गत कहतेहैं सो इजो प्रकार पीछे इसध्यायमें वर्णन किया गयाहै जिसका
नखेशा आगे इसकेसाथ अलग अलग बनाकर लगाया जाईगा उससे चार गुणा व
धीक बनाकरके उसको नखेशा वत जोड़ देना ॥ अथ अक्षरस्वरूपवर्णनम् ॥ श्रीमन्म
हाराजाधिराजजीनेलोकोंकेउपकार हेतु जो सितार जिसकी सुगम बजावनेके ज्ञा
नके वास्ते इजो डिड डा आदिक अक्षरहै तिनके और आहती निहतीके और मींडके और
पलटा और तान और ग्राम और तारके स्वरूप बनाईहै इनको देखकर गतबजावनी
का ज्ञान होताहै ॥ अथ डिडस्वरूपम् ॥ डिड ऽ ॥ अथ डास्वरूपम् ॥ ।‌ ॥ अथ डास्वरूपम् ॥
— ॥ अथ डाडास्वरूपम् ॥ ~ ॥ अथ आहतीस्वरूपम् ~ ॥ अथ निहतीस्वरूपम्
७ ॥ अथ मध्यस्वरूपम् ॥ ० ॥ अथ मींडस्वरूपम् ॥ + ॥ अथ पलटास्वरूपम् ॥ ऽ ॥ अथ ता
नस्वरूपम् ॥ ५ ॥ अथ ग्रामस्वरूपम् ॥ ⊓ ॥ ⊓ ॥ ⊓ ॥ अथ स्वरस्वरूप स
१ खरज १ ऋषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ स १ र २
ग ३ म ४ प ५ ध ६ नि ७ ॥ अथ तारस्वरूपम् ॥ ०।० ॥ अथ आलापअक्षरम् ॥ ननरी ॥
रीना । आनन । ऊनन । ऊआ । ना । म । आ । द । न । न । री । नानरी । नना । ऊ । नन । ना । आ । नरा ॥
नन । नर । नाना । नाम । अद । न । नम् । आ । नन । नम् । नन । नरी । नना । नरी । र । नना । नना । न
आ । ननान । आन । नाम । आ । नरान । न । नोम् । आ । नन । नन । ननान । नमोम् । ननोम् । नन
नरी । री । नना । आनतान । ननोम् । नताना । नोम् । इतिअलापअक्षरस्थाई इनो अक्षरो
करके सेतारकीमें रागका अलाप करना शुभमस्तुसर्वजगताम् ॥ इतिसर्व सं
गीतग्रंथभावनवतमतप्रमाणेन जगन्नाथ गोस्वामिनकृतो चलनवीणाप्रकाशसंगीतमल्ल
वीरप्रकाशसार द्वितीयोध्यायः समाप्तः ॥ शुभम् श्रीगोपालस्वामीभ्योनमः रागवंजयति

16

ॐ नमो विघ्नहर्त्रे नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ तृतीयोध्यायः प्रारंभः प्रथम भैरव राग व जावनिके वास्ते
हारव नानिके प्रकार ॥ चार मत गीत कि है मत वर्णनम् ॥ प्रथम शिवमत ॥ द्वितीया हनुमानमत ॥ तृतीये भरतमत ॥ चौथे शारदामत ॥
इन मत कि ॥ चार ऋषि ॥ चार नाईक ॥ चार विनियोग ॥ चार छंद ॥ चार देवता ॥ चार नाईका ॥ अलग अलग है ॥ तिनका वर्णनम् ॥ ॥
अथ शिवमत वर्णनम् ॥ परमात्मा देवता ॥ पंक्तिछंद ॥ यं गबीज ॥ अग्नितत्व ॥ हाहा गंधर्व ॥ अग्रलंकार ॥ सामवेद ॥ सरस्वती शक्ति ॥
आंगिरस ॥ वेणानायक ॥ प्रौढानायका ॥ इति शिवमत वर्णनम् ॥ अथ हनुमत वर्णनम् ॥ विष्णु देवता ॥ वैखरी शक्तिः ॥ गायत्री छंद ॥
हास्यालंकार ॥ ओं ग बीज ॥ वायुतत्व ॥ तुंबुरु गंधर्व ॥ कात्यायन ऋषि ॥ तानसेन नायक ॥ मध्यानायका ॥ इति हनुमत वर्णनम् ॥
अथ भरतमत वर्णनम् ॥ इसका भी ॥ परमात्मा देवता ॥ महती छंद ॥ हुं ग बीजम् ॥ इअलंकार ॥ वायुतत्व ॥ भरत ऋषि ॥ हरि
दास नायक ॥ हंसशक्तिः ॥ प्रगल्भा नायका ॥ इति भरतमतेन वर्णनम् ॥ अथ शारदामत वर्णनम् ॥ ब्रह्मा देवता ॥ शारदा
शक्ति ॥ गायत्री शक्तिः ॥ पृथ्वी तत्व ॥ श्रीं बीजं [illegible] तुंमर गंधर्व ॥ नारद ऋषि ॥ मुग्धानाईका ॥ इअल
कार ॥ अनुष्टुप् छंद ॥ इति शारदामत वर्णनम् ॥ इनकि चार वानि होती है पहिली १ नौहार वानी वेणानायक
दोसरा भरतमत डागर वानी हरदासनायक तीसरी शारदामत खंडार वानी ॥ साईजगन्नाथ नाईक चौ
थे हनुमानमत गोबरहार वानी तानसेन नाईयक ॥ इति चतुर्मत वर्णनम् ॥ चारो मतो के चार प्रकार कि
राग कि चलनि कि विधि होती है ॥ और चार प्रकार कि वंशावलि होती है तिसका प्रकार वर्णन किया है
अथ शिवमत अनुसार राग वंशावली प्रथम श्रीराग ॥ दोसरा वसंत ॥ तीरा अचोक चौथ पुरुष पंजमा मेघ छठमा
नटनारायण इनकियां छे ६ छे ६ स्त्री ॥ अथ श्रीरागस्त्री ॥ नाम ॥ प्रथम टंक मल्हार दोसरी गोजरी तीसरी त्रिवन
चौथी गौडी पंजमे किदारी छठमी मधुमाधवी ॥ इति श्रीरागस्त्रीं ॥ अथ वसंत राग भार्या वर्णनम् ॥ प्रथम दीपी दोसरी
देवगिरी तीसरी वैराटी चौथी टोडी पंजमी ललिता छठमी हिंडूली ॥ इति वसंत राग रागनी वर्णनम् ॥ अथ अचोक
रागस्त्री वर्णनम् प्रथम विभास दोसरी भोपाली ॥ तीसरी कनीठी चौथी हंसका ॥ [illegible] पंजमी
मालसीरी छठमी भैरवी ॥ इति अचोक राग भार्या कथनम् ॥ अथ मेघराग भार्या वर्णनम् ॥ प्रथम मल्लारी दोसरी सोरठी तीस
री सावेरी ॥ चौथी कौशकी पंजमी गंधारी छठमी पटमंजरी ॥ इति मेघराग भार्या वर्णनम् ॥ अथ नटनारायण भार्या
वर्णनम् ॥ प्रथम कामोदी दोसरी कल्याने तीसरी आभीरी चौथी नाटक पंजमी सारंग छठमी नट हंमीर ॥ इति न
टनारायण भार्या कथनम् ॥ इति शिवमतेन ॥ अथ भरतमत संगीत दामोदर नारायण ॥ भरतमालानुसार राग नामानि प्रथम भैर
व ॥ द्वितीय वसंत ॥ तीसरी मालकौंश चौथे श्रीराग पंजमे मेघराग छठमी नटनारायण ॥ इतीच ॥ अथ भैरव रागः स्त्री
नामानि ॥ भैरवी दोसरी कौशकी तीसरी विभास चौथि विलावली पंजमी बंगाली ॥ इति भैरव राग स्त्रीम ॥ पेहिली
हिंडोली दोसरी देशाखी तीसरी आलोल चौथि प्रथममंजरी पंजमी मल्हार ॥ इति वसंत राग स्त्रीं नामानि ॥ पेहि
ली गौरी दोसरी खंभकरी तीसरी बराटी चौथी खंबावती पंजमी कर्नाटी ॥ इति मालकौंश राग स्त्री नामानि ॥ पेहि
ली गंधारी दोसरी देवगंधारी तीसरी मालश्री चौथी शावरी पंजमी रामकली ॥ इति श्रीराग स भार्या कथनम् ॥ पेहि
ली ललिता दोसरी मालसी तीसरी गौरी चौथी नाटी पंजमी देवकरी ॥ इति मेघरागस्य [illegible] ॥ पेहिली तारामणि
दोसरी आभीरी तीसरी कामुदी चौथी गुजरी पंजमी कुकुभ ॥ इति नटनारायण रागस्य स्त्रीं नामः ॥ इति भरतमतेन ॥
अथ हनुमानमतेन ॥ संगीत पंचमसार संहिता अनुसार राग वर्णनम् प्रथम मालव दोसरी मलार तीसरे
श्रीराग चौथी मनथक पंजमी हिंडोल छठमी कर्नाट ॥ इति रागानि ॥ अथ रागानि षट् रागस्त्रीं ॥ पेहिली धावी
दोसरी केदारी तीसरी संध्या चौथी मेघमाजारी चौथी पंचमी तींबुसंचितः ॥ इति मालव रागस्य स्त्रीं नामानि ॥
पेहली मलारी दोसरी ललना तीसरी पटमंजरी चौथी मधुपरी पंजमी ङग्यकरी ॥ इति मल्हार रागस्त्रीं नामानि ॥
रामो

सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
१८

तानसी॥ मालसी॥ तीसरी रामकली॥ चौथी कुमारी॥ पंजमी वैराटी॥ इति श्रीरागरागनी वर्णनम्॥
पैहिली कांबोली॥ दोसरी नाटभाषा॥ तीसरी नाटका॥ चौथी गुणमंजरी॥ पंचमी शावरी॥॥
इति मेतक॰ रागस्य रागनी॥ पैहिली भैरवी॥ दोसरी बंगहारी॥ तीसरी मेघतानी॥ चौथी पंचमी॥ पंच
मी अंबातोडी॥ इति हिंडोलरागस्य रागिनीनामानि॥ पैहिली चांदनी॥ दूसरी सिंधवी॥ तीसरी विभास॥ चौथी
विलावली॥ पंजमी प्रपाटनी॥ इति कर्नाटरागस्य स्त्रीयानामानि॥ इति हनुमानमतनुसारी रागरागनी नाम वर्णनम्॥
अथ शारदामत रागरागनी संगीत रत्नमाला अनुस्वार नाम वर्णनम्॥ मन्मथा आचार्य॥ पैहिली कर्नाट
दूरीमल्लो विख्यान नाटनामानि॥ तीसरे॥ देशीन॥ विख्यातमलारनामः॥ चौथी श्रीकंद विख्यात
ख्यात देशाख्वाः॥ पंजमी मालव॥ विख्यात मालव छैमी वसंत॥ इति षट्रागनामः॥ अथ रागान्यः॥
पैहिली चांदनी॥ दूसरी॥ मालशरी॥ तीसरी सिंधवी॥ चौथी विलावली॥ पंजमी प्रपाटनी॥ छै
मी विभास॥ इति कर्नाटरागरागनी॥ पैहिली कांबोली॥ दूसरी नाटभाषा॥ तीसरी॥ नाटका॥ चौथी
गुणमंजरी॥ पंजमी शिवखरी॥ छैमी॥ मुखरी॥ इति नाटनाटरागरागनी॥ पैहिली॥ मलारी दूसरी
ललिता॥ तीसरी॥ पटमंजरी चौथी मधुकरी पंजमी दूधकरी॥ छैमी॥ देशा॥ इति देशीत अर्थात
लाररागस्य रागनी॥ पैहिली गुजरी दूसरी रामकली तीसरी॥ गुंदकरी॥ चौथी सवेदका॥ पंजमी॥
तानसी छैमी वराटी॥ इति श्रीदत अर्थात देशाख्वरागस्य भार्याकथनम्॥ पैहिली प्रोवी दूसरी केदारी ती
सरी संख्या॥ चौथी मेघमाजारी पंचमी कपुरचिंता छैमी लवणा॥ इति मालो अर्थात मालवरागस्य भार्या
वर्णनम्॥ पैहिली॥ भैरवी॥ दूसरी बंगारी॥ तीसरी॥ मेघतानी चौथी पंचम पंचमी अंबातोर छै
मी॥ सतोटक॥ इति वसंतरागस्यरागनीनामः॥ इति शारदामतीन सर्व संगीत अनुस्वार नाम कथ्यति॥ अथ दत्तम
विस्तुनाटकः॥ प्रथमे भैरवो द्वैव द्वितीये भूपालिकाः॥ तृतीये श्रीरागश्च चतुर्थी पटमंजरी॥ ८॥
पंचमी वसंतश्च मालवरागस्य षष्ठमी॥ अयं रागस्य संख्या कथ्यते विस्तुनाटकम्॥ इति
अथ वर्तमान नामानि भाषायाम् लिख्यते॥ प्रथम भैरव द्वितीये मालकोश तृतीये हिंडोल चतुर्थी दी
पक पंचमी श्रीराग छमे मेघराग॥ अथ रागस्य रागनी नामानि॥ पहिली मधुमाधवी दूसरी
भैरवी तीसरी भंगाली चौथी वेराटी पंचमी सैंधवी॥ इति भैरवरागस्य रागनः॥ पैहिली टोडी दूसरी
खंभावत तीसरी गौरी चौथी गुणकरी पंचमी कुकुभ॥ इति मालकौंशस्य भार्यानि॥ पैहिली विलावली
दूसरी रामकली तीसरी देवशाख चौथी पटमंजरी पंचमी ललित॥ इति हिंडोलस्य रागनीयम्॥ पैहि
ली केदारी दूसरी कानरि तीसरी देषि चौथी कामदी पंचमी नट॥ इति दीपकरागस्य स्त्रीयानामानि॥
पैहिली वसंती॥ दूसरी मालवी तीसरी मालश्रिरि चौथी असावरी पंचमी धनाश्रिरि॥ इति श्रीराग
स्य पंचभार्या॥ पैहिली मल्हारी दूसरी देशकारि तीसरी भोपाली चौथी गूजरी पंचमी टंकी
इति मेघरागस्य स्त्रीयाकथ्यते॥ इति हनुमतमतेन॥ अथ शिवमतेन प्रथम भैरव॥ दूसरा मालकोश तीसरा हिं
डोल चौथी श्रीराग पंचमी दीपक छमे मेघराग॥ इति पुरुषस्य रागः॥ इति संगीत सिंगारतत्या विलासस्य॥

00

पेहिलीभेरवे दूसरीआसा तीसरीटोडी चौथीगुणकली पंचमीविभास॥ इतिभेरवप्रथमरागस्य पंचभार्याणि॥ पेहिलीरामकली दूसरीअसावरी तीसरीभाग चौथीपटमंजरी पंचमीपारिजात॥ इतिमालकौंशस्य पंचइस्त्रीनामानि॥ पेहिलीगुजरी दूसरीविलावली तीसरीवसंती चौथीपंचम पंचमीसिंदूरी॥ इतिहिंडोलरागस्यरागनीनामानि॥ पेहिलीधनासीरि दूसरीमालासिरि तीसरीगौरी चौथीनीलसीरी पंचमीजैतसिरी॥ इतिश्रीरागरागस्यपंचपत्नीनाम॥ पेहिलिपूर्बी दूसरीपलासी तीसरीकल्यानी चौथीयमन पंचमीमधुमाधवी॥ इतिदीपकरागरागस्यराग्यः॥ पेहिलिमल्हारि दूसरीकामोदी तीसरीभुमन चौथीसारंग पंचमीसोरठ॥ इतिमेघरागस्यरागनीनामः॥ इतिशिवमतेन॥ अथभारतमतेनरागनामकथनम्॥ पेहिलीभेरव दूसरीमालकौंश तीसरीहिंडोल चौथीश्रीराग॥ ४ पंचमीदीपक छठमेमेघराग॥ इतिषट्रागः॥ पेहिलीभेरवि दूसरीटोडी तीसरीविभास चौथी गुणकलि पंचमीविलावली॥ इतिभेरवरागस्यइस्त्री॥ पेहिलीआसा दूसरीरामकली तीसरीमालसिरी चौथीपटमंजरी पंचमीसूहो॥ इतिमालवकौंसरागस्यरागनि॥ पेहिलीअसावरी दूसरी वसंती तीसरीपूर्वी चौथीमधुमाधवी पंचमीखंभावती॥ इतिहिंडोलरागस्यइस्त्री॥ पेहिली धनासिरी दूसरीजैतसिरी तीसरीधौलसिरी चौथीसिंदूरी पंचमीगोरी॥ इतिश्रीरागस्यभार्या॥ पेहिलीप्रदीपकी दूसरीकामरी तीसरीसोराष्ट्री चौथीविदाग पंचमीपलासी॥ इतिदीपकरागस्यभार्या पेहिलीमल्हारी दूसरीसारंग तीसरीगौंड चौथीगुजरी पंचमीनाटे॥ इतिमेघरागरागनी॥ इतिभरतमतेन॥ पेहिलीभेरवी दूसरीमालकौंश तीसरीहिंडोल चौथीश्रीराग पंचमीदीपक छठमे मेघराग॥ इतिप्राग्रदामतअनुस्वाषापुरुषरागस्यषट्रागनामा॥ पेहिलिभेरवी दूसरीआसा तीसरी विभास चौथीगुजरी पंचमीगुणकली॥ इतिभेरवरागस्यइस्त्री॥ पेहिलिअसावरी दूसरीटोडी तीसरीसैंधवी चौथीकुकुभ पंचमी विलावली॥ इतिमालकौंशरागस्यइस्त्रीवर्णनम्॥ पेहिलि पूर्वी दूसरीआभीरी तीसरीवहारवसंती चौथीविजेसका पंचमीरामकली इतिहिंडोलराग स्यइस्त्री॥ पेहिलीधनासीरी दूसरीमालसीरी तीसरीधौलसीरी चौथीजैतसीरी पंचमीगोरी॥ इतिश्रीरागस्यइस्त्री॥ पेहिलिप्रदीपकी दूसरीपटमंजरी तीसरीकामोदी चौथीदेसकरी पंच मीबिदाग॥ इतिदीपकस्यइस्त्री॥ पेहिलिमल्हारी दूसरीसारंग तीसरीगौंड चौथीमधुमाधवी पंचमीसोराष्ट्री॥ इतिमेघरागइस्त्री॥ इतिप्राग्रदामतेनरागरागनीनामानि॥ अथरागस्यवंशनामवर्णनम्॥ एकरागके आठ आठ पुत्रहे नितत्तिषट्रागा त्रिंशतरागनी ३ अष्टचत्वारिंशत् ४८ षट्रागस्यपुत्रम् समोद चत्वारिंशीति ८४ श्रीश्री १०८ सरस्वतिभगवतिजिनि नार दमुनीजीकु ग्रहश्रीनारदजीने नायकवेनोको रागोंका उच्चारणवीज मंत्र आवाह न आसन विनियोग छंद देवऋषी गंधर्वसंयोग उपासनादेई तथाच

स॰ र॰
प्र॰ सा॰
२०

उपासना है। श्रीश्री १०८ कृष्णचंदजिनी। रागमंडलकीसमे। गोप्यायोंकी। मुक्तहारा। सोलां
हजार। अठसोव सठ८। रागप्रकटकीया। जिसमेसे। चोरासि। ८४। रागरागनी। इसजगतमे
विख्यातहैं। अरु। राग। दो प्रकारके। होतीहैं। एकदीशी। एकमार्गी। मार्गीओरागहैं। जिनका
वर्णन। पिछे। कीयाहै। डोर। देशी। ओरागहैं। जोदेश। देशांतरोंमें। अपने। मर्यादापर। गायनकर
तेहैं। अरु। जोतानसेन। नायकनी। तीनसोव ३०० सठ ६० रागरागनी कियेहैं। उनको देशीकह
तेहैं। इनका। वर्णन। आगेआवेगा। अथभैरवरागस्यपुत्रवर्णनम्। प्रथम। पंचा। भंखार। द्वितीये। कं
खार। तीसरा। विलावल। चौथा। गंधार। पंचमा। लक्ष्मासाख। छठमा। भोसाख। सतमा। सूहा। ७
अष्टमा देवगंधार। इतिभैरवपुत्र८। अथमालकोशरागपुत्रनामानि। प्रथमकौशिया। दूसरा। भद्रागरा।
तीसरा। माधव। चौथा। खट। पंचमा। कर्नाट। छठमा। मालवा। सप्तमा। सिंदूरा। अठमा। हेम। इतिमालको
शरागस्यपुत्रः। अथहिंडोलरागपुत्रनामानि। प्रथम। वसंत। दूसरा। सामंत। तीसरा। अलेहया। चौथा। स्या
म। पंचमा। संखराभरण। छठमा। संखराभरण। सप्तमा। मालिगोडा। अष्टमा। भीम। इतिहिंडोलरागस्य
पुत्रः। अथश्रीरागपुत्रनामानि। प्रथम पूर्वी दूसरा हरिया तीसरा तेलंग चौथा मधुसूदन। पंच
मा जैत छठमा टंक सप्तमा मलोहा अष्टमा हेम। इतिश्रीरागस्यपुत्र। अथदीपकरागपुत्रनामानि।।
प्रथम कानरा दूसरा मारू तीसरा नटकिनर चौथा केदारा पंचमा दूमिर छठमा सुगडे
सप्तमा कल्यान अष्टमा छायानाट। इतिदीपकरागस्यपुत्रः। अथमेघरागस्यपुत्रवर्णन। प्रथम दीपर दूस
रा तोडिया तीसरा गोरा चौथा नटकीदार पंचमा मारु छठमा मुहेक सप्तमा। रंगाबुज अ
ष्टमा मधुकार। इतिमेघरागस्यपुत्रः। इतिवर्तमानरागस्यनामानिशारदामतअनुसारेणकथ्यते। अथतानसेन
वर्णननामराग।४ चारप्रकारका भैरव दोप्रकारका मालकौंश अरुतीनप्रकारका ३ हिंडोल। २ दो
प्रकारका श्रीराग २ दोप्रकारका मेघराग २ दोप्रकारका दीपकराग छैरागकी।१५ पंद्रारा
ग प्रथमकीहै दोप्रकारकि गुजरी २ दोप्रकारकि मधुमाधवी चार ४। प्रकारकि भैरवी। २ दोप्र
कारकि बंगालि ३ तीनप्रकारकि वराटि २२ बाईप्रकारकि टोडि ३ तीनप्रकारकि देवा
वति ३ तीन प्रकारकि गौरी २ दोप्रकारकि गुणाकली ३ तीनप्रकारकि कुकुभ २ दो प्रकार
कि रामकलि २ दोप्रकारकि देशाख ३ तीनप्रकारकि पटमंजरी २ दो प्रकारकि ललित
४ चारप्रकारकि किदारी २ दोप्रकारकि कानरि ५ पांचप्रकारकि कामदि पांचप्रकारकि
नाटि २ दोप्रकारकि वसंती १ एकप्रकारकि मालवि १ एकप्रकारकि मालसिरी २ दोप्रका
रकि असावरी ९ नवौ प्रकारकि मल्हारि ३ तीनप्रकारकि देषाकारि २ दोप्रकारकि भू
पालि २ दोप्रकारकि टंकि ७ सातप्रकारकि सारंग २ दोप्रकारकि देवगिरि ४ चार प्रकार
कि सौरठ २ दोप्रकारकि पंचम २० बीस प्रकारकि वहार २२ बाईप्रकार पहारी १ प्रकारकि
विभास

मवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवा
ला षड्जतारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला मध्यम मध्य
ग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला कोमल मध्यम मध्यग्रामवाला कोमल धैवत
मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला निषादमध्यग्रामवाला
गंधार तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला षड्जतार ग्रामवाला निषादमध्यग्रा
मवाला षड्जतारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमल
रिषभ तारग्रा मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंधरग्रामवाला षड्ज
मध्यग्रामवाला निषाद मंदर ग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला॥इत्याभोग॥ अथअंतरा॥
गमधनिसा नीसा नीरेसा रे नीसा मधामा॥धा नीसा नीगरेसा नीसा गमरेसा नीसा
नीसा रेसारे रेनि सा निधा निसा॥इतिआभोगः॥ निषादांशग्रहन्यासंनिवोधार्थिकम् रि
षभोनं प्रातश्चभैरवं गेयं कुलचंद्रमतेनच॥दोहा॥ प्रातहिभैरवगाइये कालीमतअनुसार
निषादन्याससलेअंशग्रहवंसेकियोउचार॥१॥इतिकुलमतेन॥ इतिपंचमतअनुसारभैरवरागसंपूर्णं॥
अथमधुमाधवीभैरवरागरागनीउत्पतिवर्णनं॥दोहा॥ मधुमाधवीइस्त्रीभैरवकीविख्यात सा
धुसोचगावैगुणीजोहोवैप्रभात॥चौपई॥ अंशन्यासग्रहतीनोस्वरजान रिषभं
नरागंधारमुख्यमध्यंस्थान नवभैरवटोडीललितमेलान प्रातसमैकेरागीनमा
यकगान मध्यमांशग्रहन्यासंमध्यमादिकम् रिषभोनं मधुमाधवीप्रातगीयंतेसंपूरणं
भैरविस्तरी॥१॥दोहा॥ अंशन्यासग्रहमध्यमजानमधुमाधवीकहतविधान ग्रीष्मरि
तकेमासमेप्रातसमैपेगाइ भैरवकेइरागनीसंपूरणस्वरवतीइ कल्पद्रुमः मध्यम
ग्रहमाधुमाधवेसंपूरणाजातिवनाइ ग्रीष्मरितुमधधनीमरिगसगरमप्रातहेगाइ॥
इभैरवकिरागनीमधुमाधवीतिसकावर्णनसंपूरणामानस्वरकी ठौर इसमे मध्यम
स्वर मध्यग्रामवाला ग्रहहै जिसको वादीकहतेहै अरुपंचम इसका अनुवादीहै
इसरागनीमे व्यवादी स्वर कोईनहीहै भैरव टोडी ललित इनरागोका मिलापहो

सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
२५
24

करकि इसरागनीकि उत्पत्ति होतीहै मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः कोमल धैवत मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ कोमल तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः कोमल धैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला धैवत कोमल मंदरग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला रिषभ कोमल गंधार अंतर मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार अंतर मध्यग्रामवाला इत्यस्थाई ॥

म प ध नी
सा सा ध नी ध नी रि सा ध नि धा
ध म ध ध नि सा रि ग म ग

अथ अंतरा॥ मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल निषाद मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला गंधार अन्तर तारग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर तारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः षड्जतारग्रामवाला पुनः षड्जतारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवतकोमल मंदरग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमंद्र ग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला पुनः कोमल रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ॥ ५

इत्यन्तर॥ म प ध नि स रे ग ग
रे रे स स रे नि ध ध
म ग रे स प ध नि सा
रे ग म ग रे स रे ग

इत्यन्तरः॥ इत्यमाभुमाधवीवर्णनम्॥ अथ सैंधवीरागनी भैरवइस्त्रीवर्णनम्॥

दोहा॥ आद मध्य औ अंतमे षड्ज हि मुख्य मथान षाड्व सैंधव रागनी गावत चतुर सु
जान खड्जांश ग्रह न्यास षड्जादिक मूर्छना षाड्व सैंधवी गीयं अपरान्ह मे तनुमते
कल्पद्रुमा॥ दोहा॥ षड्ज ग्रह स रि ग म प ध नि षड्ज स्वर षाड्व नाम ग्रीष्म गावत सैंधवि
भास्कर चौथी जाम॥ दर्पणः॥ दोहा॥ तीन सकार णा सौवनी मूर्छना दे आद षाड्व प्रातवे
हीन है सैंधव राग अनाद इ सैंधवी रागणी भैरव कि इस्त्री दूसरी चौथी
पहर दिन मे ग्रीष्म रितु पर गायन कर्ती है षड्ज स्वर इसमे ग्रह और अंश और न्या
स है और छ स्वर की रागनी है धैवत इसमे अवादि है वरवा अहीरी इनको सुगम
करके सैंधवी रागनि की उत्पति होति है॥ दोहा॥ वरवा हीरि कान रि मिली सैंधवी हो
इ धैवत स्वर रिष होत है गावे विरला कोइ षड्ज मध्यग्राम वाला रिषभ
मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्राम
वाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला
पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला
पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रा
मवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदर
ग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्राम
वाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला

स॰ र॰
प्र॰ सा॰
२५

25

इत्यस्थाई॥ सा रे ग म प नी सं नि

सं नि प म ग रे ग म

ग रे सा नि प म ग म

ग रे सा ॥इत्यस्थाई॥

षड्जमध्यग्रामवाला॥ रिषभ॥मध्यग्रामवाला॥ गंधार॥मध्यग्रामवाला॥ मध्यम मध्यग्रामवाला॥ पंचम॥मध्यग्रामवाला॥ निषाद॥मध्यग्रामवाला॥ षड्ज तार ग्रामवाला॥ रिषभताररग्रामवाला॥ गंधारताररग्रामवाला॥ षड्जताररग्रामवाला रिषभताररग्रामवाला॥ षड्जताररग्रामवाला॥ निषाद॥ मध्यग्रामवाला॥ पंचमम ध्यग्रामवाला॥ मध्यममध्यग्रामवाला॥ पुनः पंचममध्यग्रामवाला॥ मध्यममध्य ग्रामवाला॥ गंधारमध्यग्रामवाला॥ रिषभमध्यग्रामवाला॥ गंधारमध्यग्रामवा ला॥ मध्यममध्यग्रामवाला॥ गंधारमध्यग्रामवाला॥ रिषभमध्यग्रामवाला॥ निषा दमंदरग्रामवाला॥ पंचममंदरग्रामवाला॥ गंधार॥ मंदरग्रामवाला॥ रिषभमंदर ग्रामवाला॥ षड्जमंध्यग्रामवाला॥ निषादमंदरग्रामवाला॥ रिषभमध्यग्रामवाला॥ गंधारमध्यग्रामवाला॥ मध्यममध्यग्रामवाला॥ पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला॥ गं धारमध्यग्रामवाला॥ रिषभमध्यग्रामवाला॥ षड्जमध्यग्रामवाला॥ इत्यन्तरा॥

सा रे ग म प नी सं रे ग सं

रे सं नि प म प म ग

रे ग म ग रे नि प ग

रे सं नि रे ग म म ग रे

स॥ इत्यर्थः॥ इति सैंधवी रागनी लक्षणम्॥ अथ वंगाली भैरव राग स्तृतीय रागनी स्तस्ते लक्षणम्॥
अंशन्यास ग्रहषड्ज कहि जान॥ प्रातसमै में हि गायक मान॥ षड्ज मध्य कि मूर्छना
रिषभ मध्य में होई वंगाली भैरव रस्त्री
जो संपूर्णा सुरलोई॥ स्वड्जांश ग्रहंन्यासं षड्जादिक मूर्छना॥ संपूर्णां प्रात
गीयं ते वंगाली भैरवं रागना॥ कल्पद्रुम॥ संपूर्णा स रिगमपधानी षड्ज ग्रह कहि कह
राई॥ ग्रीषम गावत प्रात ही वंगाली पद्ह भाय॥ संगीतदर्पणं॥ भूषत तीन सकार सों
संपूर्णा परमान॥ वंगाली को प्रात ही गावत सब ही जान॥ भैरव गोजरी रामकलि
कछु क विराटी संग ज्येष्ठ आसाढ पद्रात ही जो गुणीयन लावी रंग॥ वं
गाली भैरव रागकी रागणी ग्रीष्म ऋतु मे प्रातःकाल को गायन करती है अरु ष
ड्ज स्वर इसमे मुख्य और प्रधान है जिसको ग्रह अंश न्यास कहती है संपूर्णा
सात स्वर की रागणी है इसमे कोई स्वर वर्जित नही है॥ भैरव गुजरी राम
कली इनका मिलाप होने से वंगाली रागणी होती है॥ दोहरा॥ गुजरी भैरव राम
कली इन जो करएक जोर वंगाली रागणी कहत है जो गावे गुणि वडी भोर षड्ज
मध्यग्रामवाला रिषभ कोमल मध्यग्रामवाला गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला म
ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत अतिकोमल मध्यग्रामवाला
जिसको पूर्वी धैवत और त अतितीवर पंचम कहते है निषाद मध्यग्रामवाला पुनः
धैवत अतिकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रा
मवाला रिषभ कोमल तारग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर तारग्रामवाला पुनः
रिषभ कोमल तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला
पुनः कोमल रिषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रा
मवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्य
ग्रामवाला पुनः कोमल अति धैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवा
ला पुनः मध्यम॰ २ मध्यग्रामवाला पुनः गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला॰

स॰ र॰
प्र॰ सा॰
२९

76

कोमलरिषभमध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला अतिकोमलधैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला अतिकोमलधैवत मंदरग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई॥ ॥

षड्ज तारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पुनःमध्यमतारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला पुनःगंधारतारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनःरिषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनःषड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यतारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला पुनःकोमलरिषभ तारग्रामवाला पुनःषड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला ॥ अतिकोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला ॥ गंधारमध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तरा॥

स | कोमल रे | अंतर ग | म | प | अतिकोमल ध | नि

अतिकोमल ध | नि | स | कोमल रे | ग | कोमल रे | स | नी | कोमल रे | स | स | नी

स | नी | अतिकोमल ध | प | म | ग | कोमल रे | नी | स | नी | अतिकोमल ध | प

म | प | अतिकोमल ध | नी | स ॥ २ इत्यस्थाई॥ स | कोमल रे | ग | म | म

ग | ग | कोमल रे | कोमल रे | स | स | नी | स | कोमल रे | ग | कोमल रे

स | नी | अतिकोमल ध | प | म | ग | कोमल रे | स | नी | स | नी

अतिकोमल ध | प | म | प | अतिकोमल ध | नी | स ॥ इत्यन्तरा॥

अन्यमत बंगाली वर्णनम् टोडी और विराटी जैतश्री इन रागोंके मिलाप करके बंगालीरागणी होती है षड्जस्वर इसमें ग्रह अंश न्यास है और औडव है धैवत मध्यम वर्जित है

वंगालीग्रोऽस्वाज्ञेयाग्रहांशन्यासषड्जमाकरिषहीनाचवेत्तैयामूर्छनामध्यमा
मता॰ ॥ मूर्छनावामत्रयोपेताकलीनाथेनभाषितटोडीवराटीजयतश्रीध्वत्रयमिला
पवंगालीका ॥ अमाएा ॥ जिसरागमेषड्जस्वर वादी ॥ होताहै ॥ उसमे ॥ मध्यम संवादि
होताहै ॥ जिससे रागवनताहै ॥ जव ॥ ग्रोई ॥ स्वरनावहै ॥ तवराग ॥ केसि ॥ रहताहैं ॥ इ
सवासति ॥ संपूरण ॥ अच्छाहै ॥ संगीतदर्पण ॥ भूषततीनसकारसोसंपूरणपरमा
न वंगालिकोप्रातहीगावतसवेसुजान ॥ ॥ इतिवंगालीरागणीवर्णनम् ॥

अथभैरवीरागणीवर्णनम् ॥ + मध्यमांशाग्रहंन्यासंमध्यमादिकमूर्छना ॥ संपूरणांभैरवी
गेगीयंमध्याह्नदिवसमे ॥ चौपई ॥ मध्यमअंशन्यासग्रहहोई ॥ कहतरागणीभैरवीसोई ॥ इन
रागनजोएकहिकीजे ॥ सप्तस्वराणकोरागदकीजे ॥ दोहा ॥ अंशन्यासग्रहधैवतजान ॥ गीतम
होदेकरतविधान ॥ सोरठा ॥ संपूरणस्वरसातकोकोमलअंत्रवनाई ॥ भैरवीगावेप्रातकोमी
तरागणीमीलकि ॥ ॥ दोहा ॥ टोडीरामकलिअरगुजरिइतीनोसमभाग ॥ इनहैमीलागुज
णीगावहैमकटेभैरविराग ॥ ॥ संपूरण सातस्वर रागणी भैरवि भैरवाकिइस्त्री मध्यम
पहरदिनमे गायनकरे टोडीरामकली गुजरी इनातीन्नारागादेमेल करणेको भैरवि
रागणि कहतेहैं मध्यमस्वर इसमे न्यास ओर अंशग्रहहै ओर एकमतमे धैवतस्वर अं
शन्यासग्रहहैं सोसंपूरण प्रकार कह्याजावेगा॰ रिषभकोमल ओरधैवत अतेकोम॰
ल गंधारअन्तर ओर निषादकोमल इनस्वरोंकरके भैरवि रागणि होतिहै वाकिमध्य
म ओर पंचम शुद्धस्वर ही लगतेहैं मध्यमस्वर इसमे वादीहै षड्ज ओर निषाद संवा
दीहै पंचम धैवत ओर गंधार अनुवादीहै इसप्रकारकरके इसरागणिके उत्पत्ते होतिहै
मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला रिषभअतिकोमल तारग्रामवाला ‸ षड्जतारग्रामवाला नि
षादकोमल मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला / निषादकोमल मध्यग्राम
वाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवा
ला मध्यममध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवीवाला ॥

स॰ २॰
म॰ सा॰
२७

27

निषादकोमल मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला म
ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल
मध्यग्रामवाला गंधारमध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला

इत्यस्थाई म प रे म नी ध नी ध प ध म प म

नी म ग म प ग रे ग म प इत्यस्थाई

मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला म
ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला
षड्जतार ग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला
गंधारतारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला
रिषभ तारग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला
गंधार तारग्रामवाला रिषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला रिषभ ता
रग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला रिषभ तारग्रामवाला निषाद तारग्राम म
ध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवा
ला गंधार तारग्रामवाला रिषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला रि
षभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला रिषभ तारग्रामवाला निषादकोम
ल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ॥ इत्यन्तः ॥ संकीर्णभैरवी ॥
अथ षड्जभैरविवर्णनम् ॥ म प प म प नि सा रे म

ग रे सा रे नि सा ग रे ग रे ग रे ग रे

ग रे सा रे नि सा म प ग रे ग रे सा रे

नि स प प म ग रे सा म प रे सा ग

अथ शुद्धभैरवरागणी॥ धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः
कोमल धैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला गं
धार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमल धैवत मध्यग्रामवाला मध्य
म मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमल गंधार मध्यग्रामवाला षड्ज
मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला निषादको
मल मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला इत्यस्थाई॥ ध ध
ध म प ग म ध म प म ग म
रे म नि ध इत्यस्थाई॥ मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार
कोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमलधैव
तमध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमल
गंधार तारग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला षड्जता
रग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला ।
मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामग्रामा धैवतकोमल मध्यग्रामवाला नि
षादकोमल मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला
कोमल धैवतमध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवा
ला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला रिषभकोमल
मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मंदरग्रामवाला कोमल धैवत मंदरग्रामवाला ।
अन्तरा॥ म ग म प ध नि सा ग सा रे सा नि
ध म प ध नि सा नि ध म ग रे सा
ग रे नि ध स इत्यन्तरा॥ इति शुद्धभैरवरागणीवर्णनम्॥

स॰ २॰
म॰ सा॰
२८
२२।

द्वितीयप्रकारभैरवी ॥ दोहा संपूरणगाइयरभैरवी है भैरवकि जोई अंशन्यासग्रह
तीनऋषभआद है सोई ॥ कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला निषादकोमल षड्
जमध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला
कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम
वाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधारकोम
ल मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला को
मलऋषभ मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदर
ग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधा
रकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ रे सा नि सा रे
ग म ग रे ग रे म रे नि म म
नि प ध ग रे ग ग रे म इत्यस्थाई ॥

पंचममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यकोग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
कोमलधैवत मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला
रिषभकोमल तारग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला
पुनः षड्जतारग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रा
मवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रा
मवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला कोमलधैवत मध्य
ग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवा॰

मध्यम मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला मध्य
ममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्
जमध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तः ॥ ध ग म प नि स रे नि

स म नि प रे सा रे नी म प नि

ध प म ध ग म ग रे स इत्यन्तः

तृतीयप्रकारभैरवेवर्णनम् ॥ गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्य
ग्रामवाला षड्जमध्य ग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रा
मवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला धैवतकोमल मंदरग्रामवाला नि षाद
कोमल मंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला पंचम
मंदरग्रामवाला मध्यममंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला पुनःगंधार मंदर
ग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला धैवतकोमल मंदरग्रामवाला कोमल नि
षाद मंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला पुनःषड्ज मध्यग्रामवाला निषाद
कोमल मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला म
ध्यममध्यग्रामवाला कोमलगंधार मंदरे ध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
कोमलगंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला
इत्यस्थाई ॥ः ग रे म रे स नि प नि स प ध

म ग ग म प नि स स नि प ध

नि प नि म ग रे स इत्यस्थाई ॥ः

कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्राम
वाला मध्यममध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला कोमलधैवत म

म॰ र॰
म॰ सा॰
३

30

ध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंकोमल मध्यग्राम
वाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला इतिच षड्जतार
ग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पं
चममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पं
चम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मध्यमग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रा
मवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला॥ गंधारकोमल
तारग्राम वाला कोमलरिषभ॥ तारग्रामवाला॥ निषादकोमल॥ मध्यग्रामवाला
धैवत कोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोम
ल गंधारमध्यग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला कोमलधै
वत मंथरग्रामवाला कोमलनिषादमंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोम
लऋषभ मध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
पंचम मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्राम
वाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवा
ला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला
निषादकोमल मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
कोमलनिषाद मंदरग्रामवाला कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवा-
ला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला मध्यम मध्य-
ग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला पंचम, मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम
वाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद म
ध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला निषादकोमल
मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमलगं
धार तारग्रामवाला कोमलऋषभ तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला ६॥

कोमलगंधार तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवा
ला कोमलनिषाद तारग्रा मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम
मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला षड्ज
मध्यग्रामवाला॥इथयन्त्रः॥ प ध ग म नि प ध म

ग रे स स नि प ध ग म ध प नि
स ध प नि स स ग रे नि प ग
म ध नि प ध, म ग स ध प नि
स रे ग म ध प नि प ध म ग
स ध नि प स नि रे स ग रे म
ग ध म प ध नि प स नि रे स
ग रे म ग रे स नि प ध म ग
सा ग रे स रे स नि प नि स ३

+यंत्रः॥ इतनि प्रकार भैरवि रागणिके इस्त्रीके जो उपर वर्णनकियेहै
और इउन्यते भैरवरागकि पंचभार्यासहित सर्वसंगीत शास्त्रमत अनुसार।
और सर्वगीतत्व गायनमर्यादा अनुकूल स्वरोंकेभेद और रागोकीमिलापसंयु
क्त वर्णकिई गयेहै अब आगे भैरवरागकी पुत्रोका वर्णनकियाजाताहै
अथपुत्रभैरवरागकी तिनकीनाम। प्रथम बंगाल पंचम द्वितीय मधुर तृ
तीय हर्ष चतुर्थ देशाख पंचम ललित षष्टम बेलावल सप्तम माधव अष्टम

स॰ र॰
प्र ना॰
३१

3

पंचम राग भैरवरागस्य मध्यम पुत्रवर्णनम् पंचभार्यासहित ॥
ऋषभांशग्रहन्यासं ऋषभादिकमूर्छना विगुस्वरवर्जितो गीयं भैरवपुत्रस्य पं-
चमः दोहा अंशन्यासग्रह रिषभस्वर पंचम वर्जित होई षाडवस्वर पंचमक है भैरवपु-
राग है सोई संपूरण निस अंत मे प्रात समाज बहोई पंचम भैरवपुत्र जो गावत है सबको
ई संगीतकल्पद्रुमः उन्मत्तकोकोकिलनादपुंजो वीणादधानो मृदुवेशधारी महागमू-
र्तिः स्मरपुष्पकर्णो कांतिः किलशोभनस्य ऋषभांचग्रहन्यासपंचमस्वरवर्जितः
शोषराच्यामसीयंते पंचमो रागउच्यते ॥ रेमपपनीसारागमधरेसा सा रिसानीपमगा
पंचमराग भैरवका अथम पुत्र रातकी अंतमे प्रातःकालसमे विषगायन करे गा-
वाहिई संपूरण संगीतोका ईमत है और छेद स्वरका ईराग है इसकि षाडव संज्ञा
है पंचम स्वर अवर्जित है और एकमतवाली गंधार अवर्जित कहते है क्योंकि
जिसरागमे ऋषभस्वरवादि होता है उसमे गंधारस्वर अवादि होता है और पंचम
स्वर संवाद होता है और कहीकही धैवत भी संवादि होता है और भाकिस्वर संवा-
दि होताहै अनुवादि होती हैं ऋषभ मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंच-
म मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्राम-
वाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषा-
द मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम-
वाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला इत्यस्थाई ॥ षड्ज तार-
ग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवा-
ला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद तार-
ग्रामवाला पंचम मध्यतारग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मं-
दर ग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला
निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवा-

ला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला रे

म प प नी सा ग रे सा नी प म ग

रे सा इत्यस्थाई ॥ सा म प म ग रे

सा नी प प प म ग रे नी

म प प नी सा ग म ग

रे सा सारेग रेगम गगरे गमप मपग प

मग मगरे गरेसा सारेमापग रेमपगम मपगम

प गरेमगपा नीपापमग गमगरेसा रेसानीपापमगरे सा

रेनीगरेपप पपनीसारेनीप ससस रेरेरे ममम पपप

पपप नीनीनी ससस सगगमपपनी सापनीपपमग रेसा

इत्यन्तः ॥ ऋषभ मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला गंधार तार
ग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गं
धार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवा
ला ॥ पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ
मध्यग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला धैवत मंद्रग्रामवाला पंचम मंद्र

स॰ र॰
भै॰ मा॰
३२

3

ग्रामवाला ॥ धैवत मंद्रग्रामवाला ॥ निषाद मंद्रग्रामवाला ॥ षड्ज मध्यग्रामवाला ॥

इत्याभोगः ॥ अथालतरम् ॥ रे म प ध नी सा।

ग म प म ग रे सा नी

प म ग म प ध नी सा

नी ध प म ग रे सा नी

ध प म ग रे म ग रे

ग प म ध नी सा रे ग म

रे सा सरेसा सरेग गरेसा सगम गमप

मपध पधनी नीधप धपम पमग मगरे गरेसा

सारेगरेसा गरेसानीरिम सानीधनीधमगरे मगरेसानीध। नीधमगम

सारेगरेसानीधनीध मगरे गरेगरेसा सरेसा सारेगरेसा सानी

रेसा ॥ इत्याभोगः ॥

इति पंचमरागस्य भैरवपुत्रः ॥ अथ मालिगौडा द्वितीयपुत्र प्रारंभः ॥ धैवतांशग्रहं न्यासं धैवतादिकमूर्छना भैरवं द्वितीयपुत्रस्य मालिगौडाच नोर्थे कथ्यते ॥ धनाश्री रागमालवं भैरवसंयुतं मालिगौडाच नामा निश्रपराह्णे तु गीयते ॥ दोहा ॥ धैवत अंश ग्रह न्यास है धैवत हो ग्रहमान ॥ भैरव द्वितीयपुत्र है मालिगौड प्रमान ॥

दोहा श्रीरागधनाश्रीमालवभैरवसंग तृतीयपहरपैगावहैमनमेंवडेअनंग॥
संगीतकल्पद्रुमः धैवतांशग्रहंन्यासंमालवाश्रीचसंयुतं धनाश्रीमिश्रतायेता
मालियोगसकथ्यते वार्तिक श्रीरागमालिगौडनामभैरवरागका इसकपुत्र
है और वाररागका संयोगहोकर इसरागकीउत्पत्तीहोतीहै और धैवतस्वर इ
समेंअंश और ग्रह और न्यास धैवतस्वरहै और इसराग संपूर्ण सातस्वरकाहै ॥
और सूर्यउदय तृतीय पहरमें इसको गायनकर्तीहै ईश्वरकि सभामेंहै इसके द्वारा
इशगवनताहै ॥ धैवतपूरब जिसको तीवर पंचम कहतेहै ओअपनी श्रुती
पहली रोहिणीनामापर होताहै अर्थात् तीनश्रुतीका धैवतहै दोश्रुती अपनी
छोडकर एकश्रुतीका धैवतहोजावे उसको पूर्वधैवत कहतेहै। भैरव रागमेभी
इहिधैवतलगताहै इसरागमे भैरवलगताहै इसवास्ते इसको भैरवका पुत्रकहताहै
धैवतपूर्व मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ऋषभ म
ध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
पूर्वधैवत मध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ म
ध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला
ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ ध नी सा
रे ग म प प म म रे ग म ग
रे सा इत्यस्थाई निषाद मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पु
नः धैवतपूर्व मध्यग्रामवाला पुनः धैवतपूर्व मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवा
ला षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवतपूर्व मध्यग्रामवाला पंच
म मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधारमध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला
षड्ज मध्यग्रामवाला धैवतपूर्व मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्राम

म॰ र॰
प्र॰ सा॰
३३

33

वाला निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला इत्यवः ॥ अथालापम् ॥

नी नी प रे नी सा प ग रे सा नी

प प म ग रे सा म ग रे सा

सासा नीरेसा सानीरेसा नीपप मगरेसा सारेसा

नीपा नीपप मगरेसा पपरेसा पपरेसा मगरेसा

नीपम पमगरेसा मरेसा सरेगा रेगम गमप मपधा

पधनी पनीसा नीपप धपम पमग मगरे गरेसा

इतितानसेनकृतअलापः ॥ अथआभीरभैरवरागस्यतृतीयपुत्रोत्पत्तिवर्णनम् ॥
गांधारांशग्रहन्यासं गांधारादिकमूर्छनां अपराह्णेतुगायंति आभीरंभैरवंसुतं दोहा
अंशग्रहन्यासगंधारस्वरग्रहवीवाहैजान अपराह्णआभीरजोगावहिभैरवपुत्रप्रमाण भी
मपलाशीजोऊके औरअहीरीसंग संकररागस्वरसातकोगावेलावरंग ॥ ईआभीरराग
नामा भैरवरागकापुत्र तीसरापुत्रहै और इसको तीसरे पहर गायनकरतीहै भीम
पलासी और अहीरि इनतीनोका संयोगहोनेकरके इसरागकि उत्पतीहोतीहै औ
रकोइभी भैरवीकुछ इसमे मिलताहै इसिवास्ते भैरवकापुत्र कहतेहैं और कई
इसको दीपककोहतीहैं पुत्रभी कहतेहैं मगर दरहकीकत असलमे भैरवकापुत्रहै
क्योंकी रागएक पवनकासंयोगकरके शरीर बनाहोवाहै कोछ ज्यानेकरकेनहीं।

एकनिर्केवल कथनमात्र यद्येहोवी तौवायोमेहोगा अरुवायोकास्वरूप सूक्ष्महै इस करकि प्रतीतनहिंहोताहै अरुफेरदेवताहै देवताका मनुष्यको प्रतीतहोनाकठिनहै इसकरके शास्त्रकारोने वायुकाप्रमाण अर्थात्स्वरका प्रमाण इसकरके इसप्रकार वंशप्रमाण कियाहै कि जिसछेयोरागोमेसि जिसरागके स्वर जिरागनीमे वा रागमे मिली औरु उनस्वरोसे रागरागनीवने उसरागको वंशकहतेहै उसेरागका जिसराग के छेवोरागोमेसे स्वरमेलो रागनीहोइ उसको इस्त्रीकहतेहै रागहोवा उसको पुत्र कहतेहै दृष्टांत जैसे कल्याणरागमे भैरवका अंशमिलताहै उसको भैरवका पुत्रकह तेहै इसीतरा सबरागजाननां इसवास्ते निश्चयकरके दृष्ठहै इआभीररागा भैरव काघुत्रहै दोहा । एकरागरागिरागसंगमिलकरबांधेमल उपजेपूतिसयोगतेभयोपुत्रशास्त्र अनुकूल दोहा संपूरणस्वरमानकोवीसश्रुतेपरमान हैस्वरकोमललाइकेगुणीजन करतबखानकीजेगान ॥ गंधार मध्यग्रामवाला कोमलमध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यमग्रामवाला धेवतकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः निषा द मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषादमध्य ग्रामवाला कोमलधेवत मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला कोमलमध्यम मध्य ग्रामवाला । ऋषभमध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला धेवतकोमल मंदरग्रामवा ला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला कोम लधेवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला ऋषभ मंदरग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रा मवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यष्टाई ॥ अथालाप्तम् ॥ ग

म प ध नी रि स नी ध प

म ग रे स नी ध प म ध ध

सप

जो

१७

नी रे। ग ग रे नी सा इत्यष्टाई अर्थात्

गंधार मध्यग्रामवाला कोमलमध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋ
षभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला गंधार तारग्राम-
वाला मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज
तारग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तार-
ग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्राम
वाला कोमलमध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला
निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तः ॥ अथालापम् ॥

ग म ग रे नी सा ग म ग रे

सा नी सा सा नी ध प म ग रे

नी सा इत्यन्तः ॥ इतिश्रीआभीररागभैरवरागस्यतृतीयपुत्रवर्णनम् ॥
संगीतकल्पद्रुमेनमतः आभीरस्यवर्णनम् विलोकयन्तिदयिकं गंभीरे विश्लोकयं
तिभ्रुभगातिमोदयितस्नानेकारङ्लपुष्पराएतान्याभीरीकोका सुदस्यनततस्यातभी
मपलाशीसिंदूरावरावास्वरसंयुताजयआभीरी ज्ञायतेतस्याधैवतस्वरग्रहस्यचइतिग्र
होरी धैवतांशाग्रहेन्यासःसंपूर्णानारदमतेमतविभासभैरवपुत्रश्रवणोदयप्रगी
यते ॥ धनीधपमगपगमैसारेगरेसासारेसानीधनीधगरेसानी ॥ ॥
संगीतकल्पद्रुम इसप्रकार आभीरराग होताहै इसकाकहना धैवतग्रह
है अरु ओ इसप्रकारहै धैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला पु
नः धैवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला

कोमल ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवा
ला धैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्
ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम
मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभकोम
ल मध्यग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला धैवत मंद्रग्रामवाला पंचम
मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मंद्रग्रामवाला पंचम मंद्रग्रामवाला धै
वत मंद्रग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥

इत्यस्थाई ॥ प ध प नी स रे ग ध

म ग रे स स रे ग ध म

ग रे स स नी प ध म ग

रे स ग रे स नी प ध म

ग रे स स रे नी प ध म

ग रे स नी रे स ग रे ग

रे स स नी प नी प ध प

ध म ग ध म ग रे नी सा

स॰ र॰
म॰ स्था॰
३५

35

इत्यस्थाई ॥ धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्राम वाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रा मवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला म ध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रा मवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंद र ग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवतमंदरग्रामवाला निषा दमंदरग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवा· मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवा- ला कोमल रिषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला ष ड्ज मध्यग्रामवाला इत्यन्तरः ॥ ध नी स रे ग

म प म प म ग रे स नी स

नी ध रे स नी ध प म ग

रे स ध प म प म म प ध

नी स रे ग म प ध प म

ग रे स स नी स इत्यन्तरः अन्तरंसगीमः

द्वितीयषट्‌ईस्त्री ग्रोवीनामास्ति

श्री

इतिश्रीभैरवरागस्यभैरवलक्ष्मीयपुत्रः अथषट्‌रागभैरवरागस्यचतुर्थपु
त्रवर्णनम् धैवतंअंशग्या अंशान्यासंचैवधैवतंतेयासंगीतस्यमतेनच प्रा
तंगीयतेरागःषट्‌नामस्यकथ्यते दोहा अंशन्यासग्रहधैवतजानो भैर
वपुत्रषट्‌रागवषानो दोहा गुजरीटोडीरामकलीदेषीसंगमिलाई भै
रवीपुत्रषट्‌रागकोगंधारजोरकरगाई इतो षट्‌राग भैरवरागका चौ
थापुत्रहै और प्रातःकालमे इसको गाइनकर्तेहै और इनछरागकि
मीलने करके इसके उत्पतीहोतेहै गुजरी और रामकली टोडी और भैरव
और देशी और देवगंधार इनको मेलकरके षट्‌राग उत्पन होताहै और
धैवतस्वर कोमल जातीका इसरागमे ग्रह और अंश और न्यासहै इनस्वर
रोसे इराग वनताहै दोहा संपूरणस्वरसातकोछरागमिलहोत धनी
सासारेगमपषट्‌गावतदिनउदोत धैवत और ऋषभ कोमल और गंधार
निषाद षड्ज और मध्यम और पंचम इसप्रकार इसरागकी उत्पतीहोतेहै
संगीत कल्पद्रुमः षट्‌रागोत्पत्तिटोडीभैरवगुजरीचदेषीगांधारएवच
रामकलीस्वरसंयुक्ताषट्‌रागोऽभवेत्तदा धैवतांसग्रहन्यासोधैवतादि
कमूर्छना संपूरणप्रातकालेचगीयतेषट्‌संज्ञकः धनीसासारेगमप
स्यात्‌दिवसेप्रथमजामकः भैरवपुत्रप्रोक्ताइन्द्रमस्योहनुमता इति
षट्‌रागः ॥ तथाचरत्नाकरे तथासंगीतदर्पणे हरसंगीतमेइसप्रकार
इसके उत्पतेहोलिखीहै अबइसके सरगम वनावनेका प्रकार लि
खताहै इसप्रकार सरगम बांधनेचाहिए ॥ कोमलधैवत मंदरग्राम
वाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पुनःषड्ज मध्यग्रामवाला

स॰ १॰
म॰ सा
३९

36

कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमलऋषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला धैवत मंध्यग्रामवाला दर ग्रामवाला पुनः धैवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला जैं षड्ज मध्यग्रामवाला इत्यस्थाई ॥ अथान्तरम् ॥

ध	नि	सा	सा	रे	ग	म	प	ध
नी	सा	रे	ग	ग	रे	म	म	नी
नी	सा	सा	नी	ध	प	म	ग	रे
सा	नी	ध	ध	नी	सा			

इत्यस्थाई अन्तरम् ॥ अथान्तः ॥ धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला तारग्रामवाला रेषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला

पंचम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला
षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला
मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला
षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला
मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला
निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला धैवत मंद्रग्रामवाला
पंचम मंद्रग्रामवाला मध्यम मंद्रग्रामवाला पंचम मंद्रग्रामवा
धैवत मंद्रग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मंदध्यग्रामवा
ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम
वाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्राम
वाला इत्यन्तरः ॥ अथालापम् ॥ ध नी स रे म

म प ध नी स स रे ग म ग

नी रे स स नी नी स रे ग ग

रे स नी ध प म ग रे स नी

सा ध प म प ध नी स रे ग

म प म ग रे नी स ॥ इत्यन्तरः अलापम्

म० र०
म० सा०
२०

37

धैवत मंद्रग्रामवाला पंचम मंद्रग्रामवाला धैवत मंद्रग्रामवाला
निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः षड्जमध्यग्रामवाला
ऋषभ कोमलमध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रा
मवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः पंचममध्यग्रामवाला धैवत म-
ध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ
तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला पुनः गंधारतारग्रामवाला मध्यम
तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला पुनः मध्यमतारग्रामवाला गं
धार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला नि
षाद तारग्रामवाला धैव मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंच
म मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋ
षभकोमल मध्यग्रामवाला धैवत मंद्रग्रामवाला निषाद मंद्रग्राम
वाला षड्ज मंद्रग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम
वाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रा
मवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंद्रग्रा
मवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्याभोगः ॥ प प प

नी स स रे ग म प प नी

स स रे ग म प म ग रे

स नी स नी ध प म ग रे

स प म ग रे स नी स नी प
प म ग रे स ग रे स प नी
रे ग रे स ग रे स इत्याभोगः ॥

इति षट्रागभैरवरागस्य चतुर्थपुत्रवर्णनगायनविधिसमाप्तम् ॥
अथ भंभाररागभैरवरागस्य पंचमपुत्रवर्णनम् ॥ निखादांशग्रहन्यासं निखादाधिकमूर्छना दिवसप्रथमयामेकत्तगीयंतेभैरवंसुतम् दोहा अंशग्रहऔरन्यास निषादस्वरग्रहभीतिसकोजान धैवतवर्जितरागईयह षाड्वजानप्रमान दोहा तीनरागमिश्रतकरैगावैगुणीजनसोच सोमालकोशऔरभैरवमेलैहैललितसंकोच १ वार्तिक इभंभाररागभैरवरागका पांचमापुत्रहै और इछैस्वरकाहै धैवतस्वर इसमेवर्जितहै और निषादस्वर इसकाग्रह और अंश और न्यासहै अर्थात् उत्पत्ती और गमन आगमन औरलीनता इसरागकी निषादस्वरहै तिसको कहतेहै ग्रह अंशन्यास ऋषभकोमल और गंधार अंत्र निषादकोमल षड्जमध्यम और पंचमशुद्ध स्वर इसप्रकारकरके गायन करतोसे इ रागहोताहै सोलांछनती और छस्वर कुलइसरागमे लगतेहै और प्रातःकालमे इसको गायनकर्तेहै मालकोश और भैरवराग और ललितरागनी इनतीनोका इकत्रहोकरके अर्थात् मिलापहोकरके इरागवनताहै और भंभार इसकानामहै सर्वसंगीतोकामत येहीहै ॥

सं॰ र॰
म॰ सा॰
१८

38

संगीतकल्पद्रुमः भैरवामालकौशाख्यललितसंमिश्रितयदा वंवोगेना
पतेयत्रप्रातकालेप्रगीयते निखादांशाग्रहन्यासपैवतस्वरवर्जित नीसा
रेगमपस्यात्रागस्तत्रप्रकीर्तितः ॥ तथाचसंगीतदर्पणेः अथसर्गमवं
पनप्रकारः निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला औरऋ
षभकोमल मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला औरगंधार अन्तर
उसकोसंगयाहै जब गंधारस्वर अपनेश्रुति छोडकर ऋषभस्वरकी दूसरी
श्रुतिपरआवे तब उसको गंधार अन्तरकहतेहै ॥ मध्यम मध्यग्राम
वाला पंचम मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज ता
रग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला गंधार अन्तरतारग्रामवाला
मध्यम तारग्रामवाला गंधार अन्तर तारग्रामवाला ऋषभकोमल तार
ग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला ॥
पंचममध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला
ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला षड्ज॰
मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ अथस्थाईतराणा ॥ नी

सा रे ग म प नी स रे
ग म म ग रे स नी प
म ग रे स म ग रे नी
सा स रे ग म प प म

ग रे नी स स रे ग रे ग स

ग म प प म ग म ग रे ग

रे स रे स नी नी स रे स रे

ग रे ग म ग रे म ग म प

प म ग म ग रे ग रे स

रे नी स. म ग रे नी स ॥ १

मस्थाईसरगमअलङ्काराणि ॥ अथालङ्कारः निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला गंधार अन्तरतारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधारअन्तर तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मंदरग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला

त॰ २॰
म॰ सा॰
३५

षड्ज तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधारअन्तर तारग्रामवाला ऋषभ कोमल तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद तारग्रामवाला मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मंध्यग्रा॰दरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तः ॥ अथान्तरम्

नी स रे ग म म ग रे स
नी प म ग रे म नी प म
ग म प नी स रे ग म प
नी स रे ग म म ग रे स
नी प म ग रे नी स ॥ १

त्यन्तः अन्तराणि ॥ अथाभोगः निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषाद कोमलमध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला गंधारअन्तर तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला ॥ः॰

गंधारअन्तर तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्रामवाला षड्ज तार
ग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्य
म मध्यग्रामवाला गंधारअन्तर तारग्रामवाला ऋषभकोमल तारग्राम
वाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवा
पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला गंधारअन्तर मंदरग्राम
वाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्राम-
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधार अन्त
रमध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषाद
मध्यग्रामवाला कोमल षड्जतारग्रामवाला निषादकोमल तारग्रामवाला
मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधारअन्त
र मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला निषादमंदर ग्रामवाला ष
ड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्याभोगः ॥ अथावरागिणि ॥ नी स रे
ग म म ग रे स नी प म
ग रे नी स स नी स नी प
म ग म प नी रे ग म प
नी स रे ग म म ग रे स
नी म रे नी स नी प म ग
रे नी स ॥ इत्याभोगः अवतरागिणि ॥ इतिसंचारराग

स॰ २॰
प्र॰ सा॰
धु॰ ष॰

10

भैरवरागस्यपंचमपुत्रगायनविधिसर्वसंगीतग्रन्थसारसमाप्तम् ॥
अथभैरवरागस्यषष्टमपुत्रदेशाकारनामः गायनविधिवर्णनम् ॥
ऋषभांशग्रहंन्यासंऋषभादिकमूर्छनं प्रातश्चगीयतेरागः संपूर्णस्वरपुञ्ज
ने दोहा अंशन्यासग्रहऋषभस्वरतीवरजानिवषान प्रातगुणिजनगावहै
करदेशाकारपरमान दोहा मालीगौरविभासपुनदेशीहैदेषामिलाई भैरव
रागकेपुत्रकेदेशाकारसमभगाई ॥ वार्तिक ॥ इसरागभैरवरागका षष्ट
मपुत्र देशाकार नामकरके कहतेहैं और प्रातःकालमे इसको गाय
नकर्तेहै इसमेभैरव और गौरी और विभास और देशी मिलकरके इस
रागकी उत्पती होतीहै भैरव गौरी गौरा तीनमेलकरके एकराग मा
ली गौरा नामा होताहै सोइस देशाकार रागमे मिलताहै जिसकर
के मालीगौरा और विभास और देशी इनरागोके संयोगसे इसराग दे
शाकार नामाकी उत्पती कहीहै ॥ इसरागमे ऋषभस्वर तीवर होकरके
ग्रह और न्यास और अंश होताहै और गंधार स्वरवी तीवर होताहै ॥
संगीतकल्पद्रुमः मालीगौराविभासेषुदेशाकारस्यजन्मभूः ऋषभस्वरेनि
वासश्चप्रातकालीप्रगीयते रेगमपधनीसा तीव्रगांधारऋषभश्चसम्वा
दिमध्यमस्तथा अनुवादिपंचमेपुक्तासंपूर्णादेशकारिका धधरेसानीमपध
सागरेसानीध गमपनीपमारेसागमनीध ॥ इतिदेशाकार ॥ ॥
ऋषभ तीवर मध्यग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला
मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला नि
षाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला ।

गंधारतीवर मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्राम-
वाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवा
ला ऋषभ तारग्रामवाला गंधारतीवर तारग्रामवाला मध्यम तारग्राम
वाला गंधारतीवर तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रा
मवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रा
मवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम
वाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ प प स ।

प ध नी स रे ग म प

ध नी स रे ग म म ग रे

नी स नी रे स स नी ध प

म ग रे नी स इत्यस्थाई प्रकाराणि ।

धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋ
षभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पुनः
मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला नि
षाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला ॥

स० र०
प्र० का०
५१

धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला।
गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला।
निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला
मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला
निषाद मंदरग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला
मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला
निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला
षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला
पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला
ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
इत्यन्तः ॥ अथालापः ॥ ध नी स रे ग म
म ग रे नी स रे स नी ध
प म ग रे स नी ध प म
म प ध नी स रे ग म
प ध नी स रे स नी ध ध
नी रे स नी ध प म ग रे

नी स इत्यन्तरः सगीम अन्तरागा ॥ॐ अथाभोगाप्रारंभः॥

धेवत मंदरग्रामवाला पंचममंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला गं धार तीवरमंदरग्रामवाला ऋषभ तीवरमंदरग्रामवाला षड्ज मंदर ग्रामवाला ऋषभ मंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला मध्यम मंदर ग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धेवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रा मवाला षड्जमंदरग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम वाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धेवत मध्यग्राम वाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तार ग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला ऋषभ तारग्राम वाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद तीरमध्यग्रामवा ला धेवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रा मवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्याभोगः ॥ प ध म ग

रे स रे ग म प ध नी स

रे ग म प ध नी स रे ग

म प म ग रे स नी रे नी

ग॰ रे॰
म॰ सा॰
ध

मधुर

42

सा नी ध प म ग रे नी सा

इत्याभोगः ॥ इतिभैरवरागस्यषष्टमपुत्रदेशाकारनामःसमाप्तः ॥
अथभैरवरागस्यसप्तमपुत्रदेशाखिनामःवर्णनम् ॥ गांधारांशोग्रहंन्यासंगां
धारादिकमूर्छना निषादमध्येतुगायन्तीचतुरागस्यमिश्रतः दोहा गंधारां
शउरन्यासहैग्रहबीवाकोजान सर्वसंगीतविचारकरगुणीजनकरतवषान
दोहा चाररागकोमेलकेमधुररागउपजाइ विहागकेदारिमनकल्यानजुवैवा
होतएकजाइ ॥ वार्तिक ॥– इमधुरराग भैरोंका सातमापुत्रहै इसको
म रात्रके दुसरेजांममे गायन करनेका समाहै और चाररागोंके मिलनेसे
इस रागकी उत्पती होतीहै विहाग और इमन कल्यान और केदारा इ
चारो राग आपसमे मिश्रत होकरके भी एकरूप होतीहै तब उसको
मधुर राग कहतेहैं और भैरोंकापुत्रहै सातस्वरका और संपूरण इसके
संग्याहै छंद ॥ सातस्वरणकुरागगुणीजनगावैसमजके सुनोमित्रव
उभागामधुरनामताकोकहै अंशन्यासगंधारग्रहस्वरसोइजानीये मधुरे
स्वरहैगाईसुन हैंसभैवजनचितदे ॥ सवैया ॥ ऐमनरागविहागकेदार
कल्यानमिलेजुवैइततीनमेजानै रातकेदुसरेजाममेगावतभैरवरागको
पुत्रकहाइ तीनोजोप्यारेगंधारहैगावेंगंधारकोगवारहैवारप्यारे
सोईसोजोरागसुनोवडभागअधीनहैमाधुरनामसदाई ॥ इनोरागहै प
रमपवित्र मधुरनाम भैरवका सातमापुत्र सवसंगीतवाल्योने अर्थात
ऋषीस्वरोने और आचारीयोंने इसीप्रकार इसके उत्पती कहींहैं ॥

संगीतकल्पद्रुमः ॥ मधुरस्वरसंयुक्तो सर्वार्थगुणसंयुतः गौरगात्रकाम॰
मूर्तिमधुररागः स कथ्यते विहागेमनकल्याणकेदारोमिश्रितायदा गां॰
धारग्रहमाचष्टे मधुररागस्तु जायते ॥ गमपधनीधपमगरेसा ॥
गंधार मध्यग्रामवाला तीव्रमध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यमध्य
ग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवा॰
निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला ती
व्रमध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यममध्यग्रामवाला ऋषभमध्यम
मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इसकीस्थाई ॥ ग म
प ध नी स नी ध प म
ग रे स इसकीतरालि अथान्तरः ॥ गंधारतारग्राम
वा मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला॰
गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्
ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम
मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ
मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम
मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद
मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला ॥

स्व॰र॰
प्र॰मा॰
५२

43

धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधा
र मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तः

ग म प म ग धै नी सा नी

नी सा नी प प म ग धै सा

इत्याभोगः ॥ गंधार मंध्यग्रामंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला प॰

पंचम मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला

षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंध्यग्रामवाला प॰

दरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला गंधार मंद

रग्रामवाला ऋषभ मंदरग्रामवाला षड्ज मंदरग्रामवाला गंधार मध्य

ग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रा

मवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रा

मवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवा

ला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवा॰

इत्याभोगः ॥ ग म प ध नी स स

नी प प म ग धै स ग म

प प नी म स नी प प म

ग धै म इत्याभोगः ॥ इतिमधुरागभैरवराग

ससममपुत्रगायनविधिः समाप्तः ॥ अथभैरवरागस्यअष्टमपुत्रदेशाख
नामावर्णनम् ॥ गंधारांशग्रहंन्यासंगंधारादिकमूर्छनं देशाख्यंरागसंपूर्णं
प्रातःकालीचगातिये सारंगंकानराचैवसुघरैस्वरलक्षणा मिश्रतोयंरागोदेशा
ख्यउत्पते ॥ दोहा देवशाखकेउत्पतीकहिहोंसववितलाई अंशन्यासगं
धारस्वरग्रहभीवहिकहाई दोहा सुघरैसारंगकानराजवेहोतइकरूप देव
शाखउत्पतभयोसुनोचितदेइभूप ॥ तीवरकैरेगंधारकोकिंचितऋखभजो
होइ दिनकेपहलेयाममेगावेगुणिजनलोइ ॥ वार्तिक ईदेशाखनामा
राग भैरोरागका अष्टमापुत्रहै और इसरागमे गंधारस्वर ग्रह और अंश
और न्यासहै और कानरा और सुघरै और सारंग इरागमिल करके एक
रूप होतेहै तब इसरागकि उत्पती होतेहै और इस रागकानाम देशाखहै
दिनके पहले पहरमे गुणिजन इसको गायन कर्तीहै और संगीत क
ल्पद्रुममेभी कहेहै ॥ वीररसेव्यंजितरोमहर्षोनिहत्यसंवंधविलासवा
हु मांसुप्रचंडकिलईडरागोदेशाखरागः कथितोमुनिंद्रैः गांधारांशग्रहं
न्यासकेचितऋषभइतिस्मृतः संपूर्णामतोज्ञेयासारंगदेवेनभाषिता
गमपधनीसारेगमपमगरेसानीधसा ॥इतिसंगीतकल्पद्रुमः ॥
तथाचसंगीतरत्नाकरेच संगीतदर्पणः संगीतसंहिताचसंगीतमाला
पंदामोदरेचनारायणः सवसंगीतोमेइसीप्रकार इसरागकी उत्पती
लिखीहै इसकि सर्गम इसप्रकार वनाति वाहेइ ॥ गंधार मध्यग्राम
वाला तीवरेकानरेको कोमल मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम म

स॰ र॰
म॰ मा॰
५५

44

मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तार
ग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला निषाद तारग्रामवाला षड्ज तार
ग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्य
ग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्य
ग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥:॥
इत्यस्थाई ॥ अथांतरम् ॥ ग म प प नी स

रे नी स स़ नी प प म

ग रे नी स़ इत्यस्थाई ॥ अथान्तर:
गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला पंचम तारग्रामवाला
मध्यम तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला
निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला
धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रा
मवाला ॥ इत्यन्तर: ॥ अथान्तराति ग म प प

म ग रे नी स स नी प प

म ग रे सा ॥ इत्यन्तर: ॥ अथाभोग: ॥ गंधार
मंद्रग्रामवाला मध्यम मंद्रग्रामवाला पंचम मंद्रग्रामवाला

धैवत मंद्रग्रामवाला निषाद मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला
गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्राम
वाला धैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवा
ऋषभ तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला
ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला
धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला
गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रा
मवाला इत्याभोगः ॥ म म प प नी
म ग म प प नी सा रे
रे नी सा रे सा नी नी ध
प म ग रे सा गमप मपध
पधनी पनीसा नीसारे रेनीसा रेसानी सानीध
नीधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥ इ
त्याभोगः ॥ इतिदेवगांधारनामभैरवरागस्यअष्टमपुत्रगायन वि
धिसमाप्तम् ॥ इतिश्रीभैरवरागस्यअष्टपुत्रगायनविधिसमाप्तम॥

स·र·
प्र·सा·
४५

45

नमोभगवतेवा

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ नाहंवसामिवैकुंठेयोगिनांहृदयेनच ।

मद्भक्तायत्रगायंतितत्रतिष्ठामिनारद १ स्वाविनिस्वाविनिधा·

नेडः विनानोविनोदाश्रवणाहृदयहारिमन्मयस्याग्रहूता श्रुति

चतुरस्राम्योवहूमः कामिनिनोजयुतजयतनादः पंचस्त्रोपवे म

दः ॥ अथभरतमते प्रथमोभैरवोरागः द्वितीयोमालकोशि

कः हिंदोलस्तुतृतीयस्यात् चतुर्थोदीपकस्तथा श्रीरागः पंच

मःप्रोक्तः षष्ठोवैमेघरागकः रागेकस्यपंचवधु पुत्राश्चाष्टौबुधैस्मर

म र॰
अ सा

ता: पत्नीपुत्रोहितनयस्यतस्यपश्चात्प्रतिगीयते अन्यरागोअ॰

न्यपुत्रोपत्नीचगायतेनरकेवसेत् अन्यरागोअन्यानपत्नीचगा॰

यतेनरकेवसेन्अन्यरागो अन्यानपत्नीचकुवेलाचनगुंसके

गायतेनरकेजातिहत्यापापंसमर्पयते अथरागभार्या

भैरवीपुन्यकीस्त्रेहावेंगालीचमनोहरा रागोगनासमाख्याता

भैरवस्यप्रियाइमा गुंडश्रीदेवगिरिच गांधारीश्रीहटीतथा

धानाश्रीपंचमेप्रोक्ता मालकौशिकवल्लभा तैलंगीदेवगिरिच

वसंतसैंधवीतथा अहिरीपंचमीत्रेजका हिंदोलस्यपनिव्रना काछेरी

गुर्जरीटोडी कोमोदीमारठितथा रागांगनाभवंत्येवं दीपकस्य

चवल्लभा वैराटीचैवकर्णाटी सावरीगौरवीतथा पंचमीपंचरां

गीच श्रीरागस्यपनिव्रना गुणकलीगुंडमल्लारी सुधनाटंचको

कली मारुरपंचमीचैव मेघरागस्यवल्लभा इतिरागांगना

प्रथरागपुत्रो मारुमंगलदेशाख्यौ बंधुनोमधुमाधव वेला

वलिस्वललितौ भैरवाष्टकपुत्रका हर्षमेवाडमोडंच रथैरो

ह्राचंद्रप्रोत्वरत्नाशिरोभ्रमरानंदोमालकौशिकनंदना पंचम

स रं
प्र सा

चेद्रबिम्बस्वस्वरग्रानेदभाषकरंवसन्तोरक्तविन्दुहिंडोलस्याष्टपु

त्रकः कालिंगकान्तलोवामः कमलकुसममालवैलाहनेः

चैव हेमंतेदीपकस्यचनेदना सिंधवेमालवेगोडगंभीरमरंचैव

मागरे श्रुटकस्याउकेतस्यश्रीरागस्याष्टपुत्रकाः कर्णाटनाटके

दारजालंधरगजाधरामेदारशोकराधामेचरागस्यनेदनोः इति

रागपुत्रानादयामवदीस्वराविधियुना बेगालयास्यान्काग्रान

न्योगामकाम्बनावरचनाजोतिलकामध्र्छनागीनाद्यागुरुरंगरा

गभरनादेशीछरागंगनागीतस्यापि समस्तशास्त्रयटनेस्या

नीतरेणतत्त्वः एकनादस्तयोग्रामास्स्वरास्सप्तचतुर्द्दोविधियंच।

गुणाश्चैवदशज्ञेगाचतुर्दश अष्टौवगीतयावामोन्नालापंचाशद्

तकः चतस्रश्चैवग्रालस्तोगमकासप्तसंस्मृता पंचतालाजोती

रेकंचतुःषष्टितमास्मृता गीतंचाष्टमिदंप्रोक्तं मूर्छ्छानात्वेक।

विंशति षट्‌रागाश्चाणिवेप्रोक्ता रागणीत्रिंशतीतथा रागपु॰

त्राश्चस्वारीचतुराशितिसंग्रहं पुन्नकीचहौपुत्रौमारुदेशाख्वकौ

स्तथा खेहाश्चउभौपुत्रौमेगालोवर्द्धनस्त बेगालीरमिकाज्ञेया

मधुमाधवैकौमस्तौ वेलावर्ज्यामस्तौदौच ललितवेलावलोतथा

ग्रहेषुपुत्रास्तद्भार्या भैरवस्य(स्तु)निरूपिता भैरवीरागनीचैवसुतारागाः

स १ / प्र स स्य

कोविदे भैरवीललितश्चैववदेशाखटकमंजरी गुणकरीचपूर्वान्हे

गीयतेचविशारदे रामकरीगुर्जरीचैवगौरकर्णाटमालवा गानेमे

घांचशायान्हेजगुर्गीतविदोजना हिंडोलाख्यविचित्राचमालवः

श्रीवर्द्धलिका बंगालीचैवमध्यान्हेनिषिद्धमितितद्विदूः प्रातम

ध्यान्हसायान्हेसंध्यायोजामनीमवे शेषाययामावेज्ञेयास्तली·

लामाहनारदः ललितंशारदिगातव्योहेमंतेगुणाकरः देशा·

ख्यःशिशिरःप्रोक्तोवसंतकुसुमाकरः ग्रीष्मोगौडःसमदिष्टोग्र

जैरीप्राविटगतेतथा तथैवगीयतेप्रातः तस्यानामथमंजरी वित्त

गौत्रेप्रास्त्वथेचविवादेन्टपशामने रंगभूमौचजांचायांकालदो॰

षोनविद्यते बालश्रीमन्दुकीचैववालीचकुम्भमाकर हिंडोल

स्त्वरिचविनेयाबागासिंगारस्त्वचिका वबालीस्त्वास्यमेयोगागोधार

स्तुभग्रालके वालोस्यापदवीमेवंवेगालोगुणाकीतथा नालि

कामाथवादिश्वतथावेलावलीवरा सङ्करागामतस्तमोचरमनो

भवर्कालिकः कटाउर्लालिनानाटागौभकर्णाटएवच एषांधिव

चैव

रगीनीषुमानिभिश्चभ्रकीर्तिता गुर्जरीकामोदीरसादेशीतथा

स र॰
प्र म॰

पेशमसिषोकुरुलोमेतुविज्ञियोगः तदाकृतः भैरवीभैरवश्चाणोम॰

ल्लारीपाटमंजरी देवाविधानागौरीचरमेमांतेमतावुधैः देशाखा

स्ववराडसमेत्सावरणगुणा कवविचिचोगीममाव्यानर्तरमेसेद्रेम

निषिभिः शृंगारहास्यकरुणावीररुद्रभयानका विभत्साश्चुत

श्चेतास्त्रवौधव्यारमिकैक्रमात देशाखाभैरवश्रीकोभरतेनादति

वेदितं नेदलालितपटमंजयागुणकरी मेगलाकरीदेव॰

देव
करीगिरिदेशाखाधनाश्रीदेशाखकेवलदेशाखानकामोदाको

मदादिवेलागगुर्जरीमल्लारकदम्बगुर्जरी कामोदमल्लारगुर्जरी

कामोदो गुर्जरी मल्लार देशाख्य कोमल वाली हिंडोल ह्वाली बंगा

ल गुर्जरी देशाख्य विभ्यो मल्लारी कट्ट गुर्जरी कोहेभ्यो सभार यीव

राली वसन्त भैरवीभ्यो हिंडोल धनाश्री श्री देशाख्य कोल वेभ्यो

मल्लार मट्टकी मल्लारीभ्यो गुणाकर ललित मायत्राणीभ्यो लली

तत्राणय पटमंजरी इति मेकीणि रागाः अथ गायक लक्षणं

सभा विन्यास कुशलो गम्भीरो स्वरज्ञी लय ताल कर्ता दिर्त माव

धान क्रीयापरः सर्वेषु वासना युक्त सर्व रागस्थान कोविदः राग

रागनी विनाज सम राग तो सरूहतं शातो रसिको रंजिक श्चैव पाणिक्या का

स र॰
प्र स

रोयभावुकः अवधानपरश्चैवगायकः पंचधास्मृता गाम्भी

रनादतालग्योजनानोगीतविध्ययाजोनरंजयतीचेतांसीरंजक

सौदाहृत ममस्तवस्तनोज्ञानामसस्वरविशारदा सावदाना

सदागीतोशिताकारसउच्यते रसहीनेरसंधतेभावेभावविव

र्जितः वैदग्धंकुरुतेतोसंभावुकसउदाहृतः जस्तत्वाश्रुति

रहस्यंसदनेकुरुसहृत रोमांचककंचुकेधतेसंगीतरसिकस्य

त देवदानवगंधर्वैसदासंसेव्यनोशिवः शिवंसंसेव्यतेगीतेन

स्मात्गीतंप्रसस्यते ॥ इतिरागमालासमाप्तम् ॥

मम सांपती हूसी मेरवें
तीहरी मंगली चौथीवार दे
पंचमी संधी

ॐ· ॐश्रीगणेशायनमः ॐ
१ श्रीरघुनाथोजयति
अथउत्तराद्धआरंभ ः
गीतध्याय ः
अथमभैरवरागवर्णनम्
खंडजांशा संपूर्ण
इतिशारदामतेन
टोडी गौरी रामकली
रिषभांशा
इतिशिवमतेन
रिषभस्वर
इतिहनुमान्मतेन
भरतमत
अंशग्रहन्यास गंधारस्वर
अथकल्लमत
निषादांशा मूर्छना
वीररसदत्तनायक
प्रातःकाल विष्णोदेवता

आद्याशक्तिः अग्नितत्व प·२
ह्रींबीज शिवऋषि
ॐभंभंपंह्रांस्वाहा इतिमंत्रः
प १ ॐभंइत्यावाहनम्
ॐभंभैरवंनमः
इत्यासनम् अथध्यानम्
अथविनियोगः
ॐभंइतिमंत्रस्य
ॐविष्णोरिषि शिवऋषि
पंक्तिछंदः
आद्याशक्तिः
अग्नितत्वम्
ह्रींबीजम्
प्रातसमे जपविनियोगः
अथजपसंख्या समस्त ८
धूप दीप नैवेद्य गुग्गुल
घृत दीप कार्पूर श्वेतपुष्प
प २ संपूर्णग्राम स्वर धैवत

धैवत रिषभ कोमल
जिसको उतराकहतेहै
अर्थात् रिषभ अपने दुसरे
श्रुती रंजनीनामापर कोम
ल होताहै कोमल धैवत
दुहै जिसको तंतीवरकहैतेहै
पंचमस्वर तंतीवर उसको
कोमल धैवत कहतेहै
अरु उहसरी श्रुति रोहिणी
नामापर होताहै रिषभ
आद भैरव संपूरण तस्याअ
लापस्य ॥ ततरीरना
इतिभैरवरागअलापः सा॰
अथश्यामदामतेनसर्गमः १
अथअनुस्वारभैरवरागस्वर्
सर्गमः रे नि सा॰
इतिशिवमतेणसर्गमः २
हनुमानमतः १ग म ग रे सा॰

इतिहनुमान्मतेनसर्गमः ४
ध॰ नि सा॰
इतिभरतमतेनसर्गमः
अथकल्लमतेनसर्गमः ५
नि सा नि॰
इतिकल्लमतेन
सा नि सा॰ इत्यस्थाई
गगम धनीसा॰
इत्यन्तः
अथसंगीतदर्पणसर्गमः
ध नि सा॰
इतिसंगीतदर्पणम्
अथसंगीतकल्पद्रुमः
सर्गमः ध नि सा॰
भैरवरागचारतार्
इत्यस्थाई म ध नि सा॰
इत्यन्तः स रे सा॰
इत्याभोगः ॥

ॐ
सू॰२

इतिषड्जांशभैरवसरगमः
अथगंधारअंशासंपूरण
भैरवसरगमः चारताल
ग ग म ग रे सा
सप्तस्वरसंपूरणमेयोंसरगम
विचारी सासारे सारेरे
इतिगंधारअंशसरगमवर्णनम्
अथओड्व भैरवप्रकारः
महादेवनि पंचमखोकरके
पंचस्वरका भैरव उच्चारकिया
तिसका वर्णन रिषभ और
पंचम अवर्जितहै षड्ज
और मध्यम और निषाद
अनुवादीहैं गंधार वादीहै
कोमल धैवत संवादीहै
रिषभ और पंचम अवादेहै
इसको ओड्व भैरव कहतीहै
तस्योत्पत्ते सरगमवर्णनम्

ग ग ग म ग स
इतिआभोगः
मार्गभैरवरागवर्णनम्
इत्यन्तः
ग म ध नि सा
इत्यन्तः
इतिमार्गभैरवसरगमवर्णनं
तीनताल धीमा
मालकौंस रागको
ठाठ उपर
रागचलताहै ॥
अथतलहीरामायण
मंगलाचरणम्
भैरवरागतीनताल ॥
रे ग म ग रे नी स

2

प॰ ॐ रघुनाथायनमः ॐ अथ
१४ भैरवरागस्य प्रथमरस्त्री म
धुमाधवीनामावर्णनम् ॥
मधुमाधवी रागणि भैरव
की रस्त्रीपहली अरुणोदय
समा ग्रीषमऋतो प्रजापति
देवता प्रकृतिछंद हनुमा
नऋषि क्लींबीज श्रृंगाररस
सुखेयानायका धृष्टनायक
सुंदरलंकार सातस्वरसंपूर्ण
मध्यमांशग्रहन्यासं मध्यमा
दिकमूर्छनं मधुमाधवी
प्रातःगीयते संपूर्णांभैरवि
लतीं कल्पद्रुमः
ध्यानम् ॐ क्लीं पंपंउंपस्वाहा
ॐ पंआवाहनम्
ॐ पंटं इतिआसनम्
ॐ क्लींअः इतिप्राणः
प॰ चं॰ क॰ दी॰ धीप नैवेद्य

पं॰ जपसंख्या ८ अष्टलद पं
१९ विनियोग १८
ॐ क्लींपं इतिमंत्रस्य
प्रजापतिदेवता
हनुमानऋषि
प्रकृतिछंदः
मधुमाधवीरागिणीप्रि
त्यर्थे जपेविनियोगः
इतिविनियोगः वार्तिकं
मधुमाधवी भैरवराग
की पहली रस्त्री सं
पूरण सातस्वरकी इसम
कारकरके मध्यमस्वर म
ध्यग्रामवाला ग्रहहै जि
सको वादि कहतेहै
अरुपंचम इसका अनु
वादीहै इसरागनीमे
अवादी स्वर कोई नहींहै
भैरव टोडी ललित इ
नरागोंका मिलापहै

१०५ कहके इसरागनीकि उत्पती
होतीहै मध्यम मध्यग्राम
वाला

१०७ अथरागमाधवरागीतप्रारंभः
रागमधुमाधवी

१०८ तीनताल   दोहा
चौपाई

१११ अथगीतगोविंदअष्टपदी
रागमधुमाधवी तीनतार
ध्रुवपद १
रागमधुमाधवी
रूपकताला
ध्रुवपदं

११४ इतिश्रीभानुदत्तविरचि
तेगीतगौरीपतौरागाध्य
विधिसमाप्तम्
अथध्रुवपदं
मधुमाधवी चारतार

११७ मधुमाधवी तीनतार
स रे ग म प ध नी॰

प॰

रागमधुमाधवी तीन   १२८
इसावरनन॰
रागमधुमाधवी चारतार
ध नी स रे ग म प ध
नी स॰
रागमधुमाधवी तारफाई
मधुमाधवी
अफाईतार
म प ध नी स
रागमधुमाधवी
तारपका॰   १३२
मधुमाधवी तालपका
कप्तमीर
म प ध नी स
मधुमाधवी   १३४
रूपकतार
मधुमाधवी तारसवारी
मधुमाधवी   १३५
आडा चौताला॰

पं॰ रागमधुमाधवी
१२५ तालगीत
१२९ मधुमाधवी
तार दादरा
म प प नी स
रागमधुमाधवी
गततीनतार ३
शुभमस्तुसर्वजगताम्
प्रथमश्राहृती १
डिड ह्वा डिड डा ड्व्व
डा डा ह्वा
द्वितीयश्राहृती २
डिड डा डिड डा ह्वा
डा डा ह्वा
तृतीयश्राहृती ३
डिड डा डिड डा ह्वा
डा डा ह्वा इत्यक्षारे
चतुर्थश्राहृती ४
डिड डा डिड डा ह्वा डा डा
ह्वा

प इत्यन्तः
१२९ डिड डा डिड डा ह्वा डा डाह्वा

पं॰ ॐश्रीगणेशायनमः
१३० अथभैरवेरागणी भैरव
रागस्य द्वितीयस्त्री गायन
वर्णनम् ॥
भैरवीरागणी भैरवदीइस्त्री
प्रथम पहर दिनते लेकर
कि अर्धयाम दूसरे तक
गायन करणीका समाहै
नाम भैरवीरागणी
समा पहरदिन चडेते
डिड पहर दिन चडे तक
रित शिशिर रंगता
नायका शांतरस
दत्तनायक
शिवजी देवता
भारतऋषि॰

सू॰ प॰
९ १६०

स्थानः ३|२ ३ ३|२ ३ ३ ३ ३ ३ ।ः

6

ॐश्रीगणेशायनमः अथभैरवैरागणी भैरवरागस्य द्विती

इस्त्रीगायनवर्णनम्
भैरवीरागणी भैरवदी
इस्त्री प्रथम पहर दिन
ते लेकरकि अर्धयाम
हसेतक गायन करणी
का समाहै नामभैरवे
रागणी समा पहरदिन
चडेते ३|३ पहर दिन
चडेतक विनशिघर
खेडना नायका
शांतरस दक्षनायक
शिवजीदेवता
भारतऋषि
अनुष्टुप छंदः
संपूर्णजातिस्वर

प॰ कोमल ग्रेर अन्तर
अस्थुड तीनप्रकार स्वरकरके
रागणी उत्पन्न होतेहैं
अथमंत्रः
ॐश्रींपंपंफंभंभैरवीं
नमः स्वाहा
ॐपंभैरवींनमःस्वाहा
आवाहनम्
ॐपंफंनमः इत्यासनं
ॐपंभंनमः इतिप्राण
प्रतिष्ठा ॐपंगंपंनमः
ॐभंधूपंनमः
ॐपंभैरवीदीपंनमः
नमःस्वाहानैवेद्यम्
अथध्यानम्
अथभाषाध्यानम्

प॰ नादमहोदधौ
१३८ नारदपुराणे
ॐ पंपं इति मंत्रस्य
भारतऋषि
अनुष्टुपछंदः
सदाशिवदेवता
मध्यान्ह आदि समाय
भैरवीरागणीसिध्यर्थे
जपेविनियोगः
जपसंख्या पंद्रालख
१५०००००
उत्पत्ति मध्यमांशाग्र
हंन्यासं मध्यमादिक
मूर्छिना संपूर्णांभैर
वीगीयं मध्यान्हदिव
ससमे चौपई दोहा
सोरठा संपूरणास्वर
सातकोकोमलअंत्रव
नाई भैरवीगावेप्रात
को तीनरागणिमी॰
लकि दोहा॰

प॰
१३५ दोहीमीसीरामकलीअर
गुजरि इतीनोसमभाग
इनहैमीलागुणिगावेहै
मगटैभैरविराग
संपूरण सातस्वर॰
१४॰ म प॰ रे स॰
१४१ संकीणिभैरवी
अथशुद्धभैरविवर्णानम्
म प प म प नि स॰
१४२ इत्यर्थाद्
१४३ इत्यन्तः
इतिशुद्धभैरविरागणिवर्णनं
द्वितीयप्रकारभैरवी॰
दोहा संपूरण स्वर भैरवी
है भैरवकि जोई अंशन्यास
ग्रह तीन ऋषभ आदहै
सोई कोमलऋषभ
इत्यन्तः
तृतीय प्रकार
वर्णानम् ॥ गंधारकोमल
मध्यग्राम

भैरवीरागणी सूची

सू॰ प॰ इत्यष्टाई
१९२ इत्यन्वः
अथरामायणगीतप्रारंभः
भैरवीरागणी
तीनताल ००६
१५॰ द्रुताद्रुतौविरामंतौ
तृतीयेतालकथ्यते
चौपई
१९॰ सोरठा ००६
रागभैरवी तीनताल
दोहा रागभैरवी
तीनताल ००६
१२९ इतिरामायणगीता
अथभैरवीराग॰
चारताल ऽ००।
१९॰ रागभैरवी
चारताल ख्याल ऽ००।
अथसूरसागरः ००६
रागभैरवी तीनताल
इतिसूरसागरः
१२१ अथरागणीभैरवी चौताल
ऽ००।

प॰ गुरुश्चैवलघुसंज्ञौ
१९२ चतुर्थतालसंज्ञकः
आभोगः
इतिकल्पद्रुमः
रागणीभैरवी
तालधीमा तिताला ।।ऽ
२०॰ लघुगुरुचसंयुक्तौ
वृहद्रूपतालसंज्ञकः
भैरवीरागणी धीमा
२०१ तिताला ००६ टप्पा
भैरवीरागणी
एकताला ।।ऽ
२०८ भैरवीरागणी जत ।ऽ
लघुविरामयुति
भैरवीरागणी
खेमटा ताल॰
लघ्वादितालोकेस्मि
प्रसिद्धएकतालिका
२०५ भैरवीरागणी
झपताल तराणा ०।ऽ।।
भैरवीरागणी ।।

प॰ लक्ष्मीताल
रागणीभैरवी
गणेशताल
२१॰ रागणीभैरवी
रुद्रताल
रागणीभैरवी
तालसवारी
भैरवीरागणी छंद
तीनमात्रा
२२१ भैरवरागेणगीयते
इतिश्रीगीतगोविंदा
भोपालसोमाग्रह
मः सर्गः ८ ॥
अथसकुमागमग्रहपदे
२२२ रागबिलावल
रागकेदार
रागसारंग
रागभैरो
रागगुजरी
इतिभैरवीसमाप्तः ॥

प अथरामकली
२२५ रागणीलिख्यते
अथध्यानम्
हेमप्रभाभास्वरभू
षणाच नीलंनिचो
लंवपुषावदानि
कांतेसमीपेकमनीयकंठा
मानोन्नतारामकरीमतेयं
इतिध्यानम्
अथमंत्रः
ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं नमः
अथोत्पत्ति
भैरवतांशतहृत्वाम्
पूर्णरामकलीमता
प्रथमामूर्छनाज्ञेया
रेमेकारुणपूज्यते
भैरवीगुजरीटोडी
त्रियोत्पत्तिरामकलीभवेत्
प्रातकालीप्रगीयते
भैरवस्यवल्लभा ॥
प ग मा॰

सू
८

पं॰	रागरामकली तीनताल
२४०	गीतगोविंदः
२४१	अथकल्पद्रुमः
	रागरामकली
२४२	इतिकल्पद्रुमः
	अथसूरसागरः
	रामकली तीनताल
२४३	इतिसूरसागरः

अथभैरवस्यरागणी
टोडीलिख्यते
अथध्यानम्
इतिध्यानम्
ॐपंह्रींनमः
अथोत्पत्ति
गांधारांशग्रहंन्यासं
क्वचित्धैवतरीरितं
संपूर्णोटोडिकाज्ञेया
आदिनामप्रगीयते
रागणीटोडी
चौताला सरगम॰

प॰	प नी सा गा रे सा
२४४	देवोटोडी तालधमाल
	रागणीटोडी
	धीमा तिताला ख्याल
२४५	अथसूरसागरः
	इतिसूरसागरः
२४६	गुजरीप्रारंभः

अथध्यानम्
मंत्रः
ॐपंश्रींनमः
धैवतांशग्रहंन्यासं
संपूर्णागुजरीमता
सप्तमेमूर्छनातस्या
वद्गन्यासमहमिश्रता
रामकलीटोडिसं
पुन्नावराटमिश्रता
पुनः गुर्जरीजायते
विद्वन् आदिनामे
प्रगीयते ॥८॥

सूचीपत्र रागमाला गत सरगम मात्रा मूर्छना औडव षाडव संपूरण

तेडाङा ट्टि ट्टि

गौरी ॥ हम्बिर ॥ इमन ॥ पुरिया ॥ गौड ॥ मालिगौरा ॥ रामकेली ॥ वागीश्वरी ॥ तोडी ॥
सारंग ॥ योगिया ॥ षट ॥ आसावरी ॥ योगिया ॥ गुजरी ॥ अलैया ॥ सरपरदा ॥ कोकभ ॥
देवगिरी ॥ वेलावली ॥ वारोवा ॥ धनाश्री पूरिया नैधनाश्री वराडी चित्रागौरी
देशा स्याम कामोद कल्यान पूरिया जयेत् इमन भूपाली देशा विभास
आलाहिया पाहाडी लूम गारा शंकरा शंकराभरन वाहार भैरव देशा
कानडा साहाना आडाना वाहार कानाडा लूम झिंझिट वेहाग सूरट
भैरवी गारा सिंधुडा मालकोश खम्बाज भूपाली करणाटी केदारा पूरबी
झिंझिट खम्बाज भैरवी वागीश्वरी त्रिवनी ॥ रामकेली ॥ कानाडा विभास
विहाग आजमोहे भवनन भावे मन भावन जो बिसराय ॥ निशादिन बीतो भव
वन भोजन कुजे नींद न आवे जे हो कारण मोरी यह गत भइ जह ननता है न कोउ
मिलावे ॥ १ ॥ कलिंगरा ॥ मोरी अखीयां पालजाइ री ननदी तो बे अंगवा
आगे देखो पाछे देखो अगर खगर केला गवान छोड बेदेवरा मोरे गोदी के
खेलो नालाल मअंगनामे फिर फिर जाय ॥ परज ॥ छाउ देलंगर यह जानदे
खेलवा होजमुना जलभरन जात रहीह मसो करतवर जोरी लंगर
अगट पीत करिस केवस भपस रवस देवे सर गयो वरवस मपक के केसर का
रंग लालवसर कोरंगराग मोतिन सो मांग भर अमभरके चुनरी सुरंग कु
चकी अंगी याउ तंगवस के अनंग अंगअंग अंग कर के हंदरन नको सिंगार
जोवन निरखि वहार जीवन सो करपी यार हार हीये दरके ॥
परज इगगम प प म म प प । नि सा नि सा सा सा सा सा
नि सा रे सा सा नि नि सा सा सा सा नि नि प प प म प
प प म म प प । नि नि प प प म प म म म म प प
प प प म म ग ग रे रे रे रे ग ग ग ग ग रे रे सा सा नि सा
सा सा ग म ध नि सा सा नि सा रे सा ॥ नि ॥ सा सा ग ग ग ग
रे रे सा सा नि ध प ॥ ॥

हिंडोलानन्तरं लिख्यते मनुष्यस्वभावे लिख्यते यथा पुष्पोपरि भ्रमर मालिख्यते

तथैवं रागा रागान्तरे महाविद्या गंधर्वाणां प्रकाशिनी श्रीं बीजं क्लीं मयो शक्तिः मायाकी

लकमीरितम् ऋषिरस्य महादेवो त्रिष्टुप् छंद मुदीरितं वसन्तो गायन मस्याथ षष्ठोऽव

मीरितः मनुष्य चित्तचांचल्यं दूरी कुर्वन्ति ते सदा इति रागस्समाख्याता हिंडोलाश्र

यितामुनिः मनः कपोलपोतानां कामपुत्रो निनिमन्त्रणः मनोद्योग प्रशमनं विनि

योगः प्रकीर्तितः इति करन्यासः इह राग हिंडोलहै महादेवने मुखसेवनाई है

वही सुंदरहै गावनेमें प्रकाशमानहै मनकी चंचलताको दूर करताहै कबोतरकी न्याई

भ्रमण करताहै वसंतकालविषे पहिले पहर गायन करना गौरव देशमें गावना

श्रीं श्रीं बीजहै क्लीं शक्तिहै मायाकीलकहै महादेव ऋषिहै त्रिष्टुप् छंदहै इंद्र देवताहै

सदाकालविषे गायन करना मनोमल निवारणे विनियोगः ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं हिंडलाय प्रथम मंत्रः

नमः इतिमंत्रः जपसंख्या १०००००० धूप दीप नैवेद्य अथ ध्यानम्

ॐ अथ वसंतध्यानम् चूतांकुरैर्नवकृतावतंसो विघूर्णमानो रुणनेत्रपद्म पीतांबर

कांचनचारुदेहो वसंतरागो युवतीप्रियश्च रागवसंततालयतिताललाभ्यां ललितलवं

गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे मधुकरनिकरकरंबितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे १

विहरति हरिरिह सरसवसंते नृत्यति युवतीजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ध्रुवपदमिदं

उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलवकुलकलापे २

मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ३

मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेशरकुसुमविकासे मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे ४

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे विरहिनिकृंतनकुंतमुखाकृतिकेतकिदंतुरिताशे ५

माधविकापरिमलललिते नवमालतिजातिसुगंधौ मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ६

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते वृंदावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ७

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारं सरसवसंतसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारं ८ इति वसंत ध्रुवपदम्

सा ग म प ध नि सा रे

रागवसंत संपूरण उसमे कड्ढरामध्यमहै खरहै

खरजका निखाद / खरजपर गंधारपर उत्तरमध्यम निखाद धैवत कड्ढरामध्यम पंचमपर धैवतपर गंधारपर कड्ढरामध्यम

धैवतपर निखादपर खरजपर निखादपर धैवतपर निखादपर निखाद रिखभपर निखादपर धैवतपर कड्ढरामध्यमपर

३

३

वसंतजोहे अरु हिंडोलजोहे इनकेललितमिलनेसे मालकोशहोता
षटराग केरागकास्वरलेतीहे पंचम छोड़ मिलाइकरकेगाना परज और मा
लकोशजोहे इहिंडोलरागकीरागनीहे अरुवसंत तीनतरंका होतीहे
गुणवान उसकोकलोलकरतीहे मालश्री और श्रीराग औरपुरीया इनसे
वसंतहोताहे रिषभवर्जित हिंडोलरागहोताहे वसंत समपंचम औरकौशिक
इनकास्वरहोताहे औसकोललितरागनीकहतेहे उसको प्रातसमेमे गायनकरतेहे
विलावल औरकरणाट इमिलकरके देवगिरीगावतेहे अलेया रागनीको प्रातसमे
गायनकरे कल्याण करणाट मिलकरके विलावलहोताहे हिंडोलके रागणी उसके
सताजानकरकेगाइ

रागहिंडोल पाँचस्वरका इसकोओडवककहतेहैं खरज रिषभ गंधार मध्यमकड़रा धैवत

सुधधैवत सुधनिषाद ग ग सा ध नि सा. नि ध म ग

म म धे धे म ध नि ध म ग म गध सा ग

सा सा नी नी ध ध ग ग म ध नी सा सा

इत्यस्थाई ध ध नी सा सा॥ग ग म ध नी सा सा सा सा सा ग सा सा

इत्यन्तरः ग सा सा सा सा सा नी नि सा ग सा सा नि

नि नि धे
ध म ध
नी सा
सा

रिड डा

रिड खरज डा निषाद रिड खरज डा ~~निषाद रिड खरज~~ धैवत डा निषाद

खरज डाड डाड गंधार डा कड़रा मध्यम रिड निषाद नीचेका डा धैवत डा निषाद

खरज

डा धैवत डा मध्यम डा गंधार रिड खरज नीचेका डा निषाद रिड धैवत डा मध्यमकड़रा

डा मध्यम डारिड गंधार डा कड़रा मध्यम डा डाड गंधार डा खरज

ग ढिड़ ग ढिड़ ग ग

गंधारपर कड़रामध्यमपर गंधारपर रेखभपर षरजपर रेखभपर निषाद ॥

५

4

अथ मालकौंसभार्या
गान्धारी
श्रीदेषि
दंखायती
धनाश्री
पुत्राः अथ परिवार
मारू
ववलरागः
मेवाड़रागः
मिष्टांगरागः
अथ वंदकोसः
भमररागः
आनंदरागः
खोखररागः

हिंदोलरागतेलंगी
देवगिरी
वसन्तिनी
सिंधुरी
आभारी
वंदविंवरागः
सुभ्रांगरागः
आनंदरागः
विभासरागः
अथ वसन्तरागः
वर्द्धनरागः देशाकारः
विनोदराग
दीपक
पटमंजरीरागारि
कामोदिनी
टोडीरागारि
गुर्जरी
कावेरी
पुत्र कमलराग
कुसुम
रामरागः

नमः शिवाय नमः

कुंतलरागः
कलिंगरागः
वकुलरागः
चम्पकरागः
हेमालरागः
अथ श्रीरागस्य हंदरीवराटीरागिणीलिख्यते
कर्णाटीरागिणी
अथ सावेरीरागिणी
अथ गोडी
रामकली
सैंधवीरागिणि
पुत्रः सिंधुरागः
मालवरागः
अथ गोडरागः
अथ गंभीररागः
अथ गुणसागररागः
अथ विहागड
अथ कल्याणराग
अथ कुंभरागः
इतिश्रीरागपरिवारः
अथ मेघरागिनी
अथ मल्लारी
अथ सोरठीराग
अथ आसावरीरागिनी
अथ कोकिलीरागिनी
अथ भूपालीयरागिनी
पुत्र नटरागाः
रागकानड़ा
अथ सारंग
अथ केदाररागः
अथ गुणरागः
अथ गंदमल्लार

अथ जालंधररागः
अथ वेदरागः

समपशातविलसं
भक्तिहीनंजाचेलं
मलिनवसन

सूचीपत्र राग भैरव ॥

सूचीपत्र रागभैरो १

प	ह	२	अथविनियोगः॥	
प	ह	२	ॐअंइतिमंत्रस्य	विसृरिष
प	ह	२	ॐशिवऋषि	पंक्तिछंदः
प	ह	२	आधाशक्ति	अग्नितत्वं
प	ह	२	ह्रींबीजम्	मातसमे
प	ह	२	जपेविनियोगः॥	अथजपमंत्रोसमलदः॥
प	ह	२	धूपदीप	नैवेद
प	ह	२	गुग्गुल	घृत
प	ह	२	कार्हर	श्वेतपुष्प
प	ह	२	संपूर्णग्रामानस्वर	धैवत
प	ह	२	रिषभकोमल	जिसको
प	ह	२	उतराकहतेहे	अर्थात्
प	ह	२	रिषभ अपनि	हूसरिश्रुती
प	ह	२	रंजनीनामापर	कोमलहोताहे
प	ह	२	कोमल धैवत	उहे जिसको
प	ह	२	तंतीवर कहतेहै	पंचमस्वर्
प	ह	२	तंतीवर उसको	कोमल धैवत
प	ह	२	कहतेहै अह	उहसरी श्रुति
प	ह	२	रोहिणी नामा	पर होताहै

सूचीपत्राणभैरवा॥ १

३

सं॰ २

प २ ह २ विषम आद भैरव संष्टराग तस्याअलापस्य:
प २ ह ननरी इना आनन उनन उआमाम अदतनरी ननुं
प ३ ह १ इतिभैरवरागअलापः॥
प ३ ह १ सा नीसा नि प नि सा
प ३ ह २ इतिधारदामतेन॥ अनुस्वारभैरवरागस्वरसर्गमः १
प ३ ह २ रे नि सा नि प नी सा
प ४ ह १ इतिशिवमतेन॥ २
प ४ ह १ ग म ग रे सा नि सा
प ४ ह १ इतिहनुमानमतेन॥ ३
प ४ ह १ प नी सा ग म नी ध प ग म रे ग रे सा
प ४ ह २ इतिभरतमतेनसर्गमः॥ ४
प ४ ह २ अथकल्लमतेनसर्गमः॥
प ४ ह २ नि सा नि रे सा रे नि सा
प ५ ह १ इतिकल्लमतेन॥ ५
प ५ ह १ सा नि सा नि ध नी सा
प ५ ह १ इत्यस्थाई
प ५ ह २ इत्यन्तरे॥ अथसंगीतदर्पणसर्गमः॥
प ५ ह २ प नि स नि रे स
प ५ ह २ इतिसंगीतदर्पण॥

ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत एवं निषाद एई सप्त स्वरेर मध्ये ये स्वरटी ये रागे बहुलभावे प्रयुक्त हय सेई स्वरकेइ सेई रागेर वादी वा अंश अथवा राजा एवं हिंदी भाषाय जान् वले वादीर सहयोगी ये स्वरता हाके सम्वादी वा मंत्री वलायाय रागविशेषे ये स्वरविशेष संयोजित हई ले रागह्रेहय ताहारनाम विवादी अथवा वैरी वादी संवादी एवं अवादी व्यतीत अवशिष्टे ये स्वरगुलि रागमध्ये व्यवहृतहय ताहादेर नाम अ नुवादी वा भृत्य ये सकल रागसंपूर्ण श्रेणीभुक्त विकृत स्वर व्यतीत ता हादेर विवादी स्वरकथनेर सम्भवेना येहेतु संपूर्ण श्रेणीभुक्त रागस मूहे तदुपयोगी सात स्वरेरई प्रयोजन हईया थाके ॥०

पिलुमल्लार॥ नि रे ग रे ग रे ग सा रे नि सा रे
डा डा ० डा ० डा ० डा डा डा डा डि

रे ग ग सा रे ग सा सा रे नि सां प प प प
डि डि डि डा ० ० डा डा ० डा डा डि डि डि डि

पं सा नि सा रे सा सा ग रे म ग ग रे ग ग
डा डा ० डा डा डा डा डा डा डा डा डा डि डि

सा रे ग सा सा रे नि सां नि सा रे रे सा रे म
डा ० ० डा डा ० डा डा डा डा डि डि डा डा डि

म ग म प प प प धं निं प प धं प प प रें
डि डा डा डि डि डा डा डा डा डा डि डि डि डा

प प म म ग ग रे रे ग प म म ग रे म ग
डि डि डा डा डि डि डा डा ० डा डा डा डा डा डा डा

ग रे ग ग सा रे ग सा सा रे नि सां॥ ॥
डा डा डि डि डा ० ० डा डा ० डा डा॥

२०

20

॥पी०॥हरि हरि बोल नाव जगमें जीवन है दिन चार॥जो आया सो सवही जा
यगा देखो समझ सोच विचार॥आप स्वारथी है सब दुनीयां झुठा है संसार॥
जानकी दास चरननको छुटगया जंजार॥ नींद गईली मोरी पीया विन
सजनी कलसेवे कल भई॥चौंप चौंप रखमा खोलमें नागर रसमो है आंन
जगावे ननदी कई॥पील०॥तोरे नेण वांदी वांण छुटत नहीरे॥वडी वडी अं
खीयनमें लाल लाल डोरी तेरी सांवरी सुरत भुलत नाहीरे॥पीलु०॥
नई नई प्रीत लगावतरे सांवलीया गिरधारी नंदको॥हो जमुना जल भरन
जात जव नैनकी सेन वला वतरे॥सुंदर रूप भूप मन मोहन वंसी मधुर
वजावतरे॥रास रंग प्रभु चरण धरे कर वैकुंठ सो सुख पाय तरे॥१॥पीलु०॥
हरिभजविलमन कररे लालची मनुवा॥यासंसार काठकी वाडी समझ
समझ पग धररे॥गुरुप्रसाद साधकी संगत पर दारा पर हररी॥मानक दास
नामका वेडा तेह चडि पार उनरे॥१॥

भैरवराग भैरवी
रामकली षट्राग
गुणकली विभास
देशाकार साजगिरे
भटीयाल भखार
ललित पंचम
हिंडोल वसंत
वहार अलैया
सरपरदा वेलाव'
देवगिरी रामगिरि
ककुभ कन्हड़ी
लच्छासाख
भोगसाख देवसाख
देशासाख सूहा
सुघराई गांधारी
देवगंधार गांधार
आसावरी जोगीया
आसा देषी
जोनपुरी लाचारी
टोड़ी गुजरी
वराड़ी सारंग
हृंदावनी मधुमाध
वड़हंस सावंत
सेवंत लूम लहर
गोरसारंग पहाड़ी
लंकादहन मेघम
लार'

गौड़ हरषणी
सूरमलार लेसे
रामदासीमलार
नटमलार
मूलतानी
भीमपलासी
प्रदीपकी
अहारी दीपक
प्रदीप धानी
वरवा पटमंजरी
ऋषभराग
द्रावड़ी ववेल
सिहांग घोष
सिंधुरी मंगल
सुभांग धवलश्री
मालश्री जैतश्री
पुरीया धनाश्री
लंकश्री वंकश्री
टंकश्री
मीयांकीधनाश्री
सुधधनाश्री पूरवी
पूरवा मारवा
मालवा मालीगौरा
गौरा श्रीराग
ललितागौरी
साधुनीगौरी
आसागौरी
कलिंगगौरी

चैतीगौरी यमन
यमनकल्याण
कल्याण हेमराग
खेमराग स्यामराग
जैतराग हमीर
रातकीपूरीया
कामोद छायानाट
नट अड़ाना
सहना नायकी
कान्हरा बागेश्वरी
केदारा शंकरा
शंकराभरन
शंकराअरन
शंकरनाट शंकर
विहाग विहाग
विहागरा सोरठ
देश सिंधुरा
खंभाइ परज
कलिंगरा
जैजैवंती झिं
झोटी जंगला
पीलू काफी
सिंध सिंधड़ा
डाकड़ा जोग
घाटा सामेरी
सामेरीसिंधुरा
सैंधवी माधवी
वंगाली वराट
अनंती आनंदी

टोड़र खंभावती
गौड़गिरी स्नेही
मधुरराग हरषराग
वेलावल विभाकर
मारुराग मेवाड़राग
चंद्रकाल नंदनराग
विनोदराग मंगलराग
पंचम चंद्रविंब
सुभ्रांग आभास
वर्द्धनराग कमलराग
कुसुम कुंतल
कलिंग चंपक
वहल हेमाल
गुणसागर विडंग
कल्याण सिंधु
जलधर मलरुहा
अनंतीरागणी आनंदी
टोडीकारागणी
स्नेहीरागणी
गुणपकी सरस्वती
कुंभारी चोराष्टी
विचात्रारागणी
प्रभावती गुंडश्री
गांधारी अंध्री
श्रीहटी मोहनीरागणी
सोहनीरागणी
अलैयका पथिका
तैलंगी कन्हरा
सागरराग कुंभ
तिलक मोहन'

रागरागनीनामानि सूचिपत्र ॥१॥

सू: १

मोहनराग सोमराग
भासराग कोलाहल
तिलकचांद शुक्लवेश
विजयराग वर
तुरुष्कतोडीका
रामराग कुमुद
हरख गंभीर
जयनारायण
नटनारायण
देशसोरठ सामेरेसोरठ
श्रीविलास नीषादी
पंचमी कौशिकी
भासरागणी
रंगाली
आलोलिता
लोलरागणी
सौरी सुमकिरि
लमावति नाटि
देवकरी भावि
सुभगा कौमारि
चंदनि मालवी
प्रकासिनि प्रपावति
धेवति सिंदुरी
आभिरि वसंती
लीलावति पूंगीका
काकेलि अडाइका
कर्णाटी किन्नरी
पिनाकि गौडगिरि
तिलककामोद
राजहंसि इंद्राणि

इंद्रावति
लिलावरि
सुहनी कोंकणि
सामेरी सावंती
देशपहाडिका
देशवराडि —
कावेरि सावेरि
कामोदी कोंकोलि
नाट गुणमंजरि
शेखरि सुखंदा
षड्जि मध्यमे
ऋषभि गांधारि
पंचमि धेवति
निषादि रक्तगांधारि
वेदिकी शिवी
मेधि मंजारिका
हंसिरागणी उरवसि
मनरंजनि
मनमोहसोहनि
वसंतिका सुधवराडि
द्रविडवराडि वरी
सूरी हंसिका
देवकृति प्रताप
पूर्विका छायाटोडि
केलि कोमारि
सांत क्रोधा रेवति
दीपिका प्रवरावरि
देवी सारंगि
सुधारा वरालिका
लोलिता मनप्रिया

रम्भा कामदेवि
लिलरंगि प्रमोदनि
कुसुमविलासिनि
श्रीवरि कुब्जका
साविका विभासि
वेरावरि धांकरि
विहंगिरि अडाइका
मारवि दुर्घटा
मधुरि मनोहरी
कामवृद्धि कोलाहले
कोकिलाकंठि भूपति
भूपाल वेलव शाको
रुद्र ब्रह्म स्तान ॥
ब्रह्मानंद सुसोम
गौंडिल तुरंगगौड
द्रविडगौड कोलाहल
देशपाल
तुरुष्कपुलिंदी
मेघरंजिका
देवराग रंजिका
शिव औडवभैरव
वेलवभेरव
रामकलिभेरव
कौशिकभेरव
वहारभेरव
रामकलिषट
रामगुर्जरि
विभासदेशाकार
विभासभूपालि
भटियाललालित

भटियालभखार
भटियालकलिंग
भखारपंचम
भखारललित
भखारवहार भखारवसंत
भखारसोहनि भखारभेरव
ललितपंचम ललितवहार
ललितकलिंग ललितवसंत
ललितहिंडोल भेरविटोडि
सिंधभेरवि जिल्फभेरवि
आनंदभेरवि पिलूभेरवि
जंगलाभेरवि
आसावरिभेरवि
मूलतानिभेरवि
पलासिभेरवि वरवाभेरवि
वहारभेरवि
वसंतभेरवि पंचमभेरवि
गुर्जरिभेरवि देशिभेरवि
रामकलिभेरवि
सनमगनमभेरवि
नोरेजवाकरेनभेरवि
पराकभेरवि वखारभेरवि
काफिभेरवि सिंधडाभेरवि
ललितसोहनि ललितमा
ललितभेरव (लकोश
ललितरामकलि
ललितषट ललितपरज
ललितदेशाकार
हिंडोलवाहार
हिंडोलवसंत हिंडोलपंचम
हिंडोलमालकोश ॥

हिंडोलमालश्री
हिंडोलपुरीया
हिंडोलकोशिक
हिंडोलसोहनि
पंचमभैरव
पंचमकोशिक
आसावहार
टोडीभैरवीवहार
गोंडवहार
मेघवहार
भीमपलासिवहार
जंगलावहार
अहिरीवहार
जैतश्रीवहार
अटखवहार
प्रदीपकीवहार
पूरवावहार
श्रीवहार
ललितागोरीवहार
देमवहार
जैतवहार
तिलकवहार
भूपालीवहार
हमीरकल्याणव·
जैतपुरीयावहार
सुधकल्याणीवहा·

पंचमलीलावती
पंचमलीलांवरी
पंचमसोहनी
वसंतवहार
जमनवहार
भैरविसिंधवहार
जोगीयावहार
टोडीगुजरवहार
रामदासिवहार
मीयांकीमलारवहार
धानिवहार
सिंधुकाफीवहार
धनाश्रीवहार
लंकश्रीवहार
गांधारवहार
दीपकवहार
पुरवीवहार
त्रिवणिवहार
चोतिगोरीवहार
हेमवहार
हमीरवहार
छायावहार
भूपालवहार
कामोदछायाव·
गोडकामोदवहा·
जमनवसंतवहा·

भैरववहार
रामवहार
षटवहार
गोंडगिरीवहार
गुजरवहार
आसावरीवहार
लाचारीवहार
वराडीवहार
सुघरासिवहार
सोरठमलारवहा
वरवावहार
सिंधवहार
पुरीयावहार
वंकश्रीठहार
देवगांधारठहार
प्रदीपवहार
गोरावहार
मालिगोरावहार
यमनवहार
इमनकल्याणव·
कामोदवहार
जैतस्यामवहार
यमनभूपालीव·
पूरीयाकल्याणव·
सावंतवहार
हमीरकेदारव·

टोडीवहार
जोनवहार
देशीवहार
सुघ्रावहार
सुघराईवहार
देशाखवहार
वहाउरीवहार
मलारवहार
नटमल्हारीवहार
मूलतानीवहार
पीलुवहार
काफीवहार
मालश्रीवहार
टंकश्रीवहार
पटमंजरीवहार
पराकवहार ॥
गोरीवहार
वराडिकावहार
कल्याणवहार
स्यामवहार
नटवहार
मनोहरध्यानवहा
हमीरजैतवहार
स्यामपुरीयावहा·
सावनीवहार·
हमीरस्यामवहार·

सू॰
२

जेतह्मीरवहार कामोदकल्याणवहार कामोदमलारव॰ अडानवहार सहानव॰
नायकीवहार कान्हरावहार अडानावहार मालकोशव॰ सोहनीवहार॰
वागेश्वरीवहार केदारवहार खंभायचीव॰ परजवहार कलिंगरावहार
झिंझोटीवहार सिंदुरावहार अलैयावेलावल अलैयासरपरदा अलैयादेवगिरि
वेलवलककुभ वेलावलसरपरदा वेलावलकल्याण वेलावलशुक्ल देवगिरेसरपरदा
देवगिरी रामगिरी देवगिरीपमन देवगिरीककुभ लच्छासाख देसाख भोसाख
रामसाख सुघ्रा सुघराई सुघरावे-लावल सुहाकान्हरा सुहाटोरी सुहासारंग
सुघ्राअडाना सुघ सुघराइअडाना सुघराईकान्हरा सुघराईदेसाख
सुघराईटोडी सुघराईमलार देवगंधारभैरव देवगंधाररामकली
गंधारआसावरी गंधारजोगीया गंधारटोडी गंधारघट गंधारदेशी

प १०५ ह १ योभाग्याभैरवस्यात्यतिशुभमधुमाधवीप्रिया
प १०५ ह १ भासतेसा॥१॥
प १०५ ह १ जपसंख्या॥८॥अष्टोत्तरशतमा॥
प १०५ ह १ अथविनियोग॥
प १०५ ह १ क्लींपंइतिमंत्रस्य
प १०५ ह १ प्रजापतिदेवता हनुमानऋषि
प १०५ ह १ प्रकृतिछंदः
प १०५ ह १ मधुमाधवीरागणीसिध्यर्थे
प १०५ ह १ जपेविनियोगः॥
प १०५ ह १ इतिविनियोगः॥वार्तिक॥
प १०५ ह १ मधुमाधवीरागणी
भैरवकी इसत्री पहली
प १०५ ह १ संपूरण सातसुरकी
प १०५ ह १ इसप्रकारकरके
प १०५ ह १ मध्यमस्वर मध्यग्रामवाला
प १०५ ह १ ग्रहहै जिसको वादिकहतेहै
प १०५ ह १ अरु पंचम इसका अनुवादीहै

सूचीपत्र॥ भैरवकी॥ रागनी मधुमाधवी॥

सू॰ १ प १०५ पृ २ इसरागनीमे अवादी स्वर कोई नहीहै
प १०५ पृ २ भैरव टोडी ललित
प १०५ पृ २ इनरागोका मिलाप
प १०५ पृ २ हो करकि इसरागनीकि
प १०५ पृ २ उत्पत्ते होतीहै॥ मध्यम मध्यग्रामवाला॰
प १०७ पृ २ अथरागमाधवगीतप्रारंभ॥
प १०७ पृ २ रागमधुमाधवी॥ तीनताल॥ चोपदी॥
प १०७ पृ २
प ११० पृ १ रागमधुमाधवीतीनताल टोहा म प ध नी स
प ११० पृ १ अथगीतगोविंद॥ अष्टपदी॥ रागमधुमाधवी॥ तीनताल म प ध नी स
प ११० पृ १ ध्रुवपदं म प ध नी स॰
प ११२ पृ १ इतिश्रीगीतगोविंदजयदेवकृतो द्वितीयप्रबंध॥ २॥
प ११२ पृ १ अथगीतगिरीशः रागमधुमाधवी तीनताल
म प ध नी स॰
प ११२ पृ १ रागमधुवी॥ तीनताल॥ रूपकताल॥ स रे ग म प ध नी रे स
प ११४ पृ २ इतिश्रीभानुदत्तविरचिते गीतगौरीपतो
गायनविधिसमाप्तम्॥
प ११४ पृ २ अथध्रुवपदं॥ मधुमाधवीचारताल॥ म प ध नी स

7

सूचीपत्रमधुमाधवी भैरवकीरागनी॥ ९॥

प	११८	ह १	रागमधुमाधवी तीनतार नी स नी स
प	१२१	ह २	रागमधुमाधवी॥ तीनतार॥ त्रिलावरनत म प प नी स
प	१३२	ह २	रागमधुमाधवी॥ श्राडाई तार म प प नी स
प	१३२	ह २	रागमधुमाधवी॥ तारयका॥ स रे ग म प प नी स
प	१३३	ह २	रागमधुमाधवी॥ तारदूपक म प प नी स
प	१३४	ह २	रागमधुमाधवी॥ सवारि॥ म प प नी स
प	१३५	ह १	रागमधुमाधवी॥ श्राडा चावतार म प प नी स
प	१३५	ह १	रागमधुमाधवी॥ तारगीत॥ म प म प प नी स
प	१३५	ह २	रागमधुमाधवी झुमरातार म प प नी स
प	१३८	ह १	रागमधुमाधवी॥ तारदादरा॥ म प प नी स
			इतिमधुमाधवी गततीनतार॥ समाप्तम्॥
प	१३९	ह १	प्रथमश्रावृती डिड (म) द्रा (प) डिड (प) डा (नी) द्रा (सा) डा (नी) डा (प) द्रा (नी)
प	१३९	ह १	द्वितीयआवृती॥ प नी रे सा प नी प प
प	१३९	ह १	तृतीयश्रावृती म प प नी सा रे ग म
प	१३९	ह २	इतस्थारि॥ म प प नी सा रे ग ग
प	१३९	ह २	चतुर्थश्रावृती रेरे स रे नी प प म गरेसा

सूचीपत्र मधुमाधवी भैरवकीस्त्री

प ध नि सा सांरे ग मगरे सारेग

प १२८ पृ २ इतनन्त्रः॥ डिड डा डिड डा ड्डा डा ड्डा ड्डा

प १२० पृ १ ॐश्रीगणेशायनमः॥

प १२० पृ १ अथभैरवे रागणी

भैरवरागस्य द्वितीस्त्री

गायनवर्णनम्

प १२० पृ १ भैरवी रागणी भैरवकी स्त्री

प १२० पृ १ प्रथम पहर दिनते लेकरकि

अर्थ याम दूसरे तक गायन

करणीका समाहै

प १२० पृ १ नामभैरवीरागणी॥

सवा पहर दिन चडेते

डिड पहर दिन चडे तक

प १२० पृ १ रितशिशिर

रंगता नायका शांतरस

प १२० पृ १ दत्तनाइका शिवजी देवता

भैरवी॥ संचरण॥ रे ग पे नि सा धे धे प ध प ध

डा डि डि डा डा डा डे

म पँ॥ ग सा रे सा रे ग म ग मं रे ग रे रे

डे डा डा डा डे डे डा डा डा डा डा डे डा डा डा

सा सा॥ निँ रे रे सा नि ध प म ग ध ध नि सा

डा डा डा डि डि डा डा डा डा डा डा डा डा डा डा

नि सा॥ ग गँ मं मं ग रे सा सा ॥॥॥

डा डा डा डा डि डि डा डा/ डा डा

प्रथम उठ भोरही राधे कृस्न कहो मनयामें होवै सब सिद्ध काज्य॥ इहलोक परलोकके स्वामी ध्यान धरो ब्रज राज॥ पतित उद्धारन जनप्रति पालन दीनदयाल नामलेत जाय दुख भाज॥ तांनसेंन प्रभुको सुमरो प्रातही जगमे रहै तेरी लाज॥ भैरवी॥ सोई सन्त कुलवन्त कहावत गावै गोविंदगी तोरे॥ नरद्दावे नारायण सुमरे जे जन जगमें जितारे॥ सोई सन्त कुलवन्त॥

भैरवी॥ प्रात समै अस्नान करणकों गंगाजूकी धारा है॥ निरमल वचन सुनो हो प्रानि पाप कटनकों आरा है॥ अम्रत जलकों पानकरो और ध्यान धरो गंगा धरकों नित उठ चरननसों [illegible] चितयाहीमें निस्तारा है॥ लागे॥ सीस नवाय करो हों विनती पतराखो तुम शरण गतकी अधम उधारण जगनिस्तारन महिमा अपरं पारा है॥ शिवसमान नहीं कोउ दाता तिन लोककी तुमहो माता कीट पतंगादिक नरपापी सबकों तुमनें तारा है॥॥॥

तारा है

१८

॥अस्थायी॥

सा नि नि सा रे ग म म प प मॅं मॅं ग ग म म
डि डि डि डा डा डा डि डि डि डि डा ड़ा डा ड़ा डि डि

ग ग रें रें सां सां ध ध प प पॅं ग म ग म म
डा ड़ा डा ड़ा डा डा डि डि डा डा डा डि डि

नि नि ध ध पॅं प मं मं ग ग रें रें सां ॥अन्तरा॥
डि डि डा ड़ा डा ड़ा डि डि डा ड़ा डा ड़ा डा

म म धॅं धॅं नि॥ सां नि सां सां सां गं रें रें रें
डा ड़ा डा ड़ा डा डा डा डा डा डा डा डि डि डि

रें सां सां निं नि सां रें रें सां सां नि प म म म
डि डा ड़ा डा ड़ा डा डा ड़ा डा ड़ा डा डा डा डि डि

नि नि ध ध मॅं प म म ग ग रें रें सां ॥॥
डि डि डा ड़ा डा ड़ा डि डि डा ड़ा डा ड़ा डा

रागभैरवी॥ एरी एक सपनामेने देखा मोहुत पोडत परभात॥आज॥ एकसं
सुन सजनी मेतु मसो कहतहूं ध्यान लगा मेरी बात॥आज॥ जूठ कहूं
तो राम दुहाई सांचीसोंहो तातकी खात लाल लाडली बैठे परस्पर हंस
कीवान हंस करत बात॥ रविशशि कोटि वदनकी शोभा युगल मूरत लखि म
दनलजात॥ जब रजुस्याम शोभा सुख सागर जोबनमें दामनी दर सात॥
अंग अंग भूखनसोहत सुंदर वेनी निरख नागिन सर मात॥ अलकन देख
नागमुर झायो लोचनये मिरगलो भात॥॥

जोगिया॥संपूरण॥ रे म म प प प ध प ध ध ध प म
ड ड़ ड़ ड ड ड़ ड़ ड़ ड़ ड ड ड ड

प प प नि प ध म प ग म ग म म म म
ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड ड ड़ ड ड़ ड़ ड़ ड़ ड़

ग रे सा रे॥ नि सा ध नि सा रे रे ग ग म
ड ड ड ड़ ड ड ड ड ड ड़ ड़ ड़ ड़ ड़

म म ग ग ग रे रे सा सा सा सा ॥१॥ जोगिया [illegible]
ड़ ड़ ड ड़ ड ड़ ड ड़ ड़ ड़ ड़

एसी मुरली वजाई स्याम मेरी मन वौराई॥ जवतें भनक परी श्रवनन में नवतें नैनन नींद न आई॥ भोजन भूषन विसरगयो सगरो वन वन फिरतहों धाई॥ विरह विथा यह सुनोरी सखीरी तापर अपनी छुव नहेखाई॥ काहूके नैन लगे काहू संग जव जान पीर पराई॥ जान अहीर पीर नहीं जानें सिखोहे इतनी निठुराई॥ लागी लागीतो लगी रहे वजहु न कवहूं तो गरवा लगाई॥१॥ वोही रंग रंगाउंगी जो जो रंग की पीकी पाग १॥ एकतो रंग रंगी हरिको वजहुन दुजे अपनें मनकी लाग॥२॥ [illegible]

तोडी॥संपूरण॥ रे ग म ध नि॥ आस्थायी॥ सा ध ध प ध म प प ध
ड ड़ ड़ ड ड ड ड़ ड़ ड

प म ग म प प म ग ग रे सा नि सा सा प ध
ड ड ड ड ड़ ड़ ड ड़ ड़ ड ड ड ड़ ड़ ड ड

सा नि रे सा॥ ग रे रे सा नि सा॥ अन्तरा॥ प प
ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड़ ड़

६२

प नि ध सा सा नि सा नि सा नि सा सा सा

नि रे रे सा सा सा सा नि सा नि नि सा ग ग

रे रे सा नि ध ध प प म ग म म ग ग ग रे रे

सा सा ॥ ११ ॥ इ· तोडी· भ· रत्नो· ॥ तोडी ॥

परी जशोदा द्वारे पुकारे आय है एक जोगी मांगत हाथ पसारी ॥ मुख देखुं तेरा बालक को मैं यही गुरु ज्ञान विचारी ॥ जटा जूट वाघंबर गंग शिव वहु रूप शिव डिम डिम डमरु वजावत सिंगीनाद धुंकारी ॥ काशी वासी कैलाश निवासी दरसन कारन आय हो गोकुलारी ॥ ल्याई जशोधा पुत्र अवरा ढांक देख मगन भय धन धन आज दिन सुखकारी ॥ ११ ॥ तोडी ॥ जो गिरि वसो तो वसो चित्र कूट नगर वसो तो अयोध्या धाम ॥ सलिता वसो तो वहो सरजू तठ नाम जपो तो राजा राम ॥ दशरथ नंदन पति है हमारे मरजादा मारग लह्यो राम ॥ तुलसी दास रघु नाथ आस एक चरन कमल गह्यो विश्राम ॥ ११ ॥ तो ॥ दीन दयाल पतित उदारण राम रघुवर मोसो अधम पतित की सुनिये विनती ॥ कोटी कोटी अपराध भये मेरे रोम रोम में कहां लो गनाउ कहत लाज मन महां मंद कौन गिनती ॥ जनम जनम लों पाप कमायो वाजन आयो कुमति कुटिल खल निलज शिरोमनि ता पर सनमुख भाषत भनती ॥ लछन दास भरोसो नृप को निज कर नौका सुजश रावरो वेद न गायो गनीका गीध व्याध गज पांवर सुनि सवन की वेनती ॥ ११ ॥

परज। छांडदे लंगर। घर जानदे। छेलवा हो। जमुना। जलभरण। जात रही।
हमसो। करत। वरजोरे लंगर। ॥ प्रगट। पीनकरि। रसके। वसभये। सर
वसदेवे। सरगयो। परवसमे। परके। केसरकारंगलाल। वसरको। रंगरा
गमोतिन। सोमांगभर। प्रेमभरके। चुनरीसुरंग। कुचकी। अंगीया। उतं
गवसके। अनंग। अंग। अंग। अंग। करके। सुंदर। तनकि। सिंगार। जोवन। निर
खि। वहार। जीवनसो। करपीया। रहार हीये। दरके। ॥ परजसंपूरण॥

प ध म म प ध। नि सा नि सा सा सा सा सा
डा डा डा डा डा डा डा डा डा डा

नि सा रे सा सा नि नि सा सा सा सा नि नि ध
डा डा डा डा डा रि डि रि रा डा रा

ध प म प प ध म म प ध। नि नि ध प प म प म
रा डा रा डा डा डा रा डा रा डा रा डा रा डा रा डा डि

म म म प ध ध ध प म म ग ग रे रे रे रे ग ग ग ग
रि डि रि रि डि रि रि डा र डा र डा डि रि डि रि डि रि डि रि

ग रे रे सा सा नि सा सा सा ग म ध नि सा सा नि
डा र डा र डा डा डा रा डा रा डा रा डा रा डा

सा रे सा नि सा सा ग ग ग ग रे रे सा सा नि प प ॥
डा रा डा रा डि रि डि दि डा रा डा रा डा रा डा

१

सोरठ ॥ हेमा वडी वडी अंखियन वारो सांवरो मोतन हेरत हसिके ॥ भो
हे कमान बान वाके लोचन मारत हियरे कसिके ॥ जतनकरो जंतर
लिखवांधो औषधलाउं चसिके ॥ ज्योतोमको कछु और विथाहो ना
हिन मेरो वसिके ॥ कौंनजतनकरों मोरी आली चंदन लाउं चसिके
जंतर मंतर जादु टोना माधुरी मूरत वसिके ॥ सांवरी सूरत आनमि
लावो डाडी रहंमें हसिके ॥ रेजा रेजा भयो करेजा अंदर देखो चसिके
मीरांतो गिरिधर विन देखे कैसे रहे घर वसिके ॥

रे म म रे म म प प म ध नि सा नि सा सा सा सा सा

सा सा रे रे रे रे ग म रे सा सा ॥ ध नि ध नि ध ध

सा सा नि नि सा रे नि सा सा सा प नि प म म

प प प प म म प ग ग रे ग रे ग रे रे प नि प प

म ग रे ग रे ग रे रे सा सा नि सा ॥ सोरठा ॥ मेघके भार्या २ दो।

मेघकेभार्या दोसरी २

विभासखाडवा॥ द्रुतत्रिताली धँ सा सा सा रे ग रे ग पँ ध ध

भैरवदा पुस्त ८

डा डि ड़ि डा ड़ा डा डा ड़ा डा डि ड़ि

प प प प गँ ग रे रे सा ध सा सा ध प ध सा रे

डि ड़ि डि ड़ि डा डा ड़ा डा ड़ा डा डि ड़ि डा ड़ा डा ड़ा डा

ग पँ ध ध प प ग रे सा ॥ ॥ राविभास॥

ड़ा डा डि ड़ि डा ड़ा डा ड़ा डा

परी हों चोक परी पीय आय गए मे मदसों छकी मोरामा॥ और कछुन ही वन आयो हों चर ही जाय लकी॥॥ मन चीते काज भइले हमेरे सखी सदे ली गावोरी आनंद वधावए आप ही आयो लालन मोरे मंदिर वा होतो कवडू सखवार हस हस कर मन रंगसो अव जनम जनमके अवतो उरवे वागइले॥॥

देवगिरि॥संपूरण॥ गँ ग ग ग ग ग म ग रे ग म म प म ग

डा डि ड़ि डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा डा डि ड़ि डा ड़ा डा

रे सा रे सा नि नि प प ध सा रे ग मँ प प म

ड़ा डा ड़ा डा डि ड़ि डा ड़ा डा ड़ा डा ड़ा डा डि रि ड़ा

म ग रे सा रे देवकिरि॥ जगतमें श्रीजमुनाजी परम कृपाल॥

ड़ा डा ड़ा डा ड़ा विनती करत तुरत सुनलीनी भए हीं मोपें दयाल॥ जो कोउ मज्जन करत निरंतर तातें डरत जमकाल॥ व्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी सुमिरत होत निहाल॥॥ श्रीजमुनाजी पतितपावन करन॥ प्रथमही जाको दरसपायो कोटि कलिमल हरन॥ पेठत ही भुज तरंग परसत मिटत जियकी जरन॥ नाम उचरत शुद्ध वानी वुध्य पोषन भरन॥ उपजे उग्र वैराग जाकुं खिंचि त्यावत शरन॥ सूरह रिकी भक्तराता विश्व तारन तरन॥॥ ॥ भैरवदा पुस्त ५॥ भैरवराग दा पुस्त पंचम॥ श्रीरामायनमः

१'
(

सा रे ग म ग म रे ग म प ग म ध प ॥ ध ध ध

नि सा सा सा ध नि सा सा सा ध ध नि नि प ध॥

म प ॥ ऽसा नि ध म प ध ध प म म ग म ॥ ॥

खम्बावती ॥ तीनताल ॥

माल कोष इष्टी २

साजन मोरा अनही रंगीला देखनकों सब आर सखीयां हमसों अवध वध अनन विरम रही जियकी करतहै अन मन वतीयां दिलवर यारवे मीयां मैनु छडके नजांमीवे आथी रातीतेंकाला वेला बुलडीनु राहव तलामी ॥ यललललो यललम् यलुम् यललुम् यललुम् तरललुम् तरललुम् २ तरललललुम उदनतुम् ततननुम् निननारेदीम् ॥:

वृंदावनी सारंग ॥ औडव ॥ एकताला ॥ नि सा नि रे सा नि प नि प म प

प प म रे प प म रे म रे सा नि सा सा सा नि

प नि सा रे सा रे म प नि प म प म रे प

प म रे म रे सा नि सा अन्तरा नि सा सां रे

सा नि सां सा रे म प नि प म प प नि सा

रे सा सा रे रे सा सा नि प प सा सा नि नि प

म रे प प म म रे सा ॥ बसंत खाउव ॥ अस्थायी ॥
ड्रा डा ड्रि ड्रि ड्रि ड्रि डा ड्रा
हिं भा० २

सा म म म म ग रे ग ॥ म ध ध म ध ध सा नि
डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा डा डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा

ध नि ध ध म म म ग ग म म ध नि ध ॥
डा ड्रि ड्रि डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा डा

म म म ग म म म म ग ग ग रे रे सा ॥
डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा डा ० ड्रा डा ० ड्रा डा

अन्तरा ॥ म ध ध म ध नि सा नि सा सा सा नि
डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ० ० डा ड्रा डा

ध नि नि नि नि ध ध म म ग म ॥ म नि नि
डा ड्रि ड्रि ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा डा ड्रा डा ड्रा डा

ध ध म म म म ग ॥ रे ग ग म म म ग ग
डा ड्रि ड्रि डा ड्रा डा ड्रा डा ड्रि ड्रि ड्रि ड्रि डा ० ड्रा

ग रे रे नि सा ॥ ॥ पंचमविवादी ॥ होरी खेलनकों जो आप हो
डा ० ड्रा डा ड्रा

मोसो तो आवो स्यामपर भांझके चटकों सुखसे बिराजो धाम तिहारो उतारो पीतांबर खोलो कटकों करते मुरली धरोऔ बधावो सीसतें अपने या मुख मुकटको सबज रंग डारो हरे गुलाल मलो नेक नेक सोउ चारो घूंघटकों ऐसे नरम करके कर पकरो जोन लगी मोरी बांह को झटकों ॥ एतो खेलहै मन मिलवेकों नातो वर जोरी कोहै नहींको जब हम तुम मिल मौज करन लागे तबहै काको डर कोनको खटकों ॥१॥

१' 2

रे ध नि ध प म ग रे सा सा रे रे रे रे म म प म
डा डा डा डा डा डा डा डा डा डा डि डि डि डि डा डा डा डा

प ॥ प सा सा सा ध नि प ध प ध ध म
डा डा डा डा डा डा डा डा डा डि डि डि

म प प म प ग ग म रे रे ॥ रे ध ध प प
डि डि डि डा डा डा डा डा डा डा डा डि डि डि डि

ध नि ध प ध म ध ध प प म म ग म रे
डा डा डा डा डा डि डि डि डि डि डि डा डा डा

रे ग सा सा ॥॥ अथ स्थाई रे प म ग रे सा सा सा रे
डा डा डा डा डा डा डा डा डा डा डा डि

रे ध ध नि नि ध नि प प ध प प ॥ प ध ध
डि डि डि डि डि डा डा डा डा डा डा डा डा डि डि

म प ध सा रे ग म म प प ग ग म म ग
डा डा डा डा डा डा डि डि डि डि डि डि डि डि डा

म रे रे ग सा सा ॥॥ सुनो सुनो ननदी कैसे कटे दिन
डा डा डा डा डा डा

सांवना सावना मनभावना नाहीं नाहीं बूंदे मेहा वरसगयो मोरला
वोले सुहावना वीजली चमके बादर गरजे कूरके ढोल सुहावना ॥
नेके चलोरी गोरी याने के चलोरी पिया पूछे पकवान नेक चलत है
नीके लगत है हंस मुख पूछे पकवान ॥॥ सईयां नदीया गहरी रे कैसे
उतरूं पार पकतो बादर वीजले चमकत तीजे रेन अंधेरी चन चोरी रे ॥ ॥

प्रेम ... ॥ भैरव ५८ ॥

उ॰
सं॰ २॰
प्र॰ सा

मुकरमलहरणी कियतिलकगुणगणवसकरणी॥ श्रीगुरु

पदनखमणिगणज्योतीं॥ स्मिरतदिव्यदृष्टिहियहोती दलन॰

3

नी ध प म ग म ग ग रे स नी ध नी स स रे ग म प
मूकहोंहिंवाचाल पंगुचढेंहिंगिरिवरगहन जासुकृपासुदया

ध नी स रे ग म ग म म ग रे स नी ध प म ग रे स स नी ध
लौ द्रवउसकलकलिमलदहननीलसरोरुहस्याम ॥ तरुणअ

नी स रे ग म ग म प ध नी स नी स ध म ग म ग म ग रे स
रुणवारिजनयनकरउसोममउरधामसदाक्षीरसागरशयन

म प ध नी स रि ग म ग म ग रे रे ग म प म ग रे स स
कुंदइंदुसमदेहउमारमणकरुणाअयनजाहिदीनपरनेह करउ

रे ग म रे स नी ध नी स रे ग म ग म ग रे स
कृपामर्दनमयन वंदौंगुरुपदपंकज कृपासिंधुनररूपहरि

ग म रे स स नी ध प म ग रे स
महामोहतमपुंज जासुवचनरविकरनिकर ॥ रागभैरवतीनताल ॥

वंदौंगुरुपदपदमपरागा सुरुचिसुवाससरसअनुरागा अमियमू

रमयचूरणचारू शमनसकलभवरुजपरिवारू ॥ सुकृतशं

भुतनविमलविभूती मंजुलमंगलमोदप्रसूती जनमनमंजु

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीरघुनाथजीसहाई॥ ॐ श्रीरामचंद्रायनमोनमः॥

ॐ प्रथम भैरवराग संपूर्णभैरवंप्रातः गीयंतेशारदामतम्

शिवमत बारप्रकारका भैरव ध्यान विनियोग विल्लोदेवता

अग्नितत शिवजीऋषि वीररस प नि सा नि रे स प नि

स प प म म प नि स म ग रि स ॥ सवैया॥ गौरगंभीर·

तस्यआलापा ननरीरनाआननउननउआनामआहतनरी तुनं·

इतिभैरवराग॥ पहलाप्रकारवडा सा नि सा· दूसराप्रकार सरगम

ग ग ग म ग स मूर्छना भैरवराग तीनताल·

बालकाण्ड ४२८
अजोध्याकाण्ड ३२७
आरण्यकाण्ड ८०
किष्कंदाकाण्ड ३४
सुंदरकांड ८८
लंकाकाण्ड २२४
उत्तरकाण्ड २२३

सर्व शत १३५०

एकरागमी—

प्रथमभैरव १ ८ २४
द्वितीयमालकोष २ ८
तृतीयहिंडोल ३ ८
चतुर्थ ~~श्रीसनरी~~ ४ ८
~~दीपक~~ श्रीराग ५ ८
मेघ ६ ८

जिंफोटे जत

सखीनेंनासेनेंनामिलायरहीसनामेफ
गुवामांगरहि तासकिअगियाजालि
किकुरुतीछतीपनसोछतीयांकुडायरहिसि
जि॰ ज॰ मनमोहनलागीरसोछेलमे
रेनेंननमे हहेपरेनंदनंदनजवतेंसव
व्रतनेमवसो विनदेखेमोहेकलनपडत
हेदरसनजातससो जानकिदासकोउ
आनमिलावेजगउपहांससो छे दें
देखतहेसवलोगनगरकेमानोस्या
मकसो होरीकेमिसमोहनप्यारे
ज्योंतुमकसोसासस्योंसो जानकि
दासप्रभुकेरमिलोंगीअवटूकचिप
दीरसो॰

भे॰ पकतारा तननाद्दद्रतंदद्दनाततनदिरनातदानी तनउदतननननाद्दद्दीनतननननान
तनुमततनुम् तदीयनरेतदीयनोरेतुमतनननानतनननननदीमृतददीमृतदतदानी भे॰ होरी॰
मकुरीयामहंदीलागीमेरेलालहाथनकीहारेकेसीवनीरेलोगवा सदारंगमिलियारंगगुलि
यामाईइकुरीयांपुजोमोरेमनकी भे॰ ज॰ वारवाररवरजीमेतोयहकौनचतुराई जामेसाहकी
प्रकृतिहोमिलचलीयअबयाहीमेंवड़ाई धमारताल भे॰ वहार मगमधमेरेमगेरेधनी
सामरेसानी धगमेंधरेधरेधगधमधामरेसासरेसानी सारेगामर्मेसगेरेमगमेधामधामेधधध
नी साधसाधधगधरेमदापे मोरीपकनमानी ~~भे॰ ख्या॰ ति॰ अबतुमजागो~~ भे॰ ख्या॰ ति॰
अबतुमजागोकौनमीतपियरवाहमरीमीततुमसनलागी नींदकेमातेसाहआलमसुरज
नुवागवनवासगरीरेन रंगरसपागी भे॰ त्रेवड़ा॰ तियप्रवीनपरमचतुरमोहनमूरतनागर
रोमदेमहंदर नेत्रकमलसुआनाशिकाश्रीफलओजकटकेहरगर्भगंजनपुरंदर ब्रह्मताल
त्रिपुरारित्रिशूलपाणिशिवशंकरज्ञाति लक्ष्मीताल डवरूडिमडिमकरनीलकण्ठफुंकत
फणेश्चंद्रभालकटासजटागंगपानी रुद्रताल तीयअवेतीयअवेतीयायेयातीयेये
यातीयेयेया आआआआआआआनी भेरवटपा तालमध्यमान ति॰ मैंडेवेंडेनुआमीवूनें या
डेचोलचतीविनितउठजिंदतपदीरहंदीवे तैंडेवोतरअपनेंपरायपलोकदेसाईतेडेनुचहदीवे॰
पकतार सोणानैंडीवांकीअदासोजीयडरदावे मेंडापलकतेरीतिरछीतनखार वांकीतेंडी
भौंहकटीलीमनरंगवरचसखुमाम॰ भे॰ ति॰ अनुरेआजमोरीवहीयांमरोरी पनीयाभरन
केसीजांउंमोरीसजनीलाजकाजनीयभांफओरी भे॰ ति॰ होंसवधरकेजागेप्यारेमोरे
मोरभईजिनविह्गहोपायपरुमें धीरधरोवलवीरववाकोसोंहकरतहोतुमसोंफेरधेरो
छाडोललाजिनआनकरो भे॰ ति॰ नीधनीधधधधमगधमगमगरेगरेसासारेगमधधनी
सासानीधधमगरेसा ॥ धधनीसारेसानीधधनीसारेगम गरेसानीधनीधधधधमगमगरे
नीसारेगरेसानीधधमग ॥८॥ भे॰ जलद॰ ति॰ ख्याल हरिहरिलहोमनमेरेअष्टप्रहरआनं
दहोयतेरे यहलोकपरलोककेस्वामीजपोनिसदिनसांफसवेरे ॥८॥ सामधन्नातविलम्ब
भक्तिहीनंकचेलं
मलिनवसनगात्र
दुर्लभयाचकोर्ल

भै॰ एक॰ सिपाईमेडीअरजसुननजईयोहोजानेवालेनान कवकीमेठाडीठाडीअरजकरैहाँईत
नीअरजमाँडीमान भै॰ एक॰ रह्यावेमिलामीसोनाप्यारमिले आठपहरमानुवेप्यानतुम्हाजमि
डाम्हेनामोलाकेमनुसीजिन्दारहियेम्हहीमांगदियातुहाईसोनाप्यारमिले भैरवी धमार॰
अजलुंनआयेपियमोरा अजलुंनआये एकविरहातुजैसेजमईयांकीदीपकनाहिअंधेरा
कोएसाविचपियकोंमिलावेसारीजहाँविचहेरा अवरेजोगनहोकेडाकगीफेरा आनप
डिविरहाकेसागरविषयपानतवेरा विनपियकोमोदेपारउतारिमारणजीवनधनमेरा
अवरेलद्दरभावतवलतेराअजलुंन॰ अवधनीयरानीपियानहीआयेआगमहोतअन्धेरा
गावेगुदरमोद्देसपतमईयांकिकामकठकदलवेरा॰ भै॰जत॰ अवहोरीखेलनमोसेआयोरी
मेरोस्यामललाल अतरअरगजाअवीरकेसपलियेडारतरंगगुलाललाल॰ अथवसन्तहोरी भैरव॰
जतताल॰ आनवखेलारीकोखेलरीजोपदभागरच्योभरसागर नटवापककलावलंतेरीर
गसवनमेमेलरी समफसमफमनआदिअन्तनकराख्योनकोईअहेलरी गावेगुदरज्योपिय
रंगरंगेओररंगनहीमेलरी सिंधभैरवे जत॰ मेतोभींचकहोरहीपिचकारीनकादेकुमारीरे
भरपिचकारीमुखपरमारीभींजगईतनसारीरे॰ काफीसिंध॰भै॰ जत॰ स्यामास्यामसोंहोरीखे
लतफागनई नंदनंदनकोंराधाकीनीमायोआपभई यमुनातटविहरतप्रमोदमेनवकुवंरगईई
वाजततालमृदंगफांफडफअवीरअकासछई सखासखिहोयसखिसखाहोयसमतभवनगई
डलखोरुपदेखश्रीपतिकोमतगतभूलगई फगुवादयोमंगायसांवरेकंचनरतनमई सूर
स्यामकोवदनविलोककेडगरगईकलईस्याम फि॰ज॰ गारा॰ जत॰ रसकितुमगारीजिन
देहोविहारी छतीयनकुचमुखअवीरमलोदेसारिचुनररंगडारी॰ भै॰ ति॰ तुमगुणगावोंओ
मुरलीधरकेसोशिवविरंचसनकादिभेदनपायो ज्ञानध्यानजपतपअगणगुणपानैनेत
नेतगायो लिखतभवानीदिनरातजाकेगुनकोपारनपायो चंचलसमप्रभुहगरमाल
मुरतजोहिरदेवसेतुमगुणगायो दो॰ वसन्तालकोनठेवपरीतिहारीतिपियसारितमांनी च
तरसहचरतुहीप्यारीपतीहटनआनी दो॰पटत॰ मिठेबोलनठोलनआपरीसवमनभायभाय
गरगरमंगलगाय नेनसुरांहेदेखतभाजेदिलमिलकरीगीवभाए॰ दो॰प॰ मदमदकुली
कोयलियाबोलेअंवुवाकीडारविरहभरी हपनेंअपनेंदामनिदनआवेलालविननिराशोंकपरी॰

अथभैरवरागसूची १

अथभैरवरागस्य पंचभार्या लिख्यते ॥

१ प्रथमस्त्री मधुमाधवी
२ द्वितीयभैरवी
३ तृतीयरामकली
४ चतुर्थतोडी
५ पंचमआसावरी

अथभैरवपुत्रवर्णनम्

१ प्रथमबंगाल
२ द्वितीयमधुर
३ तृतीयहरख
४ चतुर्थदेषाख
५ पंचमललित रामपंचम ५
६ षष्ठमवेलावल षट्
७ सप्तममाधव
८ अष्टमपंचम

पुत्रभार्यावर्ने बंगालभार्या

मृगनी १
मनोरंजनी २
प्रतापी ३
हंसिका ४
हंसिकावरी ५

अथमधुरभार्या

माधुरी १
मोहनी २
रेवती ३
मिष्टिका ४
लीलावती ५

अथहरखभार्या

हर्षिकी १
मनोहारी २
वेदी ३
मेघरंजिका ४
कामकेली ५

अथदेषाखभार्या

देवनादे १
देवकली २
वर्धनी ३
विनोदका ४
विलासे ५

अथरामभार्या

रामा १
रमनी २
रंगिका ३
केलि ४
कौमारी ५

अथषट्भार्या

पुपामा १
सोवी २
भीमे ३
नागधनि ४
आनंदी ५

अथमाधवभार्या

माधुरी १
मोतिका २
सुधा ३
विचित्रा ४
मनोहारिनी ५

अथपंचमभार्या

विभाषी १
अहूती २
प्राति ३
ओद्रे ४
अलोपा ५

चतुःपंचाशतनामसंख्या ५४

अथपणीसागरमृदंगाध्यायप्रारंभः संगीतरत्नाकरे अथमृदंगवादितरागणि परन चौताल॥
नाधीधुन्ना तथा धीधीटे किटि गिदि गननधा तता धीधी धुंधुं नाना थिरर थिरर धिलांगधा
धाधिननक धाधिननक धिननक तिटिकिता गिदि गिन्नाधा धुंधुंधिट धिट धिट धिट धागे
धिट धिट धागे तरदा हुंहुं नड्ड ततकेतत किटि तक ता गिड्तधाधिताक धाधिताक धाधा
धिताक धाधिताक धा धाधिताक धाधिताकधा धाधिताक धाधिताक धा ॥

पत्र १ बंगाल चौतार ॥ जैकलाणिलेजधारिनी॥
बंगाल चौतार ॥ सर्वगुणिसर्वकला॥
बंगाल चौतार ॥ तुमहोगणपतदेव॥
बंगाल चौतार ॥ महादेवआदिदेव॥
बंगाल चौतार ॥ अनंतब्रह्मांडकेनायक॥
पत्र१०२२ बंगाल तालब्रह्म प्रबंध॥
नीलनीरजवरनतन॥
पत्र२२ बंगालतालरुद्र॥
सिसरूपपंचानन॥
३२ बंगाल तालविष्णु॥
यमाभोरभईमोरी॥
३५ बंगालतालजका॥
आयजआएभोरभले॥
३८ बंगालताल सवारी ५
अनिउठोसतीआं॥

पत्र ५॥ बंगाल चौतार॥ मोहनसृष्टकेआधार॥
बंगाल चौतार॥ जैमाधवमुकुंदमुरार॥
पत्र ६ बंगाल चौतार॥ प्रथमउठप्रातहि॥
पत्र७ बंगाल चौतार॥ बानिचारोंकेओर॥
बंगाल चौतार॥ सेवमहाराजरामपद॥
पत्र८ बंगाल चौतार॥ प्रथमखरजसाधो॥
पत्र२३ बंगाल तिताराचतुरंग॥ चतुरंगरसलिए॥
पत्र२५ बंगाल त्रेवड़ा॥ तियप्रविनपरमचतुर॥
२५ बंगाल सूलताल॥ प्रजापतिद्विजपति॥
२६ बंगाल लक्ष्मीताल॥ डमरूडिमडिमकरनी
२७ बंगाल झूमराताल॥ कोयलकुहुकेमाई॥
३० बंगालतालधीमा॥ दरेयादरेयादरतन॥
३० बंगाल जलदतिताला॥ तोमतननतामतनदिर॥
३८ बंगाल आडाचौतारा॥ प्यारीरीमुखरबोलदेरव॥

रसविष्कारवृन्दक॥ रागिनी कानाड़ा ताल चौताल हे देव पाकशास
न के जाने तव महिमा तुमिहे सुर नायक चक्रपाणि अग्रज
सुंदर दैत्य वंश दर्पहारी अमर गण आनन्दकारी सची मानस
न मोहन सुधा आकर ओहे पुरन्दर पद रत नर सवे तव किंकर
सदा विनत भावे तोमारि यशोमान् करेये गान किन्नर ॥

अमरावतीइंद्रसभा॥ शोचीदेवी सुरराज इन्द्रेर अर्द्धासने समासीनाः
देवर्षि नारद स्वतंत्र आसने उपविष्टः गंधर्वराज चित्रसेन अग्रे
दण्डायमान इंद्रतवे अद्य कोन रुप नाट्यो मोदइ होकना
स्मिरे किवल । शचे वलि किनाथः किन्तु येये नाट्यो भिनय
पुनः पुनः देखा हयेछे ता देखे आर चित्त प्रफुल्ल हयना कोन
नव्य प्रनालीर अभिनय प्रदर्शित हले प्रीतिकर हतेपारेक इंद्र
नव्य प्रनालीर नाट्योमोद कि हते पारे । देवर्षि आपनि अति
सुविज्ञ सर्व्व शास्त्रे विशारद वलुन देखि इमन प्रकरण कि
आछेया महिषी दर्शन करेन नाइ नारद चिन्ता करिया
देवि कि हन्दकामि नय दर्शन करे छेन शचे हन्दक आवार कि

नारद ये नामे वलु विषयेर प्रसंग थोके याते नाना जातिर काव्य
एक काले प्रदर्शित हय एवं यार अंक संख्यार नियम नाई ता
केई छन्दक वले आमार विवेचनाय अद्य रसा विष्कार छन्दक
प्रदर्शित हले ईन्द्रानी ओ मनो रंजन हते पारबे एवं देवराजेर ओ
प्रीतिलाभ हबे शची रसा विष्कार आमि कथनओ देखि नाई
नाथ अद्य नाई अनुष्ठान करा कर्तव्य इंद्र हां प्रिये नाई क
र्तव्य वटे नारदेर प्रति देवर्षि तवे कोन कोन प्रकरन अद्य आवि
ष्कृत हबे ता चित्र सेनके विशेष करे वले दिन। नारद चित्र
सेनेर प्रति देख गंधर्वराज तुमि अवश्य ज्ञात ये संगीत शास्त्र म
ते रस अष्ट विधे अर्थात श्रृंगार रौद्र करुणा वीर वीभत्स भया
नक अद्भुत हास्य यदिओ शान्तके केउ केउ एकटी रस वले था
केन: किन्तु विशेष विवेचना करले ताहा रसेर मध्ये गण्य हय
ना ई अष्टरसेर अष्ट वे उदा हरण वाल्मीकि वेद व्यास प्रणीत
ये ये अनुपम महाकाव्य आछे ताते ई अनायासे प्राप्त हते पार
वे चित्र देवर्षि कोन रसेर किं काव्य मूर्ति प्रदर्शित हवेया ।।

आपनार अभिप्रेत अनुमति करुन   नारद चिन्ता करिया
हां देव श्रीकृष्णेर रासलीला शृंगार रसेर कार्य्यमूर्ति विश्वामि
त्रेर ध्यान भंग रौद्र रसेर कार्यमूर्ति सीतार वनवास करुण रसेर
कार्यमूर्ति भीम कर्तृक दुःशासन वध वीर रसेर कार्य्यमूर्ति ः
कुरुक्षेत्रेर निहत रणस्थली शकुनीर शवभक्षण वीभत्स र
सेर कार्य्यमूर्ति ः हिरण्यकशिपु वध भयानक रसेर कार्य्यमूर्ति ·
अहल्यार पाषाण हते स्त्रीदेह प्राप्ति अद्भुत रसेर कार्य्यमूर्ति ·
एवं कालनेमिर लंकाविभागेर कल्पना हास्यरसेर कार्य्यमूर्ति ·
एई कयेकटी प्रकरण अद्य संवाद रूपे अभिनीत हलेई एक
काली सकल रसेर मूर्ति प्रकाशित हवे एवं एतादृश अभिनय ·
ये अति प्रीतिकर हवे तार आर संशय नाई ॥
इंद्रके मन चित्रसेन देवर्षिर अभिप्राय ग्रहण समय अवगत ह
लेन ।   चित्र आज्ञा हां देवराज इंद्र तवे तुमि याउ अति सत्वर
अभिनेतादेर यथाक्रमे सज्जित हये नंदनवनेर नाट्यभूमिते ·
आसते वलगे आमरा तत्पार्श्ववर्ती पारिजात निकुंज हते अभि

नय दर्शन करबो चित्र ये आज्ञा अभिनेतारा अविलम्बेई सज्जित
हरे आसिबेन नारद मर्त्यलोकेर कार्य्याभिनय दर्शने प इंद्राणीर
चित्त प्रीति प्रफुल्ल हवे तार सन्देह नाइ विशेषतः गंधर्व्व अप्सरागन
संगीत नाट्याभिनय कार्य्ये व्यापारे अति अभिज्ञ निपुन ता आर
विलम्ब प्रयोजन किं गंधर्वगण नाट्या भिनय कार्य्ये विलक्षण
तत्पर तारा मत्वरय नाट्य भूमिते आसबेन सन्देह नाइ
इंद्र हां तबे चलुनं आमरा पारिजात निकुंजे गमन करि तथा ह
तेइ अभिनय दर्शन करा यावे सकलेर प्रस्थान·
शृंगाररसेर कार्य्य मूर्त्ति॥ रागिनी विहाग ताल एकताला·
अहे रस राज छिछि हेन काज साजे कि तोमारि हरि कुलनाश
वांशी ध्वनि श्रवने कुलनारी हये निःशंकमने निशिते धाइये
आइलाम वने कुललाज परिहरि तार प्रति फल दि
ले हरि भाल एतेक विलम्ब करि एखन छल छाड़ि कुंजे चल
नाथहे करेते धरि॥ अन्तर मारे पशि अनंग दाहन करिछे हृद
य अंग रावे रावे प्राण हे त्रिभंग ज्वल ज्वलु मरि मरि ॥·

श्रीवृंदावनेर मिथुवन गोपिका गनेर प्रकाश प्रथमा के
सखि केमे चिकन कालको खोय द्वितीया कि जानि सखि आ
मि तो कदम तला पर्यन्त अन्वेषन करे पलेम कोथाय ओ देखा पे
लेमना तृतीया ताई तो माथ्य गेलेन कोथाय आमिवन उप
वन गिरिधरि नदनदी नदीपुलिन पर्यन्त देखे पलेम कोन सन्धा
नई पेलेमना प्रथमा भाल सखि तार पद चिन्ह कोथाओ देखते पे
लेना १ तृतीया वनेर एकस्थाने एकबार तार पद चिन्ह
देखि छिलाम सेये तारई पदांक तार संदेह नाई अविकल सेई ध
ज वज्र अंकुश पद्म यव देखलेम किंतु देखते देखते किछु दूर
गेले पर आर कोन चिन्ह देखते पेलेमना भालसखि कालचांदेर
पदचिन्हेर संगे संगे मध्ये मध्ये एकटी सुकोमल पदांका देखलेम
केन वल देखि येन कोन रमनीर पदचिन्ह बोध हल·
प्रथमा तवे तार प्रेयसीरई पदचिन्ह हवे बोध करि से रमनीर पद
तले वेदना हउयाते रससय मध्ये मध्ये ताके आपनार स्कंधे धह
न करे थाकवेन तृतीया ताई हवे ठिक वलेछ·
चतुर्थी या होक बोध हय जीवितनाथ आमादेर प्रतारना करले

३

न देखा बुझि दिलेनना   पंचमी से कि सखि यदि देखा दिलेन
ना तबे मोहन मुरलीरबे ए अबला सरला कुलबालागणेर मन
केन आकर्षण करलेन आमि ये गुरुजनेर तिरस्कारेर भय ना
करे एसेछि   षष्ठी सखि आमि ये स्वामीके प्रतारणा करे ए
लेम सप्तमी आमि सन्तानके स्तन दिए से कांदछे   अष्टमी से शठ
लम्पट कोथा पालाबे   ताके एकबार पेले बाहुपाशे बद्ध करे हृ
दय कारागारे रुद्ध करबो   सहास्यवदने श्रीकृष्णेर प्रवेश।
गोपिकागण   आह्लादे एई ये एई ये निर्लज्ज एसेछे सत्वर सक
ले गिया धारण तत्प्रति भ्रूविक्षेप कटाक्ष आदि शृंगारचेष्टा·
प्रथमा हां हे रसराज तोमार निमित्त आमरा सकल परित्याग·
करे एई अरण्यमध्ये एलेम तुमि एकक्षण कोथा छिले·
द्वितीया मदन मोहन तुमि एकबार स्थिर हये दांडाओ तोमार
प्रतिमूर्ति आमि चित्रपटे प्रति फलित करे निइ   पथ अवरोध
न   तृतीया सखी आमि तोमार अन्वेषणे अनेक परिश्रम·
करेछि एतने तोमाके आश्रय करे अद्य किंचित विश्राम करि·
स्कंध धारन   चतुर्थी श्यामसुंदर आमार एई पयोधर।·

यौवन राज्येर राजा तुमि प्रजा पवन प्रजार निकटे कर चाहे सद
जेना पाय वालु पाशे वद्ध करे आधार करवे   करग्रहन पंचमी
सखा अनेक पथ पसे वर पिपासा हयेछे पवन पई चातकीके
तोमार अधर चंद्रेर सुधादाने परितृप्त कर अधरपाने योग·

यवनिकापतन·   रौद्ररसेरकार्य्यमूर्ति·

रागिनी सारंगी तालरूपताल   रे भ्रान्त नृपअधम मत्त हये
विषये ज्ञान कलन रहित एके वारे   केन रे दुर्म्मति हये प्रति
कूल करिलि आमार आशानिर्म्मूल कालफणी धरिलि निज·
करे मम कोपानले पानिकरि इंद्र हरि हर आइले मते तोदेरे मा
नकाम रहिवे नारे   कुशिकसुत आमि आमारे नाहि ज्ञान
बलेते येजन हइल ब्राह्मन अविनय प्रति फल दिव तोरे

विश्वामित्रेरतपोवन·

विश्वामित्र वीरासने उपविष्ट निकटे तिनटी रोरुद्यमाना देव
कन्या   प्रथमा हा धार्म्मिक श्रेष्ठ परम दयालु महा राज हरि
हरिश्चंद्र तुमिकोथाय   द्वितीया महाराज देख पसे हई दुरात्मा
आमादिगाके इनेवद्ध करे रेखेछे नरवलिदेय   तृतीया दया।

रसविश्वारदंदक ५

५ सागर महाराज हरिश्चंद्र कोथाय रोदन राजा हरिश्चंद्रे
र प्रवेश राजा आगमन करतः कि हयेछे कि हयेछे भयनाई
भयनाई आमि एसेछि केरे नृशंस कार्य आचरन करें देखिया हई
ये उरे दुरात्मा पाषण्ड नराधम तुई स्त्रीहत्या करते उद्यत हये छिस
जानिसने सूर्य्य वंशीय हरिश्चंद्रेर अधिकारं आमिहरिश्चंद्र भयार्त्तेर
अभय प्रदानी दीतिनः कालनिक धर्म्म ध्वंसे तत्परः आमार अधिकार
मध्येहई नृशंसे कार्य्यार अनुष्ठानं हई तोके प्रतिफल दिनिरपराधा क
न्यादेर वधकरविकि तोकेर अन्त्र खण्ड खण्ड करे अग्नि कुण्डे निक्षेप
करि भण्ड पाषण्ड वल्कल परिधान करेछिंस रुद्राक्ष माल्य गलाय
दिछिस मस्तके जटा रेखेछिंस आवार चक्र मुद्रितकरे मंत्र साधनः
करछिंस हई तोके संहारकरि अस्त्र आस्फालन विश्वामित्रेर योगभंग ॥
विश्वामित्र सक्रोधे के रे आमार ध्यान भंग करले कन्यात्रय परमात्मा
दे वेश हयेछ वेश हयेछ महाराज हरिश्चंद्रेर जय होक अन्तर्धानः
विश्वामित्रके तहे देखिया त्रिशंकार पुत्र हरिश्चंद्र ता हरिश्चंद्रई रू हरिई रू
हरई रू आर ब्रह्माई रू तोर आर निस्तार नाईः आमार क्रोधा नलेर शुष्क
काष्ठ हयछिस कि एतवड़ सम्पर्द्धा आमि ध्याने निर्जने वसे विद्यात्रय·

सिद्ध कष्टि त्वई निर अपराधे आमार मंत्र विघ्न करलि तपस्या भंग करलिं
तोर पतङ्गर अहंकार आज तोर अहंकार चूर्ण करबो दुरात्माके किरूप अति
फल दिं आमार वामहस्त धनुः स्मरण कष्टे दक्षिण हस्ते शाप दिते उद्यत
हस्ते शापादपि शरादपि याते हय आज्ञ उर शासन करबो परिकर बंध
न उ अतीव वाक्षा स्फोटे परे चिन्ता करिया ताई कर्तव्य तपस्या भंगकारीर
ये पथ कन्दर्पानलक देवादिदेव देखाईयाछेन सेई पथेई ताके पाठाय॰

यवनिकापतन॰

करुणारसेर कार्यमूर्तिः॥ रागिनी जैयजैवन्ती ताल आडा॰ हाय रे दारुन
विधि एत कि रे छिल मने जनमदुखिनी सीतार मुख सहिल ना आण
जगतेर नाथ यिनि छिलाम तांर आदरिनी आति हये अनाथिनी आ
ईलाम वने मिनति करि विधिरे कृपाकरि अभागीरे सतत प्राणनाथेरे दे
खरेकल्याने खोकि येथाने सेथाने तांर मुख शुनि काने किछु गनिब
ना मने ए सब वेदने धरनी नंदिनी हृदे सकलि सहिबे विधे भाविब ना
थेर पद वसिये निर्जने ॥ वाल्मीकिर त॰
पोवन॰ सीता सह लक्ष्मण दण्डायमान सीता लक्ष्मण ए तपो

५

वन दर्शिने कोथा आमार मन प्रफुल्लहवे ताना हये अकस्मात् आमार
चित्त एमन चंचल हल केनं आवार दक्षिण नयन स्पन्दन हइष्ट एर कार
ण किं कोन अनिष्ट घटवेनाकिं प्राणनाथ ना जानि केमन आछेन
तार् सहवास परित्याग करे आमार् एखाने आशा भालहय नाई अन्तःक
रनटा अत्यन्त व्याकुल हल सजल नयने लक्ष्मण आमार् एक एक वार
मने हइतेछेन प्राणेश्वरके आर आमि देखते पावना लक्ष्मण अधो
वदन हइया दीर्घ निश्वास त्याग सीता केन केन तुमि एमन विषन्न हले
केन कोन अमंगल घटेछेनाकिं किछु वलछा नाये लक्ष्मण देवि कि वल

वो स्वगत हा विधातः आमार अदृष्टे एई छिलं एमन निष्ठुर आदेशाउ
प्रतिपालन कर्तेहलं फिरे कराघात सीता लक्ष्मण केन तुमि
एमन कातर हलें वलना जीवितेश्वर तोभाल आछेन लक्ष्मणेर हस्त
धारण करिया लक्ष्मण त्वराय वलः तोमार भावान्तर देखे आमार मने
आशंका हइष्टे लक्ष्मण स्वगत ए विदारुण कथा केमन करे वलिं ताव
लेई वा करि किं प्रकाशे देखि आपनि वल्दिन रावनेर ग्रहे एकाकि
नी छिलेन वले प्रजावर्ग आप नारसती तेय़ प्रति सन्देहकरे महाराज
एई कथा दुर्मन खेर निकट श्रवण करे आपनाकि नीरव ॰

सीता कि वलना आमाके परित्याग करेछेन लक्ष्मण हां देवि आप
नाके एइ वाल्मीकिर आश्रमे परित्याग करे येते आमाके आदेश करेछेन
सीता क्षणकाल हत बुद्धिर न्याय थाकिया लक्ष्मण रघुनाथ तो करुनार
सागर तबे केन एमन निष्ठुर कार्य्य करलेन केन निरपराधे आमाके परि
त्याग करे आमार निष्कलंक नाम चिरदिनेर निमित्त कलंक कूपे निक्षेप
करलेनं तिनि कि सेइ लोकापवाद यथार्थइ विश्वास करेछेनं तेमन उ
त्कट अग्नि परीक्षाय उत्तीर्ण हलेम तबु कि नाथ आमाके असती मने॰
करेछेनं ना – ना आमिये पत्नि प्राण ना नाथ अवश्यइ जानेन॰ तबे ये ।
आमाके वनवास दियेछेन सेबोध करि केवल प्रजारंजनीर निमित्त तांर
दोषकिं सकलइ आमार अदृष्टेर दोष उपवेशन करिया हाय हाय आमार
अदृष्टे कि एत यंत्रनाभोग छिल आमार मत हतभागी कि जगते आर आछे
हारे विधाता॰ तुइ कि आमाके चिरदुःखिनी करवार संकल्प करेछिलिं
यावज्जीवन आमाके यारपर नाइ कष्ट दिलिं एक मुहूर्त्तेर निमित्तउ सुखा
स्वाद अनुभव कर्त्ते दिलि नाइ यखन रघुनाथ हरधनुःभंग करे आमार
पाणिग्रहण करलेन मने करलेम एखन वीरपत्नी हलेम किछुदिन परे
राजमहिषी हवो चिरदिनेर जन्य सुखी हवो सेआशा सरे गेल जीवितेश्व
रेर॰ राज्याभिषेकेर सूचनामात्रइ वनवासे गमन कर्त्ते हलो भाल॰

नाई हलो हलो नाथेर सहवासे वनवासेर कष्टउकष्ट बोध हई नाइ कोन·
क्रमे कालातिपात कछिलामः इतिमध्ये अकस्मात् दुर्म्मील दशानन
कपटता सहकारे आमार प्राणपतिर हृदयबंधन छिन्नकरे आमाके हरन
करे निजपुरीते प्रस्थान करले से लंकापुरे मृतकल्प हयेछिलेम उ
प्राणनाथेर विरहे ये कि पर्य्यन्त कष्ट हये छिल ताम्मरण हले एखनो
हृत्कंपहय या होक प्राणनाथ आमार से कष्टउ दुर करेछिलेन नाना
विध क्लेशभोग करे शतयोजन समुद्र बंधन करे तमुल समरे दुरात्मा
रावणके पराजय उ ध्वंसकरे आमार उद्धार साधनकरे छिलेन पुन्नोरेर·
पर प्राणेश्वरेर सहित समागम हलो चरितार्थ हलेमः भावलेम अद्य ए
त दिने आमार दुःखेर अवसान हलोः एखन किछु दिनेर जन्ये प्राणपतिर
सहवासे स्वच्छंदे कालयापनकरबो किन्तु एतयन्त्रना दियेउ निष्ठुर विधि
र से संकल्प पूर्ण हइ नाई नाकि आमि जानि ना हतं विधे तोर मने एई
छिल आबार एई अपार दुःखसागरे निक्षिप्त करलि यावज्जीवन एकाके
वनवास विधान करलि हाय हाय हाय किंचित चिन्ता करिया लक्ष्मण
आमि वनवासेर भये कातर हयनाई तोमादेर संगे तोवलकाल वनवास
करेछिः वनवासेर कष्ट अति सामान्यः अत एव आमि से चिन्ता करि नाई
रोदन करिया आमि एखन एई भावछि ये एई आश्रमवासिनी मुनिकन्यारा·

यथन आमाके जिज्ञासा करवेन येरघुनाथ तोमाके कि अपराधे परि
त्यागकरेछेन तथन आमि तांदेर कि वलवो आमिये निरपराधा ताकि
तांरा विश्वास करवेन आमिअवश्यई कोन गुरुतर अपराध करेछिले
म ताईरघुनाथ आमाके परित्याग करेछेन ईईटोताए मनेकरेवेन हा
य हाय एकि सामान्य लज्जार विषय आमिके मन करे तांमेरकाछे मु
ख देखावं छि छि छि रोदनकरिया लक्ष्मण किवलवो आमार उदरे
रघुकुलांकार रयेछे ता ना हले आमि यथन जाह्नवीर जले प्राणत्या
ग करुतेम चिन्ता करिया आहा जीवितेश्वर आमाके रतस्थले धारन
करे वलेछिलेन प्रिये आमिकंवे हार रागिनी पाछे हारेर व्यवधाने तु-
मि आमार हृदय हते किंचिन्मात्र अन्तर हइ आहा नाथ आमाके एत
भाल वासतेन यथन आमाके वनवास पाठिये प्राणनाथ ना जानि
कतई कातर हयेछेन कतविलाप परिताप कछेन हा जीवितेश्वर
आमार निमित्ते तोमार मने कतइ कष्ट हछे लक्ष्मणके अत्यन्त कातर
देखिया देवर लक्ष्मण आमार निमित्त आर कातर हयेउना आरपरि-
तापेर फल किं यथन तुमि त्वराय रघुनाथेर निकटी याउ याते तार
शोक निवारण हय ताई करण देखोयेन रघुनाथके तुमिकदापि एका

की खाकते दिओना हे लक्ष्मण आमि तोमाके एई मिनति करि एका
की खाकले तार चित्त अत्यन्त चंचल हवे आर कि जानि कोन पीडा उ
पस्थित हते पारवे आर देव तांके आमार प्रणाम जानिउ आर वलो ये
तिनि आमाके अयोध्या हते दूरीकृत करे भालई करेछेन प्रजारंजनई
राजार प्रधान धर्म्मः अतएव तिनि येन आमार निमित्ते शोक दुःख प
रित्याग करेण आर वलो ये यदिओ तिनि भार्य्या वले जन्मेर मत आमाके
परित्याग करेछेन आमि तो चिर दिनेर तार पदसेवार दासी अतएव येन
सेई सामान्य दासी वले ए हतभागीके कथन कथन मने करेन ताहले
ई आमि कृतार्थ हवो आमि एई तपोवने खेके निरन्तर एई तपस्या क
रवो येन तिनि दीर्घजीवी हन आर सुखे खाकेनः आर आमि यदिउ ए
जन्मेर मत पतिसहवासे वंचित हलेम जन्मान्तरे येन तारई चरण सेवा
कत्ते पाई आर आमि अधिक कि वलवो रोदन ॥ यवनिकापतन॰

वीररसेर कार्य्यमूर्ति ॥ रागिनी ॥ देवशाखा ॥ ताल ॥ झपताल ॥

मनेस्थिर करेछिलि चिर दिनि स्रवे यावे जीवन यौवन धन मान·
रवे समभावे पई आशामने करे पांचालीरे केशेधरे वलिलि कठोर
स्तुरे उलंगिनी हतेहवे रे दुरात्मा दुःशासन नामानि गुरुशासन भी
मे करि हनमान वने पामालि पाएवे आजि प्रतिफलतार पश्चानि
दिववक्षेर यतरक्त स्रवा स्वर राखिते नारिवे भवे कोथा कर्ण कोथा·
द्रोन कोथा राजा दुर्य्योधन आजि तोर रक्त पान करि रे देखुक सवे·

कुरुक्षेत्रेर ॥ रणस्थल ॥

घोरतर युद्ध करिते करिते दुःशासनउ भीमेर प्रवेश ॥
भीमउ रे दुरात्मा दुःशासन तुइना द्रौपदीर केश कर्षन करे छिलिं
आरवस्त्र हरण करते उद्यतहये छिलिं आयपईवार तोके यमालये·
प्रेरणकरि कलंकालेर पर तोके पेयेछि पाला विकोथा दुःशा·
सन आय नराधम के काके यमालये प्रेरण करे देखा याक भीमेर
प्रतिशार निक्षेप भीमेर पतन भीम अविलम्बे चैतन्य प्राप्त
हयेया गात्रोत्थान पूर्वक सिंहनाद करतः गदा निक्षेप दुःशासनेर·
मस्तके गदापतन दुःशासनेर भूमे पतन विलुण्ठन दुराचार पश्चात्·

९
८

तोर प्रतिफल हल उष्टेहरे हयेदुर्य्योधन उये कर्ण उये अश्वत्थामा
उये कुरुसेनापति सकलये दुःशासन पतिपरायणा द्रौपदीय केश
कर्षण करेछिले सभामध्ये उलंग कर्त्ते उद्यत हयेछिल एइ देख से
भूतले निपतित हये आछे आमि प्रतिज्ञा करेछिलाम ये रक्तपान
कर्व्वो सेइ प्रतिज्ञा एइ देख आमिपालन करि यथनतो देय ~~वक्षस्थले~~
यदि साध्य थाके ये से एके रक्षा कर दुःशासनेर वक्षस्थले पदार्पन
करिया वक्षस्थल विदीर्ण करतः रक्तपान उन्मत्त आ एइ शत्रुशोणि
त आमार मात्र तृष्ण अपेक्षा सुस्वादु बोध हल पुनर्व्वार रक्तपान
उन्मत्त ॥॰ यवनिकापतन॰

वीभत्सरसेर॥ कार्य्यमूर्त्ति॥ रागिणीपुलिन्दिका॥ तालपोस्तो॥

हेन सुख लाभ असम्भव अन्य भोजने ये सुख पाइ वसामांस रसा
स्वादने रुधिरे ये सुधा आछे तीर सह कि तार काछे हृदय आनंदे ना
चे देखि नयने गलित शरीर व्राण कोमल अस्थि चर्व्वणे ये सन्तोष॰

हय मने विधि ना जाने एई येसव पचा मडा आहा किवा घोका पडा
रहाते भाजिया वडां खाय त्रुजने   कुरुक्षेत्रर निहतनराणा
स्थल   विकृतवेशा राक्षसीर प्रवेश   राक्षसी परमाह्लादे नृत्यकरतः
वा वा वा वेश वेश खुव युद्ध हयेगेछे एई ये ३। कत मडा देख आः एम
न दिनआर हवेना खूब खावो खूब खावो नृत्य ताआमार स्वामी रुधिर
प्रिय कोथा गेलं सेये टाट्का रक्तमांस वड भाल वासे उच्चस्वरे उ रुधि
रप्रिय रुधिरप्रिय ये आय आय शीघ्र आय देखे आय॰ एकटा पचा घाव
लईया राक्षसेर प्रवेश राक्षस केरे तुई के गिन्निकोथा गेलि एई ने तोर॰
जन्ये पचा मडा एनेछि खा खा एटा भगदत्तेर मडा हातीर नीचे पडेछिल:
खूब पचेछे राक्षसी के दे दे   राक्षस तुई पचामांस एतवाल वासिस॰
राक्षसी तुई केवल टाटका खेय वेडास तुई पर स्वाद ज्ञान्विकि ना पंचले
कि मांस भालमजें तातुई ना खास एई सकल टाटका मांसखा आवारका
ल युद्ध हवे खूब खावि राक्षस काल आवार हवें नवेतो वेडे मजा हये
छे नृत्य ३॰   यवनिकापतन॰ ॥॰

ভয়ানকরসেন কার্য্যমূর্ত্তি। ৫

রাগিনী ককুভা বেলাবলী তাল একতালা হিরণ্যকশিপু
লাগিহরি হলেন নরহরি এ কি ভয়ংকর রূপ মস্তক গগনোপরি।
পিংগল বরণ জটা প্রাত ভানু জিনি ছটা যেন সৌদামিনী ঘটা শো
ভিতেছে মেঘোপরি অতি বিকট দশন করিছেন সদা ঘর্ষণ হতেছে
অগ্নিবর্ষণ অকালে প্রলয়কালেরি কুলাল চক্র সমান ঘূর্ণিত রক্ত
নয়ন সতত লোল রসন সম্মুখে দেখিয়ে অরি কোলে ফেলি দৈত্যবরে নখে
জঠর বিদরে চতুর্ভুজে শিরাধরে গলেপরেন মাল্য করি ॥।

হিরণ্যকশিপুর রাজসভা।

শ্রীনৃসিংহ মূর্ত্তি অগ্রে হিরণ্যকশিপু ও প্রহ্লাদ দণ্ডায়মান। ॥
হিরণ্য এ কি এ কি কি সর্ব্বনাশ কি অদ্ভুত ব্যাপার এ কি ভীষণ আকৃ
তি আবির্ভূত হলো কোথা হতে এলো কেন এলো আমি স্ফটিকস্তম্ভে খ
ড়্গাঘাত করবামাত্র এ কি ভয়ংকর মূর্ত্তি বহির্গত হলো স্তম্ভের মধ্যে কি
রূপে ছিল প্র: কি কালান্তক কালমূর্ত্তি পূর্ণ ব্রহ্ম সচ্চিদানন্দ কি এই
মূর্ত্তি আমার নিমিত্ত ধারণ করলেন মস্তকস্থ কেশর ব্রহ্ম কটাহ ভেদ
করেছে যে কুলালচক্রের ন্যায় আরক্ত নয়ন অতীব ঘূর্ণায়মান আমার
শরীর লোমাঞ্চিত হয়েছে গাত্র অবসন্ন হয়েছে বাক্য রুদ্ধ হয়েছে এখন কি করি

एवमति असवेषण कर्वोकि हस्त स्तन्न हयेछे पलायनेरउ क्षमता नाइ
एकि अलोकिक मूर्ति सकल सिंहेर आकृतिउ नरेरउ आकृतिनय देख
चि अर्द्धशरीर नराकृति अर्द्ध शरीर भयंकर सिंहाकृति उः कि भीषण गर्ज
न मेदिनी कम्पित हच्छे कि सर्व्वनाश आमाके संहारकरेये कि हवे के आ
माके रक्षाकरवे जन्मावधि भयेर सहित आमार परिचय छिलना एख
न एकि हलो सेइ भये आमार शरीर अस्पन्द हलो येपलायन करि
उपायलेमना कि करि अ··· अ··· अ··· नृसिंह लम्फ प्रदाने ताहार उ
परे पडिया ताहार वधसम्पादन ॥ यवनिकापतन·

अद्भुतर सेरवकार्यमूर्ति· रागिनी भूपाली ताल धीमा तेताला·
तोमारि कटाक्षे नाथहरइ सृष्टि स्थिति लय परात्पर परमात्मा तुमि
कहे वेद चय चारि मुखे पद्मासन पंचानने पंचानन करितव गुणगा
न हयेन आनंदमय उदात्मा देवेंद्र छले सतीत्व रत्न हरिले गोतमेरि
कोपानले हयेछि पाषाणकाय एकवार पदानुज परशे अर्द्ध मनुष्ये·
हयेछे अहे रघुजे देह पद पुन राय ॥:: गोतम मुनिर आश्रम· ॥

म्बु

२०
१०

विश्वामित्रेर सहित रामलक्ष्मणेर प्रवेश। राम भाई लक्ष्मण देखेछ ए
ई वनरीटीर कि शान्त प्रकृति बोध हय एटी कोन महात्मार आश्रम
छिल देखेछो ना प्रवेशमात्र मन प्रफुल्ल अन्तरात्मा प्रसन्न हल लक्ष्म
ण हां आपनि यथार्थ अनुभव करेछेन किंत मनुष्यपशुपक्ष्यादि
कोन प्राणि देख छेना केनं राम आमारउ मने सेइ तर्क उपस्थित हयेछि
ल ताल महर्षिकी जिज्ञासा करि विश्वामित्रेर प्रति प्रभो एईटी कि
कारन आश्रम छिलं विश्वामित्र हां राजकुमार एटी गोतम मुनिर
पूर्व्वाश्रम राम सेइ गोतम मुनिरं यत्नेण सर्व्व प्राणी वर्जित केनं कीट
पतंग प्रभृतिउ एस्थाने दृष्ट हय ना एकि आश्चर्य्य।

विश्वामित्र। तारकारण आछे यत्नेय जानेते पारबे तुमि एदिके एस
देखि राम ये आज्ञा आदिष्ट स्थाने एक प्रस्तरे पदार्पण तथा
हइते अहल्यार अर्द्ध उत्थान। राम सचकिते एकि एकि एकि
अद्भुतव्यापार लक्ष्मण कि आश्चर्य्य एमन विचित्र व्यापार त कथन
देखा याय नाई राम इनि देवी कि मानवी किछुई बोझा याछे
ना प्रभो आपनि सर्व्वज्ञ आमादेर अनुग्रह करे बलुन इनि कें
विश्वामित्र। इनि अहल्या देवी महात्मा गोतमेर पत्नी पतिर अभि·

सम्पाते शापग्रस्त हये पाषाणहयेछिलेन एखन तोमार पदस्पर्शे पूर्व
देह प्राप्त हलेन राम हां हां एवं पूर्वेइ ज्ञात्त आपनार निकटेर गु
णोछिलाम वटे आहा इनि नितान्त साध्वी सच्चरित्रा निरुपराधे दंडि
त हयेछिलेन लक्ष्मण एइ अलौकिक व्यापार दर्शने आमि भय
मे त्रासित हयेछिलाम किन्तु महर्षिर निकटे सविशेष ज्ञात हये एखन
उद्वेगशून्य हलेम याहोक महर्षिर प्रसादेर अद्यएइ अतीव आश्चर्य्य घ
टना आमादेर दृष्टिगोचर हले राम महर्षि आमादिगके वने एने कतइ
[illegible] आश्चर्य्य देखा लेन विश्वामित्र राम एसकल
तोमारइ लीलाकार्य्य तुमि पूर्णब्रह्म तोमार कार्य्य आश्चर्य्य नय कोनटी
निरवलम्बने गगने ग्रहगण दिवानिशि परिभ्रमण करे एकि आ
श्चर्य्य नय एइ निर्म्मल आकाश परलोनेइ मेघाच्छन्न हये अनवरत
वारिधारा वर्षण करे एकि आश्चर्य्य नय क्षुद्र बीजे वृहत् वट हतेर उत्
पत्ति जीवेर शरीर मध्ये अंग प्रत्यंग विशिष्ट जीवेर उत्पत्ति कोनटी ^
आश्चर्य्य नय यवनिकापतन॰

हास्यरसेरकार्यमूर्त्तिः ॥

२.
॥

रागिनी झिंझिटी खाम्बाज ताल खेमटा   छि छि कि पोड़ा
कपाल कथा शुनि मरि लाजे केमने ग्रहति हलो बल देखि रे एमन
काजे भाये वा मंदोदरी कि करे तार करे धरि प्रिया सम्भाषण करे रा
खि रे हृदयेर माझे ताई बुझि मनेर सुखे हासि धरे नारे मुखे एमन
नाखिमारवो बुके भाङवे तोर बुकेर कलिजे एकथा रटले परे मार्वे का
टा घेरे परे मुख देखावि केमन करे भद्रलोकेर समाजे ॥

लंकाराजधानीर एक देश कालनेमिर कुटीरेर वहिर्भाग   काल
नेमि उपविष्ट   काल आल्हादे स्वगत पुरुषेर दशा दशा वाले कु
मुद्रमाचाय प्रासा एतसामान्य पुरुषेयः आमार एमार दशा एकादश बृह
स्पति आर बृहस्पतिर्इ वा आमार काछे कोथार लागेनः तिनि देवता देव
गुरु हयेउ चिरठाकाल पर्णकुटीरे आछेन आम्मी ता ता ननः ३ई आजि प
र्णकुटीरे रातपोहालेइ स्वर्णमंदिर रत्नसिंहासन सम्मुखे वंदे गनेर
स्तवपाठ स्वर्गांगनादेर गंगाजलचामर व्यंजन हः वंशो वंशो केवल आज्ञा
करवोः आमार श्रीमुखेर आज्ञा प्रतीक्षाय सुर नर यक्ष किन्नर राक्षस
सकल कृतांजलिपुटे सम्मुखे दंडायमान थाकवे थाकवे किं आछे व
ललेर हय उपहाय्या कि आनंदेर दिन एसे उपस्थित हल ए आनन्द॰

त आमार शरीरे धरेना पेटेर भितर हले बुकु बुकु करे हास्य लंका
राज्येर अर्द्धेक अंश सामान्य कथा नय हास्य किन्तु ठिक तल्प अंश करेय
हवे भूमे अंकित करिया यई येन लंका पव पई दिक आमार त्र दिकराव
णेरः ठिक अर्द्धेक अंशादरि फेले मेपे नेवो पक चुलपदिक उदिक हते
देव ना रावण ये पाये धरे मिनतिकरे वलवेन्तु मामा आमाके ईईडुक वे
नी देउ त्रडुक वेणी देउ ईईटी छोटे देउ त्रटी छोटी देउ ना आमि कथनई
गुणवोना आरतल्पांश यदिहल तवे रावणउ येमन आमिउ तेमन से॰
आरकिसे आमाहते वडं यदि वल आमार पकटी मुख तार दशटा ना
हलई वा पेर आमारउ पकटो तारो पकटा से वेटा दश मुखे या खावे॰
आमि पक मुखे ता खावो चकित भावे उ हो हो हो हो ।
राजार मत सिंहासने वशाटा अभ्यास करते हवे ताना हले प्रजागण
सन्मानकरेवे केन भय करेवे केन सन्मार्जनी हस्तेलईया भूमे उप
वेशन ना- ना- हलो ना भोवासते उपवेशन हां पई ठिक हये
छे देखेछे हाते राज दण्ड ना थाकले शोभा हयना सचकिते कु
ल- ल- ल- ल- सिंहासनेवंश कोमरटाय वड वेदना हलः
पकट राजार मत पायचारि करि सगर्वे इतस्ततः भ्रमन सम्मुखे रत॰

२'
१२

करन पश्चाते रत्तकगणः कार माध्य निकटे आसेः लंकेश्वर चलेछेन

ह्रास गिन्नी पथनउय सम्वाद योनेन नाई सनले कि करवेन वलायाय

ना मागी पाछे फेटे मेरे आमार पई भाव नाटो रहछे नानामर वेना आमार

शरीरे पत धैर्य गाम्भीर्य से आमार गिन्नीकिना कोवाय वुफि गेछे

पसे सनूवे पथन सुनवे किः पके वारे राजमहिषी हये वामभागे वसवे

पा होक छोट लोकेर मेये वटे किन्त कपालटो वड वड ना हलेई वा आ

मार हातेपडवे केन सेया होक वंसे वंसे ततनाए कि करि पई कुशोगु

ली पथानेआछे पकगाछा दडिपाकिये राखिः केनना सकालेई प्रयो

जन हवेः रावण वलवेदडि के कि देलंका भार करवो अमनि दडिगा

छटो फेलेदेवः सेई भाल कुला लईया रत्न प्रस्ततकरनउ आनंदे नाकी

हवे गान ॥'

कालनेमिर स्त्रीर प्रवेश ॥'

स्त्री वलि कि हष्टे वसे । काल स्वगत कुलं उ पक कथाय कि राजा

राजङाग उत्तर देय । स्त्रीमरण मुखे वाक्य नाई कानेर माथ्या खेरेछ ना

किं काल पुनर्व्वारगान स्त्री पई देवः मिनसेर रकम देखो आमार

हातेपितलेर खोड युवलो ना उर आमोद स्फुल्ल देखे पोशार मुखे आरकि'

कालउरे बुझवे रे बुझवे बुझवे किं पूछेछेउ खोटु तई भांगा किकाम्मि दे
खेछिंम स्त्रीदरि हस्ते पई ये गलाय देवेनाकिं कुशोवकेनं पाटेर दड़ि
एकगाछा शाक करे पाकाउना   कालउरे मार्गी तवे सत्तुवि लक्ष्मण
शक्तिशेले पड़ेछे हनुमान गंधमादन पर्वते औषध आनते याछे पई रा
त्रेर मध्ये औषध एने दिते पारले आवार वांचवे ताई रावण आमार हाते
पाय धरे वलले मामा यदि कोन माया करे आजके रात्रिते हनूमानके
भूलिये राखतेपार ता हलेइ लक्ष्मण मरवे लक्ष्मणेर शोके रामउ मरवे
सीता आमि पायप यदिहय लंकाराज्य अर्द्धेक तोमार अर्द्धेक आमार ता
ताआमि येरुप माया विस्तार करे रेखे छि हनुमानके तोभूलये रेखेछि
वललेइ हयः से आर गंधमादन पर्वते येतेपारवें हाय हाय ता अर्द्धेक'
लंका भाग करते हवे ताई मड़ि पाकाम्मि कालभाग करे ने राजा हवो
आरकि'   स्त्रीआह्लादे तवे आमि राजमहिषी हवो काल
परम आह्लादे हविकिं हयेछिम अतीव आनंदे उभयेर न्तय ॥॰
स्त्रीहावे तई तो राजा हलि आमिउ राणी हलेम ता आमार अलंकारेकिं
कालनाउ रावन वले गेछे वलेछे मामीर गाये यत धरेना आरवाकि खो
कवेना   स्त्रीवलिसकिः सत्य हाम्यकरिया तवे आमि पितल

२'
१२

[illegible]मार गयना गुलो खुले फेलि ननकरण ना मंदोदरीर गाये ये सकल गय
[illegible] आछे तारउ तो अर्द्धेक पाव काल हरहावि रावण यदि सीता पाय ताहले
मंदोदरी शुडई आमि पाश्चिये स्त्री सक्रोधे किवल्हिं ठेकुरा बुडो भा
गने वोरहान यरविं मरण मंदोदरीते आवार चोक पडेछि सन्मार्जनी ग्र
हण एवं तज्जारा ताडन यवनिकापतन

नंदवनेरनाट्यभूमि चित्रसेनेर प्रवेशाउ संगीत रागिनी
सोरठी तालकाउयाली तषिते शचीन्द्र मन करिलाम ये आर्किचन सफ
ल हलो ना हलो जानेन् सहस्रलोचन देवेंद्र यदि रंजन इंद्राणी देवीर
मननवीन नाट्ये दर्शन अभिलाषी अनुतप्त ताइनारद आदेशे देव दम्पती
सकाशे प्रकाशिलाम् अष्टरसे वृन्दक अनुकरण अभिनय किम्वा गाने दो
ष यदि कोन स्थाने थाके तवे निजगुणे क्षमिवेन पाकशासन ॥०

यवनिकापतन समाप्तम् ॥ः

ग ३

देशाखरागणी· वीरे रसे अंजित रोम हर्षा निरुध्य संबंध

विलास बाहू प्रांशु प्रचंड किल दंड रागो देशाख राग कथि

तो मुनिंद्रैः गांधा रांशा ग्रहे न्यास केचित ऋषभ इति स्मृता

स संपूर्णा मता ज्ञेया सारंग देवेन भाषित ॥ः

कान्हडा सूहरे संयुक्ता सारंग स्वर मिश्रिता देशाख जायते

यत्र द्वितीय प्रहर गई दिने· देशाख दोहा· सत्रय

भूषन अंग है अरु संपूरण होइ कोउ खाडव कहत है

रिषभ हीन थो जोइ उदाहरणम् अंग कसर हूंते ।

कमनीय सरोज निहूंतें विराजै विलोचन हरषें तन रोम

उमंगो रस वीरमें धीर बडे कछुनें कुसकोचन दीरघ

सो लहहै भुज दंड प्रचंड महा जिनको प्रति रोचन यों

हरि वल्लभ राग दिखावत है मूरति मल्लहिकी छबि मोचन॥

देखावत रागको ऋषियोने कहाहै कैसाहै सबनोकि मनको

आनंद देणेवालीहै वीर रसहै रोम हर्ष अर्थात् मनका

रोम हर्ष आनंद धरणाहै और भुजोंको विलास कर्ताहैन

अर्थात् लंबाहै सूरजकी किरणोंकी न्याई प्रचंड दीसेहैन

रा॰ भ

निश्चय करके मन हर्ष देव रागहै॰ ॥

अथवीररसस्वरूपम् सवैया गोर गंभीर गुणी चित सुंदर

अति उन्नत साई भरि दो नैना इनको देख उल्लेख रचे रस वीर

को धार करत दो वैना समर कुवेर सबी हैं मेरो वीर अरु धीर

भरी सबु सेना जाई कहो पतिसो अपने चुप चापही वेठ करो

त्तम चैना ॥८॥ भैरवरागलक्षणम् दोहा अंग न्यास ग्रहरूप

सबै धैवतादि है होत स्वरण धैवत मूर्छना भैरव मान उदोत॰

यथा ध्यान॰ सीस जटानिमे गंग तरंगति लोचन चंद ललाट

सुनिनभगिरासतीउरशोचा पुछाशिवहिंसमेतसकोचा की
न्हकवनपणकहहुकृपाला सत्यधामप्रभुदीनदयाला यद
पिसतीपुछाबहुभांती तदपिनकहेउत्रिपुरआराती ॥ दोहा ॥
सतीहृदयअनुमानकियेसबजानेउसर्वज्ञ कीन्हकपटमैंशंभुस
ननारिसहजजडअग्य ॥ सोरठा ॥ जलपयसरिसबिकाइदेखहुप्री
तिकीरीतिभलि बिलगहोइरसजाइकपटखटाईपरतहीं ८
रा हृदयशोचसमुझतनिजकरणी चिन्ताअ
मितजाइनहिंबरणी कृपासिंधुशिवपरमअगाधा प्रगटनक
हेउमोरअपराधा शंकररुषअवलोकिभवानी प्रभुमोहितजी

३
सं २
प्र.सा

उ हृदय अकुलानी निज अघ समुझि न कछु कहि जाई तपै तवा

इव उर अधिकाई सती सोच जानि वृषकेतु कही कथा सुन्दर सु

ख हेतु वरनत पंथ विविध इतिहासा विश्वनाथ पहुंचे कैलासा

तहं पुनि शंभु समुझि पन आपन बैठे वट तर करि कमलासन

संकर सहज स्वरूप सम्भारा लागि समाधि अखंड अपारा यहँ

पाई आदि के उपलेपक ॥दोहा॥ सती वसहिं कैलास तब अधि

क शोच मन माहिं मरम न कोउ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं

८ ॥ता नित नव शोच सती उर भारा कब जैहौं दुख

सागर पारा मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना पुनि पति वचन मृ

षाकरिजाना सोफलमोहिविधातादीन्हा जोकछुउचितरहा॥
सोकीन्हा अबविधिअसबूझियनहितोही शंकरविमुखजि
आवहुमोही कहिनजाइकछुहृदयगलानी मनमहंरामहिं
सुमिरिसयानी जोप्रभुदीनदयालुकहावा आरतिहरणवे
दयशगावा तोमैंविनयकरौंकरजोरी छूटौवेगिदेहयहमोरी
जोमोरेंशिवचरणसनेहू मनक्रमवचनसत्यव्रतएहू दो॰
तोसमदर्शीसुनियप्रभुकरौंसोवेगिउपाइ होइमरणजेहिंवि
नहिंश्रमदुःसहविपतिविहाइ ८२ शमि
एहिविधिदुखितप्रजेशकुमारी अकथनीयदारुणदुखभारी

उ॰
सं॰१॰
शृं॰सा॰

रे
१४

वीतेसम्वतसहससतासी तजीसमाधिशंभुअविनासी रामना

मशिवसुमिरणलागे जानेउसतीजगतपतिजागे जाइशंभुप

दवन्दनकीन्हा सन्मुखशंकरआसनदीन्हा लगेकहनहरिक

थारसाला दक्षप्रजेशभयेतेहिकाला देखाविधिविचारिसब

लायक दक्षहिंकीन्हप्रजापतिनायक बडअधिकारदक्षजबपावा

अतिअभिमानहृदयतबआवा नहिकोउअसजनमाजगमांही

प्रभुतापाइजाहिमदनाही ८२ नाग किन्नर

नागसिद्धगंधर्वा वधुनसमेतचलेसुरसर्वा विष्णुविरंचिमहे

शविहाई चलेसकलसुरयानवनाई सतीविलोकेगगनविमा

ना जानचलेसुंदरविधिनाना सरसुंदरीकरहिंकलगाना सुन

तग्रवणव्हूरहिंमुनिध्याना सकेउनवाशिवकहेउवखानी पिता

पतसुनिककुहरघानी जोमहेशमोहिग्रापसुदेहीं कनुदि

नजायरहोंमिसिपहो पतिपरित्यागहृदयदुखभारी कहेननि

जग्रपराधविचारी ॥ वालीसतीमनोहरवानी सभयसंकोचप्रेमरस

सानी ॥ ८४ ॥ रागनी कहेउनीकमोरेहुंमनभावा य

हग्रनुचितनहिनेवतपठावा दत्तसकलनिजसुतावुलाई हु

मरेवयरतम्हैविसराई ब्रह्मसभाहमसनदुखमाना तेहिनेग्र

जहुंकरहिग्रपमाना जोविनुवोलेहुजाहुभवानी रहैनशील

सनेहनकानी यदपिमित्रप्रभपितगुरुरोहा जायरविनुवोले

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ सा

दो
१५

हूनसन्देहा तदपिविरोधमानजहंकोई तहांगयेंकल्याननहोई

भांतिअनेकसंभुसमुझावा भावीवशनज्ञानउरआवा कहप्रभु

जाहुजोविनहिंबुलाए नहिंभलिवातहमारेभाए॥८५॥ रागनी

पिताभवनजबगयीभवानी दक्षत्रासनकाहुसनमा

नी सादरभलेहिंमिलीएकमाता भगिनीमिलींबहुतमुसुकाता

दक्षनकछुपूछीकुशलाता सतीहिंविलोकिजरेसबगाता सती

जाइदेखेउतबजागा कतहुंनदीखशम्भुकरभागा तबचितचढे

उजोशंकरकरेऊ प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ पाछिलदुःखन

हृदयअसब्यापा जसयहभयउमहापरितापा यद्यपिजगदारुण

दुखनाना सबतेंकठिनजातिअपमाना समुझिसतीतिहिभय

उपजाति क्रोधा बहुबिधि जननी कीन्ह प्रबोधा ८८ राम

सुनहु सभासद सकल मुनिन्दा कही सुनी जिन्ह शंकर
निन्दा सो फल तुरत लहब सब काहू भली भांति पछिताब पि
ताहू सन्त शम्भु श्रीपति अपबादा सुनिय जहां तहं असमर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जो बसाई श्रवण मून्दि न त चलिय पराई ज
गदात्मा महेश त्रिपुरारी जगत जनक सब के हितकारी पिता म
न्दमति निन्दत तेही दक्ष शुक्र संभव यह देही तजिहौं तुरत दे
ह तेहि हेतू उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू अस कहि योग अग्नि त
नु जारा भयउ सकल मख हाहाकारा ८९ रा

समाचार सब शंकर पाये वीरभद्र करि कोप पठाये यज्ञविध्वंसर

सं॰ र॰
ग्र॰ सा॰
५

समका कहीहै। सो जांण लेना ॥ ॥ अब इसका। नकसा भी आगे लिषा है उसमें देषले ॥ ःः ॥

सो जेतीयां जेतीयां श्रुती लेकर जो जो स्वर वनताहे तिनके प्रकट
दिखानेके लीये मध्यम सतारका नकसा लिखाहे अर जितनी श्रु
ती लगतीयांहे सोउसको समझना चाहीये इस नकसेसें अर येनक
सा जोहे सो सुद्ध सातस्वरजोहे वाईस श्रुतींकर जो वनेहे तिनकाहे
अर श्रुतीके लगनेका क्रमजोहे सो ऊपरसें लेकर नीचेको जाणनाहे
अरु तीनसप्तकां जो कहतेहे सोभी इसी नकसेसे जाण लेणीयां॥ अथ ती
नसप्तकोंके स्वरोंकाक्रम॥ मंद्रस्थानके स्वरोंकी सप्तक जोहे पेहली उसके
चार स्वर प्रकटहे अर औरजो स्वरहे सोखरजोसे वनतेहे उनका क्रम
जोहे सोकहतेहे दूसरी सप्तकका मध्यम जोहे उसके उपर खरजोको
अंगुलीसे दवाकर वजानेसे पेहली सप्तकका खरज स्वरजोहे सोवनताहे
अर इसी पेहली सप्तकका जो पंचमहे उसके उपर खरजोंको अंगुलीसें
दवाकर वजानेसें पेहली सप्तकका ऋषभ स्वर वनताहे अर इसी तरा
कर पेहली सप्तकके धैवतपर गंधार स्वर वनताहे अर वाजका तार
जोहे अगाडीका उसको खोली छोड़कर वजानेसें मंद्रस्थानकी पेहली
सप्तकका उतरा मध्यम वनताहे अर चढे मध्यमसें लेकर और जोहे
सोप्रकटहे अर तीसरी सप्तक जोहे तारस्थानके स्वरोंकी सप्तकहे उ
सके पांचस्वर प्रकटहे अर उसके पंचमके उपरथोडी मींडदेणेसे धै
वत होताहे अर जादा मींडदेणेसे निषाद वनताहे इसक्रमसें तीनों

ॐश्रीराधाकृष्णायनमः॥ ॐमंगलंभगवान्विष्णोमंगलंगरुडध्वजः मंग
लंपुंडरीकाक्षोमंगलायतनोहरिः ॥ सखिविनिसुखनिधानंदुःखिता
नांविनोदः श्रवणहृदयहारीमन्मथस्याग्रदूतः अतिचतुरसुरम्योवल्ल
भःकामनीनां जयतिजयतिनादः पंचमश्चोपवेदः वैणावादनतत्वज्ञः
श्रुतिजातिविशारदः तालज्ञश्चाप्रयासेनमोक्षमार्गंचगच्छति ना
हंवसामि वैकुंठे योगिनां हृदये नच मद्भक्ता यत्रगायन्ति तत्रतिष्ठा
मि नारद त्रिवर्गफलदासर्वेदानाध्ययनामर्हदयः एकसंगीत विज्ञानं
चतुर्वर्गफलप्रदं नहृतौनादृशीप्रीतिर्निर्वीरेनचगुग्गुले यादृशीचे
वगानेर्मेममप्रीतिर्वैराग्ने आद्यंजगन्नाथमतंद्वितीयंशैवंहनूमन्मत
मेवगानं॥ यज्ञारतंशास्त्रतंरवलोकेगंधर्वदेवादिसुखादिहेतुः ॥
सवैया॥ रागमो पंचम वेद वखानतपाहनसें पिघले जिहगाए प्राण अ
धार अहार अनंदकोकामको हत छुपेन छुपाए मानस पंछि पसू व
सहो तयतालते आवतनाग बुलाए तारनहीकरसोकरमोक मनो दुः
खके खग देत उडाए ॥ इहसंगीत प्रकाश ग्रंथजो रचियाहै कारण
इसग्रंथकायेहै कि संगीत विद्याको ज्ञानके वासते अरु उसके जोहै
भेद उनके समझन वासते अरु मध्यम जो मेतार इह उसका जो सबः
कर समझणा अरु वजाणा सो संगीत शास्त्रजोहै तिनके अनुसार ना
दका जोलक्षणहै अरु ग्रामोके जो भेदहैं अरु सात जो स्वरहैं तिनकीयां
जाती अरु वर्ण अरुदेवता अरु उत्पत्ति अरु स्वरूप अरु श्रुतियोंके बारे

गं०
सं० १
१

अरु मूर्छनाजोहे अरु लयोंके जो वेरवेहे वादी संवादी आद भेद जोहे अरु मध्यम सतारके रागोंके भेद जोहे अरु राग रागनीयां जोहे अरु उप राग जोहे अरु रागोंके पुत्र अरु इस्त्रीयां जोहे तिनके स्वरूप अरु समे अ रु ग्रहत अरु अंश अरु न्यासादिक जो भेदहैं अरु रागोंके मिलाप जोहे अरु औडव षाडव संकीर्ण संपूरण जो भेदहे अरु देसी मार्ग जो भेदहैं अरु तीवर तरतीवर जो भेदहे अरु समम असम अतीत अनाघात जो भेदहे अर वादी विवादी संवादी अनुवादीये जो भेदहे अरु लयोंके जो भेदहे अरु शुद्ध जो स्वरहे अरु विकृत जो स्वरहे तिनकीयां शुद्ध ता नां जोहे अरु कूट तानां जोहे तिनके जाननेके लिये चार जो मतहैं जगन्नाथ मत शिवमत हनूमान मत भरत मत इनचारों मतमे अ ब वरतमान जो भरत मतहे तिसके अनुसार सभ रागोंके अलापोंकी यां जो सरगमांहे अर गायनकी युगत अर तालोंथे आद लेकर जोहे अर मध्यम सितारके वजावनेकीयां गतां जोहे अर सारंगथें आद ले कर जो तालहे अर मृदंगकीयां परणां जोहे अर सतारके बोल जोहे तिनकीयां सकारां अर गमक अर कोमल जोहे अर हाथकी निआरी के जो भावहे अर गवैयोंके गुण अर दोषजोहे अर होरभी केयक वा तांहे इस ग्रंथमे ॥ अथनादनिरूपणं ॥ गीत नाद मयहे सदा वाद्य नादतें जान इन दुहु वनतें नितहु उपजत है यह मान १ नाद शब्दते वर्णहे वर्णनते पद होय पदसो वाणी कहत हे जानत हे कवि लोय २ वाणीसों व्यवहार

सब रच्यो जगतमें जानि नाद ब्रह्मको रूप है ब्रह्म रूप जग मानि ३
नाद जु प्राणको रूप है दामिनके सम जोय नाद भयो संयोगतें रच्यो
ज्ञाय जग सोय ४ उतपत नादहि की कही शास्त्र सबै विचार चार
पदारथ पाईये याहीतें निरधार ५ नाद वसी विद्या लही सेव सरस्व
ति पाय कंवला स्वतर नागाढे शिव कुंडल भय जाय ६ पसु सिसु
पंछी नादको सुने रहत है मोह नादस्तुतिको करि सकै देख्यो सब जग
जोह ७ नाद समुंदके तरनको सरस्वति करत विचार हियमें है तूंबा
धरे तरन पावत पार ८ जाने बीना तत्वको श्रुत जातनके भेद सुकत
सहज ही सोल है होवे कछून षेद ९ ॥ अथ नादद्विविध ॥ दोहा ॥
आहित और अनाहतो नादो द्वे विध होय सो प्रकटन है पिंडमें यह
जानो सब कोय १० नाद अनाहत मुनि सबै सेवत गुरुसो पाय दातांहे
बहु मुक्तको चिंतन करै कछु चाय ११ आहत मोहे जगतको भवको
मेटन हार तातें उत पत नादकी कहौं सुविध अौहार १२ प्रान वायु
पर जीव चढ सुषमणा मगाहि सुभाय जात बहुर आवत जु फिरनट
विद्याके दाय १३ जीव जबै प्रेरे चित हित वहि चित्त इह दाय देह अ
गनकी नाभि जिनहि प्रेरत है वह वाय १४ ब्रह्म ग्रंथमें प्राणको प्रेरत
पावक आय पावक प्रेरे तबजु वह ऊरध पथको जाय १५ अत
सूक्ष्मधुनकरतसो निकट नाभके होय वहुरो धान सूक्षम करै

सं॰ र॰
प्र॰ सा
२

हीये आनके सोय १८ कै रे पुष्ट पुन कंठमे सीसहि मध्यम भाय कुछेम
धुनि पुन कंठमे तबही प्रकटत आय १७ इडा पिंगला सुषमणा तीनो
नारी नाम तानसेन संगीत मत जानो आवे काम १८ इडा बाम कहि
पिंगला दक्षिण मध्य महि जान हृदय रहतहै सुख मणा ब्रह्मरंध्र ।
लोंमान १९ प्रथम नाभितें धुन उठे ताको सब्द उचार तीन ग्राम ताके
भये मंद्र मध्य अरु तार २० मंद्र हृदयतें जानीयें मध्य कंठ ते होय उपजे
तार कपालतें भेद कहि कवि लोय ॥२१॥ अथ ग्राम वर्णनम्॥ चौपई॥ मूरछना
को आश्रय होइ सुरन समूह तहांतत जोइ ताको ग्राम कहै सबकोइ
जे संगीतको जानति लोइ २२॥ दोहा॥ तीन ग्राम पंडित कहत तिनकी
यह विध जान पूरब है दे जगतमे इंद्रलोक इक मान २३ प्रथमे षरज
बषानीयें दूजे मध्यम ग्राम तीजे ग्राम गंधार है सुरहै इंद्रके धाम २४ नि
ज चौथी श्रुतिमे जबहि पंचम सुर रहराय षरज ग्राम ताको कहत
पंडित चितको चाह २५ जब पंचम श्रुती तीसरी आन करै पर बेस
ताकों गुणिजन कहतहै मध्यम ग्राम सुदेस॥२६॥ अथ वार्तिक॥ धैवत
श्रुती जब तीनको षरज ग्राम तब होइ चारि श्रुतिनिको होइ जब
तब मध्यमको जोइ २७ इनकी इक इक श्रुतिनकों जब गंधार सुर लेइ
पंचमकी इक श्रुतिहिको धैवत सोभा देइ २८ सुरकी इक इक श्रुतहि
को जबही लेत निषाद होइ ग्राम गंधार तब बरनै गुनी संवाद २९॥

षरज आदि सब स्वरनिको तातें कीनो ग्राम मध्यम स्वर परधानहै दू
जीसो अभिराम १९ इनहीके कुलहै भयो तीजो ग्राम गंधार सो स्वर
गहिमें रहितहै गुनि जन कियो विचार ॥२०॥ अथतीनग्रामकोदेवता ॥
अरुऋटतअरुसमै वर्णनम ॥दोहा॥ ब्रह्मा पतिहै षरजको मध्यम विस्नु
वषानि म्रत्युंजय गंधारको कविको विदयो जानि २१ षरज कह्यो
हेमंतमै ग्रीषम मध्यम भाय वृषाऋटत गंधारहै याक्रम तीनो गाइ २२
पूरव कालहै षरजको मध्यम मधिमै जानि बुधजन कह्यो गंधारको
अपर कालसो मानि ॥२४॥ अथवार्तिक॥ ये तीनों ग्रामजो वर्णन करेहै
इनमै अब पृथिवी पर षरज ग्राम जो है सो प्रसिद्ध है अर मध्यम ।
ग्राम जोहै सो बैजू अर नानसेनथें आद लेकर जो नाइकहू पहे ति
न्होंने गायाहै अर इस वषत नहीं गानेमे आ सक्ता अर गंधार ग्राम
जोहै सो स्वरगमैंहै इस वास्ते मूल करके षरज ग्राम जगतमे प्रसिद्ध
है इसीके अनुसार जो क्रमहै सोरचियाहै॥अथसप्तस्वरनामानि॥ साता स्व
रजो होतहै स्रुतितैं तिनके नाम षरज ऋषभ गंधार अरु मध्यम अ
ति अभि राम २५ पंचम धैवत औरु पुनकहित निषादहिलोइ तिन
की संग्या दूसरी सर गम पधनी होइ॥२६॥ अथसप्तस्वरनकेपशुपंछीजाति
कुलदेवतादिवर्णनम्॥ षरज मोर स्वर जानिये जन्म सु जंबू द्वीप विप्र
जाति अरु देव कुल ब्रह्मा देव समीप १ श्वेत वस्त्र कर पद्महै चह्यो

सं॰ १॰
प्र॰ ला
३

वेल कृति च्यार तीव्रा कुमुदवती मंदा छंदोवती हि निहार २ रि

षि कुल कहिये विषम हर लक्ष द्वीप वहराय चातक स्वर छत्री वरण

सूरज देव सहाय ३ अस्त्र वज्रो करमे खड्ग तीन कृती पटलाल

दयावती अरु रंजनी रतिका रूप रसाल ॥४॥ दोहा ॥ अग्निदेव गंधारको

जन्म शाल मली द्वीप वैश्य वर्ण अरु देवकुल जानत सवे महीप ५

रथ वेसो करमे धनुष लाल वस्त्र स्वर छाग रौद्री क्रोधा संगले

होइ स्रुति वड भाग ॥ दोहा ॥ क्रोंचशब्द मध्यम भयो कुश द्वीप उतपन्न

विप्रवरण अरु देवकुल भगवा देव प्रसन्न मुद्गर आयुध गजवच्यो

श्वेतवस्त्र कृति च्यार मार्जनी प्रीति प्रसाविनी वहुर वच्नका धार ८

दोहा ॥ पितृ वंश पंचम भयो क्रोंच द्वीपमें वास विष्णु देवता विप्र कुल

कोकिल शब्द प्रकाश ९ कर कटार वाहि पालकी पीत वस्त्र कृति

च्यार क्षिति रक्ता संदीपनी आलापिनी निहार १० दोहा दादुर स्वर

धैवत भयो शाक द्वीप उतपन्न ऋषिकुल अरु छत्री वरन नारद देव

प्रसन्न ११ मूशल आयुध लाल पट वाहन सिंह वखान प्रथम मंद

ती रोहिणी रम्या वहुर वखान ॥१२॥ दोहा ॥ गज स्वर जन्म निषादको पु

ष्कर द्वीप वखानि रुद्र देव अरु दनुज कुल वैश्य जाति पहिचानि॰

श्याम वरण तन लाल पट महिष वच्यो कर शूल जाके उग्रा क्षोभ

नी दोय कृती सुखे मूल ॥१४॥ दोहा ॥ काकली होत निषाद जब अंतर

होइ गंधार तिनहि शूद्रजाती कहै पंडित गुनी विचार ॥ १५ ॥ दोहा ॥ प
म्र वर्णहै षडजको मंदल ऋषभहि जान स्वर्ण वर्ण गंधारको मध्यम
कुंद समान १६ शुक रूपी पंचम कह्यो धैवत पीत वषान धूम्रजु वर्ण
निषादको या विधि ग्रंथ प्रमान ॥ १७ ॥ दोहा ॥ षडज अनुष्टुप छंद है ऋषभ
गायत्री जानि त्रिष्टुप है गंधारको बृहती मध्यम मानि १८ पंचमको
पंक्ति कह्यो उष्णिग धैवत जोय जगती है जु निषादको ग्रंथनको मत सो
य ॥ दोहा ॥ रूपमात्रके श्रवनको तंष्क्रत करके जान ताष्क्रतके पुन होत
है भेद वीस है आन ॥ २० ॥ अथ वार्तिक ॥ ये जो है बाईस श्रुती पीछे सम ह
रनमें कह दिआं है दोहा तनवीना सूथोरच्यो ताहमई विपरीत गु
नी लोगन भेदको लहै ग्रंथ अनुरीत २१ ॥ वार्तिक ॥ मंद्र मध्य अरतार य
तीन स्थान जो स्वरके कहे है सो देह रूपी वीनामे नाभी सों लेकर सि
रकी तरफको क्रम कह्यो है अर वीना अर मध्यममें खूंटीयांसे लेकर
नीचेको क्रम कह्यो है इसमें जो नसा स्वर खूंटीयोंकी तरफको जाय
गा सो उतरा जाणना अर जो नीचेको स्वरथरीकी तरफको जायगा
सो चढ्या जानना ॥ दोहा ॥ श्रुतिके पाछे होत है मनहि चुरावन हार
ताहीको स्वर कहत है जान लेहु निरधार २२ मंद्रादिक स्थानहि मि
ले होत तीन विध आर स्वर सातोयां कहत है पंडत लोक बनाय २२
दोहा अब बारह स्वर जे विकृत तिनको करौं बषान भेद च्युतादिक

सं॰ र॰
प्र॰ स्वा॰
५

को लीयै जिनहीं कहत सुग्यान २४ जवहि विषम स्वर षरजकी येकै
श्रुती कहि लेइ तवहि षरजको च्युतकहै सोइह संज्ञा देइ २५ जवहि
षरजकी श्रुत जुगलवसि निषादकै होय तव अच्युत अरु काकली द्वै
संज्ञान जोय २६ ऋषभजुहै श्रुति तीनकी षरज श्रुत जवलेइ चार
श्रुतनका होय वह विकृत नामको सेइ २७ मध्यमकी जव एकश्रुति
मिलै गंधारहि आइ तीन श्रुतनको होयवह कौसक संज्ञापाइ २८ तौ
की द्वै श्रुति लेइ जव चार श्रुतिन तवहोय अंतरसंज्ञा ताहिको कहत
जुहै सवकोय २९ मध्यमकी जव एक श्रुती पंचमके संगजाय तव
च्युति ताको कहतहै गुन जन याही भाय ३० द्वै श्रुति मध्यमकी जवै
मिलै गंधारही आइ तवसो अच्युत होतहै पंडत कहत वनाइ पंचम
निज श्रुति तीसरी उतरतहै जव आन तीन श्रुतिनको पंचमहै तव
ही जुगत वषान ३२ पुन मध्यमकी एक श्रुति जवही पंचम लेइ
कौसिक तांको कहतहै चार श्रुतिन जुतिदेइ ३३ पंचम निज श्रुति
तीसरी गहकै जव ठहराइ विकृत कहै तव धेवतही चार श्रुतनके
भाइ ३४ धेवतकी जव एकश्रुति मिलै निषादहि संग कहत जुतौ
को काकली चार श्रुतनको रंग ३५ एवाभहै जेहै विकृति मिलै
शुद्ध संग आइ तव तिनकै पंडत कहै छतीस १२ भेद गनाय ३६
अथवार्तिक॥ येजो सात स्वर पीछै कहेहै तिनकी यां जो है वाइस श्रुती

४४२ २०१ उल्लसनमें

ॐश्रीगणेशायनमः श्रीरघुनाथोजयति अथरागरागणीस

मयः अथप्रातसमयः भैरवोभैरवीचैवरामकलीषट्रामच

विभासोदेशकारोयं प्रातःकालीप्रगीयते हिण्डोलपंचमः

सिंधुर्लीलितश्चवसन्तकः भखारोभटीयारेच आध्ययामेप्रगीयते

अलेयादेवगिरिया लच्छाषाखः पुनस्तथा देवषाखभूषाखश्च

रामषाखः पुनस्तथा रामगिरिदेवकृति दिनप्रथमयामके

द्वितीयप्रहरांश्च सहावेलावलीतथा सुघराईमाधवोमाधो

गांधारगुणकलीपुनः टोडीकाषावरीदेशी वराटोटोडिकातथा

ग्रं॰ सं॰ १

अरु मूर्छनाजोहै अरु लयोंके जो वरवेहै वादी संवादी आद भेद जोहै अरु मध्यम सतारके रागोंके भेद जोहै अरु राग रागनीयां जोहै अरु उप राग जोहै अरु रागोंके पुत्र अरु इस्त्रीयां जोहै तिनके स्वरूप अरु समे अरु ऋतु अरु अंश अरु न्यासादिक जो भेदहैं अरु रागोंके मिलाप जोहै अरु ओडव षाडव संकीर्ण संपूरण जो भेदहै अरुदेसी मार्ग जो भेदहैं अरु तीवर तरतीवर जो भेदहै अरु समम असम अतीत अनाघात जो भेदहै अरु वादी विवादी संवादी अनुवादीये जो भेदहै अरु लयोंके जो भेदहै अरु शुद्ध जो स्वरहै अरु विकृत जो स्वरहै तिनकीयां शुद्ध ता नां जोहै अरु कूट तानांजोहै तिनके जाननेके लिये चार जो मतहैं जगन्नाथ मत शिवमत हनूमान मत भरत मत इनचारों मतमे अ ब वरतमान जो भरत मतहै तिसके अनुसार सभ रागोंके अलापोंकी यां जो सरगमांहै अरु गायनकी परपत अरु तालोंथें आद लेकर जोहै अरु मध्यम सितारके वजावनेकीयां गतां जोहै अरु सारंगाथें आद ले कर जो तालहै अरु म्रदंगकीयां परणा जोहै अरु सतारके बोल जोहै तिनकीयां सकारां अरु गमक अरु कोमल जोहै अरु हाथकी निआरी के जो भाड़ेहै अरु गवैयांके गुण अरु दोषजोहै अरु हौरभी केयक वा तांहै इस ग्रंथमे॥अथनादनिरूपणं॥ गीत नाद मयहै सदा वाद्य नादतें जान इन दुहु वनतें नितहुं उपजतहै यह मान १ नाद शबदतें वर्णहै वर्णनतें पद होय पदसो वाणी कहतहै जानतहै कवि लोय २ वाणीसों व्यवहार

सब रह्यो जगतमैं जानि   नाद ब्रह्मको रूप है ब्रह्म रूप जग मानि ३
नाद [illegible] प्राणको रूप है दामिनके सम जोय नाद भयो संयोगतें रह्यो
छाय जग सोय ४ उतपत नादहिकी कही शास्त्र सबै विचार चार
पदारथ पाइये याहीतें निरधार ५ नाद वडी विद्या लही सेव सरस्वत
ति पाय कंवला पतर नागड्ढे शिव कुंडल भय जाय ६ पशु सिसु
पंछी नादको सुने रहत है मोह नादस्तुतिको करि सकै देष्यो सब जग
जोह ७ नाद समुंद्रके तरनको सरस्वति करत विचार हियमें ह्वै तूंबा
धरै तऊन पावत पार ८ जानै वीना तत्वको श्रुत जातनके भेद मुकत
सहज ही होत है होवै कछून षेद ९ ॥ अथ नादा द्विविदा ॥ दोहा ॥
आहित और अनाहतो नादौ द्वै विध होय सो प्रकटन है पिंडमें यह
जानो सब कोय १० नाद अनाहत मुनि सबै सेवत गुरुसो पाय दाता है
वह मुक्तको चिंतन करै कछु चाय ११ आहत मोहे जगतको भवको
मेटन हार तातें उतपत नादकी कहों सुविध औहार १२ प्रान वायु
पर जीव चढ़ सुषमणा मगाहि सुभाय जात बहुर आवत जु फिरनट
विद्याके दाय १३ जीव नवै प्रेरै चित हित वहि चित्त रह दाय देह अ
गनको नाहि छिन [illegible] प्रेरत है वह चाय १४ ब्रह्मरंध्रमें प्राणको प्रेरत
पावक आय पावक प्रेरै पवनजु वह ऊरध पथको जाय १५ अत
सूक्षम धुन करत सो निकट नाभके होय बहुरो ध्यान सूक्षम कै

सं॰ र॰
प्र॰ सा
२

हीये प्रानके सोय १८ करै पुष्ट पुन कंठमे सीमहि मध्यम भाय कृत्रेम
पुनि पुन कंठमे तबही प्रकटत आय १७ इडा पिंगला सुषमणा तीनो
नारी नाम तानसेन संगीत मत जानो आवे काम १८ इडा वाम कहि
पिंगला दक्षिण मग महि जान हृदय रहत है सुखमणा ब्रह्मरंध्र ।
लोमान १९ प्रथम नाभिते पुन उठै ताको शब्द उचार तीन ग्राम ताके
भये मंद्र मध्य अरु तार २० मंद्र हृदयतें जानीयें मध्य कंठ ते होय उपजे
तार कपालतें भेद कहि कवि लोय ॥२१॥ अथ ग्रामवर्णनम ॥ चौपई ॥ मूरछना
को आश्रय होइ सुरन समूह तहां तजोइ ताको ग्राम कहे सबकोइ
जे संगीतको जानति लोइ २२ ॥ दोहा ॥ तीन ग्राम पंडित कहत तिनकी
यह विध जान षरज है द्वे जगतमे इंद्रलोक इक मान २३ प्रथमे षरज
वषा नीयें दूजे मध्यम ग्राम तीजे ग्राम गंधार है सुहै इंद्रके धाम २४ नि
ज चौथी श्रुतिमे जबहि पंचम सुर ठहराय षरज ग्राम ताको कहत
पंडित चितको चाह २५ जब पंचम श्रुती तीसरी आन करे पर वेस
ताकों गुणिजन कहत है मध्यम ग्राम सुदेस ॥२६॥ अथ वार्तिक ॥ धैवत
श्रुती जब तीनको षरज ग्राम तब होइ चारि श्रुतिनिको होइ जब
तब मध्यमको जोइ २७ इनकी इक इक श्रुतिनकों जब गंधार सुर लेइ
पंचमकी इक श्रुतिहिको धैवत सोभा देइ २८ सुरकी इक इक श्रुतहि
को जबही लेत निषाद होइ ग्राम गंधार तब वहै गुनी संवाद २९ ॥

षरज आदि सब स्वरनिको तातें कीनो ग्राम मध्यम स्वर परधानहै इ
जीसो अभिराम १९ इनहीके कुलहै भयो तीजो ग्राम गंधार सो स्वर
गाहिमें रहितहै गुनि जन कियो विचार ॥२०॥ अथतीनग्रामकोदेवता ॥
अरुऋतुअरसमेवर्णनम ॥दोहा॥ ब्रह्मा पति है षरजको मध्यम विस्नु
वषानि महत्रंजय गंधारको कविको विदयो जानि २१ षरज कह्यो
हेमंतमे ग्रीषम मध्यम भाय वर्षाऋतु गंधारहै याक्रम तीनो गाइ २२
पूरवकालहै षरजको मध्यम मधिमे जानि बुधजन कह्यो गंधारको
अपर कालसो मानि ॥२४॥ अथवार्तिक॥ यें तीनों ग्रामजो वर्णन करेहै
इनमे अब पृथिवी पर षरज ग्राम जो है सो प्रसिद्ध है अर मध्यम ।
ग्राम जो है सो वेन्नु अर नानसेनथें आद लेकर जो नाइकहु पहै ति
न्होंने गाया है अर इस वषत नहीं गानेमे आसक्ता अर गंधार ग्राम
जो है सो स्वरगमें है इस वास्ते मूल करके षरज ग्राम जगतमे प्रसिद्ध
है इसीके अनुसार जो क्रम है सोरचियाहै॥अथसप्तस्वरनामानि॥ साती स्व
र जो होतहै प्रकृतितें तिनके नाम षरज ऋषभ गंधार अरु मध्यम अ
ति अभिराम २५ पंचम धैवत औरहु पुनकहित निषादहिलोइ तिन
की संग्या इसरी सर गम पधनी होइ ॥२६॥ अथसप्तस्वरनके पशुपंछीजाति
कुलदेवतादिवर्णनम॥ षरज मोर स्वर जानिये जन्म सु जंबू द्वीप विप्र
जाति अरु देव कुल ब्रह्मा देव समीप १ स्वेत वस्त्र कर पद्म है चष्यो

सं० र०
प्र० सा
३

वैल श्रुति च्यार तीव्रा कुमुद वती मंदा छंदो वतीहि निहार २ रि
षि कुल कहिये रिषभ स्वर सत द्वीप ठहराय चातक स्वर छत्री वरण
सूरज देव सहाय ३ अस्व चढ्यो करमे खड्ग तीन श्रुती पटलाल
दयावती अरु रंजनी रतिका रूपरसाल ॥४॥ दोहा॥ अग्निदेव गंधारकों
जन्म शालमली द्वीप वैस्य वर्ण अरु देवकुल जानत सबे महीप ५
रथ बैसो करमै धनुष लालवस्त्र स्वर छाग रौद्री क्रोधा संगले
दोइ स्रुति बड भाग॥ दोहा॥ क्रौंचशाहू मध्यम भयो कुशा द्वीप उतपन्न
विप्रवरण अरु देवकुल मगवा देव प्रसन्न सुहर आयुध गजचढ्यो
श्वेतवस्त्र श्रुतिच्यार मार्जनी प्रीति प्रसाविनी वज्रर वज्रका धार ८
दोहा॥ पित्र वंश पंचम भयो क्रौंच द्वीपमें वास विष्णु देवता विप्र कुल
कोकिल शाहू प्रकाश ९ कर कटार चढि पालकी पीत वस्त्र श्रुति
च्यार क्षिति रक्ता संदीपनी आलापिनी निहार १० दोहा दादुर स्वर
धैवत भयो शाक द्वीप उतपन्न ऋषिकुल अरु छत्री वरन नारद देव
प्रसन्न ११ त्रिशूल आयुध लाल पट वाहन सिंह वखान प्रथम मंद
ती रोहिणी रम्या वड्डर वखान॥१२॥ दोहा॥ गजस्वर जन्म निषादकों पु
ष्कर द्वीप वखानि रुद्र देव अरु दनुज कुल वैश्य जाति पहिचानि
प्रणाम वरण तन लाल पट महिष चढ्यो कर शूल जाके उग्रा क्षोभ
नी दोय श्रुती सुखि मूल॥१४॥ दोहा॥ काकली होन निषाद जब अंतर

होइ गंधार तिनहि शूद्रजाती कहै पंडित गुनी विचार ॥१५॥ दोहा ॥ प
द्म वर्ण है षड्जको संदल ऋषभहि जान स्वर्ण वर्ण गंधारको मध्यम
कुंद समान १६ शुक रूपी पंचम कह्यो धैवत पीत बषान धूम्र जु वर्ण
निषादको या विधि ग्रंथ प्रमान ॥१७॥ दोहा ॥ षड्ज अनुष्टुप छंद है ऋषभ
गायत्री जानि त्रिष्टुप है गंधारको बृहती मध्यम मानि १८ पंचमको
पंक्ति कह्यो हसिग धैवत जोय जगती है जु निषादको ग्रंथनको मत सो
य ॥ दोहा ॥ रूपमात्रके श्रवनको तुंष्कृत करके जान ताकृतके पुन होत
है भेद बीस है आन ॥२०॥ अथ वार्तिकः ॥ ये जो है बाईस श्रुती पीछे सप्त स्व
रनमें कह दिआं है दोहा तनवीना सूधोरच्यो दारु मई विपरीत गु
नी लोगन भेदको लहै ग्रंथ अनुरीत २१ ॥ वार्तिक ॥ मंद्र मध्य अरतार य
तीन स्थान जो स्वरके कहै है सो देह रूपी वीनामे नाभीसों लेकर सि
रकी तरफको क्रम कह्यो है अर वीना अरु मध्यममें खूंटीयांसे लेकर
नीचेको क्रम कह्यो है इसमे जोनसा स्वर खूंटीयोंकी तरफको जाय
गा सो उतरा जाणना अरु जो नीचेको सरथरीकी तरफको जायगा
सो चढ्या जानना ॥ दोहा ॥ श्रुतिके पाछे होत है मनहि चुरावन हार
ताहीको स्वर कहत है जानलेहु निरधार २२ मंद्रादिक स्थानहि मि
ले होत तीन विध आर स्वर सातोयों कहत है पंडत लोक वनाय २३
दोहा अब बारह स्वर जे विकृत तिनको करौ वषान भेद चुतादिक

सं·र·
प्र·सा·
४

को लीये जिनहो कहत सुग्यान २४ जवहि रिषभ स्वर षरजकी एकै
श्रुती कहि लेइ तवहि षरजको च्युत कहै सोइह संज्ञा देइ २५ जवहि
षरजकी श्रुत जुगल वसि निषादकै होय तव अच्युत अरु काकली है
संज्ञा तू जोय २६ ऋषभ जु है श्रुति तीनको षरज श्रुत जव लेइ चार
श्रुतनको होय वह विकृत नामको सेइ २७ मध्यमकी जव एक श्रुति
मिले गंधारहि आइ तीन श्रुतनको होय वहु कोमक संज्ञा पाइ २८ तो
की है श्रुति लेइ जव चार श्रुतिन तव होय अंतर संज्ञा ताहिको कहत
जु है सबकोय २९ मध्यमकी जव एक श्रुती पंचमके संग जाय तव
च्युति ताको कहत है गुन जन याही भाय ३० है श्रुति मध्यमकी जवै
मिले गंधारही आइ तव सो अच्युत होत है पंडित कहत वनाइ पंचम
निज श्रुति तीसरी उतरत है जव आन तीन श्रुतिनको पंचम है तव
ही जुगत वषान ३२ पुन मध्यमकी एक श्रुति जवही पंचम लेइ
कोसिक तांको कहत है चार श्रुतिन दुति देइ ३३ पंचम निज श्रुति
तीसरी गहके जव ठहराइ विकृत कहै तव धैवतहो चार श्रुतनके
भाइ ३४ धैवतकी जव एक श्रुति मिले निषादहि संग कहत जु तो
को काकली चार श्रुतनको रंग ३५ एवम् है जे है विकृति मिले
शुद्ध संग आइ तव तिनके पंडित कहै छत्तीस १९ भेद गनाय ३६
अथ वार्तिक॥ येजो सात स्वर पीछे कहे है तिनकी यो जो है वाईस श्रुती

थथ्
२०७ राजगसनमें

ॐश्रीगणेशायनमः श्रीरघुनाथोजयति अथरागरागणीस

मयः अथप्रातसमयः भैरवोभैरवीचैवरामकलीषट्रागच

विभासोदेशकारोयं प्रातःकालीप्रगीयते हिंडोलपंचमः

सिंधुलीललितश्चवसन्तकः भखारोभटीयारेच आध्यामेप्रगीयते १

अलेयादेवगिरिया लच्छाशाखः पुनस्तथा देवशाखेभूशाखश्च

रामशाखः पुनस्तथा रामगिरिदेवकृति दिनप्रथमयामके

द्वितीयप्रहराडेच सुहावेलावलीतथा सुघराईमाधवोमाधो

गांधारगुणकलीपुनः टोडीकाशावरीदेशी वराटीटोडिकातथा

गी
१

द्वितीयप्रहरार्द्धेच वासरेगीयतेबुधैः मध्यमादीचसारंगा वृंदाव

नीवड्हंसिका सावन्तलंकादहून मध्याह्नेगीयतेसदा मे

घमल्लारिकागोरो नटमल्लारिकापुनः वर्षाकालेसदाज्ञेया

मध्यानेगीयतेबुधैः धनाश्रीधवलश्रीश्च जयतश्रीमालवश्रीकाः

मुलतानीपूर्वीपूर्वा तृतीयप्रहरोपराः प्रदीपदीपकाभीर ॥

टंकामालवमंजिका गोरामालवगोराच पुरीयाश्चधनाश्रीकाः

श्रीरागगौरीचेतीच त्रवणीमालवीतथा संध्याकालेसदाज्ञेया

दिवसेगीयतेबुधैः इतिदिवसरागरागणी ॥८॥

अथरात्रिरागरागणी कल्याणीमनभूपाली हमेरजैतश्रेमका

ह्रेमाध्यानस्यामशुद्धा निशाप्रथमजामकी कामोदोनटच्छा

याचकनीटकानहराततथा नायकाडायकामना शोभनोमोह'

नस्तथा वागीश्वरचकेदारो मलोहाजलधरस्तथा निशाद्वि

तीययामेच गीयतेसवुधैर्जनैः सोवटीदेशासिंहरा शंकाराभ

रणस्तथा विहागमानमंजर्या वहुरात्रोप्रगीयते एवम्भाव

तीचपर्य्यका कलिंगोमालकौशाको जयजयन्तीसोहनीव

तृतीयप्रहरांपरं इतिरागरागणीसमयः ॥:

याहार परे आरओ आवश्यक मत सारिका थाके यमन ये कोन सारिका हउक

ताके न सेइ थानि वाम हस्तेर तर्जनीय द्वारा चापिया तारे दक्षिण हस्तेर
तर्जनीर आघात दियाइ वाम हस्तेर तर्जनी सारिका हइते ना तुलिया सेइ
आघातेर अनुरणन थाकिते थाकिते मध्यम अंगुलीर द्वारा ताहार परेर
सारिका स्पर्श करिते हइ सेइ स्पर्श करार नाम स्पर्श स्पर्शटी यमन रूपे क
रिते हवेइवे याहाते सेइ स्पृष्ट सारिका सम्भूत स्वरेर स्वल्प ध्वनिटी अना
यासे शोना याय स्पर्श ज्ञापन जन्य इहरूप (८) तिलक चिह्न निर्दिष्ट आछे ये
स्वरेर मस्तके एइरूप तिलक चिह्न थाके गते सेइ धातुर निम्ने मायइ पर रूप
(४) चिह्न थाकिबे ॥ संयोगालंकार दुइ तिन म

ॐ
स॰ र॰
म॰ मा॰
१

ॐ नमः सरस्वत्यै ॥ ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ अथ द्वितीय राग मा
लकौंस वर्णनम् ॥ मध्यमांशग्रहंन्यासं पंचम वर्जित स्वरं ॥ षाड्‌वास्त
जाति विज्ञेया मालकौंशिक संज्ञिकः ॥ मालवा कान्हड उपनंकावागी
श्वरिस्तामिश्रिता कौशिको जायते यत्र मध्यम मन्नुत्येइति विज्ञः ॥ ३
ति शारदामतम् ॥ कौशकवागेश्वरी मिलि वर्नें सं त स्वर सम भाग
मालकौश नव जानिये उपजन हैं सुखराग ॥ इति भरतमतम् ॥
दोहा ॥ मालकौंशाको खिरजन्योरख विश्व विनगाय ॥ शारदेरे नि

चौथेपहररहनिपाहूनपियाचलाय ॥ सवैया ॥ तनजोवनजोरमरोरन-

निसोरसबीरछकोमनधीरधरे करमैंनकरवारलियेछविसौंप

टलालमबालकीजोतीहरे रतिकोककलापरवीनमहाहठगादे

खनरूपअनूपधरे यहमालवकोसअनंगमरूयोनरुनीमनरंजन

रंगकरे ॥ इतिहनुमानमतम् ॥ दोहा ॥ तीनसकारनसौंवनोश्रीउरवरि-

पसुरहीन तीनपहरपविमालवहिगावहिवउप्रवीन ॥ सवैया ॥

कंचनतैंकमनीपकलेवरकामकलानिमैकोविदमानो मानो

महारसबीरहिमैनितरानरुचैवसनोजगानानो चैरनेमारक·

स॰ १॰
भ॰ मा॰
२

मालकौमालथरीवडूवीरनहैमनमानो॥ योहविवलभरूपअनपम

मालवकौशिकरागवषानो॥ इतिक्रममतेन॥ ॐ कौशिक वागेश्वरी

वसंत पनांतीनोके इकत्र होतोस मालकौंशरागहोताहै ऋतु

शरद देवता पुंडरीकाक्ष रसवीर नायक दाक्षायणी नायका एवं

इता द्वितीया शक्ति लघिमा समा रात्रिचतुर्थ प्रहर तत्व वायु

वीजश्रीं ऋषि वामदेव शिव छंदअनुष्टुप देवता रुद्र यजुर्वेद

गायन रात्रि चतुर्थ प्रहर ॐश्रीं ह्रौं रंस्वाहा इतिमंत्रं मंत्रस्यावा

हनं मंमालकौंसायनमः इत्यावाहनं॥ अथध्यानम्॥ आरक्तवर्णो

ध्वनरककपष्ठि वीवः स्ववीरेषुक्कनः प्रवीये वीरहृतोवैरिकपाल-

माला मालोमनोमालवकौशिकेयं ॥ इति ध्यानम् ॥ मालकौंसमं

त्रस्य वामदेवऋषि अनुष्टुप् छंदः श्रितीयाशक्ति वाग्भल

वं श्रींबीजं रुद्रोदेवता रात्रोचतुर्थयाम जपविनियोगः ॐ

श्रीं ह्रांरंमंमालकौंसायनमः जपसंख्या लक्ष १०००००

गंध अक्षत करवीर पुष्प धूप दीप कालनैवेद्य ॥ ॥ अथमालव

कौंसराग ॥ अलापषाडव ॥ स्वरपांच मध्यम मध्यग्रामवाला श्रुतिवर्ति-

का गंधार हेटलामध्यस्वर श्रुतिरोद्रिस्वर धैवतनीचेका श्रुति

स॰ र॰
प्र॰ सा
२

रोहिनी निखाद निचेके ग्रामवाला स्रुति छोभनी स्वरऊपरका

निषादऊपरके स्वरवाला॥ मध्यम ऊपरका गंधार ऊपरका ॥

3

अथअलापातर॥ ननरीदनाआनननउननआनामअदतनरी तानरी

तनाउननननाआनरानननरननानाम अदतनं आननतं त

ननरीननाआनननानतनुमननुतरीन तानुंरीरनाननताआन

नानआननानरानतनुमननननाआनननानुंतनननरीन

तानानननतान तनं तननं तनानाआननरीनन आनन ना

नन नन्नुनरीननाआनननामतउन ननना रनाआन ताननरीना

नीश्रनननननानननरीननारीननानानत्रम्नत्रम् नितनाश्रान

नरीननरीनाश्रानरीननानननानत्रं नननाननाश्रानरीननना

नाननिनरीनानपननननानननानततदरननननानननारननदीन

नानम् नांनरीश्रानारीनरननितनंनिनारनरीननानननान

श्रानम् श्रदननत्रनरीश्रादनननन रीरननश्रानामनंनत्रम्

श्रीतितननानरीरनाननौननानउदननौनश्रानननानरीनन

रनानरीनननइउदननश्रादननरी ररनएननत्रमनननत्रम्

नरननननरीनननन श्रादनउदनननरीननननननौन

स·र
प्र·सा·
ध

नौनरी रनानतोमतोम॥ इतिअलापतरम॥ अथमालकौंशठाठकेसरगम॥

सा नी ध ध म ध ध ध नी नी उपरका स ध म ग सा

नी नी उपरकाहलंत॥ स रे स म म ध नी ॥नीचेका॥ ध ध ग म ध

ध नी सा स नी ध ध नी ध ध म ध नी ध म ग ध म

ग रे म ग रे स नी नी॥ उपरकाहलंत॥ स रे सा॥ अस्थाई॥ म म

ग म ग सा नी नी सा सा नी ध म धा नी ध म ग ग

म धा नी सा म ग स नी नी म ग सा॥ अथअन्तरा॥ गा ग

म ध म ध नी ध नी ध नी ध ग म धा मी सा नी

प म सा ग ग सा नी प म नी नी प नी नी प म ग

म ग सा नी नी म ग सा ॥ म ग रे सा नि प

म ग रे नि प ग सा म नि

प नि सा ग ग प नी प म

ग प नि सा ग ग प नि

प म ग प नि सा सा रे नी

प नी म ग ग रे ग म ग ग

सा सा ग सा सा ग सा सा रे

म॰२
म॰सा
५

नी प नी प म ग ग रे ग म

ग ग सा ग सा ॥ सा रे नि प

नी प नी म ग म ग म प प

प म म ग म प नी प प म

ग रे ग म प म म सा ॥ इत्यस्थाई ॥

अथअन्तः॥ प नी सा रे रे प प प म ग

म प म प नी ग ग म रे रे

सा ग प म नी प ग ग सा

नी प नी सा ग म प नी प प

म प म म ग प नी सा नी

नी नि प प म म ग म प

नी प सा रे ग म प ग म

ग नि प नी स इतिमालकौंस ॥ इति

मालकौंशसरगमा ॥ः

ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ रामायणकौंश द्वितीयाध्याय ॥ २ ॥ ॐ

तुलसीरामायणअयोध्याकांड द्वितीयः २ ॐ यन्मायावशवर्ति वि

श्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ

यथाहेर्भ्रमः यस्यास्यकुंजषट्पदीकृतमनां नंदंति सिद्धेश्वरा

वंदेहं तमशेषकारनपरं रामाख्यमीशं हरिं यस्यांके च विभाति-

भूधरसुता देवापगा मस्तके भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्यो-

रसि व्यालराट् सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा

शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु मां २ प्रसन्न

स·२·
प्र·सा

नायांनन्वतांभिषेकंस्तथानमम्लेवनवासदुःखतः मुखांवुजश्री-

रघुनंदनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्रदा नीलांबुजश्याम-

लकोमलांगंसीतासमारोपितवामभागं पाणौमहासायकचा

रुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथं॥३॥मालकौंश॥तीनताल॥दोहा॥

श्रीगुरुचरनसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि वरनउंरघुव

रविमलजसजोदायकफलचारि॥१॥मालकौंश॥तीनताल॥

चौपाई॥जबतेरामव्याहिघरआए नितनवमंगलमोदवधा

ए भवनचारिदसभूधरभारी सुकृतमेघवरषहिंसुखवारी·

रिधि सिधि संपति नदी सुहाई उमगि अवध अंबुधि कहुं आई ॥

मनिगन पुर नर नारि सुजाती सुचि अमोल सुंदर सब भांती

कहि न जाइ कछु नगर बिभूती जनु एतनिअ बिरंचि करतूती

सब बिधि सब पुर लोग सुखारी रामचंद मुखचंदु निहारी मु

दित मातु सब सखी सहेली फलित बिलोकि मनोरथ बेली

राम रूपु गुन सील सुभाउ प्रमुदित होइ देखि सुनि राउ ॥ दोहा ॥

तीनारा ॥ मा० ॥ सब के उर अभिलाषु अस कहहि मनाइ महेस

आपु अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेस ॥ २ ॥ चौपाई ॥ तीनारा ॥

स॰र॰
प्र॰सा॰

२

एकबारजानकीसमेता वैठेप्रभुनिजरुचिरनिकेता भुजप्रलंब

उरनयनविशाला पीतवसनजनस्यामतमाला कोटिमनोज

देषिछविमोहा सीताकरचामरवरमोहा तिहंअवसरनार

दऋषिआए सुरहितलागिविरंचिपठाए तेजपुंजननकरत

लवीना हरिगुनगानगावतलयलीना देषिरामसहसाउठिधा

ए कविंदंखवनहृदयमनिलाए सादरनिजआसनवैठारे ज

नकसुतानवचरनपषारे तेहिचरनोदकभुवनसिचावा जग

पावनहरिसीसचटावा सुमसुनिविषयनिरतजोमानी हृ॰

हमसारिषदेहअभिमानी तिनकहुमतिसंगातिनबहोरि कर

हिकृपाजाकहुप्रभुसोई ताकोमुनिनाहिनभवत्र्यागे जेहिवि

वहेतसंतमयलागे तातेंत्मरदमैवडभागी पयपियमहकुंदंब

अनुरागी ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ तीनताल ॥ मुनिहरिवचनमफवप्रियक

रिविचारकमुनिधीर परमकृपालसोगहितलागिकहतरक

धीर ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ परमकृपाललोगहितलागि तीनताल ॥ क

हिमुनितवमहिमारकगाया मैमानुहकठकुतम्हीदाया व

चनकहेसाकनकीनाई तातेंनहिकछुवदेहगुसाई प्रभु-

स॰ १॰
प्र॰ सा॰

२

3

यहूसदानमहिवनिग्राप निजलकनागनकेविवराई सहजसभा

उमगाजअनुरागी नरतनधरहुदासहितलागी मायागुनसोजान

अतीना अजितअनामसोदासनजीना जेहिसमप्रभुअतिशायको

हुनाहीं व्यापकअजसमानसवमाहीं उदरचराचरमेलिजोसोना

अरतनधानलागिसोरोवा कामरूपवपुवरननभेरा [illegible]वगातिअ

कलनेतिकहवेदा निर्मिममुक्तिनिरामयजोई दसरथसुतक

हिगावतसोई जपतपजोगयज्ञव्रतदाना विमलविरागज्ञा

नविज्ञाना कहहिजननमलिपावककोउ देखाप्रगटभगतव

समोउ हठबसममसंदसाधनबहुकरहीं भगतिहीनभवसिंधुनत

रहीं ॥ दोहा ॥ तीन तार ॥ ज्ञानसकलहूतेजानहूनिर्गुनसगुनस्वरूप

ममहृदयपंकजभृंगाइवबसहूरामनरभूप ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ तीन तार ॥

अबप्रभुभवनमोरहहुकृपाला गावततवगुनदीनदयाला अस र

ह्यौउपजीमनमाहीं देखेउचरनबहुतदिननाहीं यद्यपिप्रभु

सर्वत्रसमाना सगुनरूपमोरेमनमाना अबयचलनविरंच·

मोहिजाना कीनीविनयलागिममकाना प्रभुजाननसब

अंतरजामी भगतवस्यविनतीयहस्वामी जेहिहितलीन

स॰ १॰
अ॰ स्ता॰

मनुजअवतारा नाथवेगिमोहिकरीयसंभारा सुनतवचनरघु

पतिमुसिकाने सुनिअनइंविरंचभयमाने कहेऊनातअस्न

हिसमकाई कछुदिनवीतेदेषहुआई वारवारचरनहिसिरनाई

ब्रह्मानंदनहृदयसमाई नामरूपगुनचरितमुनिनारद चलेकरत

गुनगानविशारद तबरघुपतिसीतहिसमुजावा बहुतकर॰

नसोचचितवनावा सबहितलागिकरियसोउपाई जाइपवन

पतिहरिवकुराई ॥ दोहा॥ तीनताल॥ जगमेभवरिपितिलयजाकी

भृकुटिविलास सोप्रभयतननविचारतकेहिलिपिनिसचरना

म ५ चौपाई॥ तीनताल पकसमयसबसहितसमाजा राजस-

भारघुराजविराजा सकलसुकृतमूरतिनरनाह रामसुज-

ससुनिअतिहिउछाह नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे लो-

कपकरहिंप्रीतिरुखराखे त्रिभुवनतीनिकालजगमाही भू-

रिभागदसरथसमनाही मंगलमूलरामसुतजासु जोकछु

कहिअथोरसबतासु रायसुभायमुकरकरलीन्हा वदन

विलोकिमुकुटसमकीन्हा श्रवनसमीपभयेसितकेसा म

नहुंजरठपनअसउपदेसा नृपजुवराजरामकहुंदेहु-

स॰ १॰
प्र॰ मा॰

जीवनजनमलाह्लाकिनलेहं दो नी ना र यह्नविवाहउरश्रा

निन्दपह्नदिनह्नश्रवमरपाइ प्रेमफुलकिननमुदितमनगुर॰

ह्लिह्लनायेउनाइ ९ चौ ६ नी कहूभूआलह्लनिश्रम्

निनायक भयेरामसवविधिसवलायक सेवकसचिवसका-

लपुरवासी जेह्नमरेश्रविमित्रउदासी सवहिरामप्रियजेहि-

विधिमोही प्रभुश्रसीसजननतपरिसोही विप्रसहितपरि-

वारगोसांई करहिंछोहूसववैगिविह्लिनाई जेगुरचरनरेनसि-

रधरही तेजनसकलविभववसकरही मोहिसमकोउश्रन

भयेउ न दूजे सब पायेउ रज पावन पूजे गुन सागर नागर रूक्ति गाए

बडे भाग हम सेवग्रह आए जेउ राम जगत हितकारी सकल सगाह

नपुर नर नारी अब अभिलाष एक मन मोरे पूजहि नाथ अनुग्रह

तोरे मुनि प्रसन्न लषि सहज सनेहू कहेउ नरेस रजायसु देहू॰

दोहा॥ तीन तार॥ राजन राउर नाम जस सब अभिमत दातार

फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाष तुम्हार॥१॥ चौपा

ई॥ तीन तार॥ सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी बोलेउ राउ र॰

हसि मृदु बानी नाथ राम करिअहि युबराजू कहिय कृ

स·२·
म·सा

८

6

पाकविकविअसमान्‌ मोहिअछतयेहहोइउछाहू लहहिंलो

गसवलोचनलाहू प्रभुप्रसादसिवसवहिनिवाहीं येहलाल

सापकमनमाहीं पुनिनसोचतनुरहउकिजाउ जेहिनहोइपाछे

पछिताउ भवनरामसनआयसुमांगी पछिमरोमावलहि

तलागी करहुविचारनलावहुवारा अवधुनिभामवबोथह

मारा सुनिमुनिदसरथवचनसुहाए मंगलमोदमूलमनभा

ए सुनुन्टपजासुविमुषपछिताहीं जासुभजनविनुजरनि

नजाहीं भयउतम्हारतनयसोइस्वामी रामपुनीतप्रेमअनुगामी

दोहा॥ तीनजार॥ बेगिबिलंबनकरिअन्दपसाजिअसबइसमा-
ज सुदिनसुमंगलतबहिंजबरामहोहिंजुबराज॥ ८॥ चौपाई॥
तीनतार॥ मुदितमहीपतिमंदिरआए सेवकसचिवसुमंतबुला-
ए कहिजयजीवसीसतिन्हनाए भूपसुमंगलबचनसुनाए
प्रमुदितमोहिकहेउगुरआजू रामहिरायदेहुजुबराजू जौंपां-
चहिमतलागैनीका करहुहरषिहिंयरामहिटीका मंत्रीमुदि-
तसुनतप्रियबानी अभिमतबिरवपरेउजनुपानी बिनतीस-
चिवकरहिंकरजोरी जिअहुजगतपतिबरिसकरोरी जग-

म॰२॰
अ॰का

मंगलभलकाजुविचारा वेगिअनाथनलाइअवारा नृपहिमोदसु

निसचिवसुभाषा वढतवेलजनुलहीसुसाषा॥दोहा॥नीननार॥

कहिउभूपमुनिराजकरजोइजोइआयसुहोइ राम्राजअभिषेक

हितवेगिकरहुसोइसोइ॥४॥चौपाई॥नीननार॥हरषिमुनीसकहे॰

उम्रदुवानी आनहुसकलसुतीरथपानी औषधमूलफूलफल

पाना कहेनामगनिमंगलनाना चामरचरमवसनवहुभांती॰

रोमपाटपटअगनितजाती मनिगनमंगलवस्तुअनेका जोज

गजोगभूपअभिषेका वेदविदितकहिसकलविधाना कहि

उरबहु पुर बिबिध बिताना सफल रसाल पूंगफल केरा सोपद

बीथिन्ह पुर बहु फेरा रचहुं मंजु मनि चौक रचाहू कहहु बनाव

न बेगि बजाहू पूजहु गनपति गुर कुलदेवा सब बिधि करहु भूः

मि सुर सेवा ॥ दोहा ॥ तीन ताल ॥ ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तु

रग रथ नाग सिर धरि मुनिवर बचन सब निज निज काजहि ला

ग ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तीन ताल ॥ हनि समंत मन अति हरषाना जीवन

जनम सफल कर जाना जहं तहं धावन कोटि पठाए मंगल द्रः

व्य सकल लै आए कनक कलस भरि धरे स्वारे गज रथ तुरग सुनेः

स॰ १॰
अ॰ सा॰

कलसचारे बहुविधि बांधे बंदनिवारा। ध्वजपताकमनिबसनअपारा।

बनानगरनहि बरनि न जाई। सकललोकसोभासुखछाई। सुनिमन

इच्छाकरनन पावा। सोसुभमंत्रपहिलहिलैआवा। जोसुनीसजेहिआ

यसुदीन्हा। सोतेहिकाजसमथजनकीन्हा। बिससासुसुरसहजनराजा

करतरामहितमंगलकाजा। सुनतरामअभिषेकसुहावा। बाजेगह

गहअवधबधावा। रामसीयतनसगुनजनाए। फरकहिमंगलअंग

सुहाए। पुलकिसप्रेमपरसपरकहहीं। भरतआगामनसूचकअहहीं।

हों भएबहुतदिनअतिअवसेरी। सगुनप्रतीतिभेटप्रियकेरी। भ॰

रतसरिसप्रियकोजगमाहीं इहइसगुनफलदूसरनाहीं राम

हिंबंधुसोचदिनराती अंडन्हिकमठहृदयजेहिभांती॥ दोहा॥

तीनताल॥ यहिअवसरमंगलपरमसुनिरहँसेउरनिवासु सोभित

लखिबिधुबढ़तजनुबारिधिबीचिबिलासु॥७॥ चौपाई॥ तीनताल॥

प्रथमजाइजिन्हबचनसुनाए भूषनबसनभूरितिन्हपाए प्रे

मपुलकितनमनअनुरागी मंगलकलससाजनसबलागी॥

चौकेचारुसुमित्रांपूरी मनिमयबिबिधभांतिअतिरूरी आनंदम

गनराममहतारी दियेदानबहुबिप्रहँकारी पूजींग्रामदेबिसु

स·२·
प्र·सा

रनागा कहेवहोरिदेनवलभागा वारवारगनपतिहिनिहोरा

कीजेसकलमनोरथमोरा भूपहृदयमम्प्रेरहुनाई मतिदिहुदे

हुजोजियमइश्राई जोकछुरह्यारहोमनमाही सोपरिहोरश्रान

कछुनाहीं जेहिविधिहोइरामकल्यानू देहुदयाकरिसोवरदानू

गावहिंमंगलकोकिलवयनी विधवदनीम्रगसावकनयनी

दोहा।।तीनताल।।रामराजअभिषेकसुनिहियहरषेनरनारि ल

गेसुमंगलसजनसवविधिअनकूलविचारि।।२२।। चौपई।।तीनताल।।

तवनरनाहवसिष्टवोलाए रामधामसिषदेनपठाए गुरुआगम

नेसुनतरघुनाथा द्वारआइपदनायेउमाथा सादरअरघदेइघरआने

सोरहभांतिपूजिसनमाने गहेचरनसियसहितवहोरी वोलेरा

मकमलकरजोरी सेवकसदनस्वामिआगमनू मंगलमूलअमं

गलदमनू तदपिउचितजनवोलिसप्रीती पठइअकाजनाथअ

सिनीती प्रभुतातजिप्रभुकीन्हसनेहू भयेउपुनीतआजयहुगेहू

आयसुहोइसोकरौंगोसांई सेवकलहैस्वामिसेवकाई दो ती

सुनिसनेहसानेवचनमुनिरघुवरहिप्रसंस रामकस

नतुम्हकहहुअसहंसवंसअवतंस १२ चौ वर

स·र·
प्र·सा

८·

निरामगुनसीलसुभाउ बोलेप्रेमपुलकिमुनिराउ भूपसजेउअभि

षेकसमाजू चाहतदेनतुम्हहिजुबराजू रामकरहुसबसंजमआ·

जू जौंबिधिकुसलनिबाहैकाजू गुरसिषदेइरायपहिंगयऊ रा

महृदयअसबिसमयभयेऊ जनमेएकसंगसबभाई भोजनसय

नकेलिलरिकाई करनबेधउपबीतबिवाहा संगसंगसबभयेउ

छाहा बिमलबंसयेहुअनुचितएकू बंधबिहाइबड़ेहिअभिषेकू

प्रभुसप्रेमपछितानिसुहाई हरउभगतमनकेकुटिलाई॥दोहा॥

तीनताल॥तेहिअवसरआएलषनमगनप्रेमआनंद सनमानेप्रिय

बचनकहिंरघुकुलकैरवचंद॥ध॥चौपई॥तीनताल॥बाजहिंबाजन

बिबिधिबिधाना पुरप्रमोदनहिंजाइबखाना भरतआगमनसक

लमनावहि आवहुबेगिनयनफलपावहि हाटबाटघरगली

अथाई कहहिंपरसपरलोगलोगाई कालिलगनभलिकेतिक

बारा पूजहिबिधिअभिलाषहमारा कनकसिंघासनसीयसमेता

बैठहिरामहोइचितचेता सकलकहहिकबहोइहिकाली बि

घनमनावहिदेवकुचाली तिन्हहिसोहाइनअवधबधावा चो

रहिंचंदनिसिचांदनिभावा सारदबोलिबिनयसुरकरही बारहिं

म·२·
प्र·सा·

॥

बारपायलश्परहो दोहा नीननारा॥ विपनिहमारिविलोकिब

डिमानकरिस्रमोश्यान रामनाहिवनराजतजिहोश्सकलस्वा-

स्काज॥१५॥चौपई॥नीननारा॥ हनिस्खविनयठाछिपछिमाते भई

उसरोजविपिनहिमराती देषिदेवमुनिकहहिंवहोरीं मातुता

हिनहिषोविउषोरी विसमयहरषरहितरकराउ तुम्हजानङ्ग

सभरामप्रभाउ जीवकरमवसस्वषडुषभागी जाइत्रेअवधदेव

हितलागी बारबारगहिचरनसकोची चलीविचारिविबुधमु

तिपोची ऊंचनिवासनीचकरनूती देषिनसकहिंपराइविभूती

आगिलकाजबिचारिबहोरी करिहहिंचाहकुसलकबिमोरी॥ह

रषिहृदयदसरथपुरआई जनुग्रहदसादुसहदुषदाई॥दोहा॥तीनताल॥

नाममंथरामंदमतिचेरीकैकेइकेरि॥अजसपिटारीताहिकरिगईगि

रामतिफेरि॥१२॥चौपाई॥तीनताल॥दीषमंथरानगरबनावा मंजुल

मंगलबाजबधावा पूछेसिलोगन्हकाहउछाहू रामतिलकसु

निभाउरदाहू करैबिचारकुबुद्धिकुजाती होइअकाजकवनि

बिधिराती देषिलागिमधुकुटिलकिराती जिमिगवतकइले

उंकेहिभांती भरतमातुपहिंगईबिलषानी काअनमतिकह

हीहसिरानी उतरदेइनहिलेइउसासू नारिचरितकरिढारइआसू:

हंसिकहरानीगालवडतोरे दीन्हिलषनसिषअसमनमोरे तवहुं

नवोलिचेरिवडिपापनि छाडइस्वासकारिजनुसापनि॥दोहा॥तीननारा॥

सभयरानिकहकहसिकिनकुसलराममहिपाल लषनभरतरि

पुदवनसुनिभाकुवरीउरसाल॥१३॥चौपाई॥तीननारा॥कासोवहिमो

हागअभिमानी निकटमहाभयतनउरानी कतसिषदेइहमहि

कोउमाई गालकरवकेहिकरवलपाई रामहिछाडिकुसलकेहि

आजू जिन्हहिनरेसदेइजुवराजू भयेउकौसिलहिविधिअतिदाहिन

देषनगरवरहृतनअवनाहिन देषहुकमनजाइसवसोभा जोअव

लोकिमोरमनछोभा हृतविदेसनसोचतम्हारे जानतिहहुवसमना

हहमारे नीदवहुतप्रियसेनतुराई लषोनभूपकपटचतुराई सु

निप्रियवचनमलिनमनजानी झुकीरानिअवरहुअवगानी पु

निअसकवहुंकहसिघरफोरी तवधरिजीभकढावौतोरी ॥ दोहा ॥

तीनतार ॥ कानेषोरेकूवरेहिकुटिलकुचालीजानि तियविसेषि

पुनिचेरिकहिभरतमातमुसुकानि १८ चौपई तीनतार प्रि

यवादिनिसिषदीन्हिउंतोही सपनेहुतोपरकोपनमोही सुदि

स॰२॰
प्र॰मा॰

१५

13

नसुमंगलदायकसोई तोरकहाफुरजेहिदिनहोई जेठस्वामि
सेवकलघुभाई यहदिनकरकुलरीतिसुहाई रामतिलकजोसाचे
हुकाली देउमांगमनभावनआली कौसल्यासमसवमहतारी॰
रामहिसहजसुभायपिआरी मोपरकरहिसनेहुविसेषी मैक
रिप्रीतिपरीछादेषी जोविधिजनमदेइकरिछोहू होहुरामसिय
पूतपुतोहू प्रानतेअधिकरामप्रियमोरे तिन्हकेतिलकछोभकस
तोरे दो ती भरतसपथतोहिसत्यकहुपरिहरिकपट
दुराउ हरषसमयविसमयकरसिकारनमोहिसुनाउ १५ ॥

चौ अतिप्रियवचनसुनायोमोही कहुमंथरादेउकातोही

सुननवचनमंथराबिमानी बोलीवचनकपटछलसानी एकहि

बारआससबपूजी अबकछुकहबजीभकरिदूजी फोरैजोगकपा

रुअभागा भलेउकहतदुषरौरहिलागा कहहिझूठिफुरिबात

बनाई तेप्रियतुम्हहिकरुइमैमाई हमहुकहबअबठकुरसोहाती

नाहितमौनरहबदिनराती करिकुरूपविधिपरबसकीन्हा बा

वासोलहमहिविधिदीन्हा कोउनृपहोउहमहिकाहानी चेरि

छाड़िअबहोबकिरानी जारैजोगसुभाउहमारा अनभलदेषि

अ॰१॰
प्र॰सा

नजाइतुम्हारा तातैकछुकवातअनुसारी छमिअदेविवडिचूकहमा
री॥दोहा॥तीनमारा॥गूढकपटप्रियवचनसुनितीयअधरवुधिरानि॥
सुरमायावसवैरनिहिसुहृदजानिपतिआनि॥२॥चौपई॥तीनमारा॥
सादरपुनिपुनिपूछतिओही सवरीगानमृगीजनुमोही तसिमति
फिरीअहैजसिभावी रहसीचेरिघातजनुफावी तुम्हपूछहुमैक
हतडराउ धरेहुमोरघरफोरीनाउ सजिप्रतीतिवहुविधिगढिछो
ली अवधसाढसातीतवबोली प्रियसियरामकहातुम्हरानी
रामहितुम्हप्रियसोफुरिवानी रहाप्रथमअवतेदिनवीते ॥

समउफिरेरिपुहोहिंपिरीते भानुकमलकुलपोषनिहारा.बिनुज

लजारिकरैसोईछारा जरतुम्हारिचहसवतिउखारी रुंधोकरिउपाउ

बरबारी॥दोहा॥तीनताल॥तुम्हहिनसोचसोहागबलनिजबसजान

हुंराउ मनमलीनमुहमीठनृपराउरसरलसुभाउ॥२१॥चौपई॥तीनताल॥

चतुरगंभीररामम्हतारी बीचपाइनिजबातसंवारी पठयेभरतभू

पननिउरे राममातमतजानबरौरे सेवहिसकलसवतिमोहि

नीके गरबितभरतमातुबलपीके सालतुम्हारकौसिलहिमाई

कपटचतुरनहिहोइजनाई राजहितुम्हपरप्रेमबिसेषी सवति

म॰२॰
प्र॰सा॰

१५

सुभाउ सकेन हि देषी रचि प्रपंच भूप हि अपनाई राम तिलक हित ल

गन धराई यह कुल उचित राम कहुं टीका सबहि सोहाइ मोहि सुठि

नीका आगिलि बात समुझि डरु मोही देषि देउ फिरि सो फल ओही ॥

दोहा तीन तार रचि पचि कोटि कुटिल पन कीन्हेसि कपट प्रबोध

कहसि कथा सत सवति के जेहि विधि वाढ विरोध ॥ ४ ॥ चोपई ॥ तीन तार ॥

भावी वस प्रतीति उर आई पूछ्ह रानि पुनि सपथ दिवाई का पूछहु तु

म्ह अबहु न जाना निज हित अनहित पसु पहिचाना भयेउ पा

षदिन सजत समाज तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आज षाइअ पहिरिअ

राजतुम्हारे सतकहेनहिदोषहमारे जौअसतकछुकहबबनाई

तौबिधिदेवहिहमहिसजाई रामहितिलककालिजौभयेउ तु

बिधि
म्हकहूंबिपतिबीजभयेउ रेषषचाइकहेउंभलभाषी भामिनिभई

हूंदूधकैमाषी॥ जौसुतसहितकरहुसेवकाई जौघररहहुनआनउ

पाई॥दोहा॥तीनतार॥ कद्रुबिनतहिदीन्हउदषतुम्हहिकौसिलादेव

भरतबंदिग्रहसेइहहिंलषनरामकेनेव॥२२॥चौपई॥तीनतार॥केकयसु

तासुनतकटुबानी कहिनसकइकछुसहमिसुषानी तनपसे

वकदलीजिमिकांपी कुबरीदसनजीभतबचांपी कहिकहि

स·२·
म·सा

१९

16

कोटिककपटकहानी धीरनधरइप्रबोधिसियानी कीन्हिसिक
ठिनपठाइकुपाइ जिमिननवइफिरिउकठाकाइ वचनसुनत
अतिसयसपमानी उहसंगगैसमतिबौरानी धर्मनिरतगुनसान
गंभीरा उहसंगमतिरहैनधीरा फिराकरमप्रियलागिकुचाली
वकहिसराहेमानिमराली सुनसंथरावातफुरिसोरी दाहिन
आंखिफरकनितमोरी दिनप्रतिदेखउरातिकुंसपने कहउनतो
हिमोहवसअपने काहकरौसखिसूधसुभाउ दाहिनवामनजा
जानउकाउ ॥ इतितुलसीरामायणा ॥

अथअष्टपदेगीतगोविंदः
भैरवरागतीनताल्
रे ग म ग रे स
मालवोरागेरागीयते
ध्रुवपद
स नी प प
इतिगीतगोविंदजयदेवकृ
तौप्रथमपटलः १
अथशिवगीतवर्णनम्
भैरवरागतीनताल्
स नी प नी सं
इतिरागभैरवतीनताल्
ध्रुवपदम्
स रे ग म प प नी
अथसूरसागरअष्टपदी
रागभैरव चारताल्
इतिरागभैरव तीनताल्
ध्रौपदः रे ग म ग रे नी
इत्यस्थाई स रे ग म प प नी

अन्तरः नी प प म
ग रे प म ग रे ग
म ग रे
इत्याभोगः
भैरवराग चारताल्
ग म ग रे नी प नी
इत्यस्थाई
स रे ग म प प नी
इत्यन्तरः
गीतभैरव तीनताल्
रे ग म म ग रे ग रे स
ध्रुवपद
भैरवतालतिताला
रे ग म ग रे स
रागभैरव रूपकताल्
रागभैरव जलद तिताला
स नी स रे ग रे स
भैरवराग धीमा तिताला
भैरवराग कड्वा तिताल

भैरवरागसूची

ॐ
१

भैरवराग धीमातिताल ८' १२
सनी ध नी स १२
भैरवताल सूलफाकता १४
भैरवराग रूपकताल '
स नी नी स' '
भैरवराग कपताल ११
भैरवराग जततार ८'
भैरवराग ब्रह्मताल प्रबंध ८।
रे ग म ग रे ग म
ग रे
रागभैरव ब्रह्मताल
स नी स
भैरवराग रुद्रताल ८२
रे ग म ग रे स
भैरवराग लक्ष्मीताल
स नी स
रागभैरव विष्णुताल
रे ग म ग रे स'
भैरवराग धमार ताल ८३

स नी ध नी स
भैरवराग एकताल
स नी ध नी स
भैरवराग ख्याल एका २४
इतिभैरवराग गायनपद
वर्णनम्
भैरवराग तालसवारि २३
रे ग म ग रे ग म ग रे स
भैरवराग कुमरा
स रे ग म प ध नी
भैरवराग तालपटताल झ
झपद
स नी स
भैरवराग आडचौताल
स रे ग म ग रे
भैरवराग सवारी
स नी स २४
भैरवराग तालप्रबंध
रागसागर २५
स नी स

पृ० भैरवराग तिनताल चतुरंग
५८ होमरी तालदादरा
५९ अथरागतवर्णनम्
तीनतालधीमा भैरवराग
गतशिवमत
रे नी सा नी ध नी सा
प्रथमआहूती
सा रे ग म ग रे सा
द्वितीयआहूती
सा रे ग म प ध नी सा
तीसरीआहूती
सा नी ध प म ग रे सा
इतिमसीतखानेगत ऋषभ
स्वर आदवर्णनम्
द्वितीयगत मसीतखाने
खरज स्वर आद
३।.सा नी सा
फेरप्रतीयआहूती
द्वितीय ग म नी प प म
सा

तीसरीआहूती
म ग रे ग म ग रे सा
चतुर्थ आहूती
सा ध नी स रे ग म
पंचम आहूती
ग म नी प प म ग म
पलटा
ग म ध नी स नी ध ध
इतिखेजैस्वर
अथत्रितीयरागतगंधार
स्वरआदवर्णनम्
ग म ग रे स नी स म
प्रथमआहूती
ग प नी प प म प म
द्वितीयआहूती
ग म प नी स ग रे मी
त्रतीयआहूती
प नी प प म प म ग
चतुर्थी आहूती इतिगं
धारस्वरवर्णनम्

ॐ
श्रुं
ध

अवपट रे ग म ग रे स प॰ इतिप्रथमआवृती
आलतीनताल सनी स १'' नी सा ग म प प प म ग
द्वपा तीनताल द्वितीयआवृती
स रे ग म प प नी ग म ग रे ग म प ग म ग
ठुमरी रे ग म ग रे स त्रतीयआवृती
चतुर्थप्रकाररागत तीनताल ११ ग रे सा नी सा
रागभैरव धैवतस्वरआद चतुर्थआवृती इसमप्राई
वतिनम् प नी स ग म प नी सा
प्रथमआवृती रे नी स प्रथमआवृती
द्वितीयआवृती नी रे सा रे नी सा
ग म प नी स दूसरीआवृती
त्रतीयआवृती पलटासं म प म प नी सा नी सा
स नी प प म (ठुक त्रतीयआवृती
ग म रे ग रे स नी ग रे सा नी सा ग म
इतिचतुर्थआवृती चतुर्थआवृती रे सा
इतिधैवतस्वर आदगत इतिनिषादस्वरआदगतव[illegible]
वतिनम् ॥ः नेसंपूर्णसमाप्तम् ः॥
भैरवराग तीनताल
गतफेरोजखानि नी सा नी

भैरव रागस्य अथमरस्त्री

मधुमाधवी १
भैरवी २
रामकली ३
रागनी टोडी ४
आसावरी ५
अथपुत्र: ८
वंगाल १
मधुर २
हर्ष ३
देशाख ४
पंचम ५
ललित ६
विलावल ७
माधव ८

अथमालकौंसभार्या

खंभावती १
टोडी २
ककुभ ३
गौरी ४
गुणकरी ५

अथपुत्र:॥

मारू १
वर्वल २
मेवाड ३
सिहांग ४
चंद्रकाम: ५
भ्रमरराग: ६
आनंद: ७
खोखरराग: ८

अथहिंदोल परिवार:

तैलंगी १
देवगिरी २
वसन्तिनी ३
सिंधूरी ४
आभीरी ५

अथपुत्र:

चंद्रविंब १
सुभांग २
आनंद ३
विभास ४
वसन्त ५
वर्द्धन ६

देशकार ७
विनोद ८

अथदीपक

पटमंजरी १
कामोदिनी २
टोडी ३
गूर्जरी ४
कावेरी ५

पुत्र:॥

कमलराग १
कुसुम २
रामराग ३
कुंतल ४
कलिंगराग ५
बहुलराग ६
चम्पक ७
हिमालराग ८

अथश्रीरागभार्या

कर्णाटीरागिणी १
सावेरी २
गौडीरागणी ३
रामकली ४
सैंधवीरागणी ५

पुत्र:॥

सिंधुराग: १
मालव २
गौडराग: ३
गंभीर ४
गुणसागर ५
विहागरा ६
कल्यानराग ७
कुंभराग: ८

अथमेघरागिणी

मलारी १
सोरठी २
आसावरी ३
कौकिनी ४
भूपाली ५

अथपुत्रा:॥

नटराग १
कानडा २
सारंग ३
केदार: ४
गुणराग: ५
गंदमलारा ६
जालंधर: ७
वेदराग: ८

4

श्रीश्रीगणेशायनमः रागभैरव तीनप्रकार तसवीरसमे ध्यान देवता धूप दीप नैवेद्
आवाहन उच्चार अलाप सरगम ध्रुवपद कवित खियाल धमार रस नायका टप्पा
ठुमरी श्लोक अष्टपदी गजल रेखता रुबाई सभहोजदेनालताल समय होजबनानेकेराग
मैदेखना रूपकदातारहसदेकनेलेखना चेजाउपरसरगमचढना रूपकतालकेपरतेकाओवल
नखशाखाजदा तभलाम्दंग नखसाबनानेचाहिए नखसारसाहोर सामनेरखकेबजावेआरेमे
भैरवदाहाव वेनदाहाठबनानाल हिंदसमे सरगमसने रूपकगत पोथीबंगालेदा वदला चालबदना
पकेसंपिरेकरके लछमेतकलेकर अंगरेजीबीजकीबनाने नवसत्रध्या
भैरवदाभार्या उपरलेतोर रसतत्पोतर पुत्रांदाभार्या जिसकेसमदे रूपपोथीबंगालेकेपोथीकेदे
जिसजगाअलादेदाहोवे होरजोकोईपोथीमेले ध्रुतीदेनेप्राणदेने वार्तिकलेखना देसाभकउहेनाल
सरदातेरेकालेखनाचाहिए केतनेसंकटमे सुरलगानेचाहिए जेडेवाजेसाडेमलकमेनहेबजा
जाते उनकोछडदेना नाईकोकाप्तनहेसाभलेखना गत सुर नामउस्तादोंदे जेनाकेगतबानेहे
पहलेखरलावनाबना फेरसहेलेखना जुजेवेयातखलहोया कुलेयातनाकेरहे सरसमाव
संस्कृत भाषा प्रोलानाइका रसकाध्यान कोमलका वेरवाक्याचेज पहलीलेखनी आरोहे अवरोहे
पदछेद

हानभैरवसंहरा।
प्रथमवरजसेरागशारे भैरव

रागमारू ऐसौ कौन करहै सो भक्त काजे जैसैं धरै जगदीस जीय

मां फलाजे हिरनकशिप वध्यो उदर पग्रहराग्रसलीहसौ प्रहलाद

चिनवरनलायौ भीरकें परेते धीरस्व वृहनत जौ षंभतें प्रगटकरज

नकुरायौ ग्रस्यौ गजग्राहलेवल्यौ पाताल कौं कालकेत्रासमुष

नामगायौ छाडिसुषधामग्ररुगरुड तजिसोवरो पवनकेगवनतें

ग्रधिकधायौ कोपकोरवगहेकेसजवसभामें पडुकीवधूजसतैं कगायौ

लाजकेसाजमेंहूतीजोद्रोपदीवढ्योंनननचीरनहीग्रंतपायौ रोरके

जोरमेंसोरघरनीकियौ वल्यौद्विजकुसलकेद्वारठाढो जोवग्रंजुल

मिलेबोरतंदुलललयेंइंद्रकीविभवतैंग्रधिककाढ्यौ

सक्तकेदानकोमानग्वारनकिया गह्योगिरिपान

जसजगतछायो यहैजियजानकेग्रंधवहूत्रासतें

सरकामीकुटलसरनग्रायो ५ रागरामकली

तीवमकार २ भैरव

प्रात भैर

देवता सुरेन सुराल

नारदीस सुने जेतनेतेज

ध्रुवपद

भैरवकीइंस्त्री

पुत्र ग्रसुक

मलपांव ५

नवरस २

भैरवराग प्रातः

उसमैउत्पत्र सुराम

भैरवीरागनी जिसमध्ये

गुजरीरागनी भैर'

सुराग

दोसिए

पुत्रबरग्रस

कुदठ

दोसरा

वादीन यंदे

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो विघ्नहर्त्रे नमः ॥ ॐ श्रीएकनाथो जयति ॥
अथ इनताई प्रारंभः गीतध्यायः प्रथम भैरवराग वर्णनम् खरज
नांशग्रहं न्यासं खरजादिकमूर्छना संपूर्णो भैरवं प्रातः गीयंते शार
दामतम् ॥ इति शारदामतेन ॥ दो॰ टोडी गौरी रामकली इन तीनो सम भाग इन
हि मिला कि गाइई प्रकटै भैरो राग ॥ इति शारदामतेन रिषभांशग्रहं न्या
सं रिषभआदिकमूर्छना भैरवं संपूर्णो प्रातः गीयन्तीमति शंकरः
इति शिवमतेन ॥ दोहा अंशन्यास ग्रह तीनो मध्य रिषभ स्वर जान शिवमत भै
रो प्रात हि गावत गुणी सुजान ॥ इति शिवमतेन ॥ गांधारांशग्रहं न्यासं गांधारा
दिकमूर्छना संपूर्णो भैरवं गीयं प्रत्यूषे हनुमान्मतम् ॥ इति हनुमान्मतेन ॥ दो॰
अंशन्यास गंधार स्वर तिसको हि ग्रह जान प्रात हि भैरव गाइये आप कह
त हनुमान धैवतांशग्रहं न्यासं धैवतादिकमूर्छना निशान्ते भैरवं गेयं
भरतमतेन कथ्यते ॥ दोहा ॥ न्यास अंश ग्रह धैवत स्वर जानो संपूरण भै
रव भरत विधानो ॥ इति भरतमतेन निषादांशग्रहं न्यासं निषादादिकमूर्छ
ना प्रातश्च भैरवं गेयं कल्लचंद्रमतेन च ॥ दोहा प्रात हि भैरव गाइई कालि
मत अनुसार निषाद न्यास लै अंश ग्रह बंसे कियो उचार ॥ इति कल्लमतेन
टोडी गौरी रामकली इण तिणा दे एकत्र होनेकर के भैरोराग होता है

ग्रीष्मवित वीरसदनायकमननीनाइका प्रातः काल विसो

देवता आधाशक्तिः अग्निनतत ह्रींबीज शिवऋषि ॐभंभंपंह्रांस्वा

हा इतिमंत्रः ॐभंइत्यावाहनं ॐभंभैरवंनमः इत्यासनम॥इतिध्यानं॥

ॐगंगाधरशाशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृतिवासा

भास्वत्रिशूलकरएषनृमुंडधारीसुभ्रांवरोजयतिभैरवआदिरागः॥त

थाध्यानं सोसजटानिमेगंगतरंगत्रिलोचनचंदनललाटहिऊपरलाल

विशालफनिसिरकीमनिजोतलसैकछुकुंडलऊपरनूपकपकरसूल

लिएहविबलुभसीफेबजेउमनूपर भूषननागनकेतनमेपरभैरवराय

विराजतभूपर॥अथविनियोग॥ॐभंइतिमंत्रस्य ॐविसविष शिवऋषि

पंक्तिछंदः आधाशक्तिं अग्निस्तत्वम ह्रींबीजम प्रातसमे जपेविनियो

गः॥अथजपमं संख्यासमलत्वम॥॥॥ धूप दीप नैवेद गुग्गुल घृतदीप

कार्पूर श्वेतपुष्प संपूरण सातस्वर धैवत विषमकोमल जिसको उ

तरोकहतेहै अर्थात विषम अपनि हसविश्रुती रंजनिनामापर कोमल

होताहै कोमल धैवत उहै जिसको तंतीवरकहतीहै पंचमस्वर तं

तीवर उसको कोमल धैवत कहतेहै अरु दुहसरी श्रुति रोहिणी

नामापर होताहै विषम आद भैरव संपूरण तस्यआलापस्य ॥

२

नेन्नीरेनाआननेउननेउआनानामअ्रदननरी तेनं नानरीननाउ

नेनेनाआनेरानननेरनेतानाम्‌ ननेनअ्रदननेआननेनेम्‌

नानेनैननानननरीननाआननानननेम्‌नेनेननरीने नानेरी

रनानेनाआननानेआननानरानेननेम्‌नेननेननाआननेनानेने

नेनरीने नानाननेननाने नेने नेनेउ नेनानाआननरीनेनः

आनेनतानन नेनेनरीननाआनेनानतेउने नेनेनारनाआने ना

नेनरीतानीआननेननेनतानेनरीननीरीन नानानतेमनेम्‌। ति।

ननाआनननरीतननरीताआनरीननानतानते। नेननाननाआने

रीतनेननाने॥ तिननरीतानपनेननानेनाननदरनेननतानेता

रनदीननानानुम् नानें नरीआनारीनरननिननं निनारन रीननानं

ननानुआनुम्आदननुनरीआदनननन रीरननआनामननननुम्

आरीनेननानानरीरनानननौननौननउदननौनआनननानरीनर रना

नरीननननह्उदननआदननरी रननरानननमनननननुम् नरनन

ननरीननननन आदनउदननननरीननननननननं ॥ नौननौनरी ॥ रें

नानननौमननौम् ॥१॥ ॥ इतिभैरवरागापः ॥ सा नि सा

नि प(कोमल) नि सा सा ग म मा रे(कोमल) मा

सा ग म नी प(कोमल) प म म गा

रे(कोमल) ग म गा रे(कोमल) मा सा प(कोमल)

उं
सा॰ रे॰
म॰ सा
३

3

नी	सा	रे (कोमल)	ग	म	ग	नी	ध (कोमल)	प
म	ग	म	म	म	ध (कोमल)	नी	सा	
नी	ध (कोमल)	प	म	ग	रे (कोमल)	ग	म	
ग	रे (कोमल)	सा						

॥ इतिशारदमतेन ॥ अनस्वारभैरवरागस्वर

सगमः

रे (कोमल)	नि	म	नि	ध (कोमल)	नी			
सा	सा	ग	म	ग	रे (कोमल)	सा		
ग	म	नी	ध (कोमल)	प	म	म		
ग	रे (कोमल)	ग	म	ग	रे (कोमल)	ग	रे (कोमल)	
सा	ग	रे (कोमल)	नी	ध (कोमल)	प	म		

ग कोमल रे कोमल रे नि सा नि कोमल ध नि सा

॥ २ ॥ इति शिवमतेन सरगम: ॥ म म ग कोमल रे सा

नि सा म ग प नि कोमल ध प

प म प म ग म कोमल ध नी

सा ग कोमल रे नी कोमल ध नी कोमल ध प़

म प म ग म ग कोमल रे सा

नि सा म ग म ग कोमल रे सा

॥ ३ ॥ इति हनुमान्मतेन सरगम: ॥ प नि सा म म नी

धा प ग म कोमल रे ग कोमल रे सा

उ·
स· र·
प्र· सा·
थ

4

कोमल रे | नी | सा | नी | ध | नि | सा | ग | सा

कोमल ध | नी | सा | नी | कोमल ध | प | कोमल ध | नी

कोमल ध | प | नी | कोमल ध | प | म | ग | म

कोमल ध | नी | सा | नी | कोमल ध | प | म | ग

म | कोमल रे | ग | कोमल रे | सा | कोमल रे | नि | सा

नी | नि | कोमल ध | सा ॥ ध ॥ इतिभावतमतेनसर्गमः॥ अथक्लमतेनसर्गमः॥

नि | सा | नि | रे | सा | रे | नि | स

नि | ध | नी | सा | नी | स | ग | म

प | म | प | कोमल ध | म | ग | ग | म | ग

वंगाल॥ तिनतार॥ आजस्यामसुंदरवाचितकेहरवासुचरचतुरवामनकेभवनवाआवे
उनविनकछुनसोहावेनभावेघरीपलछिनमईकुंविरहसतावे कागउडावतवहीयां
घकगईनिशदिनजुगसमसेफनचाहावे सदारंगमेकानमनकवावेगदरसवादे-
खावे॥ वंगालतीनतार॥ उनविनमईकुंकलनपरतहेसुनरीमोरीमायघरीपलछिन-
जुगसमवीततहेधरिहूंउनकेपाय सदारंगविनकछुनसुहावेनाहिनभावेमइ-
कुंसजनीकेसेरजनीविहाय॥॥ वंगाल॥ परन॥ तीनतार॥ नारेदानीतुमतननदिरना
तदीयनरेतदीयनरेनारदानी यललीयललललुम२यलायलायललललेनाद्रद्रतुंद्र
द्रतुंद्रतनदिरना॥ वंगाल॥ परन॥ तिनतार॥ दानवचतुरंगदलभाजेपचंडिकेजवही-
कोपिलेखर्गसिंघवडिचलतथाय ससससगमपधधपमगगरेसानीधनीधपमगगरे
सासासारेरेगममममपधधनीनीधधपपमगगमरेरेसा नादरदिरतादीनदरेततदानी
दियानारेद्रियानारेतदारेतदारे नादरदरदतोमदरदरतियाइयातकधिलांगतकथा
धाकिटतकधुमकिटतकधिताकटतकदिगदिधाधा कडांकडांतकततिकिटतके
तकुकुफंकतकुकुफंगकिणकिणथोंगतकतकीटधातकिटनगदिधा नवलकि
शोरलहोआनंदसुखमनवांछिततवसुजसगाय॥॥ वंगाल॥ तिनतार॥ मेराव
नवारीजीसेमेरामनलागारे सोवतजागतविहरतनिशदिनतनमनधनसपा
गारे आठपहरआरचोसठ्ठघरियांहरिहरिलवलागारे कुलानंदआनंदमेंरंग
रहेचरणकमलअनुरागारे॥॥ वंगाल॥ तिनतार॥ परन॥ दीमदारातिले दाणति
लेदारातिलेतुं द्रतनादारातिलेधितिलितितिलिल्लिलेद्रद्रतिलेनारदानी द्रद्रद्र
तुंद्रतनानारेतारेतदेतनातन्नाधेल्लांधुमकिटतकधिन्नाधादा ॥
वंगाल॥ परन॥ तिनतार॥ दीमदारातिलेतानादिल्लेदानादरादीमदीमनाद्रतुंद्रदराद-

अथभैरवरागरागिनीनाम १० अथसरस्वतीमतनाम ॥

जो भैरव षड्ज में चले और षड्ज स्वर जि
सका न्यास ग्रह होवे और षड्ज कीही मू
र्छना लगे सो शारदभैरव कहलाता है ।
संपूरण होता है प्रातःकाल में गाया जाताहै
और टोडी गौरी रामकली में मिलकर ।
बनताहै सरगम इसका सरेरे गम प धनी
सस स्वर सो हरे मनमें ऐसें ही आऽऽऽऽ आवत

स रे॰
ग म॰

सारे॰ इतिस्थायी अंतरा॰ आरोही अवरोही॰

सुनले हों सभ कोई नीधपमगरे स॰ इअंतरा

अथभोग उगन सबगम कीनो २ विचारी गु

रुन पै सीषके ऐहऽऽऽऽ सारेसा सरेग म

सरेगम ससरे गम पम सरेगम पधम म

रेगमपधनि स स नीनी धनि धप धनी नि

नि धप मग धप मग पम गरे रेग मम

धुरपत मध सरे गम बनाईये स॰ इमकाठा

८ ॥ सु॰ ऋ उतरा गे व॰ म॰ उ॰ पं॰ ध॰

उतरा नि॰ व॰ अथ शोकरमतभैरव: अथ राग

ह न्यास जिसका ऋषभ स्वर हो मध्य

न भी ऋषभ को होवे सो ऋषभांशभैर

व होना हये जिसका मरम रेरेरे ममम नी

नी ध नी मरे गमप धधध पप मम गरे

मरेम॰ रेरेरे अंतरा ममम धध नीनी सानी

म रे मम॰ गगग रेरे मम नीनीनी ध

तालनीत

स रे॰
ग्र स॰

धधध पप ममम रेरे म रे ऽ सा॰ रेरेरे॰ इतिश्रो
करभैरवम् ॥ अथव्हानुमतम् ॥ जिस भैरवकी ग्रट
ह स्वर ग्रंश न्यास गंधार हो और गंधार
ही मूर्छन हो सो भैरव गंधारांश कहा है
यह भी संपूर्ण है प्रत्यषकाल में गानाचा
हीये गांधारांशका सरगम॰ गगग रेरे
मम रे सा नीनीनी धध नीसा रे स नीसग
गग मम धधनीधपमगरे स रे स॰ गगग

स्थाई ॥ अंतरा ममम धध नीनी सा नी ॥ सारे

सा ममम गग रेरे ममम नीनी धध पप

प मम गम रे म· गगगा ठाटपिछलाही

हये ॥ इतिहनुमान्मतेभैरवः ॥ अथभरतमतेभैरवः

जिस भैरवका धैवत में प्रारंभ हो अंश ।

न्यास भी धैवत हो सो धैवतांश भरत म

त भैरव होताहै ॥ अथधैवतांशभरतमत सर्गम

ताल ४ ॥ धा नी सरेगम प धानी नी धानी

स रे॰
ग म॰

धपमगा मधा नी धपमगरेमरे ऽ म धा॰ स्थाई

ग्रेतरा ममधनीनी मम॰ रेरेरे॰ ममम नी

नीनी धधध ॥३ गागग रेरेरे ममम नीनी

नी धधध पपप ममम गागग रे ऽ सा॰ ध

अथ श्रीकुम्भवेदमते॥ निषादोपभैरव:॥ नीनीनी ध

ध पप मम धध नीनी सा नी सा रे सा

गागग मम धध नीधा प मगा रे सा॰ नीनी

नी॰ स्थाई ग्रेतरा ममम धध पप मम धध

नीनी सा नी सा गगग रेरे मम नीनीनी ध

ध पप ममम गग रेरे गग सासा नीनी

अथ संगीतकल्पद्रुममतसें ॥ भैरवके पांच प्रकार

प्रथम वैस्नव भैरव संपूर्ण॰ सरेगमपधनि ७

इसकों सात्तही स्वर लगतें है षड्ज पंचम

ठिकाने परही रहते है और स्वर ऋ॰धै॰म॰

उतरते है निषाद॰ गे॰ चडे लगाते है ॥ अथ द्वि

तीये॰॥ औडव: गमधनिम॰ म॰धै॰उतरे नि॰गे

ताल ४

सव॰ ग्रस॰ चेहे॰ म॰ ग्रथ छेदठभैरवकी सरगम ध नि स

ग मग मग मध निध निध मम ग ममगमा

निधा धनि स गगग म निनि॰ध स्थाई मम

धनीमम निनि मम गगग ममम नीनी ध

धध मम मानिनि ध॰ इति भैरवः तृतीये

रामकली भैरव (जिसमें) जिसमें रामकली ।

विशेष हो क्या जिसमें पंचम स्वर बलवान

हो बहुत लगे सो रामकली भैरव होता है ।

जैसें स॰ ऋट उत्तरा॰ गं॰ च॰ म॰ उत्तरा॰ पंपं

पं प्रबल धेवत उत्तरा निषाद॰ चडा॰ मंगी

म॰ नीसगामपानी धधध पपप ममम ग

गरे गगरे सा धनिसा धानिसा गग मम

धप मम गरे सारे नी॰ इति मम पप नीनी

स नीनीसा गगग रेरेरे ममम नीनीनी॰

धधध पपप गगरे सा नी ॥ अथचतुर्थकौशि

कभैरव ॥ जिस भैरवमें कौंशिक क्या माल

सर॰
ग्रस॰

कौशा मिले सों कौशिक भैरव होताहै॰

जैसे स॰ क्र॰ उतरा गंधार चड़ा॰ तथा उ

तरा भी लगे और मध्यम उतरा पंचम

कम लगे धैवत उतरा निषाद चड़ा॰

इति ॥ सरगम ॥ सरेग म म ग ससरे ग मधा

नीध नीधा मम गग सानीध धनि सा रे

ग म गग रेरे धनि सारेग ॥ अथबहार भैरवः

जिसमें बहार रागिनी मिले सो बहारभै

रव होताहै म॰ रे उतरे गे॰ चडा म॰ उत

रा धैवत उतरा निषाद चडा गंधार॰

उतरा भी लगेगा ॥ सगामपधपमगाम

धा नीधापमगरेगमा म॰ ॥ इति दक्षिण विध भैरव

निदानम् ॥ अथ ध्रुवपद इसकें भैरव॰ चारताल ॥ कै

सेगेह जोवोरी आली आगे अवधान चे

दा ठेडी रहत निस दिन चेरी के स्थायी

हों बृंदावनतेधेनचरावननिजधामआ॰

राग

म.र.
ग्र.स.

बन मध्यमे बिरजानीये येरजोरी। कै।

इत्यंतरा ॥ इतनी बैनती मोहरी मानिनी।

मों कैहो आज अबहेंकी हूक मया करो

हरी लाडिलीजू इतनी सुनत मंद।

मुसकात भये ऽऽकाकाराम के अमृलजा

मों को पैं गान प्यारी प्रेममौन भये।

अति विकल देष लाल गरे दौरी कै

से गेहे। ॥इतिभोगः॥ इस में मानिनी नायि

का श्रीराधाजीकावर्णन ॥हास्यरसः॥ राग

भैरव॰ ॥ ताल॰ ४ ॥ ध्रुवपद॰ ॥ नायिका॰ खंडि

ता॰ भोरभए आये लाल धरन पग उ

गमगात पागलट पटीसीस बिरा

जत नैन उनींदे गतिफेंभिजान ॥ अध

रन अंजन पीक कपोलन नखके चि

न्हदेखियत गात ॥ चतुर्भुजदास गिरि

धर न भलेतुम आयेहो मोहे दिखावन

स र॰
ग्र स॰

ध्रात॰ ॥ खंडिता॰ भैरव॰ ध्रु॰ ताल ४ ॥ रैन गवाय स्या

ये हो मेरे कहा चकई मोहे कीनी कवन

नवलवनिना सेग जागे सिवसेदेमोई॰

दीनी निसजागी संकेतसेदेमोनेक प

लन नहीलीनी प्रेमरंगकेमनकीनजा॰

नी स्नावकवेकी कीनी ॥ रागभैरव॰ ताल॰ ४

खंडिता ॥ नेनिशालालसेग उटत मानी मैं

जानी पगाउग मग परत नसुधे सिथल

बमन कटिकेशराजत आनन सुदेश ।

बोलतकल्लु अटपटातवानी यहछ्बि-

मोमबनाई मिटहैं चेचल नाई पीकली-

क पल कल गाई सरदास प्रभुरीहेरहे । फ

धन्य धन्य नव कुंजरानी ॥४ राग भैरव ताल चौ-

पैदिता मैं जानिजहारिनमानि आये हो ला

लन जवचिरीयाबुहकानी पसेपर अ-

खियो रस ममानी ऊोर पग लट पटानी

८

४

अर॰
अस॰

बालजावक रंग चिह्नानी अधर अंजन॰
अकटानी विनगुन माल बनानी सवअं
ग अंग उलटे निषानी सुर दास गुननि
५ रा. भै. ४
धानी ॥ आयेहोजमोरभए ममनिस अन
त जागे अरुणवरुणनैननलिए मेरे आये
डगामगपगधरतजात बातनमें तोतरा॰
तझूठी झूठीसोंहैं काहेकोखात अनही॰
अलसात जातजिनमेंगरंगरमकीन वल

मा अरद एजीरही उनहीके उर आये हो

जु ॥ भैरव॰ ता॰ ३ ॥ खंडित॰ ॥ अनतकरतमानआ

ये पियाभोरहीमेरेमोहितो सुधभूलगई

री मोहनआवहेरे जियाकीडोरमें सुरुकी

हमसोंकहतहये टेरे तानसेन सबनारी

पे सिधारीयेतअ मनेरेह्यो जिनतननेरे॰

राग॰ भैरव॰ ताल॰ ३ ॥ खंडित ॥ भोरहीआये हो

मन भावन कवन नवल तिया संग जागे

५

सर॰
अस॰

अधरन पीक लीक तीन रात बैन नैनन

मैंनन लागे सोक अवध वधगये रहे अ

ननहीं समझनिस कहोतम पागे वलिहारी

वा॰ गिरधारी सेंदर माव पै आनहीं आए मेरे

भागे ॥ रागभैरव॰ ताल॰ ध ॥ चंडित॰ ॥ नींदन आ

वत पियाबिन मो हरी आली कैसे परे अ

वचैन घरी घरी पल छिन यिंडहि बीत

त जात रहत मावरा जोहत नैन ॥ रागभैरव॰ ता॰

ब ॥ षेउित॰ ॥ चैननआवेरी मोको आलीविनदे
खिआपने पीयाकुं एकपल रैनर सुफन
नाही दिन दीये कछु कैसे समकाहुं आप
ने जीयाकुं चै॰ ॥१॥

ॐनमः सरस्वत्यै: अथोऽवरागग्रारम्भः भैरवरागग्रारम्भः

गांधारोंशग्रहन्यासोगांधारादिकमूर्छना ॐऽवामतविदे

याज्ञेवकस्यमतेनवै १ गाममानिषा रिषभपंचमव

र्जितहे पंचमस्वरकारागाहे धैवनांशग्रहन्यासोरिपहीनो

धमान्तगः भैरवः मतविज्ञेयाधैवनादिकमूर्छना २

अथरागाणिवमतेभैरवः पंचमो नाटो मल्हारो गौडमालवः

देशाक्षेस्त्रेनिषड्रागाः प्रोच्यंतेलोकविश्रुतः ३ भार्या

बंगालि गुणकालि मधुमादवसंतकः धनाश्री अथसा

स रं
ग स.

रंगाख्य निषादांशग्रहन्यासगांधौवर्जितौडव मध्यान्हेगा
नकर्तव्यासारंगामेघवल्लभा ४ निसारेमप इति ॥

अथबंगाली बंगालिऔडवात्तेयामूर्छनाप्रथमामत:५
निमगसापा अथमलोहा धैवतोंशग्रहन्यासपंचमेपरि
पवर्जयेत् औडवासतुविज्ञेयामलोहानिसिगीयते ६
धनिसामग अथहिंडोल रिपत्यक्ताषडुर्जग्रहवसंतेगीय
तेसदा सगामधनीओकाहिंडोलोकथितोबुधै: ७ अथ
मधुमाद रिषभग्रहसंयुक्ताधगौवर्ज्याचदौडव: रेमपनिसा

प्रोक्ता सारेगामधुमादकः ८ ग्रथमोहनी गोधारो

प्रागटहन्यामे विपौवर्जितोऽव निशीथेन्टतियजामे

शोभनीगोयतेतदा गमधानिसा ग्रथदीपकः

रागः षड्जोप्रागटहन्यामविपौवर्जितोऽवः न्टनी

ययामेदिवसेगीयतेविड्रषार्जनैः १ सागमधा-

नी ग्रथलेकदहन गोधारम्टहमाचषेवीरैः

ट्रैप्रयुज्यते षगौवर्जितदोऽवाचमध्याह्नेचप्रगीय-

ते १ ग्रथमलोहाराग धैवतोप्रागटहन्यामेपंच

र॰म॰
ग्र॰स॰

मेपरिवर्जयेत् औडुवः सत्वविज्ञेयः मनोहरः निशि
गीयते १ धानिसागम ग्रथमालसिरी धैवः
तोषागहन्यामेषड्जादिकमूर्छना औडुवासत्वावि
ज्ञेयाषड्जाक्रमेणच १ सानीगमप ग्रथभूपा
ली षड्जोंषागहन्याषाषड्जादिगमूर्छना निषा
दमध्यमस्त्याज्यामध्यायोगीयतेसदा १ सारेधाः
नीग ग्रथशिवमतेन माखवा श्रीनीगौरी गदा
विहारी सिंध ५ माल्ह हमीर गुणसागर क्रौंम

गंभीर शंकरा विहागडा ७ पंचम विभास २

भूपाली कान्हरा विधुंस मालश्री पटमंजरी

५ कुंतलकमल कलिंग चंपक कुसुम रा

म लहल हिमाल ८ नटनारायण कामोद

कल्यान ग्रहीरी नायकी सारंग नटहमीर ५

चंद्रस्त मंगाल शोभा ग्रानंद विनोद पट

धन गोरा विभास ८ गुणकली ककुभ रा

मकली ललिता विशाष ५ चंद्रस्त मंगाल

म. र.
श्र. स.

शोभा आनंद विनोद हर्षन ६ केदारा

आसावरी मलार जालंधर ५४ हनुमन्मतेन ॥ शंकराभरण गांधार सहाना ॥ इति सर्वमतभेदेनजातिभेदः ॥ शिवमतेन ओडवजाति

यायेरागास्तेकथितारुद्रमतानुसारेण ॥

नादाब्धेस्तुपरंपारंनयातकश्चिद्विजाना ॥

ति १ प्रथममतः ॥ शिवविस्नुब्रह्माभ्यश्चैवनन

परम् इंद्रादिदेवतानामवैगानेनपरितुष्यंति

ततः भरहर्षिश्चैवहनूमतशिवमतस्तथा

भारतिगणराजस्यब्रह्मानारदकैन्नैवैः १

नेदिकेश्वरपार्वतीचकल्लानाथेश्वरः म

तः हाहाहूहूश्चगंधर्वास्तत्तेबुरुएवच ।

एकोनविंशन्निमतः प्रोक्तः संगीतकोविदैः

जगन्नाथमतंचान्येतानसेनमतस्तथा १

नादब्रह्मममस्तभेनादईश्वररूपिणा नादे

नजगदाधारेनादः सर्वत्रव्यापकः १ यस्मा

स.र.
प्र.स.

५

4

र्थकाममोक्षाणांइदमेवैकसाधनं सर्वदेव
मयेनादेतस्मान्नादात्मकेजगत् १ नादलक्षणं
आहतोनाहतश्चेतिस्मान्नादोद्विविधोमतः
यत्रोभयस्यसंयोगः आहतःसम्प्रकीर्तितः
आकाशसंभवोनादस्तथानाहतउच्यते आ
हतोनादमाकर्ष्यस्तथानाहतमेवतत्कान् १
एकोध्वन्यात्मकोज्ञेयोपरोवर्णात्मकस्तथा
सनादोद्विविधःप्रोक्तःनादशास्त्रविशारदैः

दीपास्त्रपल्लवः स्यातां केदार्णदेशाख्यौ ककु

भानस्य कौशिकः नटनारायणश्चैवनिरा

गाविंशतिरीरितः ॥ इतिविंशतीरागाः ॥ अथरागो

राना ॥ वराटि पिंजरीत्येको देशाख्यानतमो

गली मावनी हषनी मग्री एरिया माल

वी स्तथा खिंजनी गर्जरी टोडी पौराली॰

त्रयथाक्रमात् वागीश्वरीतथाशुद्धा मा

लवीसैंधवीस्तथा स्यीश्चाभीरीकेन्यम् मा

स.र.
ग्र.म.

वर्जकः॥ इति ॥ गीतादौ स्थापितो यस्तु स ग्रहः

स्वर उच्यते न्यासो स्वरस्तु विज्ञेयो यस्तु गीत

समापिकः १ औडवः पंचभिः प्रोक्ता स्वरैः ष

ड्भिस्तु षाडवः संपूर्णो सप्तभिर्ज्ञेयं एवं रागा स्त्रि

धामतः १॥ अथ मार्गमतविधाणे निरूपयामि॥ संगीत

रत्नाकरे॥ श्रीरागो नाटो बंगालो भासो मध्य

माषाडवो रक्तहंसश्च कोल्हासा प्रभवो

भैरवो ध्वनि मेघरागः सोमरागः कामो

ग्राहृतोरंजकः प्रोक्तोनाहृतोमुक्तिदायकः

मायेप्रकाश्यतेपिंडाततस्मात्पिंडोविधीय

ते १ आकाशाग्निमरुज्जीवोनाभेरुर्ध्वंसम

चरन् मुखोभिव्यक्तिमायातियःसनादः

प्रकीर्तितः १ नादाब्धेस्तुपरंपारंनया

नातिसरस्वती अद्यापिमज्जनभयात्तुंबंव

हतिवक्षसी १ गुरुपादमार्गेणमुक्तिदेन

तरंजके सनादस्याहृतोलोकेरंजकोभ

म.र.
ग्र.स.

6

षास्त्रयोर्हि शालेयातत्रैमोल्लवकौशिके विभा
षेद्वेमतेप्राहुर्नदेतद्वारवद्वनीः गांधारपंचमे
भाषा गांधारीभिन्नषड्जकौ देवगांधारक
ह्वेलिस्वरवह्लीनिषादिनि त्रिवर्णीमध्यमा
प्रज्ञा दाक्षिणात्याष्ठुलिंदका तेबराषड्जभा
षाचकानिगिंललितातनः
तोपेध्वनिविशेषमत्रस्वरगोविशेषितः रेज
कोजनत्रिताणोमरागःकथितोबुधैः ॥ ग्र

अथसंगीतरत्नाकरानुसारेणमार्गतालनामानी ॥ तत्रादौपं-

च ५ ॥ पांचतालमार्गकहेशिवमुखतेंउ-

त्पटाय तालमैंनमेंगीतमतकह्योसभ-

हिगिनाय चचपुटपहलेकहेतहैंचाच-

पुटीपुनजान तालमैंनमेंगीतमतक-

ह्योग्रंथपरिमान २ पितापुत्रेसाषट्क

हेउद्घट्टमेंपकधार तालमैंनमेंगीतम-

तमारगतालविचार ३ ॥ अथतालनामानि

म.र.
ग्र.स.

7

आदिनानह्धितानपुनन्तनियचन्त्रपंहिहोप

पेवमनिशेकसिंहविक्रमनानमैनकहेमो

पध रतिलसिंहलीलहै केदर्पवीरविक्रा

म श्रीरंगठेरवर्वरीनानमैनमहाविधाम ५

ग्रन्थेगिपुनियनिलग्रहेमलीलराजलीला

नाम वर्णाभिन्नविभिन्नकहेताग्रभिराम

६ राजतानपुनवर्णानानसिंहविक्रनग

जान दर्पनमिश्रिनवर्णाहेनानमैनपरमा

न ७ जयवनमालीतालहेहेमनादमिह

नाद कुक्कटलीलानकगहेमरमलीलाहें

स्वाद ८ सिंहनेदनत्रिभंगिपुनरंगामर

नवमेठ मद्वितमेठविधानमठतोनमैन

करकेठ ९ कोकिप्रियानिशाकरीराज

विद्याधरजान तोनमैनजयमंगलाविज

यानेदबखान १० मल्लिकामोदक्रीडाज

यमकरकीरतनाम श्रीकीर्तिप्रतितालपु

स॰र॰
ग्र॰स॰

न तानमैनग्रभिराम ११ बीजमविंडुमालि

म्रमनेदनमहिकामेठ दीपकछेंकीविषम

पुननानमेनग्रीकेठ १२ ग्रभीनेदग्रनेगप्र

ननोदिमहूनीनाल नानमैनएणिकह्योपुनः

(वेऊ्केका १३ विषमलतुशेघरकहेचनमा

रगकेकाल कुंडुकएकाकुमदपुननानमै

नचतरनाल १४ बालकुंदउरफोवनीरा॰

यकवेकग्रभेग नानमैनवसंतपुनग्रतिशे

ख्वविविमेग १५ म्रनाणशेषवरूपनालहे

गजकेपाथुनहोप चन्द्रमाख्वीरतिनान॰

सेनमेदनालहैसोप १६ म्रतिमेठाग्रम्रति

मठापार्वतिलोचननलोय लीलाकाणोम्र॰

तिललितहेतोनमैनहैसोय १७ राजन

गयणगाफडीललिमिईशावमान ललित

प्रियायहतान्नमैनवर्द्धनजनकम्रमान १८

रागवर्द्धनषुट्षट्हेमकलाग्रेनवक्रीडामान

म.र.
श्र.स.

उत्सवविलोकितवर्णायतिनानमैनसिंच्य·
जात १५ करुणासारसचेउहेचेद्रकला
लयजोप स्कंधद्रुतालिहंहंयुतनानमेन·
यहहोप २० मकुंदकविंदकलध्वनि
गौरीतालसमेतराजम्रगांकीनानमेनमत्र
नालगुननेत २१ मरबतिकेटाभरणा·
ह्रीश्रीरराजमार्तेड नानमेननिशोकगुनि
रत्नाकरयहमेउ २२ सूष्यमनोतरकैहत·

ह्रेचित्रकेतुकइडवान सन्निपातब्रह्मनाः

लष्ठनतानसैनपरमान २३ चन्द्रलाह्मि

ग्रहज्ञनबऊरग्रउनसन्निमहोसन्नि विघ

मघोघकल्पानष्ठनितानसैनवासन्नि २४

पेचचातवापेचधातचेद्रतालगणामेठ ः

एकतालकहिचन्द्रविधतानसैनकरमेठ

२५ रामचंद्रश्रासिद्धहैविष्ठलाष्ठनमनमा

न तानसैनमेगीनकह्योज्योंजिपमोमान

स.र.
ग्र.स.

२६ यतिमेचयपटनालिकाएथ्विकेउली

होए नानमेनहनुमनमथ: एथ्वीकेउली

जोए २७ ॥ ०३ । ३३ । ० । ०० । ००० । ॥ इंद्र

लोककेउलीकहेपातालकेउलीकार ना

नैमेनमेंगीनकहेजियमेलेहोविचार २८

विस्नुविलेबननारिकानिलकोंबडकोंब

डाय नानमैनऊोदेवफनिकनकमेरुच

लनाय २९ कनकमेरवाचक्रमेंठहलना

पुनचक्रं

ल मेवसेयोगाचन्तरस्तहैनानमैनसरमा

ल ३० विद्याधरमठवामठाचन्तरमाठ

श्रीविल गघनगायननर्तकीनानमैनपर

थिल ३१ मन्मथहेमसनोलक्षुविल्लमनो

नरहोप द्रुतपाणिकेहोनानमेनरत्नूल्वश्रन

मोप ३२ महोविचित्रविर्वतयरहश्रनपारिव

तेविवर्त श्रमेगाशिवरहेमनादशनिनान

मैनधरमेत ३३ मयोकमहोक्रमदीकहि

स. र.
ग्र. म.

कोकिलकंठभ्रमिढ विजयमेठमालेगाप्र
निमरममेठहरकंठ ३४ पउमेठीकल्ल॰
मेठवविनानमेनहरिमेठ ३५ जनकमेठ॰
जयमेठकहेप्रियमेठश्रीमेठविराययठानो
रंगवानगीर्वाणकल्यानकमल्लविशालव
ल्लभमनमानो ३६ कलापविचित्रमुद्रित
गंभीरश्रीरंगभूमिभ्रकविवर्णाहिजानो मे
कीर्णकलिंगविलोकिपराजयणमवमेठ

केनामवक्ष्मनो ३७ रुद्रतालकुरुनारविकः
झुपतालनवान तानमैनकहेमरस्वतीकेः
ढाभरणाभ्रमान ३८ नारदशारदन्नेवकहकि
नरतालविमार तानमैनयमतारकोंऊना
पावेपार ३९॥ इतितालःमार्गभेदेनसमाप्तः॥ अथ
कलावंतिद्वादशतालनामानी॥ एकतालद्वीतालः
पुनस्तृतीयचतुर्थश्लिहोप ३ेवढम्रढतालि
कहेसलफाकतालोप ४० पटतालीधंमाति

१५१२

सट.
ग्रस.

१२

काकपयतिधीमाटान कविशब्दशोनवरनन

करैंजानकृचन्द्रमजान ॥१ भाषाप्रसिद्धदे

शावर्नमानमाह । प्रथमचौतालप्रसिद्धहैग्राउ

चौतालबावान रूपकबँरोजानिपवडेचारम

नमान ॥२ रूपतालासूफाकताव्रेवटता॥

लसमेत शब्दमेनवर्नेनकरैरागतालकेहे

त ॥३ जलदतितालाधीमाकहेपटजतना

लबघान होलिग्राउरकतालमुनद्वादशता

लघुमान ५ ५ ॥ इतिकलावंतीनालसंपूर्णम् ॥ अथ

मार्गमतेन ॥ सोलोसहस्त्रश्रोरश्राठसोरागरागा

नीजान वृंदावनहरिरासमेगोपिअनकिपैहे

गोन देशादेशकेभेदमेंभिन्नाभिन्नहेंनाम मा

रगाब्रह्मादिकहेदेशिदेशपरधान अनुद्रुत

द्रुत० वराम ऽ पुनिलघु। लघुवराम। गुरुऽ

पुलित ३ वावान तीनमोमाठप्रसिद्धहेंआदि

तालपरिमान एकनावरथमारपुनिरूपकश्रोर॰

मर॰
ग्रम॰

तिताल झम्पा कफताल जैताल श्रष्टताल केदमताल द्रुतमाल चरी पेचमाली विषहटताल समग्र छतल निःसत श्रेणीतालदमताल ॥ अथ तालनामानी

श्रादितालको एक ताल कहते है ०० ।

द्वितीय तालको रूपक ०। पेचक कहते है ०००। त्रेवडा कहते है ।ऽ जलदति ताला कहते है ।०। झम्पाकना कहते है ।ऽ फ पताल ऽऽऽ बशन्तिताल ००० सीधाचौताल ॥५३॥

बडाचौताल ०।।। मध्यचौताल ।।०ऽ चन्द्रखता
ल ।।०। आडाचौताल ०।०।०००। ब्रहताल।
०।००।०००। ब्रह्मताल ०००।।०।।।ऽ इति
रुद्रताल ००।०००।०००।०।०।००। इतिता-
लि इसी प्रकार तीन सौ साठ ताल है ता
धिंधुन्नाकिटतकागिदिगिन्नाधा वाजनहिं
डिगीधिरधुमघरघिलांगाफिनक फनन
नकजिगागिजदिगाध्याधा ।। इतिमृदंगवाजानी ।।

स.र.
प्र.सं.

नकारेशंकरः प्रोक्ता लकारेपार्वतीस्मृता शि
वशक्तिसमायोगान्नाल इत्यभिधीयते १ शि
वशक्त्यात्मकेप्राणेपथशास्त्रेभवविमुक्तिदे तद
प्राणात्मकेनालेयोजानातिसनालवित् २
गीतेवाद्येतथानृत्येभातिनालेप्रतिष्ठते अथ
नालेप्रवक्ष्यामिकालरूपंजगद्गुरु ३ जन
येतेसर्वेगीतेवाद्येनृत्येविशेषता उत्पत्त्यादि
त्रयेलोकेएकनालेनजायते ४ कीटकादिप

म्नोचनाल्लैनैवगतिर्भवेत् वानिकानिचक
मीणिलोकेनालाश्रितानिच आदित्यादिग्र
हाणोचनाल्लैनैवगतिर्भवेत् बलकत्यापि
तालेनयतः कालवर्गेगतः कालक्रियायव
च्छिन्नः तालशब्देनभाप्यते हस्तद्वयस्यसंयो
गेवियोगेचापिवर्तते व्याप्तिमानोदशप्राणोः
कथाननतालसंज्ञकः ॥ अथगति ॥ आदेकतालोयं
स्मात्तोयतिचेचत्तकसल्या छितालः रूपकश्चैव

स.र.
ग्र.स.

वज्रयतालस्त्रिधाभावेन् त्रेवटोकेपतालश्चवत्र

हतालिततः परे सर्वफाकिचर्चरीचतूहचान

र्पतालिकः चतुः तालः पंचतालोमत्वीपेच

बह्लिकः षट्तालसप्ततालश्चस्त्रष्टामवि

ततः परे गणेशेनितालनामब्रह्मतालस्तथै

वच रुद्रतालोविस्नतालमविनातालस्ततः

परः राधिकातालकृष्णश्चमोहिनीचक्रता

लिका गायंतिगोपिकाजेवेकृष्णध्यानपरायना

सूचीपत्ररागभैरवका॥

प ५ ह २ अथसंगीतकल्पद्रुमः॥सर्गम॥भैरवराग॥चाकार॥
प ५ ह २ ध नि सा रे ग म प ध नि॰
प ५ ह २ इत्यस्था॰ म ध नि सा रे म ग रे सा
प ५ ह २ इत्यन्तरः स रे स स रे ग रे स
प ६ ह १ इत्याभोगः॥इतिषड्जांशभैरवसंपूर्णस्वरगामः॥
प ६ ह १ चारतार ग ग म ग रे सा
प ६ ह २ सप्तस्वरसंपूर्णमेंयोसर्गमविचार॥
प ६ ह २ सासारे सारेरे रेरेगरे
प ७ ह १ इतिगांधारअंशग्रामसर्गम॥ अथऔडवभैरवप्रकार॥
प ७ ह १ महादेवनि पंचमुखो करके
प ७ ह १ पंच स्वरका भैरव उच्चार किया
प ७ ह १ तिसका वर्णन रिषभ
प ७ ह १ औरु पंचम अवर्जितहै
प ७ ह १ खडज और मध्यम और
प ७ ह १ निषाद अनुवादीहै गंधार
प ७ ह १ वादीहै कोमलधैवत संवादीहै
प ७ ह १ रिषभ और पंचम व्यवादीहैं
प ७ ह १ इसको औडव भैरव कहतीहैं तस्योत्पते॰

सूचीपत्र राग भैरव १

ह १ सूरस्तागर॥ रागकल्याण॥ इतिरागभैरव॥ तीनताल॥
प १५ ह १ ध्रौपद
प २० ह १ इत्यस्थाई
प २० ह १ ग्रन्त्त:
प ४० ह २ इत्याभोग: भैरवराग॥ चारताल॥
प ४० ह २ भैरवराग॥ चौताल॥
प ५२ ह २ ध्रुवपद
प ५२ ह २ भैरवताल तिताल॥
प ५२ ह १ रागभैरव॥ रूपकताल
प ५४ ह १ भैरवराग॥ धीमातिताल॥
प ५५ ह १ भैरवराग तिताल॥ कडवा
प ७१ ह २ भैरवराग॥ धीमातिताल॥ रे ग म ग रे स
प ७२ ह १ भैरवराग तालमल्लफाकता स नी प नी नी स
प ७४ ह २ भैरवराग॥ कपताल॥ स नी स नी प नी स
प ७७ ह २ भैरवराग जततालए रे ग म म ग रे स
प ८० ह १ भैरवराग॥ जतताल॥ स नी म रे ग म ग रे म
प ८१ ह १ प्रबंध भैरवराग॥ ब्रम्हताल स नी स नी प
प ८१ ह १ भैरवराग॥ रुद्रताल॥ स नी स नी प नी स नी स
प ८२ ह
प

सूचीपत्रारागभैरव

सूं प ८२ ह १ रुद्रताल
५ प ८२ ह २ भैरवराग॥ लक्ष्मीताल॥ स नी स रे ग म ग रे ग रे
प ८२ ह २ भैरवराग॥ तालधमार स नी प नी सं स
प ८४ ह २ भैरवराग॥ तालएका॥ स रे ग म ग रे स
प ५२ ह २ रागभैरव चोलएकताल रे ग म ग रे ग
प ५२ ह २ इतिभैरवराग॥ गायनपदवर्णनम्॥ म ग रे स
प ५३ ह १ भैरवराग तालसवारी॥ रे ग म प रे ग म ग रे स॥
प ५३ ह १ रागभैरव तालपटताल ध्रुवपद
प ५३ ह २ रागभैरव॥ आडाचौताल॥ स रे ग म ग रे सां
प ५४ ह १ भैरवराग सवारी स नी स नी प नी सं
प ५८ ह १ भैरवराग॥ तालप्रबंध॥ रागसागर॥
प ५८ ह भैरवराग तीनताल चतुरंग॰ स नी स नी प
प ५८ ह २ होमरी॥ तालदादरा॥ नी॰ प नी सा नी सं
प ५९ ह १ अथगतवर्णनम् तीनताल रे नी सा नी
धीमा॥ भैरवराग॥ गतविलम्बत॥ डिड डा डिड डा
प प्रथमआवृती सा रे ग म ग रे सा डी डाडा डा
द्वितीयआवृती सा रे ग म प ध सां नी सा
तृतीयआवृती सा नी ध प म ग रे सा

प ९९ ४ १ इतिमसीनखोने गत ऋषभ स्वर आद वर्णनम्॥ द्वितीय
प ९९ ४ १ गतमसीनखोने खड्ज स्वर आद
प ९९ ४ १ सा नी सा नी प नी सा
प ९९ ४ १ प्रथमआवृती॥ सा ग म गमरे मा
प ९९ ४ १ द्वितीयआवृती सा ग म नी प प म
प ९९ ४ १ तृतीयआवृती म प नी म रे ग म
प ९९ ४ २ चतुर्थआवृती
प ९९ ४ २ पंचमीआवृती॥ ग म नी प प म ग म॥ पलटा
प ९९ ४ २ इतिखड्जस्वर
प ९९ ४ २ अथतरतीयमसगंधारस्वरआदवर्णनम्॰ ग म ग रे स नी स म
प ९९ ४ २ प्रथमआवृती ग म नी प प म प म
प ९९ ४ २ द्वितीयआवृती ग म प नी स ग रे नी
प ९९ ४ २ तृतीयआवृती प नी प प म प म ग
प ९९ ४ २ चतुर्थआवृती॥ इतिगंधारस्वरवर्णनम्॥
प १०० ४ १ ध्रुवपद रे ग म ग रे स॰
प १०० ४ २ ख्यालतीनताल॥ स नी स नी प नी स
प १०० धाधा २ टपा तीनताल स रे ग म प प नी स
प॰ १००श्री हो ठुमरी॥ रे ग म ग रे म
प उद्धारनाम॰ चतुर्थप्रकाशगत तीनताल रागभैरव॥ धैवतस्वरआदवर्णनम

सूचीपत्र राग भैरव

सं॰ ५

प	१०१	६१		प नी स ग रे ग
प	१०१	६१		प्रथम आहती रे नी स नी प नी स
प	१०१	६	२	द्वितीय आहती ग म प नी स
प	१०१	६१		तृतीय आहती ॥ पलटा संपूर्ण
प	१०१	६१		स नी ध प म ग म रे ग रे स
प	१०१	६	१	चतुर्थ आहती ॥ इति षेवास्वर आदगत संपूर्णम्
प	१०१	६	२	पंचम प्रकार निखादस्वर आदगत स्वर वर्णनम्
प	१०१	६	२	भैरव राग तीन तार गत [illegible]जवोने
प	१०१	६	२	नी सा नी रे सा रे नी सा नी प नी सा॰
प	१०१	६	२	इति प्रथम आहती॰ नी सा॰ग॰ म प प प म ग
प	१०१	६	२	द्वितीय आहती
प	१०१	६	२	ग म ग रे ग म प ग म ग
प	१०१	६	२	तृतीय आहती ग रे सा नी सा॰
प	१०१	६	२	चतुर्थ आहती इत्यस्याई
				ग म प॰ नी सा नी सा
प	१०१	६	२	प्रथम आहती॥ नी रे सा रे नी सा
प	१०१	६	२	दूसरी आहती . सस्के
				म प म प नी सा [illegible] स॰
प	१०१	६	२	तृतीय आहती नी ग॰

5

प १९ पृ २ नी सा ग ग म रे सा वतर्थग्राहतं॥१ इति षाड

प १९ पृ २ स्वरग्रादगातवरतानम् ॥:॥

ग्रंग्रथभैरवरागम॥ प्रथमस्त्री॥ मधुमाधवी नामवतानम्

प १४ पृ १ मधुमाधवी रागणि भैरवकी स्त्री

प १४ पृ १ पहली ग्रहणोदयमम

ग्रीषम रितो प्रजापति देवता

प्रकृते छंद हनुमान ऋषि

क्लींबीज शृंगाररस स्वकीया नायका

धृष्टनायक सुंदरलंकार समस्वर संपूरण

मध्यमांशग्रहन्यासं मध्यमादिकमूर्छितं

मधुमाधवीप्रातर्गीयंते संपूरणं भैरविल्लरीं

दोहा॥ कल्पद्रुम॥

प पृ४ पृ २ मध्यमग्रह माधुमाधवे पूरण जाति बनाइ

प १४ ... ग्रीषमरितमय धनीस दिग सगर मातदिग गा

... श्री रूप १ १ भैरवकि रागनी मधुमाधवी

प ... हारनाम २. तिसकावतानसंपूरण मानस्वरकी ॥·

 १

स्वीचक्रगणेश (मध्याप)

स्थ: १	प	१८४	ह २	अथ ध्यानम्
	प	१८४	ह २	इति ध्यानम्
	प	१८४	ह २	ॐ ग्लौं पंपंकंपें स्वाहा
	प	१८४	ह २	ॐ पं आवाहनम्
	पं	१८४	ह २	ॐ ग्लौं अः इति मागणः
	प	१८४	ह २	धूप चंदन कर्पूर दीप
	प	१८४	ह २	ॐ गंधं नमः
				ॐ पुष्पं नमः
				ॐ धूपं नमः
	पं	१८५	ह १	ॐ दीपं नमः
	पं	१८५	ह १	ॐ नैवेद्यं नमः
	प	१८५	ह २	अथ कल्पद्रुमा ध्यानम्
	प	१८५	ह १	श्लोक
				आलिंग्याङ्कं वनं हि प्रियमदद्रुप
	प	१८५	ह १	लिंगमं चैव वक्षोत्
	पं	१८५	ह १	नेत्रेऽङ्गः खस्यदप्रसू कं … वयनं
	प	१८५	ह १	हृदेशं मदामात् खर्वस्कृत मा
	प	१८५	ह १	पारीवं हनुनिमितम … सम
	प	१८५	ह १	

पंचमसओयारी॥ पंचम सओयारी पंचदश मात्रार ताल यथा धि नाक् धि
नाक् नाक् धुना केटे धुना कत धुना केटेनाक् धुना केटे ताधि नेधा
केटेनाक् ॥ कथन उपरोक्त वोलयोगे गीतादिर सहित संगति क
रा याय तखन ओर सकल वोलेर उच्चारण किंचित्कालसापेक्षः तत्र
त्र पांच पांचटी ह्रस्व अक्षर उच्चारणेरकाल अर्थात् क ख ग घ ङ
एई पांचटी वर्णेर उच्चारणकाल एकमात्राकाल वलिया व्यवहृत हे
इहा संगीतशास्त्रसिद्ध ॥॥॥

स्वरनिर्वंधनीप्रकरण॥ डारा डारा इत्यादि वोलयोगे यथा निर्दिष्ट मात्रानुया
यिक ताल एवं स्वरवर्णविभूषित अतिमनोहर रागे संवद्ध हईया नाना
छन्दे सेतारादि यंत्रे याहा वादित हय संस्कृतसंगीतग्रंथकारेरा ताहा
के स्वरनिर्वंधनी कहेन सचराचर गायकेरा स्वरनिर्वंधनीका गत वलिया
व्याख्या करेन और गत आवार यदि एकसारे वादित हय ताहा हईले उ
हाके लेहारा वले लेहारा एवं गत एई उईटीई पारस्य शब्द सामान्यतः
स्वरनिवद्धनी मात्रेर प्राय दुइटी करिया पादवाभाग थाके प्रथमटीर
नाम आस्थायी एवं परेर टीर नाम अन्तरा आस्थायी एवं अन्तराव्यती
त वादकेरा समस्थान जे राग स्थिर राखियास्वीय स्वीय इच्छामत और उ
अतिरिक्त पादविशेषद्वारा गतेर विस्तार करिते पारेनः स्वरनिर्वंधनीर
अतिरिक्त ओ रूपपादनिचयके पारस्यभाषाय उपज कहे संस्कृत भा
षाय उहार नाम तत्द्दतानिका प्रत्येक तद्दतानिकार असंख्य सम

अथ मालिगौडाद्वितीयपुत्रप्रारंभः ॥ धैवतांशग्रहंन्यासं धैवतादिकमूर्छ्छ

ना भैरवंद्वितीयपुत्रस्य मालिगौडावकथ्यते धनाश्रीविभ्रीरागा

मालवभैरवसंयुतं मालिगौडवनामानिश्रपराक्रेनगीयते

दोहा ॥ धैवतअंशग्रहन्यासहै धैवतहीग्रहजान भैरवद्वितीयपुत्रहै

मालिगौडपरमान ॥ दोहा ॥ श्रीरागधनासिरीमालवभैरवसंग हती

यपहरयेगावहेमनमैवडेग्रनंग ॥ संगीतकल्पद्रुमः ॥ धैवतांशग्रहंन्या

सं मालवश्रीवसंयुतं धनाश्रीमिश्रतायेनामालिगौडासकथ्यते

कार्तिक ॥ ईरागमालिगौडानाम ॥ भैरवरागका ॥ दूसरपुत्रहै ॥ और ॥



सं॰र॰
ग॰सा

चारवागका संयोगहोकर इसरागकी उत्पती होतीहै और धैव

तस्वर इसमें अंशग्रह और न्यास और धैवतस्वरहैं और इराग

संपूरणए सातस्वरकाहै ॥ और सूर्यउदय त्दतीई पहरमें इस

को गायनकर्तीहै ईसकि सरगमहै इसकेद्वारा इराग बन

ताहै ॥ः धैवत सुरव जिसको तीवर पंचम कहतेहै ओ

अपनी श्रुतीपहली रोहिणीनामापर होताहै अर्थात ती

नश्रुतीका धैवतहोताहै दोश्रुती अपनी छोडकर एक श्रु

तीका धैवतहोजावे उसको पूर्वधैवत कहतेहै भैरव राग

मैभी ॥ इदि धैवत ॥ लगताहे ॥ इसरागमे भैरवबलताहै इसवासते

इसको भैरवका पुत्रकहताहै ॥ धैवतपूर्व मंदरग्रामवाला

निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रा

मवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम

मध्यग्रामवाला पूर्वधैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम-

वाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला गंधार

मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला

इसकस्थाइ ॥ ध नी सा रे ग म प ध म ।

सं·रं·
मं·सा·

ग रे ग म प रे सा· ॥ इत्यस्थाई ॥ निषाद् मध्यग्रा

मवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवतष्वे मध्यग्राम

वाला पुनः धैवतष्वे मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्राम

वाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पु

नः धैवतष्वे मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम

मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्राम

वाला षड्ज मध्यग्रामवाला धैवतष्वे मंदरग्रामवाला नि

षाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदर

ग्रामवाला इरवधैवत मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला

मध्यम मंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला मध्यम मध्य

ग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला॥ ऋषभ मध्यग्रामवाला ष

ड्ज मध्यग्रामवाला॥ इत्यन्त्र॥ अथालाप॥ नी नी प रे

नी सा प ग रे सा नी प प म

ग रे सा म ग रे सा सासा नीरेसा

सा नी रे सा नीपप मगरेसा सारेसा नीधा

नीपप मगरेसा पपरेसा पपरेसा मगरेसा नीपम पमगरेसा

सं· र· म· सा·

सारेसा सारेगा रेगाम गमप मपधा पधनी धनीसा नीधप

धपम पमग मगरे गरेसा ॥ इतितानसेनअन्तरः ॥ इतिमालिगौ

डाद्वितीयपुत्रः समाप्तः ॥८॥ अथध्यानम्॥ श्यामलताम्बूलहस्तंकरधृतकुसुमदंवेणा

वाद्यमतालं चन्द्रार्कौवसभालेपिकमदहुंडवचनंयत्नपतेः सलिसं

देवेन्द्रादीशयुक्तंशिरसिसमकुंदंपीतवस्त्रंप्रभाते ॥ गायन्तिस्वर्गलो

केदनुजसुरगणाःपंचमंचात्रसंतः ॥ इतिपंचमरागभैरवस्यद्वितीयपुत्रः ॥

कैसाहैपंचम श्यामरंगहै तांबूल हस्तविषैहै कुसुमदफूल हस्तवि

षैहै वीणा बजाताहै तालगाइके चंद्रमासूर्य मथिपरलगाहै धार

लकीयाहै पिककीन्याई अर्थात कोकिलकेन्याई कोमल वचन

बोलनाहै उसकर्के यतीयोंने आव्हनकीयाहै देवता इंद्र महेश का

के सभावनतेहै मकुट धारणाकेईहै वस्त्रधारकेहै इहस्वर प्रभात

विषे गायनकरतेहै देवता गणोनेसारी स्वर्गलोकविषे गायनका

तेहै पंचमनामहै संपूर्णसातस्वरसे गावना अस्यपंचमराग मंत्रस्य

तंबुरऋषिः उष्णिकछंदः इंद्रोदेवता क्लींबीजं ऊंशक्तिः नमःकी

लकं ममोमसन्नार्थेविनियोगः ऊंक्रांअंगुष्ठाभ्यांनमः क्रींतर्जनी

भ्यांनमः क्लींमध्यमाभ्यांनमः क्लौंअनामिकाभ्यांनमः क्लेंकनि

सं॰२॰
प्र॰मा॰

ष्ठकाभ्यांनमः ॐक्रींक्लींकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥इतिकरन्यासः॥

क्रांहृदयायनमः क्रींशिरसेस्वाहा क्लींशिखायवौषट् क्लौंकवचा

यहुं क्लैंनेत्रत्रयायवौषट्॥ॐक्रांक्रींक्लींअस्त्रायफट् ॐक्रांक्रींक्लीं

क्लौंक्लैं॥॥॥इतिमंत्रः॥



सं॰ २॰
म॰ सा

अथआभीरभैरवरागस्यतृतीयपुत्रोत्पतिवर्णनम् ॥ गांधारांशग्रहंन्यासंगांधा
रादिकमूर्छनां अपराह्णेतुगायंतिआभीरंभैरवंसुतं ॥ दोहा ॥

गंधान्यासगांधारस्वरग्रहवीवादिजान अग्रानाभीरजोगावहै ॥ १ ॥
भैरवपुत्रप्रमाण भीमपलाशीजोडकेऔरअहीरीसंग संपूर्णा ।
स्वरसातकोगावेलावेरंग ॥ ई आभीररागनामा भैरवरागका ती
सरापुत्रहै और इसको तीसरि पहर गायनकर्ताहै भीमपला
सीजोडके औरअहीरीसंग संपूर्णास्वरसातकोगावेलावेरंग
इनतीनोका संयोग होनेकरके इसरागकि उत्पती होतीहै

गेरुभीभैरवीकुण्ड इससेमिलताहै इसीवास्ते भैरवकापुत्र· कहतीहैं ओर कई इसको दीपकका पुत्रभी कहतीहैं मगर दहुहकीकत· असलमें भैरवकापुत्रहै क्योंकी रागएक पवन का संयोगकरके शरीर वनाहोयाहै कोइ ध्यानकरकेनही· एकत्रकेवल कथनमात्र पयहोवे तोवायामेंहोगा अरुवायो काखरूप स्थलमहैं इसकरके प्रतीतनहीहोताहै अरुफेर देवताहै देवताका मनुष्यको प्रतीतहोनाकठिनहै इसक रके शास्त्रकारोने वायुकाप्रमाण अर्थात स्वरका प्रमाण

सं॰ २॰
प्र॰ सा॰

१॰

रचकरके इसप्रकार वंशप्रमाण कियाहै कि जिसछेयो रागोंमें

सि जिसरागकेस्वर जिसरागनीमें वा रागमेंमिली ओरु उन

स्वरोंसे रागरागनीबने उसरागको वंशकहतेहैं उसरागका

जिसरागके छेवोरागोंमेंसे स्वरमेली रागनीहोइ उसको इस्त्री

कहतेहैं रागहोवा उसको पुत्रकहतेहैं दृष्टांत जैसे कलंग्रा

रागमें भैरवका अंशमिलताहै उसको भैरवका पुत्रकहतेहै

इसीतरा सबरागकोंजानना इसवासते निश्चयकरके हछहै॰

इस्आभीरराग भैरवकापुत्रहै ॥ दोहा ॥ एकरागएमिरागसंगमिल॰

करवांपैमूल उपजै जो निसयोगाते श्रवणास्वरअनुकूल ॥ दोहा ॥

संपूरणमानस्वरकोवीसश्रुतेपरमान ह्वैस्वरकोमललाइकेश्रु

णमनकीजैगान ॥ गंधार मध्यग्रामवाला कोमलमध्यम

मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रा

मवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला

षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः नि

षाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंचम

मध्यग्रामवाला कोमलमध्य मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्य

स॰ र॰
म॰ सा॰

ग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मंदरग्रामवा

ला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मं

दरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रा

मवाला ऋषभ मंदरग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला पुनः

गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदर

ग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इसस्थाई ॥ अथांतरम ॥ ग

म ध ध नी रि स नी ध ध म ग

रे स नी ध ध म ध ध नी रे

ग ग धे नी सा १ स्थाई॥ अथान्तरम॥ गंधार मध्यग्राम

वाला कोमलमध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला·

ऋषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्य

ग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला गंधार

तारग्रामवाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला

कोमलधैवत मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज

तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्य

ग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमलमध्यम मध्यग्राम

सं॰ १॰
म॰ सा

१२

वाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभ मध्यग्रामवाला॥ निषाद

मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला॥ ॥ इत्यन्तः॥ अथालापः॥

ग म ग रे नी सा ग म ग रे सा नी सा

सा नी ध प म ग रे नी सा ॥ इत्यन्तः॥

इतिश्राभीररागभेदस्वरालापस्तृतीयप्रश्नवर्णनम्॥

अथ ध्यानम् अनंतरूपी मधुरस्वरज्ञो गुणान्वितः संभृतसर्वविद्य

वरावरावेष्टितगौरदेहः ध्यातो मधुलीकहितायमद्भिः॥ इति ध्यानम्॥

संगीतकल्पद्रुमेनमत॥ आभीरस्यवर्णनम्॥ विलोकयन्निदधिकंगंभीरे वि

लोकयंतिश्रुभगातिरोमापितस्लनेकणुलक्षणएणन्वाभीरीको

काण्हदयस्यततनस्यात भीमपलासीसिंदुरावणवास्वरसंपुताम

धआभीरी जायतेतस्याधैवतस्वरग्रहस्यव॥ इतिआभीरी॥ धैवतांशा

ग्रहन्यासस्संपूर्णनारदभरतेमतविभासभैरवयत्रव्रवणोदयप

मीयते धनीधपमगपगरेसारेगरेसासारेसानीधनीधगरे

सानी॥॥॥ संगीतकल्पद्रुम॥ इसप्रकार आभीरराग होताहै इस

काकहना धैवतग्रहहै अरु ओरप्रकारहै धैवत मंदग्राम

सं॰ रं
प॰ खा

१२

13

वाला पंचममंद्रग्रामवाला पुनः धैवत मंद्रग्रामवाला निषा

द मंद्रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोमलऋषभ मध्यग्रा

मवाला गंधार मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत

मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला

निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला, षड्ज तारग्राम

वाला ऋषभ तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद

मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवा॰

मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल

मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला

पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम

मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवा

ला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ ॥ गः ॥ इत्यस्थाई ॥ ध प ध नी

स रे ग प म ग रे स स रे ग प

म ग रे स स नी प प म ग रे

स ग रे स नी प प म ग रे स स

रे नी प प म ग रे स नी रे स ग

सं॰ १॰
ग्र॰ सं॰

रे ग रे म म नी प नी प प प प म

ग प म ग रे नी सा ॥ इत्यस्थाई ॥ धैवत मध्यग्रा

मवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला को

मलरिष तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला मध्यम तारग्रा

मवाला गंधार तारग्रामवाला कोमलरिषभ तारग्रामवाला

षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्य

ग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवा

ला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला कोमल

रिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवा-

मध्यम मंदरग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला धैवतमंदरग्रामवाला

निषाद मंदरग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला गंधार मध्य

ग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत

मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गं

धार मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला निषाद मंद

रग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ इत्यलम्॥ प नी स रे

ग म प म प म ग रे स नी स नी

स०१०
ग्र०सा०

ध रे स नी ध प म ग रे स ध प म प म म

प ध नी स रे ग म प ध प म ग रे स

स नी स ॥ इत्यन्तरः॥ अंतरंसमाप्तः॥ इतिश्रीआभीरीरागस्यभैरवस्तृतीयपुत्रः॥

तीसराभैरवकापुत्र इहश्रीआभीरनामकेध्यानकीभाषा कैसाहै अत्यंत

रूपवालाहै अरु मधुरस्वरहै अरु स्वरोंका जाननेवालाहै अरु गु

णे करके संपन्नहै अरु विद्या उपार्जन कियाहै अरु अच्छीचेष्टाहै

अरु गौर देहहै अरु लोकमें प्रख्यातहै अरु संपूर्ण लोकोंको प्रि

तहै गांधारांशग्रहंन्यासंपूर्णापरिकीर्तितः इहश्रीआभीरगांधाराख्या

तोवीरेपराह्नके गीयतेप्रोष्ठः गांधारांशाग्रहन्यासहै अरु संपूरण

स्वरवालाहै अरु अपराह्ननाम चारघडीपीछेसे सांजतक वी

चमहैसे गायाजाताहै आभीरनाम रागस्यसोरभऋषिस्मृतः

सोमस्तदेवतानामउष्णिकछंदः प्रकीर्तितः संसोमबीजंकीलकं

सौंसौंशक्तिरुदाहृतः संसोमायेतिमंत्रेणइष्टार्थेविनियोजयेत्

आभीररागका सोरभऋषिहै अरु उष्णिक छंदहै अरु सोमा

देवताहै अरु संबीजहै अरु सौंशक्तिहै सौंशक्तिकीलकहै

अरु संसोमायनमः इहमंत्रहै जपसंख्या १००० अरुप्रेतवस्त्र

सं॰ २॰
प्र॰ सा॰

१८

16

है अरु चंदनश्वेतहै अरु कमलपुष्पहै अरु घृतदीपहै अरु यव
अगर धूपहै अरु खीर नैवेद्यहै अरु इलाचंड समर्पणहै इसप्र
कार पूजनकरके गावनेसे गणप्रसन्न होताहै ॥

प ९ ष १ इस बंगाल रागका ऋषि सोमभहै
प ९ ष २ अरु गायत्री छंदहै अरु अग्नि देवताहै
प ९ ष २ अरु रंबीजहै अरु स्वाहा शक्तिहै
प ९ ष २ अरु ड्रंकीलकहै अरु रंड्रं स्वाहा
प ९ ष २ येमंत्रहै अरु जप संख्या १२००
प ९ ष २ हुते दीप चंदन धूप मालपंग
प ९ ष २ नैवेद्य रक्तपुष्प इसप्रकार करके
प ९ ष २ पूजन जप करणे करके रागप्रसन्नहोताहै

प ७ ष १ अथरामायणरागगीतप्रारंभः॥ रागभंगाल प्रथम पुत्र॥भैरवका
प ७ ष १ रागभंगाल तालगीत
शंभुचरित सुनि सरस सुहावा
भरद्वाज मुनि अति सुख पावा
प ७ ष १ रागभंगाल॥तालगीत॥
ष ७ ष १ रागभंगाल॥सोरठा॥तालगीत॥
प १५ ष १ रागभंगाल॥तालधमार
प १९ ष २ रागविभास॥तालधमार॥
प १९ ष २ निज भ्रम नहिं समझहिं अज्ञानी
प्रभु परमोह धरहिं जड़ प्राणी

सू॰ प २२ पृ १ रमाॅंगाल॥ रागविलावल॥ अलेया॥तालचंचल॥

१७ रागविलावल॥तालअलेया॥

प ३१ पृ १ सोरठा॥रागरामकली॥

तीनतार

17

प १८ पृ२ रागरामकली तीनतार ॥

इसनगरेमेंकोइबोलताहै इसनगरीके
दसदरवाजोंकोइएकब्रह्मडोलताहै
आतेजातेकछूनहीदेखानानाराग रंग
बोलताहै सागरनागरसकेउजागर
सतगुरुभेदइहखोलताहै विहाग ठुमरी
सरपडदा कासंग खेलो में होरी हमरी
तो संगकी सब मत वारी भर पिचकारि
मुख पर मारि बोर दई रंग सारी स

पंचमसओयारी॥ पंचम सओयारी पंचदश मात्रार ताल यथा धि नाक् धि
नाक् नाक् धुना केटे धुना कत धुना केटेनाक् धुना केटे ताधि नेधा
केटेनाक् ॥ कथन उपरोक्त बोलयोगे गीतादिर सहित संगति क
रा याय तखन ओर सकल बोलेर उच्चारण किंचित्कालसापेक्षः तन्म
ध्य पांच पांचटी ह्रस्व अक्षर उच्चारणेर काल अर्थात् क ख ग घ ङ
एई पांचटी वर्णेर उच्चारणकाल एकमात्राकाल बलिया व्यवहृत हे
ईहा संगीतशास्त्रसिद्ध ॥॥॥

स्वरनिबंधनीप्रकरण॥ डारा डारा ईत्यादि बोलयोगे यथा निर्दिष्ट मात्रानुया
यिक ताल एवं स्वरवर्णविभूषित अतिमनोहर रागे संबद्ध हईया नाना
छन्दे सेतारादि यंत्रे याहा वादित हय संस्कृत संगीतग्रन्थकारेरा ताहा
के स्वरनिबंधनी कहेन सचराचर गायकेरा स्वरनिबंधनीका गत बलिया
व्याख्या करेन और गत आबार यदि एमत्तारे वादित हय ताहा हईले उ
हाके लेहारा बले लेहारा एवं गत एई दुईटी ई पारस्य शब्द सामान्यतः
स्वरनिबद्धनी मात्रेर प्राय दुयटी करिया पाद वा भाग थाके प्रथमटीर
नाम आस्थायी एवं परेर टीर नाम अन्तरा आस्थायी एवं अन्तरा व्यती
त वादकेरा समस्थान ओ राग स्थिर राखिया स्वीय स्वीय इच्छामत और ओ
अतिरिक्त पादविशेषद्वारा गतेर विस्तार करिते पारेनः स्वरनिबंधनीर
अतिरिक्त ओ रूपपादनिचयके पारस्यभाषाय उपज कहे संस्कृत भा
षाय उद्धार नाम त्वड़तानिका प्रत्येक त्वड़तानिकार अन्तेई सम

सं॰ र॰
प्र॰ सा॰
१५

स्थान स्थिर राखिया प्रथम पाद आस्थायी प्रदर्शन करा कर्त्तव्य॰
संगीत गुरु भरताचार्य्य वलेन षड्जादि सप्त स्वर मंडित श्रुति गमक प
वं मूर्च्छनादि विभूषित लोकचित्तहारी ये ध्वनि विशेष ताहारनाम राग
कथित आछे पृथिवीर सृष्टिकाले भगवान् ब्रह्मा प्रजा रंजनजन्य छ
यटी ऋतुर अनुसारी करिया आदि छयटी मात्रराग प्रथमे प्रचारकरे
न यथा: ॥ श्री॰ वसन्त पंचम मेघ भैरव एवं नटनारायण अनन्तर
छत्रिशटी रागिनी छयटी रागेर भार्य्यारूपे क्रमे कल्पित हय और छय
राग एवं छत्रिशटी रागिनी इहादिगेर परस्पर मिश्रणे आवार वहुतर
उपराग एवं उपरागिनीर क्रमशः सृष्टि हइया आसितेछे उक्त राग रागि
नी सकल शुद्ध सालंका एवं संकीर्ण एइ तिन जातिते विभक्त ये सकल
राग अन्यरागेर संश्रवेना जन्मिया स्वतः सिद्धरूपे प्रतिपन्न हय ताहादे
र नाम शुद्धजाति कथित आदि छयटी राग व्यतीत शुद्धजातीय राग आर
नाइ छइटी रागेर मिश्रणे ये सकल राग जन्मे ताहारा सालंका जातीय:
आर वहुतर रागसंयोगे ये सकलराग जन्मिया थाके ताहादिगके संकी
र्णजातीय राग वले सचराचर संकीर्ण जातीयरागेर भागये अधिक देखि
ते पाओयाय एइ तिनजातीय रागेर प्रत्येकेइ आवार औडव षाडव एवं सं
पूर्ण एइ तिन श्रेणीते विभक्त हइया थाके ये सकल राग पांचस्वरे मण्डित
अर्थात् पांचटी स्वरे संपन्न हइया थाके ताहारा औडव श्रेणीभुक्त ये राग
गुलि छय स्वर विशिष्ट ताहारा षाडव (२) श्रेनीय और ये रागसमूह
सात स्वर विशिष्ट ताहारागुलिके संपूर्णश्रेनीभुक्त राग कहे (३) षड्ज

अथपत्निसागरम्दंगाध्यायप्रारंभः संगीतरत्नाकरे अथमृदंगवादितवाणि॰
परन चौताल नाधीशुन्ना नथा धीधीटे किटि गिदि गननुधा नना धी धी धुंधुं
नाना थिरर थिरर थिलांगधा धाधिननक धाधिननक धिननक तिटिकिता गि
दि गिन्नाधा धुंधुंधिट धिट धिट धिट धागे धिट धिट धागे नरधा दुंदुं नट त
नकेनर किटि तक ता गिडत धाधिताक धाधिताक धाधा धिताक धाधिताक
धाधिताक धाधिताकधा धाधिताक धाधिताक धा ॥॰
वंगाल॥ चौताल॥ जैकालीकल्याणीखप्पधारणीगिरिजाचन्स्यामाचण्डीचामुण्डाछत्र
धारिणी जगजननीज्वालामुखीआदिजोतअनन्तादेवीअन्नपूर्णाआनंदीतरनतारि
णी जोगिणीजयरत्नाकरनीविंदुवासनीललितावड्डचराभवानीअसुरदलनीम
हिषासुरमारणी हिमगिरिहिंगलाजरानीकाश्मीरीसारदाकामरुकमत्तानजेल
जावैजनभक्तसुखकारिणी॥ वंगाल॥ चौताल॥ सर्वांगीसर्वकलाशक्तिसारदासरस्वती
स्यामासुंदरीदुखकरनीसुखहरनी कामरुकमत्ताकामदायनीकालीकल्याणी
दुष्टदरनी कमलवदनीकमलेखणाकारणीकाश्मीररानीकेलासीकालहरनी परमेश्वरी
पार्वतीपरमपुन्यपावनीतुगराजदासस्मवरनीमहाकालीतारनतरणी॥ भैरव॥ वंगाल॥
चौताल॥ तुमहोगणपतदेवबुधदाताशीशधरेगजसुंड जेईजेईथावैतेईतेईफलपा
वैचंदनलेपकियभुजदंड सिद्धेश्वरीनामतुमारेकहियतजेविद्याधरतिनलोकमथ
सप्तदीपनवखंड तानसेनतुमकोनितसुमिरतसुरनरमुनिगुणीगंधर्वपंडित॰
वंगाल॥ चौताल॥ महादेवआदिदेवदिवादीदेवमहेश्वरईश्वरहर नीलकंठगिरिजाप
तिकैलाशवासीशिवशंकरभोलानाथगंगाधर रूपवड्डरूपभयानकवाघम्बरअंब
रखपरत्रशूलकर तानसेनकेप्रभुदीजेनादविद्यासंगतसोगाउंवजाउंवीनकरधर॰॥

बं॰
सं॰ र॰
प्र॰ सा॰

१

बंगाल॥ चौताल॥ अनन्त ब्रह्मांडकेनायक परंब्रह्म श्रीश्रीधरमहाराज कृपासिंधु
भक्तपाल सुखकरन कृपाल गरिबनिवाज यहविनती सुनलीजे तेरो अनन्त नहींत
अनल सुजंतोहे बांधु भुजपर जाप दुखभाज वेनु प्रभु आदि अलघ अगोचर निरंजन
निरंकार भक्त काम कोटी कोटी रूपधरे सन्तनशिरताज॥ ब्रह्मतालप्रबंध॥ बंगाल॥
नीलनीरजबरनतन स्याम सुंदर बरत्रभंग कटितट पीतांबर बाजत मणिनूपर नांच
त सुधंग ब्रह्मतालप्रबंध धुंनु नुनु नुंनुं नु दिग दिग दिग दिग थेई थेई तथेई थेई कु
ननुनु फंता फोंता फांफां आनंद दैनानन्द सहस्रानीधपमा नीनीनीधपमपमप
मपमगरी सरिगग मरेगरे गमपमपधनीग मगममप आएत्रकटथकटनुकीथंकी
तकीटफेंत्र फां डिगी डगी खरखथखखभजे छीं कीथेई थेई तततत थेई थेई ताधी लांगया॰
बंगाल॥ रूद्रताल॥ शिवस्वरूप पंचानन त्रिपुरारि त्रई लोचन व्रषभवाहन जटाजूट चंद्रभा
लसिर गंग अघमोचन एककर त्रशूल एककर डवरु अंग भभूत संग वेरोचन काम
दहन केलासेश्वर राग रंग गुन गावो करो ध्यानसोचन॥ तालविल॥ बंगाल॥ चत्रभुज
शंखचक्रगदापम क्रीट मुकट सीस कौस्तुभ कमणि साजे लक्ष्मीसंग सोहे पीतवसन
गरुडवाहन जेजे विश्वरूप सरूप सोभाराजे उरभ्रगुलता कमलनयन करुनासा
गर जे जे कारसमस्हरकरत जे हीनमत अजशिव इंद्र समाजे॰॥ विलभैरव॥ बंगाल॥
पमाभोरभई मोरी अंखिअं विपिन में मोरे पियाकी छवि नितनई साहआजमरे वलज
दपजाकदेसोसनसदेय बंगालपकताल॥ आपजु आप भोर भले ही सब निशजागे
इगअनुरागे पागे रंग तवोर भले ही आवो वेहो विंजन फुराउं चक्रत भपनवकु सुम
किशोर आनंद घनरससवससी छीवरदेवाडू ओरतें भले आपजोर॥ भैरव॥ बंगाल॥ सवारी॥
अनीउदासतीयां यां णीवोरां कणा देमनावणानु चल्ले जीदाडी चुमाय रगलपायपाय

पल्लेखोकपेरीले सिरनुमलिसमकायविकायभिलि ॥॥ भैरव॥बंगाल॥चौताल॥
मोहनस्वष्टकेआधारतनकोंअवराखलीजियगोपाल नैनप्राणसखदीजेतनतेंउखे
हरकीजेहमनीविनतीमेरेसुनलीजियहाल पतितपावनकरुणासिंधुदीनदुखभ
भंजनअनेकरूपलीलाधारीभक्तवछलजगजगभयकृपाल मदनमोहनमधु
सूदनमुरारगजसुदामाद्रोपतिसहायकरितांनसेनप्रभुभक्तप्रतिपाल ॥
भैरव॥बंगाल॥चौताल॥ प्रथमउठप्रातहीहरिहरिहरिहरिररेमनमेरेयातेहोवेसु
फलअष्टमजाम यहलोकपरलोककेस्वामीवैकुंठहोवेविश्राम दीनदयालकृपाल
भक्तवत्सलभक्तजननअभिराम वेजवावरोरावरोकहापकेअवकाहेकुंभटकत
चौरासीलखधामधाम ॥ भैरव॥बंगाल॥चौताल॥ वानीच्यारोंकेमोरेसुनलीजे
होगुनीजनतवपावेयहविद्यासागर राजागुवरहारफोजदारखेउरदिवानउपगुरव
कसीनोहार अचलसुरपंचमओरचलस्वरवादकरतरिषभमध्यमधैवतनिषादगं
धार समतीनअकरइशावाईशोउंनचासकोटतांनसेंनआधार॥भैरव॥बंगाल॥
चारताल॥ सेवमहाराजरामपदसरोजअतिउदार अंकुशपवधजारेखमीनकमल
कुलीशजपतशेषवंदितसुरअजमहेशसेवकसनकादिच्यार कौशिकमुनिसं
गचारिपाहनमुनिनारतारिभुरिभारभक्तहेतगावतगुनिगुनअपार जैजैजैश्री
धनुषधारियवनपुत्रआताकारिसीतापतिछिविनिहारिवलिहारिवारवार
भैरव॥बंगाल॥चारताल॥ प्रथमखरजसाधोओरिषभगांधारमध्यमपंचमधैव
तनिषादसुरसमतिनग्राममशुद्धअच्छरप्रमाणयहसवअपनेंमनमेंजवसमझ
आवे तवगुनीजनसोंनादकोचरचाकीजिए अकईसमूरछनाउंनचासकोटतांन
वाईसस्रुततेंसवअंगगनसोंगाइयेठिकतांनसुधतालसोंचोसुरनसोंसरिगमपधनी

सं॰ र॰
प्र॰ स॰

2

भैरव॥ बंगाल॥ चौताल॥ प्रथमखरजसाधोश्रीरिषभगंधारमध्यमपंचमधैवतनिषादसुर उलटपुलटफेरफेरजाचवुकसमझकरगुरपदकीधरनविचारकरलीजिए नादसमुद्रअप रंपारकाहुनपायोयाहुकोभेदवारनपारकाहेकोअतिविसनादकथमेंउकरतहोसवगुनी जनपदहविद्याअटपटमहाघोर अतविकटहोतनादईश्वररूपीअम्तनरससजितनमजाको मिलेतितनोईपीजिए चलीदेवीसरस्वतीतेवाचारकमरथरिनादसमुद्रमेंपैठिडुवनल गीतवतंवीकाहिरदेथरिकेरतनलगीश्रोरनकीकहागिनतीकरीए महानादसेनकहे हनोवडेवडेगायनसवसेषीश्रीमगरुरीतनमननकरिएज्ञानचितथरिगरवतजदीजि ए॥॥॰॥भैरव॥बंगाल॥चतुरंगतिनताल॥चतुरंगरसलिएगावोवजावोमदंगतकधिलांगधु मकटतकथा दारदीमदारदीमदीमतननननननतुमतननननतुमतननननसारेगमपधनी सानीधपमगरेसा॥॥॰॥भैरव॥बंगाल॥त्रिवड॥ जिएप्रवीनपरमचतुरमोहनमूरतनाग रोमरोमसुंदर नेत्रकमलसुआनाशिकाश्रीफलउरोजकटकेहरगभंगंजनछुन्दर ॥॰
भैरव बंगाल सलफाकता प्रजापतिद्विजपतिआददेवपतेजगतपतिब्रह्मा सावित्री पतिचारुनिगमपतिहंसवाहनपतिब्रह्मा षटदर्शनपतिभृगुपतिकहिएतवचतुरा ननपतिचतुरकरमा कवउतन्नतनजाचकजनवेद्युनितउठकेरपरकरमा ॥॰
भैरव॥बंगाल॥लछमीताल॥डवरुडिमडिमकरनीलकंठफुंकतफणेशचंद्रभालकटाछज जटागंगापानी॥॥॰॥भैरव॥बंगाल॥झूमराताल॥कोयलकुहुकेमाईमोढिगलालनकीवास वसाई यासोनेंमोमेंबोलेडोलनकहेनादुकडेढोलननाई॥॥॰॥भैरव॥बंगाल॥धीमाती नताल॥ दरेयादरेयादरतनदरयानाधिलांगधानी तननादृदृतंदृदृतंदृतनातननन ननातं दृदृदृदृदृदृदानीवेतानवुवतवहारगुलशानअपवकुलमुनगारगुलशान॰॥॰ भैरव॥बंगाल॥तिनताल॥ तोमतनतानतनदिरनातननननामतननानातादिरदानीदीमदीम

ततनननातननतानांतारेदानी दीमदीमततननननननानाततननानातारेदानीदीमदीमततन॰
ननातुं द्रदानीतुमद्रद्रदानीतुंद्रद्रतदारेदानी तारेदानीतदेदानीतदरेदानीदीमदीम
ततननततननानाततननननानातारे३ तदरेदानीतदारेतदतदानी ॥१॥

भैरव॥ वंगाल॥ आडाचोताल॥ प्यारीरी मुखबोलदे रबबोलरे नतो योंही विहानी अरेवा^
लाकहा जोकहुं तोरे मुखकी वानी तुंजो बात कहत तो तरांनी भोर भए आपलाल जब
चिरियां चुहचुहानी ॥१॥१॥ वंगाल॥ तितताल॥ साधो रचना रामबनाई इगपक विनसे
एकअस्थिरमाने अचरजलखिोनजाई कामक्रोधमोहवसप्रानीहरीमूरतविसराई
झूठातनसाचाकरजानेंज्यों बादरकीछाई जनननानकजगजानोंमिथ्यारहोरामश
रणाई॥ वंगाल॥ तितताल॥ साधो यह मनगह्योनजाई चंचलत्रस्नासंगवसतहै यातें
थिरनराई कठनक्रोध घटही केभीतर जिहसुधसवविसराई रतनग्यानसवकोंह
रिलीनोंताकोकछुनवसाई जोगीजतनकरतसवहारेगुणीरहेगुणगाय जनना
नकहरिभए दयालतोसवविधवनआय॥ वंगाल॥ तितताल॥ कोउमाईभूल्योमन
समझावे वेदपुरानसाधसंगसुनिकरनिमिखनहरिगुणगावे दुर्लभदेहपाय
मानुषकीबिरथाजनमगंवावे मायामोहमहासंकटवननासोंरुचिउपजावे
अंतरबाहरसदासंगप्रभुतासोंनेहनलावे नानकमुकततताहतुममानोंजहांघ
टरामसमावे॥ वंगाल॥ तितताल॥ मनरेकहांभयोतेंवौरा अहनिशअउधघटेनहीं
जाननभयोलोभसंगहोरा जोतननतें अपनोंकरमान्योंअरुसुंदरग्रहनार इनमेंक^
छुतेरोरेनाहींदेखोसोचविचार रतनजतनअपनोतेहारयोगोविंदगतनहीजा
नी नीमषनहीभयोचरननसोविथाअवधविसरानी कहेगावकसोईनरसुखी

सं॰ र॰
ग्र॰ सा॰

३

पारामनामगुणगावै औरसकलजगमायामोह्योनिर्भयपदनहींपावै ॥ वंगाल ॥ तिनतार ॥
साधोगोविंदकेगुणगावो मानुषजन्मअमोलखपायोविरथाकाहेगंवावो पतितपुनीत
दीनवंधुहरिशरणताहतुमआवो गजकोत्रासमिट्योजिहिसिमरनतुमकाहेविस
रावो तजिअभिमानमोहमायापुनिभजनरामचितलावो नानककहतमुक्तपंथ
यहगुरुमुखहोयतुमपावो ॥ वंगाल ॥ तिनतार ॥ भूल्योमनमायाउरझायोकेसेसम
झाउंराम ज्योंज्योंकरमकीयोलालचवसआपतेंआपवंधायोराम संगस्वामीसोंजान्यों
नहीवनखोजनकोंधायो रतनरामघटहीकेभीतरताकोज्ञाननपायो नानकप्रभु
भगवंतभजनविनुव्रथाजनमगंवायो ॥ वंगाल ॥ तिनतार ॥ रेनरयहसाचीजीयधारे
सकलजगतहेजेसेसुपनाविनसतलगतनवार वारुभीतवनायरचपचरहतनहीं
दिनचार तेसेहीयहसुखमायाकोंउरझरहेरीगंवार अजहूंसमुझकछुविगरयो
नाहिनभजलेनाममुरार कहेनानकनिजमतीसाधनकीभाख्योताहपुकार ॥
वंगाल ॥ तिनतार ॥ जोनरदुखमेंदुखनहींमाने सुखसनेहअरुभयनहींजाकेकंचन
माटीजाने नहींनींदअस्तुतीजाकेलोभमोहअभिमाना हरषसोकतेरहेअतिताना
हिनमानअपमाना कामक्रोधऔरलोभमोहतेंजामेनाहींरहीछाना नानककहवि
जपुगगावोनिशदिनकरलेगुरुकेध्याना ॥ वंगाल ॥ तिनतार ॥ आडातीनताल ॥
अवहीतुमकरमेंदर्पनलेदेखहुप्यारेपाछेऔरकीजोजाय वाहीकीजावोजाकेरंग
रातेहोआय मुकरनकाहेवलमाहोभलागुनमानोंजोलोकालकतसोहमपाय ॥
वंगाल ॥ तिनतार ॥ रूपकख्याल ॥ लालकीलगणकेसेछुटे लाखजतनकरमनसमझा
उंपैवालेपनकीपीतलगीकेसेछूटे कुसरसिकनेकनमाननवरवसहिलमिलजूटे ॥

कल्पद्रुमः ॥ भैरवीरागणीध्यानं ॥ सरोवरस्थेस्फटिकस्यमंडपे सरो

रुहेशंकरमर्चयन्ति विनाविनोदेकमलायताक्षीपीतांवराधारि

णीभैरवीयं ॥ ५ ॥ अथसंगीतमहोदधेसंगीतदर्पणेभैरवीरागणीध्यानो

दाहरणः ॥ स्फटिकरचितपीठेरम्यकैलासशृंगे विकचकमलपत्रे

रर्चयंतिमहेशं करतलघनवीणापीतवर्णोम्हगाक्षी सुकविभि

रीयमुक्ताभैरवीभैरवस्त्री ८ धैवतांशग्रहन्याससंपूर्णाभैरवीमता

केचित्तमध्यममोक्ताधैवतादीकमूर्छना ॥ ७ ॥ रागणीभैरवी ॥ तालचौता

ला ॥ ध नी सा सा रे ग म प प प म ग रे सा ॥ मपधनीसा नीसा

उ॰
स॰२॰
प॰सा

गरेसा नीधपमगरेसा॥१॥ रागणीभैरवी॥ तालधीमातिताला॥ सारे

ग म ध प म ग म ग रे ग रे सा पनी सा सानी सारे ग म ग रे सा ॥

मम धध नीसा सानी ध प म प ध प म ग म नी ध नीधपमग २

रागणीभैरवी॥ तालतिताला॥ सारे ग म ध प म ग ध ध प ध म प ग म

नी ध प म ग ॥ म प ध नी सा ध सा ग रे सा रे सा नी ध प म ग रे

सा नी सा॥३॥ तालत्रेवडा॥ नि सा ग म नी प ग म म रे सा ग ग रे ।

सा नि सा ध ध नी सा रे ग म प म ग रे सा म ग रे सा ॥ म म

म ध ध नी सा नि सा प नी सा रे ग म प म ग रे सा म ग रे सा

नि सा ॥ ध ॥ भैरवीनिताण ॥ नी सा रे ग म प म नी ध प म ग रे

सा ॥ म ध नी सा रे सा ग रे सा म ग रे सा नी ध प म ग रे सा ५

भैरवीनिताण ॥ सा रे ग म प म ध नी नी सा ग रे सा म ग रे सा ॥

नी ध म प ध नी सा ॥ नी नी ध ध प प म म ग ग रे रे सा ६

भैरवीनिताण ॥ ध सा म प नी प म नी म रे सा ॥ म ध नी रे ग

म प रे नी प म सा म ध रे सा ग रे सा ॥७॥ भैरवीनिताण ॥

परेमपगेरेंगेथाम ममम्रुगारमेरेगाममस्पाम म्रुरम्रुरमरमरेंगरें

गेमगरेनगारमेमगारेगाममममेमेरेरंगरंगेरामस्पाम नीसामगरे।

३॰
स॰र॰
प्र॰का॰

रमेमेरेसंगनानारससरससमपुरमपुररागारंगसपोमपोसामरनाम य

नथनमेरेगेहूपेथारेपेमसामरे यनथनदिनदिनमेरेरानाम ॥८॥

स॰ १॰
प्र॰ स॰
१

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॐनमोविघ्नहर्त्रेनमः॥ ॐनमःसरस्वत्यैनमः श्रीरघुनाथायनमः॥

अथउनराईआरंभः प्रथमभैरवरागवर्णनम् खड्जांशग्रहंन्यासंखड्जादिकमूर्छ्छना संपूर्णोभैरवंप्रातःगीयंतेशारदामतम्॥ इतिशारदामतेन॥ दोहा॥ दोड़िगौरीरामकलीइतीनोसमभाग इनहिमिलाकिमाईईप्रकटेभैरोराग॥ इतिशारदामतेन॥

रिषभांशग्रहंन्यासंरिषभआदिकमूर्छ्छनाभैरवंसंपूर्णप्रातःगीयन्तेमतिशंकरः इतिशावमतेन॥ दोहा॥ अंशन्यासग्रहतीनोसुषरिषभस्वरजान शिवमतभैरोप्रातःहिगावतगुणीसुजान॥ इतिशिवमतेन॥ गांधारांशग्रहंन्यासंगंधारादिकमूर्छ्छना संपूर्णोभैरवंगेयंप्रातूषेहनुमान्मतम्॥ इतिहनुमानमतेन॥ दोहा॥ अंशन्यासगंधारस्वरतिसकोहिग्रहजान प्रातहिभैरवगाईयेआपकहतहनुमान॥ धैवतांशग्रहंन्यासंधैवतादिकमूर्छ्छना निशान्तेभैरवंगेयंभरतमतेनकथ्यते॥ दोहा॥ न्यासअंशग्रहधैवतस्वरजानो संपूरणभैरवभरतविषानो॥ इतिभरतमतेन॥ निषादांशग्रहंन्यासंनिषादादिकमूर्छ्छना॥ प्रातश्चभैरवंगेयंकूससचंद्रमतेनच॥ दोहा॥ प्रातहिभैरवगाईईकालीमतअनुसार॥ निषादन्यासलेअंशग्रहवंसकियोउचार॥ इतिकुसमतेन॥ दोड़ी गौरी रामकली इणतिणदे एकत्र होनेकरके भैरोरागहोताहै ग्रीष्मरितु प्रातःकाल विशेदेवता आध्याशक्तिः अग्नितत हौंबीज शिवऋषि ॐभंभं पैंह्रांस्वाहा इतिमंत्र ॐभं इत्यावाहनं ॐभंभैरवंनमः इत्यासनम्

इतिध्यानम्॥ गंगाधरःशशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासा भास्वत्त्रिशूलकरएषनृमुंडधारी शुभ्रांवरोजयतिभैरवआदिरागः॥ तस्यध्यानं॥ सीसजटानिमेगंगातरंगत्रिलोचनचंदललाटहिऊपरलालविशालफनिसिरकीमनिजोनलसेकलकुंडलऊपरस्वरूपकपकरशूललिएहविलभरीफेबजेरमरूपरभूषणनागनकेतनमैपरभैरवरागविराजतभूपर॥ अथविनियोगः॥ ॐभंइतिमंत्रस्य ॐविसारिष शिवविषि पंक्तिछंदः आद्याशक्तिं अग्निस्तत्वम् हींबीजम प्रातसमे जपेविनियोगः॥ अथजपमंत्रः॥ संख्यासमलक्षम्॥

वीरासदहना
एक मानती
नाइका

धूप दीप नैवेद गुग्गुल घृतदीप कपूर से तपूजा॥ संपूरण सातस्वर धैवत रिषभकोमल जिसको उतराकहतेहैं॥ अर्थात् रिषभ अपने दूसरी श्रुती रंजनिनामापर कोमलहोताहै कोमल धैवत उहै निजिसको तं तीवरकहतीहै पंचमस्वर तंतीवर उसको कोमल धैवतकहतेहै अरु उ दूसरे श्रुते रोहिणिनामापर होताहै रिषभ आदभैरव संपूरण तस्याआ लापस्य॥ ननरीहनाआनननउननतुआनामुआदननरी॥तुनं॥ तानरीननाउननना आनरीनननरनुतानामू॥ तनन आदननतुआनेनतुं॥ तननरीननाआननानत तुमननुनरीनं॥ तानुरीरनाननताआननानतआनतानरीननतुमननननं नाआनननानुंतननरीन तानाननननतान॥ तनुं तननं॥ तनानाआननरी ननं आननततानन॥ ननुनरीननाआननानतउन॥ नननारनाआनं तानननरी तानीआनननननतानननरीननीरीन नानाननतुमनतुम॥ नितनाआननरीनन नरीताआनरीननानन्तानतुं नननाननाआनरीनननतान॥ निननरीनान पननननाननानततदरतनननतानतारनदीननानुमू॥ नानुं नरीआनारीनर ननितनुं नितारन रीतनानननानुआनुमआदनतुनरीआदनननन रीर ननआनामननुनतुम॥ आरीतिननानरीरनानतोननोनउदनतोनआननता नरीनन रनानरीननन३उदननआदननरी॥ रननरीमनतुमनननतुम॥ तरननननरीननन आदनउदन ननरीननततुनन तोननोनरी॥ रना ननोमनोम्॥॥॥ इतिभैरवरागालाप॥

रे स नी
॥ तानुंनेनना

	कोमल	
सा नि सा नि	ध	नि सा

	कोमल						
सा ग म ग	रे	सा	सा	ग	म	नी

कोमल				कोमल			कोमल	
ध	प म म ग	रे	ग	म ग	रे	सा

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ सा॰
२

सा कोमल ध नी सा कोमल रे ग म ग नी कोमल ध प म

ग म ग म कोमल ध नी सा नी कोमल ध प

म ग कोमल रे ग म ग कोमल रे सा ॥ इति शास्त्रमत

१ अनुस्वाभैरवरागस्वरसर्गमः॥ कोमल रे नि स नि कोमल ध नि सा सा

ग म ग कोमल रे सा ग म नी कोमल ध प म

म ग कोमल रे ग म ग कोमल रे ग कोमल रे सा ॥ ग

कोमल रे नी कोमल ध प म ग कोमल रे कोमल रे नि सा नि

कोमल ध नि सा २॥ इति शिवमतेनसर्गमः॥ ग म ग कोमल रे

सा नि सा म ग प नि कोमल ध प म प

म ॥ ग म कोमल ध नी सा ग कोमल रे नी कोमल ध

नी कोमल ध प म प म ग म ग कोमल रे सा

नि सा म ग म ग कोमल रे सा ३॥ इति हनुमान्मतेनसर्गमः

ध नि सा ग म नी धा प ग म रे(कोमल)

ग रे(कोमल) सा रे(कोमल) नी सा नि ध नि सा ॥

ग सा धा नी सा नी धा(कोमल) प ध(कोमल) नी ध(कोमल)

प नी ध(कोमल) प म ग म धा(कोमल) नी सा नी

ध(कोमल) प म ग म रे(कोमल) ग रे(कोमल) सा रे(कोमल) नि

सा नि ध(कोमल) नि सा ५ भारतमतेनसर्गः॥ अथ कल्लमतेनसर्गः॥

नि सा नि रे(कोमल) सा रे नि सा नि ध नी सा नि

सा गा म ध म प ध(कोमल) म ग गा ॥ म ग रे

रे(कोमल) ग म प ग म ग ॥ ग म ध(कोमल) नि सा

नि सा नि रे सा रे(कोमल) नि सा म सा म ध

नि सा नि गा रे(कोमल) सा नि सा ग म रे(कोमल) सा ५

इति कल्लमतेनसर्गः॥ सानिसा निधनि सागगा मगरे सा निसाग गमनी

धधम गमरे गमगरेसा॥ इत्यलापाः॥ गगम धनीसा नीसारे सानिधा धमगरेसा

धाधाधा धाधधा नीसानी धधमा गमरे गमरे गमगा मधनि सारेनि

धधम गम नीधध मगरेसा॥ इत्यन्तः॥ ९

ॐ
स॰ २॰
भ॰ सा॰
३

3

अथसंगीतदर्पणोक्तम्॥ ध नि स नि रे स ध नि स

ध ध म म ध नि स म ग रे स

इति संगीतदर्पणोक्तम्॥ संगीतकल्पद्रुमः॥ सगमः भैरवरागचारतार॥ ध नि स रे ग

म प ध नि स नि ध प म ग रे

ग रे स ॥ स्थाई॥ म ध नि स रे स ग

रे स नि ध प म ग रे स ॥ अन्तरा॥ स रे

स स रे ग रे स स रे ग म ग रे

स स रे ग म प म ग रे स स रे

ग म प ध प म ग रे स स रे ग

म प ध नि ध प म ग रे स स

रेग रेगम गमप मपधा पधनी धनीसा सनिध

निधप धपम पमग मगरे गरेस ॥ इति आभोग॥ इति षड्जांश

भैरव सम्पूर्ण सगम॥ अथ गांधार ग्रहांश षड्जांश भैरव सगमः॥ चारतार॥ ग ग म ग रे

स स म ग प नि ध प म प म

ग म ग रे ग रे स ॥ म म प ध

स रे स नि नि स नि नि ध स स नि ध

नि नि ध प ध ध प म प प म ग

म म ग रे ग ग रे स रे स ॥ सप्तस्वरसंपूर

णमैयोंसरगमविचारी। सासारेसधेरेरेरेगगगमगमममपमपपपपधपध
पधनीधनीनीसानीसासासानीसासोनीनीधनीध। धधपधपपपमपम। नमग
मग। गरेमरेरेरेसारेसा। सोईगुरुनमनमानध्यानधरे ॥ इतिगांधारअंशसरगमवर्णनं ॥

अथओडवभैरवप्रकारः ॥ महादेवनि पंचमुखोकरके पंचस्वरका भैरव उच्चारकिया
तिसकावर्णन रिषभ औेर पंचम वर्जितहै खड्ज औेर मध्यम औेर निषा
द अनुवादीहैं गंधारवादीहै कोमलधैवत संवादीहै रिषभ औेर पंचमववादी
हैं इसको ओडव भैरव कहतीहैं तस्योत्पत्ते सरगमवर्णनम् ॥ ग

ग ग म ग स स ग म ध म ग स स म ग

ध नि स नि ध म ग स ॥ ग म प नि स

म ग स नि ध म ग स ॥ ध नि स ग

स स ग म स नि ध म ग स ॥ इति आभोगः ॥

मार्गभैरवग्रामवर्णनम् ॥ गंधार अन्तर मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला निषाद
मध्यग्रामवाला खरजतारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला कोमल धैवत
मध्यग्रामवाला निषादमध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला पंच
ममध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला मध्यममध्य
ग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला अन्तर मध्यम मध्यग्रामवाला पंचममध्य

ॐ
स॰ र॰
म॰ सा॰
ध

मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला ॥ षड्जतारग्रामवाला ॥ निषाद ॥ मध्यग्रामवाला ॥ धैवत ॥ कोमल ॥ मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला ॥ मध्यम ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पंचममध्यग्रामवाला ॥ इतिस्थाई ॥

मध्यममध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला मूर्छनसंयुक्त निषाद मध्यग्रामवाला मूर्छनसंयुक्त षड्ज तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मध्यग्रामवाला ।
पंचम. मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषादमध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्तरा ॥ सा म प नि

सा नि ध नि ध प म प म ग म प
म ग रे सा नि सा ग म प सा नि ध
सा प म प ॥ म ध नि सा नि नि सा ध नि
ध प ग म प म ग सा नि ध म ग रे
नि सा ॥ इति अन्तरा ॥ इति मार्गिभैरवरागसमाप्तम् ॥ तिन तार थीमे ॥ मालकौंस ॥ रागकी ॥ ठाठो ॥ उपर ॥ इराग चलता है ॥ ११ ॥
रे

रागभैरव ॥
अथरागभार्या
मधुमाधवी १
भैरवी २
गुर्जरी ३
दोडी ४
रामकली ५
अथभैरवपुत्राः॥
बंगालराग १
मालिगौरा २
आभीर ३
षट्राग ४
भंखार ५
देशाकार ६
मधुर ७
देशाख ८
अथबंगालराग स्त्रियः॥
पूपामा १
शोवी २
भीमी ३
नागधनी ४
आनंदा ५
अथमालिगौरा स्त्रियः॥
रामा १
रमनी २
रंगिका ३
केली ४
कौमारी ५
मधुरस्त्रियः॥
माधुरी १
मोहनी २
रेवती ३
मिष्टका ४
लीलावती ५
अथगांधारस्त्रियः
गांधारी १
गांधर्वी २
कोकिला ३
कामवर्द्धिनी ४
योगिया ५
अथषटस्त्रियः
हार्षिकी १
मनोहारी २
चेटी ३
मेघरंजिका ४
कामकेली ५
बंगालस्य॥
मन्दनी १
मनोरंजिनी २
प्रतापि ३
हंसिकावती ४
हंसिका ५
अथदेवशाख स्त्रियः॥
देवनाटि १
देवकी २
वर्द्धनि ३
विनोदका ४
विलासी ५
अथविभासस्य
विभाषी १
श्रीहनी २
प्रीति ३
शोभी ४
अलेपा ५
इतिचतुःपंचाश
न्मा ॥५४॥
अतःपरंमाल
कौशस्य॥॥॥
अथमालकौशि
कभार्या॥
वागीश्वरी १
ककुभ २
पर्यंका ३
शोभनी ४
खंभावती ५
अथाहोपुत्राः॥
माधव १
शोभन २
सिंधु ३
मारु ४
मेवाड ५
कुन्तल ६
कलिंग ७
सोमराग ८
इतिकौशिकसुताः॥
अथपुत्रभार्या
कौशिकस्य
अथमाधवस्त्रियः
माधुरी १
मोनिका २
मुद्रा ३
विचित्रा ४
मनोहारिनी ५
शोभनस्य॥
शोभनी १
चंद्रकाशि २
प्रेमानंदी ३
आल्हादी ४
मोदनी॥५॥
अथसिंधुस्त्रियः
सिंधुरी १
सागरी २
शांतिका ३
सुखकारिनी ४
सावरी ५
मारुस्त्रियः॥
मारुनी १
पुष्पवती २
पद्मा ३
लावण्य ४
मनमथा ५
मेवाडस्त्रियः
कुन्तली १
कोहली २
कैलासी ३
कामिनी ४
कलावती ५
कलिंगस्त्रियः
कलिंगी १
कुशमी २
तारा ३
जयंति ४
मानमंजरी ५
सोमरागस्त्रियः
सौमी १
पूपामा २
सुरूपा ३
सैलिका ४
ईश्वरी ५
आभीरस्त्रियः
आभीरी १
शोणिका २
चेटा ३
गंभीरी ४
हसेरिका ५
अथहिंदोल
भार्याबाणानम
शुभ्री १
गंधिका २
गारा ३
गुंडिगभी ४
समालिका ५
अथहिंदोलपुत्राः॥
आभीर १ शुभ्र २
धवल ३ चंद्रकाश ४
विमोदक ५ चंद्रकांत ६
लिट्पुत्र ७ प्रथमभावी ८
अथधवलरागस्त्रियः॥
धवली १ धरनी २
धात्रि ३ धार्मिका ४
धवलश्रिका ५
अथचंद्रकासस्य॥
चंद्रकाशि १
प्रकाशि २
कारुणि ३
करुणा ४
कीर्ती ५
अथविनोदकस्य॥
मोहनी १
मूर्छनी २
मेधा ३
मानसी ४
मानवर्द्धिनी ५
अथनायकस्य॥
नायकी १
सत्तनी २
नम्रा ३
रंभा ४
रूपमंजरी ५
अथसहारागस्य॥
सूद्री १ सर्वरी २
भूसाव ३ लती ४

सू॰ १

हरमी अथशंकरा स्त्रियः शंकरी १ शंकराभरणी २ वेलावली ३ केरली ४ कोकिला ५ अड़ानास्त्रियः ॥ अड़ानि १ गौंड़की २ गौंड़ली ३ लरंगी ४ सुधावती ५ हिंदोलस्त्रियः ॥ वसंति १ पंचमी २ हिंदोली ३ ललिता ४ मालश्री ५ ॥ हिंदोलप्रियाः ॥ अथदीपकस्यभा र्या ॥ प्रदीपकी १ धनाश्री २ जयश्री ३ पलासिका ४ नाटिका ५ अथदीपपुत्रा ॥ सूहा १ नायका २ डाना ३ शंकरा ४ कान्हड़ा ५ विहागड़ा ६ नाटकेदार ७

अथविहागड़ा ॥ विहंगी १ विहारी २ विहाग ३ वेलवी ४ वियोगिका ५ अथकान्हड़ास्त्रियः चंदा १ राधा २ कुसा ३ कुसकेलि ४ कमोदनी अथवृहन्नाटस्य नाटि १ नटमनी २ नटपा ३ नारायणि ४ नटिजमी ५ अथकेदारास्त्रियः ॥ केदारी १ कामपाली २ कारवी ३ योगध्यानका ४ कलोलनी ५ अथमारवास्त्रियः ॥ जंबुषा १ मालनी मालि २ अग्नि ४ चंबुका ५ ॥ अथहरवास्त्रिय ॥ हरवी पार्वती २ प्रीती ३ माधुरी ४ मनरंजिका ५ श्री॥अथश्रीरागस्त्रियः ॥ मालवी १ त्रिवणी

गोरी ३ गौरा ४ पूर्वी ५ अथपुत्र ॥ मारवा १ पुरवा २ श्यामो ३ हेम ४ षेम ५ हमीर भूपाल ७ जैयत ८ अथपूपा मस्त्रियः ॥ ललिता १ संकुली २ श्यामा ३ सुघुरंगा ४ सोरभी ५ अथहेमस्त्रियः ॥ हेमि १ हंसि २ हलासे जयंति जसवर्द्धनी ५ ॥ अथषेमस्य ॥ षेमि कुशली २ मंगली मातंगी मोदवर्धनी ५ अथहमेरस्यस्त्रियः हमीरी १ कामदा हरणी हंसी ४ कामकेली ५

अथभूपालस्य भूरवती १ रमनी २ भीमा भोली तारंभिका ५ अथजैतरागस्य जैति जंत्री २ जामंति ३ जगदीसी ४ जयतश्री ५ अथमेघरागस्य भार्या ॥ मल्हारि १ सोरठी २ सारंग ३ वड्हंस ४ मधमाध ५ अथपुत्रमेघस्य मल्हार १ गोंड २ कर्णाट ३ जलधर ४ भीरी ५ तिलक ६ कमल ७ कुसम ८ अथमल्हारस्य मालिका १ वर्षणी २ गुंडिका ३ घनवर्द्धनी गरजी ५

अथगौरस्य गुंडि १ गोंडगिरि २ गोभि ३ गिरिजा ४ जलधारिनि ५ अथकर्णाटस्य कुरणाटी १ रंगनाथी २ मल्हारि ३ मलिका ४ श्रीरंगी ५ अथजलधरस्य जलधरी १ वार्षिका २ चुमड़ी ३ व्रूनस्यामा ४ वेदारवी ५ अथनटनारायणस्य व्रस्वाड़ी १ व्रस्तभेदी २ नटनायनी निरंकारी ४ मुक्तिका ५ अथगनस्यमस्य मालती १ मलही २ मोता ३ वैकुंठी ४ विलवलभा ५ ॥ अथकन लस्य ॥

सं॰ ग॰
मा॰ ऋ॰
१

ॐश्रीगणेशायनमः॥ ॐश्रीरघुनाथोजयति अथद्वितीयरागः मा
लकौंशप्रारंभः सर्वसंगीतशास्त्रमतानुसारलिख्यते॥ श्लोक॥
मध्यमांशग्रहंन्यासंमध्यमादिकमूर्छना ॐडवंमालकोशो
पं रिषभपंचमस्वरवर्जितो द्वितीययामरात्रेनशुद्धंमतसंकरो
कोकिलकिलगायंतिरागेणमालकौंशका २ वाग्वेश्वरीकौं
शाकश्चैववसंतेनमिश्रितो माथवंक्रटतेमध्येवीररसेनसंयु॰
तः २ पंचस्वरेणसंवोद्योक्रतींश्चपंचदशो उत्पतीमा
लकौंश्चैवंकथ्यतेनगुणीजनौ ॥१॥ ॥अथभाषा॥ ॥दोहा

मध्यमअंशन्यासग्रहमगापनीसाजान दूजेमग्रहरेरातके

षिवमतकहयोविधान ॥१॥दोहा॥ पंचमरिषभस्वरकेविना।

पंचमशुद्धस्वरलाय मालकौंशहितीरागकोगुणीजनकहो

स्वनाय ॥ ॥दोहा॥ वाघेश्रीवसंतसंगकौशाकजबहीमिलाय।

तोमालकौंशउत्पतभयोगुणीजनकहतसुनाय ॥२॥दोहा॥ पां

चसुरनकोजोडकेपंददैसुरतीसहेत मालकौंशकीउत्पती

समजसौंचगुणीकहेत ॥४॥अथवातेका॥ मालकौंशरागदूसरा

पांचस्वरकाजिसको ओडवकहतेहैं मध्यमस्वर मध्यग्रामका

सं॰ ए
मा॰ ४॰
२

इसमें वादी है निषाद इसमें संवादी है खरज धैवत गंधार इसमें अनुवादी है रिषभ और पंचम इसमें विवादी हैं अर्थात ये दोनो स्वर इसमें मनाह है इस रागकी पांच स्वर पंदरा स्रुती हैं और इसको औडव कहते है न अर्द रात समय वीररस वागीश्वरी और कौशक और वसन्त इन तीनो रागोको मिलानेसे मालकौशकी उत्पति होती है इसका नाम शुद्ध मालकौश कहते हैं इसका देवता रिषि छंद बीज रस नाइका नाइक

पूजनविधी संयुक्त लिखो जातहै ॥अथसमयवर्णनम्॥

आधीरातके निकटमे पाछे पहले याम मालकौंश उ

नीरागकौ गावत सबके याम १ ॥अथऋतुवर्णनम्॥

शिशुर बसन्तके मध्यमे मालकौंश रूप होइ वाद्य त

नी सबमेलके गावत गुणीयन लोय २ ॥अथरसवर्णनं॥

दोहा॥ अलंकार रस मध्यमे वीर कह्यो प्रधान मालकौंश

रूप रागको गायन करैं बुद्धिमान ३ ॥अथनाइकावर्णनम्॥

दोहा॥ सुखिया उत्तम नाइका सबहूंमे विख्यात मालकौंश

सं॰ रा॰
मा॰ पृ॰
३

सोरमरह्यो मखनीके ममकात ४ अथनायकावर्णनं
मालकौंश रागको नाइक पुरुष समान गुणीयन निश्च
करी कह्यो शास्त्र मत आन ५ अथत्रुत्वर्णनम्
दोहा तम्बर अतीगायन कीयो मालकौंश जो राग
तांतेराग रिषपदवी भई मन उपजत अनु राग ६ अथ
देवतावर्णनम् त्टपमहूपयो रागहे करे ब्रह्मको सेव
ताते सब जन मान्यो याको ब्रह्मा देव ७ अथछंदवर्ण
नम् दोहा दीर्घमात्रा स्वरनमे अंतही दीर्घ बोल छंद

छंदपंगती कहतहैं पंडित ताको तोल ८ अथस्वर

पस्वररागवर्णनम् दोहा मगधनीसनीधमगजान मा

लकौंश इनस्वरनितें मध्यमंदरस्थान ४ इतिशिवमतेन:

अथशारदामतवर्णनम् श्लोक मालकौंशरागेणानिशा

मध्येनगानित्रः खर्जग्रहन्यांसश्चरिषभपंचमस्वरवर्जि

तौ १ दोहा शारदाभगावनिप्रुंकहोमालकौंशविस्तार

खरजअंश और न्यास ग्रहैं सनी धमगा विचार १ दोहा

दूजे प्रहरे रातके पंचम रिषभ मनलाई पांच स्वरनके

सं॰ए
मा॰पू
४

वीचमे गाइन कर दिवे लाई २ वातिक श्रीसरस्वती भ

गवतीजीके मत अनुसार मालकौंशकी उत्पती षड्जस्व

र ग्रह ओर न्यास अंशहै पंचम रिषभ इसमे विवरजतहै

ओडव इसको कहतेहै रातको पहर रातके पाछे ओर आ

धी रातके पहले समेमे पांचस्वर करके गानविधी लिखी

है शुद्धमालकौंश इसको कहतेहै ॰ इतीशारदां

कालीभरतमतेन तथाच मध्यमांशग्रहंन्यासं मध्यमादि

कमूर्छना पांचस्वरेणसंयोज्य मालकौंशगायनकुरु:

वसंत वागेश्वरी कौशाकेन मिश्रतः निशामध्येन गीयते

रागोयं हरि वल्लभः २ इसर्वमतीनवनीती मालकौश पां

चस्वर रिषभ विवरजत मध्यम गंधार षरज धैवत निषाद

शुद्ध स्वर लगतेहैं जो आगे लिखे जातेहैं ॥ म ग स

ध नी स ग म ग म मंदर मध्य दोस्थानकी आ

हती निहती करीहै ब्रह्मादेवता तम्बर ऋषी पंक्ति छंद

पुष्पनाडक सकीयानाइका शिशिर वसन्तरित डेड पहर

रातगए समै तत्रीवर्ण श्रींबीज ॐश्रींलींक्रींमंनाढयनाः

स॰ए॰
मा॰ठू॰
५

5

टपस्वाहा श्रींआवाहनम् क्लींआसनं क्रोंमंप्रानप्रतिष्ठाय

नमः पंपुष्पंनमः धंधूपंनमः दंदीपंनमः नंनैवेद्यंनमः

अथध्यानम् आरक्तवर्णोध्वतरक्तयष्टीवीरः प्रवीरेषुकृतः

प्रवीर्यवीरहतोवैरकपालमाला मालीवतोमालवकौश

कोयं १ अथभाषा कंचनते कमनीय कलेवर काम कला

नमेको विदमानो मानोमहारस वीरहीमे नितराते हवे

वसनो जगमानो वैरन मार कपालकी मालधरी वहुवी

रनही मनमानो जोहरि वलभरूप अनूप सोमालव कौं

षा कर राग बषानो । अथविनियोगः ॐतम्बरऋषि

पंक्तिछंदः ब्रह्मादेवता श्रींबीजं मालकौंशराग सिध्य

र्थे जपे विनियोगः जपसंख्या पंचलक्षविष्णु मंत्र सवा

विष्णुमूर्ति सन्मुखेनध्यानजपंकृत । अस्योत्पती रागमा

लकौंशसरगामबनानविधिलिखतेहै शिवमतसरग

मविधी ॥ मध्यम मध्यग्राम स्थानवाला गंधार मध्य

ग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार अत

र मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मंद्रग्रामवाला पुनः निषा

स॰ग
मा॰६
६

द मंद्रग्रामवाला॥ पुनः षड्ज॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ म

ध्यग्रामवाला॥ पुनः मध्यम॥ मध्यग्रामवाला॥ मध्यम॥ मध्य

ग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः मध्यम॥ मध्य

ग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ मध्यग्रामवाला॥ स्वरज॥ मध्यग्रामवा

ला॥ पुनः धैवत॥ मंद्रग्रामवाला॥ पुनः निषाद॥ मंद्रग्रामवाला॥

स्वरज॥ मध्यग्रामवाला॥ निषाद॥ मंद्रग्रामवाला॥ पुनः

धैवत॥ मंदरग्रामवाला॥ निषाद॥ मंद्रग्रामवाला॥ धैवत॥ मं

द्रग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ मंद्रग्रामवाला॥ पुनः स्वरज॥

मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम

मध्यग्रामवाला पुनः मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला

निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज नारग्रामवाला निषाद म

ध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पुनःनिषाद मध्यग्रा

पुनःमध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्य

म मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला धैवत मंदरग्राम

वाला निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला नि

षाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला॥मध्यम॥मंदर

सं॰ए॰
मा॰१
८

ग्रामवाला ॥ गंधार ॥ मंदरग्रामवाला ॥ खरज ॥ मध्यग्रामवाला
गंधार ॥ मध्यग्रामवाला ॥ मध्यम ॥ मध्यग्राग्रामवाला ॥ गंधार
मध्यग्रामवाला ॥ खरजमध्यग्रामवाला ॥ ॥ ॥ इतिसरगमशिव
मतेन ॥ अथशारदामतसरगमविधीलिख्यते ॥ खरज ॥ मध्यग्रामवा
ला ॥ निषाद मंदरग्रामवाला ॥ धैवत ॥ मंदरग्रामवाला ॥ निषा
द ॥ मंदरग्रामवाला ॥ खरज ॥ मध्यग्रामवाला ॥ मध्यम ॥ मध्यग्रा
मवाला ॥ गंधार ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः मध्यम ॥ मध्यग्रामवा
ला ॥ पुनः गंधार ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः खरज ॥ मध्यग्रामवाला ॥

पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः धैवत मंदरग्रामवाला

पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला॥३र

न्वस्थायि॥ निषाद मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला निषा

द मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवत म

ध्यग्रामवाला षरज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्राम-

वाला धैवत मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला

गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार म

ध्यग्रामवाला खरज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला

सं॰ए॰
मा॰१
८

धैवत मंदरग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः ष-
ड्ज मध्यग्रामवाला॥ इत्यन्वयः॥ इतिशारदामतेन॥ तथाचसंगीत
कल्पद्रुमः॥ तथाचसंगीतरत्नाकरे तथाचसंगीतदर्पणे तथाच-
संगीतनारदसंहितायां स्वरोंकानिर्णै सवमतोंमे इसीप्रका-
र मालकौंषरागकी उत्पत्तिकहीहै स्वरज और मध्यमसे
विना दूसरा स्वर वादी नहींहै इसेभी इसीवास्ते दोही
प्रकार रखेंहैं ॥॥॥ अथस्वरादरम्॥ मि गि म
ग मा प नी म नी प नी

ध म ग म ग म ग म ग

म ध नी म म ग म मध्यमस्थाई॥

म म ग म म ग म सा म

नी ध नी म नी ध नी ध म

ग म ग म म ग म ग म

इतिश्रंतरः॥ म नी ध नी म म ग म

म म म नी ध नी म ॥ नी ध नी

ध म ग म ग म म नी ध नी

स॰रा॰
मा॰सू॰
४

श्री अथमल्लारः संगीतरत्नाकरे भरतमत श्यामांगपीतवा
समधुरयुगलज्ञोवंशवाद्यस्त्रिभंगी कण्ठेरत्नैकमालोविर
चिततिलकाकुंकमैर्वीलमध्ये १ रागोयंमालकौशप्रचरतु:
शिशिरेकण्ठदेशे जनानां प्रायःसूर्योदयान्तःस्वरनिचयनि
दांतह्येभूपतीनां ॥ इतिसंगीतरत्नाकरे अथसंगी
तदरपनमतेन ॥ हनूमानमत दोहा तीनसकारन
सोबन्यो औडव रिषभस्वरहीन तीनपहरपर मालवश्री गाव
तवडे परवीन १ इतिसंगीतदरपने अथकल्पद्रुमः

मालकौंशकोखरज गेडवरिम्र विनगाय शरदरैन चौथे

पहरस्वनपाहिनपियलाय स्वरूपं तनजो वनजोर मरोरि

नमोरसवीरच्छकोमनधीरधरे करमेंतकरवालल्लियेंछविसों

पाटलालप्रवालकीजोतीहरे रतिकोककलाप्रवीनमहाहग

देषतरूपअनूपधरे यहमालवकौंशअनंगभयोतरुनीमनरं

जनरंगकरे इतिसंगीतकल्पद्रुमः अथसंगीतरत्नाकरे॰

सिंहासनस्थसारचाहरुमनींधीरोल्लसतचामरच्छत्रयुक्तः सं

त्रीजनैवेष्टितरक्तवस्त्रः ॥ अथसर्वसंगीतमतनिश्चयं

सं॰ग॰
मा॰ष्ट॰
४

ष्पामांगमीनवामनमधुरिपुगलजोवंशवाद्यस्त्रिभंगी कर्णे

रत्नैकमालोविरचततिलकः कुंकुमैर्भालमध्ये रागोयंमाल

कौंशंप्रचरतुविधिधरैकं हृदेशेजनानां प्रायः प्रायःसूर्योदयान्त

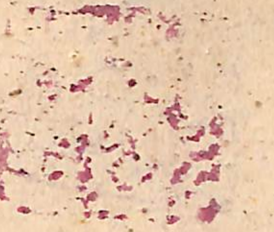
स्वरनिचयविरांतुष्टभूपतीनां ॥ इतिसर्वसंगीतमतअनुसारमालकौंश

लिख्यते ॥ भरतमतेन ॥ अथसंगीतसिंह नानादमप्होदेनारायणादीपतेन

लिख्यते पलाशीमालवयुक्तः कौशाकश्चततःपरं जायतेमाल

वकौशोयंमध्यमस्वरग्रहंतथा रिषभपंचमत्यागमधनिसाग

मस्वरानिशायां तृतीयप्रहरेमंपंमालवकौशाकः ॥ रिपवर्ज



तस्मंस्मात्तउेऽदवपविकीर्त्तितः कौशककानडेजातावाद्येश्वरी॰

कविन्मतः॥इतिव॥अथमालकौंशअलंकारवर्णनम्॥ म ग ध

ध नी स सनि स नि धनि धमग सगम मगम

गमग सनि ध धनिस सनि ध मगम॥इतिद्वादशअलंकारम्॥अथअलापालारस्वरूपम्॥ ननइनाआनउअनअदनतौं तानेने

तनतौं तननननतेतानतानेतनननननननानेतानेतेत

तातौ ॥ तानेतननेतनननननतेनातननानआनतानननानो

तननातौतानेतननननानेतेननतौ तननननननननततत

सं.ग
मा.ष
११

ननौतनननननतनौननौननतौननानानानौनेननतनतौ ॥

इतिअलापालापम्॥ अथस्वरसरगमअलापमवर्णनम् ॥ स

नी प नी सस ग म ग सस निधनिस

नी प नीध म ग म ग स स नि प नि

स ॥ स नि प म ग स नि प नि

स म ग म ग स ॥ इतिषड्जादिस्वरसरगम ॥ अथमध्य-

मादिस्वरसरगमवर्णनम् ॥ स ग म ग प नि स ग म

ग स नि प म ग स ग म ग म ग स

ग स ॥ म ग म गध नी स नी प म ग म

ग म ग स सनि पनि स ग म ग म ग म

म ग म ग स ॥ इतिमध्यमादिस्वरसरगम ॥ अथगतसितारमध्यमस्व

१म २म ३गं ४पे ५नी ६सं ७गं ८म १म २ग

रादिलिख्यते ॥ डिड डा डिड डा डा डा डा डा डिड डा

३म ४ग ५म ६ग ७ग ८म १म २म ३म ४पे

डिड डा ड्रा डा डा ड्रा इत्यस्थाई ॥ डिड डा डिड डा

५नी ६स ७नी ८स १स २नी ३पे ४म ५ग ६म ७गं ८सं

ड्रा डा डा ड्रा डिड डा डिड ड्रा ड्रा डा डा ड्रा ॥

अथअन्तरा ॥ फिरपहलीआवृतिमे आमिले तीनथीमे तारका

सप्तकबराबरहोवेगी ॥ अथषड्जादिगतसितारत्राः ॥ डिड (१, स) डा (२, नि) डिड (३, स)

स॰ग
मा॰१
१२

४	५	६	७	८	१	२	३
द्रा	द्रा	दा	द्रा	द्रा	दिड्ड	द्रा	दिड
धै	नि	स	म	ग	म	ग	स

४	५	६	७	८		१
दा	द्रा	द्रा	द्रा	दा	अथस्थाई॥	दिड
स	नि	धै	नि	स		नी

२	३	४	५	६	७	८		१
द्रा	दिड	द्रा	द्रा	दा	दा	द्रा	॥	दिड
प	नि	प	म	ग	म	ग		स

२	३	४	५	६	७	८	
दा	दिड	दा	द्रा	दा	दा	द्रा	इत्यन्तरा॥
नि	प	नि	स	म	ग	स	

फिर पहली आहतीमे आमिले॥ इतिषड्जस्वरादिगतत्रितारमाल
कौंशरागवर्णनम्॥ इतिओडवमालकौंशवर्णनम्॥ अथषाडवमालकौंशवर्ण
नम्॥ दोहा॥ मध्यमस्वरअंशग्रहवाकोन्याससहिजान॥ तामेरि
षभमिलाइकेमालकौंशरागुणीगान॥ दोहा॥ मध्यमधैवतरि

षभस्वरषड्जगंधारनिषाध मालकौंशहै॰स्वरनकोगावनम्र

नीञ्कनिसाध ॥ दोहा ॥ कौशककैरवागीश्वरीमालवकाएउसंग

नितञ्राधीकेञ्रादमेगावनउडननरंग ॥ दोहा ॥ गुनीजनमतसें

गीतकेकहाबुहीञ्नसार मालकौंशषाडवभयोम ग रे स

नि ध ड वार ॥ श्लोक ॥ मालकौंशषाडवंगेयः पंचमस्वरवर्जितो म

ध्यमांशग्रहन्यासेन रिषभस्वरेनसंयुतः १ कौंशाकोयंवागीश्व

रीकाएउरमालवेचमिश्रतो अर्थनिशादेनमालवकौंशेनगी

यते ॥ २ ॥ अथसंगीतकल्पद्रुमा ॥ तथाचरत्नाकरेदरपणेवासंगीतेच

सं॰ग॰
मा॰१॰
११

मध्यमांशग्रहंन्यासंपंचमवर्जितस्वरं षाडवास्तुजातिविज्ञेया

मालकौंशकसंज्ञकः मालवाकाएग्रुक्तंवामगीश्वरीस्त्वमिः

श्रुतः कोशाकोजायतेयत्रमध्यममत्त्वोद्दीरितः ॥ म ग रे

स नि प म ग रे नि प ग स: ॥ म नि

प नि स गग प नि प म ग प नि स ग ग

प नि प म ग प नि स स रे नि प नी

म ग ग रे ग म ग ग स ग स सा रे नी

प नी प नी म ग ग रे ग म ग ग सा

ग सा सा रेनि पनि पनि स ग म ग म प प प

म म ग म पनि प प म ग रे ग म प म

म स ॥इतिस्थाई॥ प नी सा सा रे रे प प प म ग म प

म ग प नी ग ग म रे रे सा ग प म सि म

प ग ग सानीप नी सा ग म प नी प प म प म

म ग प नी स नी नी नि प प म म ग म प

नी प स रे ग म ग म प नी स प म ग म प

नि स ॥॥इषाडवमालकौंशसंगीतमतेन॥ अथवार्तिकषाडवमालकौंशवर्तिनकरतेहै॥

सं॰रा॰
मा॰१॰
१४

मालकौंश किसी प्रकारजोंकामतहै के छेसुरकाभी होताहै उसका स्वरूप येहहै जो रिषभ स्वरका मेल होताहै और मध्यम स्वर अंशन्यास ग्रह होताहै अर्थात् मध्यम स्वर इस रागमे वादीस्वरहै रिषभ इसमे तीव्रलगताहै जिसको चडभी कहतेहैं और वोही स्वर रागकौंषी कान्हडामेभी लगताहै म ग रे स ध नि इनो स्वरोंमे मालकौंश राग।वकी उत्पती होतीहै और मालवे काएरो कौशके वागी घाँरी इनको जब एक जगा एकत्रकरें तो मालकौश होताहै

और इसको षाडव मालकौंश कहतेहैं सब संगीत वालोनेभी

कहीहै इसीप्रकार करके अलं इसप्रकार ॥ मध्यम मध्य
म

ग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभ मध्यग्रामवाला षड
ग रे स

ज मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवा
नि ध

ला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला
नि स

पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः धैवत मंदरग्रामवाला म
नि ध

ध्यम मंदरग्रामवाला गंधार मंदरग्रामवाला रिषभ मंदरग्रा
म ग रे

मवाला॥निषाद॥मंदरग्रामवाला॥षड्ज मध्यग्रामवाला॥पुनः
नि स



सं॰गा॰
मा॰ २
१५

मध्यम म मध्यग्रामवाला पुनः गंधार ग मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ रे

मध्यग्रामवाला षड्ज स मध्यग्रामवाला निषाद नि मंदरग्रामवा-

ला धैवत ध मंदरग्रामवाला निषाद नि मंदरग्रामवाला षड्ज स

मध्यग्रामवाला ॥१॥ इत्यस्थाई ॥१॥ अथ अन्तरा ॥१॥ मध्यम म मध्य

ग्रामवाला निषाद नी मध्यग्रामवाला धैवत ध मध्यग्रामवाला नि-

षाद नी मध्यग्रामवाला षड्ज स तारग्रामवाला गंधार गं तारग्रामवा-

ला पुनः गंधार ग तारग्रामवाला षड्ज स तारग्रामवाला पुनः म-

ध्यम म तारग्रामवाला पुनः गंधार ग तारग्रामवाला पुनः रिषभ रे

तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला

धैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम

वाला ॥ इतिअन्तरः ॥ अथान्तरस्वरसरगमवर्णनम् ॥ म कों ग ती रे

स नि ध नि स स नि

ध म कोमल ग तीवर रे नि स म

कोमल ग तीवर रे स नि ध नि स

इतसथाई ॥ अथअन्तरः ॥ म नी ध नी

स कोमल ग कोमल ग सा म कोमल ग

सं॰ ग॰
मा॰ शु॰
१९

तीवर रे | नी | ध | म | कोमल ग | म | कोमल ग

तीवर रे | स | नी | ध | नि | स इत्यन्तः

और इसमे गंधार कोमल और रिषभ तीवर और सब स्वर शुध लगतेहैं ॥ अथगतसितारतिवल्लाइ ॥

म॑ डिड | ग॑ डा | रे डिड

स डा | प नि डा | धे ध | नि डा | स डा | स डा ॥ स डिड | नि डा

धे डिड | स डा | ग॑ डा | री डा | नि डा | स डा ॥ इत्यस्ताई ॥ अथअंतरा ॥

कोमल म डिड | नी डा | धे डिड | नी डा | स डा | कोमल ग॑ डा | कोमल ग॑ डा | स॑ डा | म डिड

ग डा | रे डिड | स डा | नी डा | धे डा | म डा | ग॑ डा इतिअंतरा ॥

अथ मालकौंश षाडव विधीस्समाप्तम् ॥ इति मालकौंशरागविधिवर्णनम्प्रथमो

ध्यायः ॥ समाप्तम् ॥ संगीतरत्नवीरप्रकाशसारग्रंथकृतध्यायः ॥



स॰ रा॰
मा॰ रू॰
१२

ॐ श्रीरघुनाथोजयति ॥ ॥ अथ खंभावतिरागणीमालकौंशरागप्रथमश्री मालकौंशरागवणितम् ॥ धैवतांशग्रहंन्यासं धैवतादिकमूर्छिना स मूर्णखंभावतीप्रोक्तामालकौंशस्यवलभः १ निषादस्वर कोमलत्वरिषभतीवरचवतस्फूर्तिः निशांद्वितयायामेगीयंतेखं भावती ॥ २ ॥ द्वितीयकार ॥ निशादांशग्रहंन्यासंधैवतादिकमूर्छि ना खंभावतिचरागिन्यःमालकौंशवराङ्गनः ॥ ३ ॥ संगीतरत्नाकरे ॥ खंभावतीस्यात्तसुवेदारमजासौंदर्यलावण्यविभूषितांगी गा नप्रियाकोकिलनादतुल्याप्रियंवदाकोप्राकरागणीयम् ॥ १ ॥

धैवतांशग्रहन्यासं खम्भावती इति स्मृता धनी सारे ग म प धप

रागो द्वितीयजामभाक्ः २ पर्जवसन्तपंचमस्य खम्भावतीज

न्मभूः कोकिलनादसंकल्पामालकौशस्य वल्लभा ॥ इति रत्नाक

रे ॥ ग्रथ्वसंगीतसंहितायाम् ॥ धैवतांशशन्यासस्त्वग्रहस्तथैवउच्यते निषा

दस्वरकोमलोग्रोकोरिषभेस्वरणतीव्रो खम्भावतीकौशाकप्र

या निशामध्येन गीयते पर्जवसन्तसैंधव्यारागिणः मिश्रता

कुरुः कोकिलकिलनादेन गीयं खम्भावतीमधुरस्वरः ॥ इति सं

गीतसंहितायाम् ॥ तथा च संगीतदामोदरनारायणौ नौ ॥ तथा च संगी

सं·रा·
मा·पृ·
१८

तहहिततादमह्योददोव ॥ अथभाषा ॥ दोहा ॥ अंथान्यामग्रहपेवत

स्वरजानोसुखमथान संपूरागस्वरगावैं खम्भावतीमालकौंधा

कीवाम कोमलस्वरनिषादकरतीवरविषभवनाय निशाआ

धीकेसमेकोकिलकंवसोमाय ॥ दोहा ॥ परजवसलवहारमेसें

धवस्रुतकरलीन खम्भावतीकौंधाकुरस्त्रीगावतगुणीप्रवी

न ॥ संगीतदरपन ॥ तथारागमाला ॥ संगीतकल्पद्रुमः ॥ दोहा ॥ तीनधकारन॥

सोवतीअरुपंचमकविहूरव खाडवहैं खम्भावतीजानरहेरस

पूर सगमप धनिससनि धप मग मगरेस ॥ इतिरागमाला ॥ १

दोहा ॥ धैवतग्रहखंभावती षटस्वरषाडवजान ॥ ध ॥ निस रे

गम ध निग ॥ रे ये सुंदर आधीरात ॥ इतिसंगीतभाषा ॥ नादमहोदधौ ॥

खंभावतीस्यान्स्वरकाररसत्तासौंदर्यलावण्यविभूषतांगी ॥ गा

नप्रियाकोकिलनादतुल्याप्रियंवदाकौशाकरागणीयं ॥ धैवतां

शग्रहंन्यासंखंभावतीह्यसम्मता धनि सा रे ग ॥ म ॥ पञ्चवराङ्गो

ज्ञामह्वितीयके धर्यौवसन्नपंचमस्यखंभावतीवजन्मभू ॥ को

किलानादकंठश्यामालकौशास्यवल्लभः ॥ ध ॥ नि ॥ सा ॥ रे ॥ ग॰

॥ म ॥ ग ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ ध ॥ प ॥ म ॥ ग ॥ रे ॥ सा ॥ ॥ ध ॥ प ॥ नी ॥ ध ॥ नी ॥ सा ॥ रे ॥ सा ॥

स॰ग॰
मा॰श॰
१५

नी ध प म ग सा रे ग म प ध नि नि सा सा

नि ध प म ग रे सा ॥॥ इतिनादमहोदधौ ॥ वार्तिक ॥ खम्भा

वतीरागणीमालकौषाकीइस्त्रीसम्पूरणस्वरकी निषाद कोम

ल रिषभ तीव्र और स्वर शुद्ध लगतेहैं और आधीरातके समे

गायन करतेहैं और इनरागोंके मिलानेसे इसरागणीकी उ

त्पतिहोतीहै परज वसन्त पंचम मिलने करके इहरागिनी

वनतीहै खम्भावती जिसकोमशहूर खम्भावच कहतेहैं

मालकौंशकीप्रथम इस्त्रीहै और धैवत इसमें ग्रहहै और॰

निषादसेभी उठतेहैं लेकिन कोमल स्वरहै इसवास्ते कोम

लस्वर ष्रस्थानहीं होताहै जोस्वर ष्रस्थानहोवे उसस्वरको ग्रह

नहीं कहाजाता इसलिये इसरागणीमे धैवत स्वर ग्रंशग्रह

न्यास सम्पूर्णमतीवालोने रखाहै श्रोर विनादेसस्वरके ।

श्रोर कोई स्वर इसमें वादीनहींहै धैवत वा निषाद कोमल उत

र मंद्रस्थानवाला देशालदोमेकोई मध्यम मध्यग्राममें उत

रतेहैं सोशास्त्रविरुद्धभी होजाताहै श्रोर रागमिलापमेभी फर

क होजाताहै जिस्कीवर्णता श्रागेकीही जातीहै श्रर्थात्

सं॰ रा॰ मा॰ १ २

इसमें परज बसन्तका मिलाप थोरा होताहै और कौशिश

वहोत होजाताहै इसकामिलाप परज बसन्त पंचम वा मैं

धवी होनेसे खम्भावती रागणी मालकौंशकी इस्त्री पहली

होतीहै और कोई कोई इसको खाडवभी पंचम स्वर रहतेहैं

परंच असलमें येसातस्वरकी सम्पूर्णहै किसवास्ते जो इ

सको छेस्वर कहतेहैं वोहि सरगमकी विस्तार करनेमें प

हलेही पंचम स्वरको आहतीमें देतेहैं तो छेस्वर केसेर

हे जो इससंगीत ग्रंथमें लिखाहै आदमेंही इस वास्तेहै

असलमें सात स्वरकी पंचग्रंथकी लिपेके वास्ते छेस्वरकी

लिखीजावेगी ॥ अथजैत्वतीस्वरस्वरसरगमछारालिख्यते ॥ सम्पूरण सा

तस्वर मध्यग्रामजाननाचाहिये ऐसे मध्यग्रामके रागोंमे मं

द्रस्थानका निषादकोमल होताहै और अपने अस्थान मं

द्रके ऊपर वो स्वराहै इसवास्ते इसको इसरागनीमे ग्रह अं

श न्यास मानतेहैं किं योके अपनेस्थान पर स्वरन जाती रखता

है इसीवास्ते इसमे निषाद अंशग्रहन्यासभी रखाहै ॥ ॥ नि

सा ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ म ॥ प ॥ म ॥ ग ॥ ग ॥ म ॥ म ॥ प ॥ प ॥ नी ॥ नी ॥ प ॥ म

स॰ रा॰
मा॰ पू॰
२१

प म ग स स स रे नी प प मम पप नीनी पमपम

ग ॥ इसप्रकार इसकी सरगम बधीजावेगी ॥ करुणा

रस ब्रह्मादेवता गायत्रीछंद हनुमानरिषी मध्यानाइका प्राव

नाइक द्वादश अलंकार ॐखेंखेंखेंपेंश्रींखंभावती ब्रह्मारचे

यंतीस्वाहा इतीमंत्रः ॐखेंछंदसेनमः ॥ इतिआवाहनम् ॥ ॐ

खेंखेंनमः ॥ इतिआसनम् ॥ ॐखेंदेवायनमः ॥ इतिप्राणप्रतिष्ठा ॥ ॐखें

खेंपेंनमः पुष्पंनमः ॐगंधंनमः ॐधूपंनमः ॐदीपंनमः ॐ

नैवेद्यंनमः ॥ अथध्यानम् ॥ खंभावतीस्यान्कखेदारमतासौंदरय

लावण्यविभूषतांगी गानप्रियाकोकिलनादतल्पा प्रियं

वदाकौशिकरागणीयं ॥ अथभाषाध्यानम् ॥ भूषनअंगजरावजरेत

कीउतीकुंदनतेसरसावै अंगलालरहिअंगीयाउरमोतिनमाल

विशालसुहावै सुंदरताननवाननसोबतताननसोंवहुभांत-

तिरिझावै गावेखभावतीप्रेमभरीपरवीनतियाकरवीनब-

जावै ॥१॥ इतिभाषाध्यानम् ॥ जपात संध्योतीमरुलत ब्रह्माकीमू-

र्तीसन्मुखरखके जपहजनकरणा विनाइसरागणीके और

रागणी रागकी गाननहीकरता तबयेरागनी सिद्धहोजातीहै

स॰ ग
मा॰ शृ॰
२२

नस्पसरगमगान वर्नानविधीलिखेनेहैं ॥ःः॥

सरगमविधी ॥ निषाद (कोमल) मंदरग्रामका ॥ खरज मध्यग्रामका गंधार मध्यग्रामका ॥ मध्यम मध्यग्रामका ॥ पंचम मध्यग्रामका धैवत मध्यग्रामका ॥ पुनः मध्यम ॥ मध्यग्रामका ॥ पुनः मध्यम मध्यग्रामका ॥ पुनः धैवत ॥ मध्यग्रामका ॥ पुनः धैवत ॥ मध्यग्रामका ॥ पुनः निषादकोमल ॥ मध्यग्रामका ॥ पुनः कोमल निषादमध्यग्रामका ॥ धैवत ॥ मध्यग्रामका पुनः मध्यम मध्यग्रामका पुनः पंचम ॥ मध्यग्रामका पुनः मध्यम मध्यग्रामका॰

पुनः गंधार मध्यग्रामका ॥ इत्यस्थाई ॥ [ध]धैवत मध्यग्रामका नि

[नी]षादकोमल मध्यग्रामका [सा]षडज तारग्रामका पुनः [सा]षड

ज तारग्रामका पुनः [सा]षडज तारग्रामका पुनः [रे]रिषभ तारग्रा

मका पुनः [रे]रिषभ तारग्रामका पुनः [नी]निषादकोमल मध्यग्राम

वाला [नी]कोमलनिषाद मध्यग्रामका [ध]धैवतमध्यग्रामका [ध]धै

वत मध्यग्रामका पुनः [म]मध्यम मध्यग्रामका पुनः [म]मध्यम म

ध्यग्रामका पुनः [ध]धैवत मध्यग्रामका पुनः [ध]धैवत मध्यग्राम

का पुनः निषादकोमल मध्यग्रामका पुनः निषाद कोमल



सं० र०
मा० सू०
२३

मध्यग्रामका॥ पुनः धैवत॥ मध्यग्रामका॥ पुनः मध्यम॥ मध्यग्रा
मका॥ पुनः पंचम॥ मध्यग्रामका॥ पुनः मध्यम॥ मध्यग्रामका॥
पुनः गंधार॥ मध्यग्रामका॥ मूर्छना॥ पुनः धैवत॥ मध्यग्रामका॥ पु
नः धैवत॥ मध्यग्रामका॥ पुनः मध्यम॥ मध्यमग्रामका॥ पुनः धैव
तमध्यग्रामका॥ पुनः धैवत॥ मध्यग्रामका॥ पुनः मध्यम॥ मध्य
ग्रामका॥ पुनः धैवत॥ मध्यग्रामका॥ पुनः निषादकोमल॥ म
ध्यग्रामका॥ खरजतारग्रामका॥ खरज तारग्रामका॥ पु
नः खरज॥ तारग्रामका॥ रिषभतारग्रामका॥ पुनः निषाद

कोमल मध्यग्रामका षड्ज नारग्रामका पुनः रिषभ नारग्रा

मका पुनः रिषभ नारग्रामका पुनः निषादकोमल मध्यग्रा

मका कोमलनिषाद मध्यग्रामका पुनः धैवत मध्यग्रामका

पुनः धैवत मध्यग्रामका पुनः निषादकोमल मध्यग्रामका

पुनः निषादकोमल मध्यग्रामका पुनः धैवत मध्यग्रामका

पुनः मध्यम मध्यग्रामका पुनः पंचम मध्यग्रामका पुनः

मध्यम मध्यग्रामका ॥ पुनः गंधार मध्यग्रामका ॥ इत्यन्तः ॥

स्वरानाम ॥ नि सा गा म प ध ध

सं·ग·
मा·१
२४

24

म प म ग ग म म प प नी (कोमल)

नी प म प म ग ॥ ध्रुवस्थाई ॥ प नी (कोमल)

कोमल

सा सा सा सा रे रे नी (कोमल)

नी (कोमल) प प म म प प नी (कोमल) नी (कोमल) प म

प म ग ॥ ध्रुवन्तः ॥ प प म प प म

प नी (कोमल) सा सा रे नी (कोमल) सा सा

रे रे नी (कोमल) नी (कोमल) प प म म म म

प प नी (कोमल) नी (कोमल) प म प म ग ॥॥

नि (कोमल) स ग म प ध ध म प म

ग ग म म प प नी (कोमल) नी (कोमल) प म

प म ग ॥ अथधैवतादिस्वरग्रामरेवभावतीरागस्तिवर्णनम् ॥

(ध) धैवत ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः (ध) धैवत ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः

(नी॰ को॰) निषादकोमल ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः (ध) धैवत ॥ मध्यग्रामवा-

ला ॥ पुनः (नी) निषादमध्यम ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः (प) पंचम ॥ मध्य-

ग्रामवाला ॥ पुनः (म) मध्यम ॥ मध्यग्रामवाला ॥ (ग) गंधार ॥ मध्यग्राम-

वाला ॥ पुनः (म) मध्यम ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः (म) मध्यम ॥ मध्यग्राम

सं॰ गा॰
मा॰ ४॰
२५
25

वाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः निषादकोमल मध्य

ग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रा

मवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्राम॰

वाला मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः षडज मध्यग्रामवाला ।

पुनः निषादकोमल मंद्रग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्राम

वाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला

पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पु

नः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः

गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः

पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गं

धार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला मध्यम म

ध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रा

मवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्य

ग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्राम

वाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवा

ला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला

पुनः निषादकोमल मध्यग्रामवाला पुनः खड्ज तारग्राम

वाला पुनः रिषभ तारग्रामवाला पुनः रिषभ तारग्रामवाला

पुनः निषादकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषादकोमल

मध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवा

ला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवा॰

पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः निषादकोमल मंदर

ग्रामवाला पुनः खड्ज मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रा

मवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रा

मवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रा

मवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्राम

वाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवा-

पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला

इत्यस्थाई॥ धैवत मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्राम

वाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः रिषभ तारग्रामवाला

पुनः रिषभ तारग्रामवाला पुनः निषादकोमल मध्यग्राम

स॰ग
मा॰ष॰
२०

वाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला

पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पु

नः गंधार मध्यग्रामवाला ॥ इतमल्लः ॥ अथस्वरादारवर्गनिं सरगम ॥

को को
प प नी प नी प म प म ग म

को
ग सा नि सा ग म प म प

को को
नि प नी सा सा रे रे नी

को
प म प म ग म प नी

को को
प प नी प नी प म प

२७

म ग म म प प नी नी प

म प म ग ॥ इत्यस्थाई॥ धैवत॥ प प म

प प म प नी सा सा सा

रे नी सा सा रे रे नी नी

प प म म प प म म प

म प म ग म ग सा नि

सा ग म प प म प म ग

इतिस्वरा॥ इतिधैवताधिसरगम॥ तृतीयप्रकारदेशान्तरे ॥

सं॰ गा॰
मा॰ ५॰
२८

मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम म
ध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवा
ला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला।
पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला
पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पु
नः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला

३ मध्याई॥ अथातश्म॥ म ग म ग म रे
सा म प ग म रे सा रे म ग

सा रे

इमनरागिणी॥ अथालाप॥ षड्जमध्याई॥ रिषभ मध्यग्रामवा

नि ध

ला निषादश्रुतिकोमल मंद्रग्रामवाला धैवत मंद्र

नि श्रु॰को

ग्रामवाला निषादश्रुतिकोमल मंद्रग्रामवाला पुनः

सा रे श्रु॰को

षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला

नि श्रु॰को प

पुनः निषादश्रुतिकोमल मंद्रग्रामवाला पुनः पंचम

श्रु॰को ध म

मंद्र ग्रामवाला पुनः धैवत मंद्रग्रामवाला मध्यम मं

नी श्रु॰को

द्रग्रामवाला पंचम मंद्रग्रामवाला पुनः निषादकोमल

सा म

मंद्र ग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः मध्य

सं॰ ग॰
मा॰ १
२२

अ की | ग

म मध्यग्रामवाला शुद्धगांधार मध्यग्रामवाला ॥ इत्यन्त ॥ अथा

अथालापस्म ॥ सा रे नि प नि(ऽको) सा रे ग

नि(ऽको) प प प म प नि(ऽको) सा रे म

ग म प नि(ऽको) सा रे रे नि(ऽको) नि(ऽको) प प

म म प प नि(ऽको) नि(ऽको) प म प म

ग म ग म ग रे सा नि(ऽको) प

नि(ऽको) सा रे ग म ग रे म ग

इत्यन्त ॥ अथ देशीभेद खंभावति वर्णनम् ॥ अथ गतस्तितार तारतिन्न निषादादीवर–

गम्॥ ड्रिड ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्रू ड्रिड
नि·को सा ग म प पै म ग ग

ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्रू ॥इत्यस्थाई॥
म पै नि·को पै प म ग

ड्रिड ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्ग ॥ ड्रिड
ग म पै नी सा नि सा सा रे

ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्रू ॥इतिअन्तरः॥
नि·को नी·को नी·को प प म ग

ड्रिड ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्रू ॥ ड्रिड
प प म पै पै पै नी सा सा

ड्ग ड्रिड ड्ग ड्रू ड्ग ड्ग ड्रू ॥आभोगः॥इति
रे नी सा रे नी प म

निषाद(ग्रादि)गतम्षितारसमाप्तम्॥ खम्भावतीरागनी॥ अथधैवतादिस्वरगतम्षि

तारतारनित्र खम्भावतीरागणी ड्रिड ड्ग ड्रिड ड्ग
प प नि·को प

सं॰ र॰ मा॰ ह्॰ ३॰

30

५ ६ ७ ८ | १ २ ३ ४
ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड डा डिड डा
नी॰को॰ सा सा रे | रे नी॰को नी॰को ध

५ ६ ७ ८ | १ २ ३ ४
ड्रा ड्रा डा ड्रा ॥ डिड डा डिड डा
म प म ग | म ग सा नि॰को

५ ६ ७ ८ | १ २ ३ ४
ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड डा डिड डा
सा म प म | प म ग म

५ ६ | १ २ ३
ड्रा डा डा ड्रा ॥ इति स्थाई ॥ डिड डा डिड
धे धनी मी सा | सा नीको सा

४ ५ ६ ७ ८ | १ २ ३
डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड डा डिड
रे सा रे नीको धे | म धे नीको

४ ५ ६ ७ ८
डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ इति अंतरा ॥ धैवतादि।
धे म पं म ग

गतसमाप्तम् खम्भावतीरागिणी ॥ः

अथ देशाक्षरभेद वर्णनम् ॥ गतसितारत्नाकरनिन्नरागिणी।

खम्भावती ॥ गतफरोजखानी

१	२	३	४
डा	ड्रा	डा	ड्रा
म	ग	म	ग

५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
डा	ड्रा	ड्रा	डा	डिड	डिड	डिड	डाड्र	डाड्र
म	रे	ग	म	पं	ग	म	रे	सा

१४	१५	१६		१	२	३	४	५	६
डा	डा	ड्रा	॥इत्यस्थाई॥	डा	ड्रा	डा	डा	ड्रा	डा
रेको	म	ग		सा	रे	नि	ध	ध	निको

७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
डिड	डिड	डाड्र	डाड्र	डा	ड्रा	डा	ड्रा	डा	डा
सा	रे	निको	ध	ध	म	निको	सा	[illegible]	धे

इत्यन्तरा॥ जाननाचाहिके उसमें और इसमें कियाभेदहै उसमेंती
वरस्वरहै और परजवसन्तसैंधवरागमिलताहै इसमेंको
मलस्वरवहुतहैं और परज पंचम कौशिया मिलताहै
और शाकल रागिणीकी जंगले कौशियेसी हो जातीहै

स॰ रा॰
मा॰ १
३१

अपनीअसलीपल्लवपरनहीरहती लेकेनदेशान्तरकेभेद-

करके लिखेनी जरुरतहै इसवास्तेलिखीगई ॥ ॥अथतान॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
डा	ड्डा	डा	ड्डा	डा	डा	ड्डा	डा	डिड
म	ग	म	ग	रे	सा	रे	ग	म

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१	१
डिड	डिड	ड्डाड़	डा	डा	ड्डा	डा	डा	डिड
ग	रे	म	प	ध	म	प	म	ग

२	३	४	५	६	७	८	९
डिड	डिड	डाड़	डाड़	डा	ड्डा	डा	डा
म	प	निको	प	म	प	म	ग

१०	११	१२	१३	१४	१५
ड्डा	डा	डिड़	डिड	डिड	डा
रे	नीको	सा	रे	म	ग

॥ ॥इतिश्रीरागणी

इप्रकाशासारनामसंगीतग्रंथवेभावतीरागणीमालकौशप्रथमरागी उत्पतिप्रकार

द्वितीयोध्यायः॥ २ ॥ नल्पअलापमस्तुदवेभावती॥

ननरी ईनांऊनां अरननौ तानौ नननानौ ननरी मना नना

ननानौ नना आनननानर। नननानौ नैननानौ तानौ नैनना

नौ नननन नननननानौ नननननरी नननानानौ नैननानौ

नननननरी नानआन नननाननर। नननना नननननौ ननरे

नर।यननानौननननौ तानौ नैननानौ नननन नननननौ

ननौननरी ईनाआनौ ऊआ नांअर ननौ तानौ नैननानौ ॥

इति त्रेष्मावतीरागगौमालकौंशस्य प्रथमभा गोस्वद्धपम इनीचद्वितीयोध्या

यः ॥ २ ॥ अथ द्वितीयरागगौमालकौंश रागद्वितीय ध्यावक्रगानम ॥

म॰ए॰
मा॰सू॰
३२

32

खडजअंशग्रहन्यासंतखडजादिकमूर्छना संपूर्णटोडीरागि

न्यः मालकौशप्रियाश्म १ पलाशीभीमवराटिश्चमिश्रतं॥

कुरुः दिवसेप्रथमसयामेनटोडीरागिणीगीयते॥२॥ दोहा॥

खडजन्यासग्रौरअंशग्रहहैकोमलतीव्रहोई बराटीभीमपला

शाकामेलकेटोडीहोई १ दिवसपहलेजाममेंसातसुरन

कोलाय मालकौंशकीभार्याटोडीरागिनिगाय॥२॥ वार्तिक॥

येटोडीरागिणीमालकौंशकी ह्रसरीरश्वी संपूर्णसातसु

रकी खडज ग्रह और अंशन्यासहै और भीमपलाशी ॥

वराटी धनाश्री इनरागोंमे इकत्रकरनेसे धोटोश्रीरागिणी होो

तीहै इसे इसपरकार सातस्वर लगतीहैं मध्यम तीव्रनि

षाद तीव्रधैवत गंधार इसप्रकार सातस्वर लगतीहैं मध्य

म तीव्रनिषाद तीव्रधैवत गंधाररिषभकोमल लगतीहै

खड्ज पंचम येस्वर शुद्धलगतीहै इसपरकार करके दिनमे

मध्यमही प्रहरमे गातीमे आतीहै ॥ नाइका नाइक रस

अलंकारदेवता रिषीछंद मंत्र आवाहिन विसर्जन ध्या

न आगे लिखे जाइगे ॥ संगीतरत्नाकरे ॥ गंधारग्रहसंयुक्ताः क्वचि

स॰ग॰
मा॰सू॰
३३

D3

तमध्यमर्षिरतः संपूर्णां टोडिकां ज्ञेया गमधपनीसारेस्वरा १

तखारकुंदोज्वलः देहायष्टीकाश्मीरकपुरविलसदेहा वि

नोदयन्ती हृ विपिनां वनीते वीणां धरा राजती ये टोडिकोयं २ गुज

रीवराटी मुक्ताच कान्यवतनयः टोडिका गायते माक्षा दिवसे

प्रथमजामयते ॥ ३ ॥ इति संगीतरत्नाकरे च ॥ अथ संगीतदर्पनमतेन ॥ ॥

दोहा ॥ स्याम अंग प्रगट ह खडज अंग गपरस्परणे जोत टोडी पहर पर

गणि टोडी नित हीं होत ॥ १ ॥ अथ रागमालायां ॥ दोहा ॥ खडजग्र

ह सरिगमपधनि सातो स्वर अभिराम टोडी गावत सब दवित

दिवहुसरीजाम॥ तथाचसंगीतकल्पद्रुमः॥ संगीतकल्पद्रुममेश्रीर

संगीतरत्नाकरमे इत्नाहीफरकहै॥ पाठसंगीतकल्पद्रुमः॥॥॥

गंधारांशग्रहंन्यासंक्वचित्धैवतशोभितः सम्पूर्णांटोडिकाज्ञेया

दिवसादौ ज्ञामेपगीयते॥ १॥ नादमहोदधौ॥ तथाच॥ षड्जंश्चांशग्रहं

न्यासंखड्जादिकमूर्छना सम्पूर्णांटोडिकाज्ञेयाकथ्यतेन

सरस्वती १ भीमपलाश्रीवराटीचतिस्त्रभिमिश्रतंकुरुः

टोडिकाप्रथमदिवसीगीयंमालकौशस्ववलभः २ पेटोडीराग

णी मालकौशकीरस्त्री वारेप्रकारसो गानेहैं श्रीर उस

सं॰ ग
मा॰ पू
३४

34

जगा इसका अलग अलग नामहै असल येटोड़ीहै और इहां
येही टोड़ी लिखीजाइगी और बाकी टोड़ियां आगे संकीरण
रागोमे लिखे जावेगे इसजगा आन्हरवी मर्यादा लिखीजा
इगी टोड़ीरागणी मालकौशकी कुमरीहै भीमपलाशी बरा
टी इन्हाको येकजगाकरके गावे टोड़ी रागणीहोगी दिन
के पहले पहरमे इसको गातेहैं श्रीशारदाजी हनूमानजी
ने इसीप्रकारसे ग्यानिकीयाहै इसको ऋत और देवता
नाटक नाटकारस अलंकारमंत्र सर्वांग सबलिखे जातेहैं

प्रथमकितनेभेदकी टोडीरागणीहैं ॥ टोडी १ वहादुरी

टोडी २ जौनपुरीटोडी ३ गिरनारीटोडी ४ अहीरीटोडी ५

लगीटोडी ६ छटटोडी ७ देषीटोडी ८ सिंधरीटोडी ९ गंधारी

टोडी १० कर्णाटीटोडी ११ रांमटोडी १२ गुजरटोडी १३ वराटी

टोडी १४ मधूमाधवीटोडी १५ आनंदटोडी १६ सूहीटोडी १७

विहारीटोडी १८ वंगालीटोडी १९ जोगियाटोडी २० कलंडी

टोडी २१ हेमकारीटोडी २२ इसकोदछन टोडीभी कहतेहैं

अथटोडीवर्णनम्॥ औरटोडीकोआसवरीटोडीभीकहतेहैं ॥

सं॰रा॰
मा॰१॰
३५

35

और मीयेकी रोगीभी कहतेहैं रोगीयहहैहै रोगीरागणी श
रदरित समय प्रथम पहर दिनमे करनारस स्नादश अलंका
र और श्रृंगाररसभी कहतेहैं रतनाइक संडतामध्यानाइका
और आगम पंक्तीभी कहतेहैं भरतरिषी परमात्मादेवता
आयाश्रानी ॐवीज पंक्ती छंद ॥ वैजनाइक ॥ गो
पालभी इसको वशेश गाइन करताथा ॐक्रंक्रंक्रंस्वा
हा ॥॥ इतिमंत्रः ॥॥ॐभरतरिषि क्रं वीजस्य
परमात्मा देवता ॥ ॥

आद्याशक्ती पंगतीछंदः टोडिकारागणी सिद्ध्यर्थेजपेविन

योगः पुष्पश्वेतचंदनकुंकुम धूप अगर दीप नैवेद्य पुण्यकर

केपूजनकरणा जपसंख्या पंचलक्ष ब्रह्मचर्यधारणा कर

के शिवालयमे जपकरणायथायोग्यवीनाकी पूजकरके

यथायोग्य इस्काध्यानकरणा इसीकोगाइनकरणा विना इस

के और किसीरागकोनहीगाना नवये सिपहोजावेगी॥ अथ

ध्यानम्॥ नवोदकुंदोज्वलः देहायष्टीकाकाश्मीरकरपूरविलप्त

देहाविनोदयन्तिहरणांवनीते वीणाधरारागजतीटोडीकोयं ८

स॰ रा॰
मा॰ सू॰
३६

36

अथभाषाध्यानम्॥ संदरअंगअनंगभरीछविश्यामलविंदुनिराजन

टोडी अंम्बरस्वेतउरोजउनंगिनिनागिनीअलकेंजगंछोडी ॥

हूमततनाननघाननसोकरहूमतिकाननकेम्रगमोडी नाहि

नचावतवीनवजावतमीतमकोगुणगावतटोडी॥ ।।।।।॥ इतिध्यान

म्॥ अथउत्पतीभिमपलाश्रीवराटीधनाश्रीहू नमिश्रतकरनेसेटोडीरा

गणीहोतीहै करुणमयतस्य आहूती निहूती द्वारा टोडी

रागणीस्वरमाह॥।।*॥ षडज मध्यग्रामवाला रिषभकोम

ल मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम

तीव्र मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पंचम मध्य

धैवतकोमल मध्यग्रामवाला निषादतीव्र मध्यग्रामवाला

इनोंस्वरोंसेयेरागणी बनती है ॥ अथमध्यग्रामबनानविधीलिख्यते ॥

षड्ज मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधा

रकोमल मध्यग्रामवाला मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला पं

चम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला नीषा

दतीव्र मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः नीषाद

तीव्र मध्यग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मध्यग्रामवाला



सं.रा.
मा.पृ.
३८

37

पुनः पंचम[प] मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम[म]तीव्र मध्यग्रामवाला

पुनः गंधार[ग]कोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ[रे]कोमल मध्य

ग्रामवाला पुनः खरज[सा] मध्यग्रामवाला पुनः खरज[सा] मध्यग्राम

वाला पुनः निषाद[नी] मंदरग्रामवाला पुनः धैवत[धै]कोमल मंदर

ग्रामवाला पुनः पंचम[प] मंदरग्रामवाला पुनः मध्यम[म]तीव्र

मंदरग्रामवाला पुनः धैवत[धै]कोमल मंदरग्रामवाला पुनः नि[नी]

षादकोमल मंदरग्रामवाला पुनः खरज[सा] मध्यग्रामवाला·

पुनः खरज[सा] मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ[रे]कोमल मध्यग्रामवा·

ला पुनः गंधारकोमल मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्र म

ध्यग्रामवाला पुनः गंधारकोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ

कोमल मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला॥ इति ग्रह्याई॥

गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला पुनः

पंचम मध्यग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पु

नः निषादतीव्र मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला पुनः रि

षभकोमल तारग्रामवाला पुनः निषादतीव्र मध्यग्रामवाला

पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला

सं॰ग॰
मा॰१॰
३८

38

पुनः गंधारकोमल पुनः रिषभकोमल पुनः खरज नादग्राम
वाला पुनः निषादतीव्र मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्य-
ग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला पुनः गंधारकोमल
मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः खर
ज मध्यग्रामवाला पुनः निषादकोमलेतीव्र पुनः धैवतको
मल मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदरग्रामवाला पुनः मध्य
मतीव्र मंदरग्रामवाला पुनः धैवतकोमल पुनः निषादतीव्र
मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल

पुनः गंधार[ग]कोमल पुनः मध्यम[म]तीव्र मध्यग्रामवाला पुनः
गंधार[ग]कोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ[रे]कोमल मध्यग्राम
वाला पुनः खरज[सा] मध्यग्रामवाला पुनः खरज[सा] मध्यग्रामवा
ला पुनः रिषभ[रे]कोमल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार[ग]कोमल
मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम[म]तीव्र मध्यग्रामवाला पुनः पंचम[प]
मध्यग्रामवाला पुनः धैवत[धै]कोमल मध्यग्रामवाला पुनः नि[नी]
षादतीव्र मध्यग्रामवाला पुनः खर्ज[सा] तारग्रामवाला पु
नः निषाद[नी]तीव्र मध्यग्रामवाला पुनः धैवत[धै]कोमल मध्यग्रा

सं.गा.
मा.श्.
३३

37

मवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्र मध्य

ग्रामवाला पुनः गंधारकोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिष

भकोमल मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः

निषादतीव्र मंदरग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मंदरग्रा

मवाला पुनः निषाद तीव्र पुनः धैवतकोमल मंदरग्राम

वाला पुनः पंचम मंदरग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्र मंदर

ग्रामवाला पुनः धैवतकोमल मंदरग्रामवाला पुनः नि

षादतीव्र मंदरग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला ॥

पुनः मध्यमतीव्र[म] मध्यग्रामवाला पुनः गंधारकोमल[ग] मध्य

ग्रामवाला पुनः रिषभकोमल[रे] मध्यग्रामवाला पुनः षड्[सा]

ज मध्यग्रामवाला ।।।।।। इतिअन्तः ।। अथस्वरान्तरम् ।। ।। ।। ।। ।। ।। ::

सारे ग म प ध नी सा नी ध प

म ग रे सा नी सा नी ध प

म प नी सा रे ग म ग रे

सा ।। इत्यस्थाई ।। अथअन्तरा ।। ग म प ध नी

सा रे ग ग रे सा नी ध प

स॰ग॰ मा॰रे॰ ध॰

म ग रे सा रे ग म प ध नी

सा नी ध प म ग रे सा नी ध

प म ध नी सा रे ग म ग रे

सा ॥ इति अन्तः ॥ इति टोडीरागिणीसरगमलिख्येते ॥ अथ अलंकारस्वरूपम ॥

सारेग रेगम गमप मपध पधनी पधनी

धनीसा सानीध नीधप धपम पमग

मगरे गरेसा इति अलंकारस्वरूपम ॥ इसी सें गंधार अंश की भी सरगम बनसकती हैं पंचगंधार अपणी असल

40

ग्रह्यानमरनहीं इसवास्ते इसकी ग्रंशरखेनेकी और

लिखेनीकी चंदाजरूरत नहीहै लेकण कोइथोरासा

लिखा जासकताहै ॥ गंधारकोमल मध्यग्रामवाला

मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवा

ला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षडज मध्यग्रामवाला

निषादतीव्र मंदरग्रामवाला खेरज मध्यग्रामवाला ॥

रिषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला म

ध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतकी

स·रा·
मा·१·
४१

मल मध्यग्रामवाला निषादतीव्र मध्यग्रामवाला धैवतको

मल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यमतीव्र

मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला रिषभकोम

मलमध्यग्रामवाला खरुज मध्यग्रामवाला गंधारकोमल

मध्यग्रामवाला मध्यम तीव्रवाला गंधारकोमल मध्यग्राम

मवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला खरुज मध्यग्राम

वाला मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रा

मवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला खरुज मध्यग्राम

41

वाला निषादतीव्र मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मंदरग्रा

मवाला निषादतीव्र मंदरग्रामवाला खरज मध्यग्रामवाला

इति निषादाई॥ अथ अल्लाविलास॥ मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला धैवतकोम

ल मध्यग्रामवाला निषादतीव्र मध्यग्रामवाला खरज तारग्रा

मवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला गंधारकोमल तारग्राम

वाला रिषभकोमल तारग्रामवाला खरज तारग्रामवाला नि

षादतीव्र मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंच

मध्यग्रामवाला मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला गंधारकोमल·

सं॰ ग॰
मा॰ १॰
४२

42

मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रा
मवाला निषादतीव्र मध्यग्रामवाला धैवतकोमल निषाद
तीव्र मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला रिषभकोमल म
ध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यमतीव्र मध्यग्रामवाला गंधा
रकोमल मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्
ड्ज मध्यग्रामवाला निषादतीव्र मंदरग्रामवाला धैवतकोम॰
ल मंदरग्रामवाला निषादतीव्र मंदरग्रामवाला षड्ज मध्य
ग्रामवाला ॥१॥ ॥ इत्यलं ॥ इति गंधारांशग्रहा टोडीरागिणीवर्णनम् ॥ अथगता

सितारजित्रखेडजस्वरादीलिख्यते ॥ डिड डा डिड़ डा ड़ा

ड़ा डा ड़ा ॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा

ड़ा ॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा

इत्यस्थाई ॥ अथअन्तरः ॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा

ड़ा डिड़ डा डिड डा ड़ा डा ड़ा ॥

डिड डा डिड डा ड़ा डा डा ड़ा ॥ इतिअंतरः ॥

इतिधेवतखेजस्वरादिगतसमाप्तम् ॥ पुनः उसीअस्थाईको प्रथमप्रकार-

सिजिमतमां पहलेबजानी लिखी है ॥ द्वितीयप्रकारगतसितारतार-

सं॰रा॰
मा॰ ४॰
४३

43

तित्रगंधारस्वरादीलिख्यते॥ ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा

ड्रा ॥ ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ॥

ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ॥

इतिस्थाई॥ अथड्रिड्रअन्तरः॥ ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा

ड्रा ड्रा ॥ ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा

ड्रिड्र ड्रा ड्रिड्र ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ड्रा ॥ः

इतिअन्तरा॥ इतिगंधारादीगतसमाप्तः॥ फेरउसीतरांसेपहलीअस्थाईमे

मिलजानाचाहिये ॥ अथअलापस्वरूपम॥ अतरम ॥

सा रे ग म म धको नी सा नी ध प

ननंनरीनानैं ननानननैंनानैं नरननननानैंनेंननानैं ।।

म ग रे साको सा नी ध·को नी·प म

नांननरानननानैंनैंननानैं ।। नानननननैं नननननन

प की सा गको म प नी सा रे

नैं नैंननानैं ।। नानरानननैं ननानैं ननननन नननननन

ग म रे सा नी सा रे सा ग

नैंननननैं नैंननानैं नननानैं नननरीना ननरीऽना ।।

रे सा नी प प म ग रेको सा नि

ननननैं नानैंननरी ननानैंनैं ननानैं नननननैं ननन

धको प म ध नी सा रे ग म ग रे

ननननननननैंननननैंनैंनैंननानैं ननननननननानानानैंन

सा सा रे म प प नी सा नी नी ध

ननैंनानैं नननैं नननना ननानैं ननानैं नैं नानैंनन

प म ग रे सा स रे ग रेगम गमप

ननननननानैंन नननननानैं नैंननानैंनानैंनैंननानैंनेंन

सं॰रा॰
मा॰सृ॰
४४

44

ध प नी धेप ध पम पमग मगरे गरेसा

नानीनानीम् नानीननगानी नानीनेनना नी नानीनी ॥

नी को नी की को को

इति आलापम्॥ इति टोडीरागिणी मालकौंश द्वितीयभार्या संगीतदर्पणे वीरप्रकाशसारनामग्रंथेऽष्टतीयोध्यायः समाप्तम् शुभम्

अथकुकुभरागिणीमालकौंशस्तृतीयभार्यावर्णनम्॥ खरजांशग्रहंन्यासं खरजादिकमूर्छना सम्पूर्णांकुकुभरागिण्यः मालकौशस्यवल्लभः ग्रीषमर्तौ प्रथमदिवसे यामे त्रिभिरागिणीमिश्रतः जैजैवन्ति अलैयाश्चवेलावलीस्तथा कुकुभरागिणीनि संगीयन्तेच

गुणीजनौ मालकौशरागरागणिष्टयाकथतेहनूमानम

तौ ॥भार्यापदोहा॥ अंशग्यासग्रहखरजसरसमसुरणप्रमाण कु

कभस्यामालकौशकीगावतगुणीसताण सातस्वरसम्पूर

णकहीकुकुभकौशकीवाम जैजैवंतीवेलावलीअलैयामि

लेएकहीथाम ॥दोहा॥ कुकुभरागिणीउत्पनभईमालकौंशकी

जो गावतबुद्धीवानजनसारेगमपधनीसो ॥वार्तिक॥ कुकुभरा

गिणीमालकौंशकी तृतीयभार्या सम्पूरण सातस्वरकी

सबमतोंके अनुसारहै और खरजस्वर इसमैं अंशग्यास

सं·रा·
मा·१·
४५

45

यहहै और जैजैवन्ती और वेलावली और अलैया इन ती

न रागको एकत्र करणेसे इस रागणीकी उत्पती होती

है और कोई कोई एभीकहतेहैं के जैजैवन्ती वेलाव

ली देवगिरी इनतेनके एकहोनेसे इसरागिणीकी उत्प

तीहोतीहै वास्तवदोनोवात एकहीहै कियोंके जवतक

देवगिरीमे आनकरके अलैया नामिले तवतक देवगि

रीनहीहोती इसवास्ते दोनो वातां एकहीहैं कुकुभरा

गिणी मालकौशकी॥उत्पती॥लिखीहै ॥१॥ सा रे ग

म प प नी सा नी नी प प

म ग रे स अथ संगीतरत्नाकरी लिख्यते ॥ उपोषितांगी

रतिमंडितांगी चंद्राननां चंपकदामयुक्ता कटाक्षणी स्यात्परमा

विचित्रा दानेन युक्ता कुकुभा मनोज्ञा वेलावली देवगिरी प्रयुक्ता

जैजैवन्तीतन्यं कुकुभा जायते मालादिवसे प्रथम जामका

षड्जांशग्रहं न्यास समस्तरागणि कुकुभा मता सारेगमपधनीसा

नीनीधपमगरेसा ॥ ॥ इतीच ॥ अथ संगीत दरमणे ॥ धैवतन्यास ग्रहकस्यं

शग्रहमन्यास संपूर्णांचंद ॥ जीनपहरमपरागिणी कुकुभाको अनंत ॥

सं॰रा॰
मा॰पू॰
४८

46

द॥ १ ॥ अथरागमालाया॥दोहा॥ धैवतग्रहधनिसरेगमपषूराणिषुराणिजात

वखान सरदरेनचौथेपहरककुभरागिणीजान॥ इतिरागमालार्थ॥

इसनेधैवतस्वरमंद्रस्थाईग्रहग्रोरन्यासग्रोरग्रंशाकहाहै ग्रौर इ

नोनेइसकी सरदरितु लिखीहै ग्रौर चौथापहर रातका

लिखाहै ग्रर्थातप्रातःकाल॥ इतिरागमाला॥ ग्रथककुभसर्वांगवर्णनम्॥

खंडितानाइका षष्टनाइक मध्या शारदरित दिवसाद्याम

समय शिवदेवता पंक्तीछंद नारदरिषी हनूमानतथा

भरतमतमत सरस्वतीमत कालीशाक्ती क्लींबीज द्वादश

अलंकार वैज्ञजगन्नाथदाईनाइक ॥ स्वंदशस्वाणी ॐ क्लीं

ॐ क्लीं क्लीं ह्रीं भं भं स्वाहा ॥ इतिमंत्रः ॥ ॐ क्लीं बीजं कालीशक्ती

शिवदेवता पंक्तीं छंदः कुकुभासिध्यर्थे जपेविनियोगः

धूप दीप पुष्पकुंकुम नैवेद सहत पंचांगपूजन आवाह

नं आसन सर्वेमन शिवाले मध्यघटमास जपएकदश

लक्षकरनेसे सिद्ध होजातीहै ॐ क्लीं आवाहनम् ॐ ह्रीं

आसनं नमः क्लीं भं प्राणप्रतिष्ठाकुरुः ॐ भं क्लीं स्नानं नमः

ॐ क्लीं ह्रीं गंधं नमः ॐ क्लीं पुष्पं नमः ॐ ह्रीं भं धूपं नमः ॐ क्लीं



स॰ग॰
मा॰१॰
४०

47

भंहींषंनमः ॐह्रींभंभंनैवेद्यंनमः ॥ अथध्यानम् ॥ उपोघतांगीरति

मंउतांगीचंद्रानननाचम्पकदामयुक्ता कदालणीस्यात्परमा

विविञ्चादानेनयुक्ताकुकुभामनोज्ञा ॥ अथभाषाध्यानम् ॥ विघुरीअ

लकैं अंखीयाललकैं प्रतिजोवनकीफलकैं तनमे पठकेसरि

याउबरीह्नतीयादरकीअंगियापरवंभनमे सबैनजगीपल

नाहलगीछलसोकरिप्रीतठगीवनमे पीयवोलहुन्योउव

यावतहेकुकुभावतीरोवनकुंजनमे ॥॥ इतिभाषाध्यानम् ॥ अ

थवार्तिकध्यानम् ॥ एकनाइकावडीसुंदरमानोपरमणीकुदवुषा

कीन्याई वणि और यौवनतीमानोरतीछयाकामकी चंदर

मुखीचपलापीनपटलीपेहुयेकामसेभरीहुईपतीसेविनावा

त्रिककेशाहस्तनेसेदिखेतलगाईमाणकुंजनमेनेत्रोंसेवियोगरू

पीनदीकोपरवाहपरवहाइरहीहै ॥ इतिध्यानम् ॥ तस्मोत्पते ॥ ॥ ∴ ॥

षड्ज मध्यग्रामवाला रेखभमध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्राम

वाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवत

मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला खड्ज तारग्रामवा

ला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला

सं॰ग॰ मा॰सू॰ ५८

धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला ॥ सा रे ग म प ध नी। सा नी ध प म ग रे सा

इत्यस्थाई ॥ सारेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसा सानीध नीधप धपम पमग मगरे गरेसा

सारेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसा ॥ धनीसानी नीसानीध सानीधप नीधपम धपमग

पमगरे मगरेसा सारेगमप रेगमपध गमपधनी

मपधनीसा पधनीसानी धनीसानीध नीसानीधप

सानीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेसा सारे

सारेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनी

धनीधनीसा सानीसानीध नीधनीधप धपधपम ॥

पमपमग मगमगरे गरेगरेसा सारेग मपप (

रेगमपधनी गमपधनीसा मपधनीसानी पधनी

सानीध धनीसानीधप नीधपमगरे धपमगरेसा ८



सं॰ग॰
मा॰शु॰
४९

49

सारेग मपधनी १ सानीधप मगरे २ रेगम प-
धनीसा ३ सानीधप मगरे ४ गमप धनीसानी ५
नीसानी धपमग ६ मपधनी सानीध ७ पधनी
सानीधप ८ धनीसानी धपम ९ नीसानी धप
मग १० सानीधप मगरे ११ नीधप मगरेसा १२
खडुज तारग्रामवाला रिषभ तारग्रामवाला गंधार ता-
रग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवा-
ला गंधार तारग्रामवाला रीषभ तारग्रामवाला ॥

रीषभ तारग्रामवाला खरज तारग्रामवाला नीषाद मध्य

ग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रा

मवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवा·

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः

निषाद मंदरग्रामवाला धैवत मंदरग्रामवाला पुनः पंचम

मंदरग्रामवाला पुनः मध्यम मंदरग्रामवाला खुलासितारका

पुनः पंचम मंदरग्रामका पुनः धैवत मंदरग्रामका पुनः नि

षाद मंदरग्रामका पुनः खरज मध्यग्रामका पुनः रिषभ म

स॰ र॰
मा॰ १
५॰

50

ध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम म

ध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्य

ग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रा

मवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवा

ला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः नीषाद मध्यग्रामवाला

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः नीषाद मध्यग्रामवाला॰

पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला॰

पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला।

पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः खेडज मध्यग्रामवाला·

इतिअन्तः ॥ अथस्वरालानम् ॥ सा रे ग म प रे सा

नी ध प म ग रे सा रे ग म

ग रे सा नी ध प म प ध नी

सा रे ग म ग रे सा सा रे ग

म प ध नी सा नी नी ध प

म ग रे सा रे ग म ग रे सा

इतिअन्तः ॥ अथद्वितीयप्रकारसेरागमककुभरागणीलिख्यते ॥



स॰ ग॰
मा॰ १॰
५१

मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभ मध्यग्रामवा

ला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम म

ध्यग्रामवाला धैवत मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला

मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला रिषभ म

ध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला रिषभ मध्यग्रामवाला

गंधार मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ अथस्वरान्तरम् ॥ ॥ ॥

म ग रे सा सा रे ग म

ग म प प प म ग रे सा

रे ग म ग रे मा रे ग ।।११।। इति ग्रस्थाई ।।

अथअंतरा ।। गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्य-ग्रामवाला ख्वड्ज तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः ख्वड्ज तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः ख्वड्ज तारग्रामवाला गंधार तारग्रामवाला पुनः मध्यम तारग्रामवाला पुनः गंधार तारग्रामवाला पुनः रिषभ । तारग्रामवाला पुनः ख्वड्ज तारग्रामवाला पुनः ख्वड्ज ।

स॰ ग॰
मा॰ शु॰
५२

नारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्य

ग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्य-

ग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्य

ग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रा

मवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज नारग्राम॰

वाला पुनः धैवत मध्यग्रामवाला पुनः धैवत मध्यग्रामवा॰

पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला॰

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पु

नः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद् मंदरग्रामवाला पुनः

धैवत मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदरग्रामवाला पुनः रि

षभ मंदरग्रामवाला ॥ श्रीरयेरिषभस्तिताथमे इसतरां

सेवन्नाहै जो नवरोतोखरजों पितलकीयां पंचमकी मंद

स॰ रा॰
मा॰ सू॰
५२

री मंदरस्थानवाली दबानेसे॥ रिषभ॥ मंदरग्राम॥ और॥ येरि

षभ सितारमे इसतरासे बजाहै जो जबदोनो खरजों पित

लकीयां पंचमकी सुंदरी मंदर ग्रामवाली दबानेसे रिष

भ मंदरस्थानी होताहै पुनः पंचम मंदर ग्रामवाला पुनः

निषाद मंदरग्रामवाला॥ पुनः खरज॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः

रिषभ मध्यग्रामवाला॥ पुनः गंधार मध्यग्रामवाला॥ पुनः

मध्यम॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः म

ध्यम॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः गंधार॥ मध्यग्रामवाला॥ पुनः रिष

म मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ

मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ॥ इतिअन्तराआभोगः ॥

अथस्वरअन्तरम् ॥ ग म प नी नी सा सा सा नी

सा ग ग म ग रे सा सा सा नी ध

प म म म ग म प सा ध ध प

म ग म ग रे सा सा रे ग म ग

म प प प म ग रे सा सा रे ग

म ग रे सा नि ध प रे प नि सा ।

स॰ग॰ रे ग म ग रे सा रे सा म प प प म

मा॰रू॰

पक्ष ग रे सा सा रे ग ॥ इति अन्तरा ॥ आभोगः ॥

अथ अलापान्तरम् ॥ ननरी ॥ इना आऊ आ ॥ ना अरना ना नौ नेतनानौ ॥

आननानरानननननौ ॥ नानौनेतनानौ ॥ ननननननननननननौ ॥

नेननानौ नननानानौननननननानौनेननानौ नननननन

ननौनानौननननौनेननानौ ननौनानरीनानौनननानौना॰

नौनौनननौ नननौनननानाननौनेनननौ ॥ इति अलापान्तरम् ॥

अथ गत खितार तार तिनथीम ॥ खेडन स्वरादि गत है ॥ ॥ ॥

डिड्र डा डिड्र डा ड्रा डा डा ड्रा ॥।॥ डिड

डा डिड्र डा ड्रा डा डा ड्रा ॥।॥इतिग्रहाई॥

धैवतकेउपरइसकीसमहै ॥ डिड्र डा डिड्र डा ड्रा

डा डा ड्रा ॥ डिड डा डिड्र डा ड्रा डा डा

ड्रा ॥ डिड डा डिड्र डा ड्रा डा डा ड्रा ॥

डिड्र डा डिड्र डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड डा

डिड्र ड्रा ड्रा डा डा डा ॥ डिड्र डा डिड्र डा

ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड्र डा डिड्र डा ड्रा डा

सं॰ग॰
मा॰ह
५५

डा ड्रा ॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा डा ड्रा

डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ इतिअन्तरः॥

अथद्वितीप्रकारगतसितारमध्यमस्वरादीतिनतारलिख्यते॥ डिङ् डा डिङ्

डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा

डा डा ड्रा ॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा

डा ड्रा ॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा डा ड्रा

इत्यस्थाई॥ अथान्तरः॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा डा

ड्रा ॥ डिङ् डा डिङ् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥

डिड् डा डिड डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड्

डा डिड डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड् डा डिड

डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड् डा डिड डा ड्रा

डा डा ड्रा ॥ डिड् डा डिड् डा ड्रा डा डा

ड्रा ॥ डिड् डा डिड् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥

डिड् डा डिड् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड्

डा डिड् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड् डा ।

डिड् डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिड् डा डिड्

मु॰ गा॰
मा॰ ४
५८

56

त्रा त्रु त्रा . त्रा त्रु ॥म इतिमूर्छना॥ इसगतकोप्रथमायोगलिखोंहै ॥

इतिककुभरागणीमालकौंशरागस्यतृतीयभार्यावर्णितम् ॥ संगीतरागावीरप्रकाशसारनामग्रंथेच

तृथोध्यायः समाप्तम् ॥ शुभंभूयात्सर्वजगताम् ॥

अथगौरीरागणीमालकौंशरागस्यचतुर्थइस्त्रीवर्णनंसर्वसंगीतमतेनलिख्यते ॥

वज्रैश्शशस्त्रहस्ताम्सवज्रैश्चादिकमूर्छना रिषभस्वरहीनक

नंख्यंगौरीरागीयन्तउरवं । दिवसस्तृतीययामेषुश्रीस्त्रवीगौ

राचमिश्रतो गौरीरागिणीकथ्यतेयंमालकौंशस्त्रीपारम २

शारदरितैगौषिंगाररसमोकामरुथानाईकाजकथाते सनी।

गमपपंचरिषधैवतवववर्जितो ॥ अथभाषायांदोहा ॥ अंशन्यासग्रहखव

जेस्वरमूर्छनवाकीजान रिषभऔरधैवतकेविनापांचस्व

रनकोगान ॥ चौपई ॥ गौरारुवीश्रीरागजनकीजेपकहीथाई।

गौरीतवउत्पतभईकौशाकथयाकहाई शारदरितचौथेपह

रदहीजवपश्चमजाई मरुथानाईकाशिंकाररसगुणीरागतजो

गाई ॥ दोहा ॥ गौरीऊंरुवरागणीमालकौंशकीवाम कोमल

स्वररिषधैवतविनागावतहोविसराम ॥८॥ अथवार्तिकगौरीरागिणी



मालकौशकी चतुर्थइस्त्री औड़वपांचस्वरकी ॥ खड़जस्वर इसमें अंशन्यास ग्रहहै

और कोमल स्वरोंसे बनतीहै और रिषभ धैवत इसमें वि

वर्जितहय और श्रीराग पूर्वी गौरा इन रागोंको इकत्र क

रणेसे पैदाभइ गौरीनामा मालकौंशकी भार्या चतुर्थ

होतीहय शब्द रित शिंगाररस दिनके चौथे पहर

पर मध्यानाइका शब्दनाइकहय गानकरनी चाहिये और

रिषभभी इसमें अंशन्यास कहतेहय और संपूर्णभी क

हतेहैं ॥ संगीतरत्नाकरतथा संगीतपारजातनादमहोदधौ ॥ विषभांशाग्रहंन्यासं

रिषभादिकन्हछिना गौरीरागिणगीयतेमालकौशस्व

लभा । श्रीटंकमालवाग्रकोदिवसेचतुर्थयामे गौरीरागि

नकतिथामालकौंशष्टयाइम ॥ २ ॥ अथसंगीतमतेनलिख्यते ॥ निवेश

यंतिश्रवणेवंसंसमामसंकुरुं कोकिलनादरम्यंस्यामामधुर

स्फंदिहसल्लनादागौरीयमक्षाकतहलेन श्रीटंकमाल

वाग्रक्रगौरीचगीयतेत्रुये दिनान्तेसमयजातेसम्हणीरिष

भादिच ॥ १ ॥ संगीतभाषायाम् ॥ दोहा ॥ खजेग्रहसरेगमपधनीउडव

धविस्वरहीन प्रारददिवसचौथेपहरगौरीगानप्रवीन ।

सं॰रा॰॥
मा॰पू॥
५८

58

संगीतदर्पण॥ दोहा॥ अंशन्यासग्रहषड्जतैंपगस्वरहीनवनाई॥
मूर्छनापहलीवहरतीनपहरयरगाई ९ येगोरीरागणीमा
लकौशाकीभार्याशिवमतनयाहनूमानमतअनुसारहय दो
मकारकरके इसकोगानालिखाहै पैकस्वरपांच औरइस
एमानस्वर पकइसको षड्जस्वरग्रह अंशन्यास मानतेहैं
इसवारिषभस्वर अंशन्यास ग्रहमानतेहै जोषड्जग्रह
पांचस्वरमानतेहै सोकहतेहैं धैवत और रिषभनही
लगती और वाजेकहतेहै धैवत गंधार नही लगती

ओर जोरिषभ आदमान्तेहै वोइसको सम्पूर्ण मनते

हैं ओरललितागौरीभी इसको कहतेहैं अबगौरीके ब

नानेकी व्याख्यानकरतीहै आहती निवृती द्वारानस

मकारं गौरीरागणी मालकौशकीभार्या शरदरित दि

वसके चौथेपहर सूर्यके अस्तकालते पहलेसमय शि

वसन्त विलदेवता हनूमानरिषी पक्तीछंद सष्यानाइ

का द्वादश अलंकार श्रृंगाररस शठनाइक श्रीठंकमाल

वा श्रीपूर्वीगौरी इनरागोंके मिलापसे येरागणी उत्पती

स॰ए
मा॰१
५५

ह्रोतीहै ॐह्लींह्लींभंपंठंगंगंगौरव्येनमः॥इतिमंत्रः॥ ॐभंपंआस

नायनमः॥ॐठंपंगंगौरव्येनमःआवाहनम् ॐह्लींह्लींपंन

मः॥इतिप्राण॥ॐपंपदमात्स्येनमः॥इतिगुषम्॥ॐठंठंकोकिलके

लयंति॥इतिधूपः॥ॐविविविंत्रांगीगौरवर्णींगंगौरीभ्योनमः

इतिदीपः॥नैवेद्यंनमः॥अथध्यानम्॥निवेश्यांपंतिश्रवणोवसंतसमामरंकु

रंकोकिलनादवम्यंस्यामामधुस्फीतंसत्मनादागौरीयमत्का

कतूहलेण॥॥अथभाषाध्यानम्॥सीसकोफूलजगवजउयो॰

अनुरागमहोमुखवंदविराजे वालरसालकीमंजरीकान

परीमकुराकृतकुंडलराजे अमरखेतमनोहरभूषणाउजलअं

गमहाछबिछाजे गोरीग्रमानभरीगतसोअतिरंगदिखावत

है पतिकाजे ॥ ॥ इतिध्यानम्॥ कानरमालकीमंजरीराजितकोकि

लतेंकिलकंठगहीहै गोरीसीसुरतिमोहनिसुरतिसुरतमेंर

मीतगहीहै केलकतूहलमेंनितहीरतिआनंदमेचितहीउम

हीहै भूषनचीरबनेतनकेहविलभाणिनीगोरीकहीहै १

इतिध्यानम्॥ अथगुंथकारकृतध्यानम्॥ गोरीथोरीभोरीनवलत्रियापतिकाज

जोसाजसमाजसनाकरवैठीमधुमातीहै चीरखेतलगेतनपे

हीरामोतीनजवाहिरकेभूषननोअंगअंगमेलगातीहै कोकि
लनेमीठेवैणश्रेणकामभरेकरकेकतूहलनादरनीमनीको
रिकातीहै प्रीतमकेहितचितचैणकरेनेनसो एसीगौरीरागि
णीप्यारीमालकौंसकीकहातीहै ॥१॥ इतिध्यानम्॥अथस्वरूपम्॥

खडजस्वररिषभकोमलमध्यमतीव्रतरनिषादकोमल धैव
तकोमल पंचमस्वर इसप्रकार येरागिणी वनतीहय॰
औरनिषादमंदरग्रामकाअलगताहै औरनिषादमध्यकोम॰
मलै ॥ स रे ग म प ध नी स ॥

प्रथमप्रकारम्॥ द्वितीयप्रकारम्॥ स नि ध प म म

प ध नि स रे म प ध नी सा

नी ध प म रे स नि स रे म

प म ग रे स ॥ और जो सम्पूर्णरागिणी इस

प्रकारकरके होती है ॥१॥ तसवर्णनम्॥ सा रे ग म

प ध नी सा सा नी ध प म म रे

सा ग ग रे रे नि सा सा सा रे ग

रे सा नि सा सा सा रे ग म प

स॰ र॰
मा॰ १
३१

(6)

प इत्याह ॥ अथद्वितीयप्रकारः॥ रे ग म प ध नी

सा सा नी ध प म ग रे सा नी

रे सा रे ग म प ध नी सा सा

रे ग म ग रे सा नी ध प म

ग रे सा नि ध प म ग म प ध

नी रे सा ग रे सा म ग रे

रे सा ॥ इत्याह ॥ अथात्यंतमध्यग्राममूर्च्छनाविधीलिख्यते ॥ ॥ ❀ ॥

षड्ज मध्यग्रामवाला । रिषभकोमल मध्यग्रामवाला ।

गंधार मध्यग्रामवाला मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला

पंचम मध्यग्रामवाला धैवतअतीकोमल मध्यग्रामवाला

निषाद मध्यग्रामवाला खरज तारग्रामवाला पुनःखरज

तारग्रामवाला पुनःनिषाद मध्यग्रामवाला पुनःधैवत

अतीकोमल मध्यग्रामवाला पुनःपंचम मध्यग्रामवाला॰

पुनःमध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनःगंधार मध्यग्राम

वाला पुनःरिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनःखरज म

ध्यग्रामवाला पुनःगंधार मध्यग्रामवाला पुनःगंधारमध्य

स॰ए
मा॰सू
६२

ग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ

मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद

मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज

मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभको

मल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः

रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला

पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला॰

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवा

ला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम तीव्रतर जि

सकोकरग्राममध्यम सितारपेलोगकहतेहैं पुनःपंचम मध्य

ग्रामवाला ॥ पुनःधैवतश्रुतीकोमल ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः

धैवतश्रुतीकोमल ॥ मध्यग्रामवाला ॥ ॥ः ॥ इतिश्रुस्थाई ॥

सा रे ग म प प नी सा सा

नी प प म ग रे सा ग ग

रे रे सा नि सा सा सा रे ग

रे सा नि सा सा सा रे ग म

सं॰रा॰
सा॰मू॰
६३

प ध प ध ॥ ॥ ॥ इत्यष्टाई ॥ अथ अलंकारादि थी लिख्यते सर्व संगीत शास्त्र
अनुसार ॥ खरज नारग्रामवाला रिषभकोमल नारग्रामवाला
गंधार नारग्रामवाला मध्यम नारग्रामवाला पुनः गंधार ना
रग्रामवाला पुनः रिषभकोमल नारग्रामवाला पुनः खरज
नारग्रामवाला पुनः खरज नारग्रामवाला पुनः निषा
द मध्यग्रामवाला पुनः धैवतअतीकोमल मध्यग्रामवाला
पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामा
वाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्य

63

ग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रा

मवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल

मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः ख

रज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः खरज

मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गं

धार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः ख

रज मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज

सं॰रा॰
मा॰१॰
९४

मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रा
मवाला मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
धैवतश्रुतिकोमल मध्यग्रामवाला पुनःधैवतश्रुतिकोमल
मध्यग्रामवाला ॥ इतिश्रुतयः ॥ पुनःश्रुत्याइकी आहतीको मिलजाना हो॥ अथस्वरालापम् ॥

सा रे ग म ग रे सा सा · नि ध प

म ग रे सा ग ग रे रे सा नि सा

रे ग रे सा नि सा रे ग म प ध

ध ध सा रे म॑ ग म प ध नि

सा सा नी ध प म ग रे सा ॥

ग ग रे रे सा नि सा रे ग म

रे सा नि सा सा रे ग म प

ध ध ॥ इत्यन्तः ॥ और आगे आभोग इसप्रकार से इसी आ

वृत्ती को धैवत अतिकोमल से आगे चलपदगो इसप्रकार क

रके जो आगे लिखेंगे हैं ॥ निषाद मध्यग्राम वाला ख

रज तारग्राम वाला पुनः खरज तारग्राम वाला पुनः निषा

द मध्यग्राम वाला पुनः धैवत अतिकोमल मध्यग्राम वाला

स॰ए
मा॰१
६५

पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवा-
ला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्राम
वाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदर ग्राम
वाला पुनः धैवतकोमल मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदर
ग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर मंदरग्रामवाला पुनः मध्य
मतीव्रतर मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदरग्रामवाला॰
पुनः धैवतकोमल मंदरग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्राम
वाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल म

ध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम

तीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः

धैवतअतिकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्राम

वाला पुनः खरज नारग्रामवाला पुनः खरज नारग्रामवा

ला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैवतअतिकोमल

मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम

तीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला ॥

पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रा

मवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवा

ला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल

मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद

मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज म

ध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः

गंधारमध्यग्रामवाला पुनः रिषभ मध्यग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला

पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला।

पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्राम
वाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः पंचम म
ध्यग्रामवाला पुनः धैवत अतीकोमल मध्यग्रामवाला॰

इति स्वराभोगः ॥ अथ स्वरपदरम् ॥ नी सा सा नी प प म

ग रे सा नि रे सा रे नि प

प म म प प नि सा सा रे

ग म प प नि सा सा नी

प प म ग रे सा ग ग

स॰ ग॰
मा॰ १
९०

67

रे रे सा नि सा रे ग रे सा नि

सा सा रे ग म प प प प ॥ः

इत्याभोगः ॥ गोरीसंपूरणस्वरोंसे सरगमबनाइगईहे ॥ इसीको इससरगमवाला ओ

डववजालेना ॥ऽ॥ सा नी रे म प प म

रे सा ॥ अथउतीओडवप्रकारः ॥ सा ग म प म

ग सा नी सा ॥ अथओडवगोरीधैवतरिषभविवर्जितवर्णनम् ॥

खरज मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम

मध्यग्रामवाला तीव्रतर पंचम मध्यग्रामवाला ॥

पुनः मध्यमतीव्रतर पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यती

व्रतर मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः पं

चम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला तीव्रतर

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः ऋषभ मध्यग्रामवाला पु

नः निषाद मंद्रग्रामवाला पुनः ऋषभ मध्यग्रामवाला पुनः

ऋषभ मध्यग्रामवाला पुनः ऋषभ मध्यग्रामवाला ॥ इत्यस्थाई ॥ अ

थस्वरान्तरम् ॥ सा ग म प म प म गा रे

प म ग सा नि सा सा सा ॥

सं॰ ग
मा॰ सू॰
९८

68

इतिअस्थाई ॥ अथअन्तरा ॥ खरज नारग्रामवाला गंधार नारग्रामवाला

पुनः मध्यम नारग्रामवाला पुनः गंधार नारग्रामवाला पुनः

खरज नारग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम

तीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला खरज

मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला खरज मध्य-

ग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला ॥॥ इतिअन्तरा ॥ अथस्वरानरम् ॥

सा ग म प सा प म ग प

म ग :सा नि सा सा सा ॥ ॥ इति अन्तरा ॥ अथ भोग ॥

खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः

मध्यम मंदरग्रामवाला पुनः पंचम मंदरग्रामवाला पुनः

निषाद मंदरग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः

गंधार मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला निषाद मंदरग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला ॥

सं॰ग
मा॰सू॰
९५

इतिआभोग॥ अथाभोगस्वरालंकार॥ सा नि सा नि ध म

प नि सा ग म ग नि सा सा सा

इतिआभोगः॥ अथगौरीहिंडोली प्रकार स्वरगमपंचस्वरकीधैवतगंधारविवर्जितऊडवप्रकारलिख्यते॥

खरज मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला नि

षाद मंद्रग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला

पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्राम

वाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः पंचम म

ध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला रिष

69

भकोमल मध्यग्रामवाला पुनः स्वरज मध्यग्रामवाला

पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः स्वरज मध्यग्रामवाला

इतिग्रस्थारि॥ सा रे नि रे सा रे म प म

रे सा नि सा ॥ इत्यस्थारि॥ पुनः स्वरज तारग्रामवा-

ला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्य

ग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम

तारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः म

ध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला

स॰ रा॰
मा॰ हृ॰
८॰

10

पुनः मध्यम तीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्य
ग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रा
मवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला ॥ ॥ःः॥ इति स्थाई ॥ इति स्वरान्तरम् ॥

रे नि रे सा रे म प म रे सा

नि सा ॥ ॥ इत्य स्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ खरज तारग्रामवाला पु
नः रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला
पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला मध्यम तारग्रामवाला
पुनः रिषभकोमल तारग्रामवाला पुनः खरज तारग्रामवा



पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला

पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रा

मवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यमतीव्रतर

मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल ॥ मध्यग्रामवाला ॥ पुनः

षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः ~~रिषभ~~ निषाद मंद्रग्रामवाला

पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला ॥१॥ इति अस्थाई ॥ अन्तरा ॥ अथ स्वरान्तरम् ॥८॥

सा रे नी रे सा रे म म रे सा

सा नी प म रे प म रे सा नि सा



इतिश्रन्तरा॥ अथगतस्तिताद्नाद्तिन्न॥३॥ रिषभधैवतविवर्जत॥ डिङ् ङा डिङ् ङा

ङ्रा ङा ङा ङ्रा॥ डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा

ङा ङ्रा॥ डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा ङा ङ्रा॥

इतिश्रन्तरा॥ डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा ङा ङ्रा॥

डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा ङा ङ्रा॥॥ इतिश्राभोग॥

अथद्वितीयप्रकारः॥ गतस्तिताद्गंधार्धैवतस्वरविवर्जतनाद्तिन्ना

लिख्यते॥॥ गौरीराग॥ डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा ङा

ङ्रा॥ डिङ् ङा डिङ् ङा ङ्रा ङा ङा ङ्रा॥॥

डिड्ड डा डिड्ड डा ॥ ड्डा डा डा ड्डा ॥ डिड्ड डा डिड्ड

डा ड्डा डा डा ड्डा ॥ ॥इति अन्तरा॥ [illegible]गोरीरागितो नारतिन्न लिख्यते॥

डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा डा ड्डा ड्डा ॥ डिड्ड डा

डिड्ड डा ड्डा डा डा ड्डा ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा

डा डा ड्डा ॥ डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा डा डा ड्डाँ॰

डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा डा डा ड्डा ॥ ॥इति अस्थाई संपूरण॥

अथ अन्तरा॥ डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा डा डा ड्डा ॥

डिड्ड डा डिड्ड डा ड्डा डा डा ड्डा ॥ डिड्ड

स॰ए
मा॰१॰
७२

72

डा डिडु डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिडु डा डिडु डा

ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिडु डा डिडु डा ड्रा डा

डा ड्रा ॥ ॥ इतिअन्तरा ॥ अथआभोगः ॥ डिडु डा डिडु डा ड्रा

डा डा ड्रा ॥ डिडु डा डिडु डा ड्रा डा डा

ड्रां ॥ डिडु डा डिडु डा ड्रा डा डा ड्रा ॥

डिडु डा डिडु डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिडु

डा डिडु डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिडु डा

डिडु डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ डिडु डा डिडु डा

द्रा ञा ञा द्रा ॥ ह्रिद्र ञा ह्रिद्र ञा द्रा ञा

ञा द्रा ॥॥ इति आभोगः॥ इति संपूर्णगौरीगानम्॥ अथ आलापान्तरम्॥॥ ननरी

ईनात् आनां अदननौंनानौननाननननरीनाननौनाननरान

ननौनैनानौननानननना नरानननौ नैननानौ नननानौननौ

नननानौनानौननननननननौननननरी ननौनानौनैनन

नौननरीरनाननरीनानौमैनैननानौननननरीरनाननननौ

नननौननननननरीरनानौ ॥॥ ॥इति आलापान्तरम्॥ इति संगीतरत्नाकरप्रकाश्य सार

ग्रंथनाम मतो स्वामीकृत गौरीरागिणी मालकौंशप्राचतुर्थ इस्त्रीगान विधी पंचमोध्यायः समाप्तम्॥ शुभमस्तु

सं॰रा॰
मा॰पू॰
७३

वैजगताम् ॥ श्रीरघुनाथजीसहाई ॥ रामचंद्रायनमः ॥

73

श्रीरघुनाथजीसहाइ ॥ अथगुणकलीरागणीमालकोशरागस्यपंचभार्यागणविधीप्रारंभः ॥ १८३

खरजांशग्रहंन्यासंखरजादिकमूर्छना संपूर्णागुणकलीज्ञे
याहनूमानमतेनउव १ पंचमांशग्रहंन्यासंकवितपंचममूर्छ
ना संपूर्णागुणकली रात्रीशिवमतेनकथ्यते २ पंचमांशग्र
हंन्यासंपंचमादिकमूर्छना संपूर्णागुणकलीतेपंकथ्यतेचः
भरतंमते २ रिषभपंचनकोमलंप्रोक्तामध्यमस्वरतीव्रंनिषा

दस्यतीव्रंस्युद्धंजनयागंधारंपंचमः ४ शारदविनोदिवसेमध्य

मयामतः करुणारसेनसंयोज्यनाइकांखंडितांस्मरेत् ५ का

दर्शनअलंकारशाठनाइकतनकथ्यते प्रमान्मादेवनायस्यविषी

तस्येतुनारदः रुंश्रींक्रांवीज ॥ पंक्तींछंदोभव गुणाकलीचरा

गिणः मालकौंशस्यभार्या ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अंशन्यासजोखरजग्रहहस्व

रग्रहभीवाकोज्ञान ॥ संपूरणामरग्रुणाकलीआपकहतहन्त

मान ॥ ग्रहअंशन्यासधैवतस्वरपंचमकीमूर्छनापक ॥ मत

हिमगिरकेनाथकोगावहैंगुणाकलीठेक ॥ दोहा ॥ पंचमअंश

सं॰ र॰
मा॰ १॰
७४

औरस्यामग्रहसमसूरगानस्वरवनीई गुणकलीकौंशकग्रंथना

भरसकहोविनलाई ॥ दोहा ॥ देषाकारिऊरमारवामालीगौर

संग श्रीरिनपहलेपहरदिनकेगावोगुणकलीरंग ॥ दोहा ॥

करुणारसव्रदगणीनाईकाश्राठनाईकजोजान गुणकलीया

हीमालकौंशकीआनंदसोगुणीगान ॥ दोहा ॥ कोमलरिषभ

औरधैवतश्रुतीनिषादतीव्रश्रुहदोई पंचमषड्जमध्यमतर

तीव्रगंधारश्रुतीहोइकोगावसविरलाकोई ॥ इतिसंगीतरागणीरूप

काष्टासार ॥ ग्रंथ संगीतरत्नाकरे गुणकलीउत्पतीकथनम् ॥

पैवतांशग्रहंन्यासंकंपितपंचमस्वरं मारवादेशाकारस्थगौरायां

न्नायतेबुधै १ ध ग सा रे नी रे म ग

सा नी सा ध सा म ग रे सा

इतिच॥ संगीतनादमहोदय॥ पंचमांशग्रहंन्यासंगुणाकलीवइतिस्मृता

सौवीरीमूर्छनाज्ञेयाकौशकस्यवरांगना॥ इतिसंगीतरागमालायां॥ पंच-

मांशग्रहंन्यासंगुणाकरीवइतिस्मृते मारवादेशाकारस्थमि

श्रनामालीगौरकः इतिच पंचमांशग्रहंन्यासंगुणाकरीवइ

तिस्मृता सौवीरीमूर्छनाज्ञेया मालवादेशाकारस्यविभामे

मुजन्मभु ॥ प म ग रे सा नी प

म म प ध नी सा रे ग म

75

इति संगीतमतेन च ॥ अथ भाषायां संगीतदर्पणे ॥ दोहा ॥ खरजग्रह स रे ग

म ध ध नी षरजजानवताई ॥ शारददिवसपहले

पहरगुणीगुणकलीगाई ॥ इति च ॥ दोहा ॥ न्यासअंशग्रहखरजने

अरुसंस्करणहोई पकपहरपरगाईपेकहमगुणीजनलोई ।

स ग म प स स नि ध प. म

प ग म रे म ॥ इति च ॥ वार्तिक ॥ पेगुणकलीरा

गणी मालकौंशकी पंचमभार्यी सम्पूरण सारस्वरा

की स्वरजअंशग्रहन्यासहै और पंचमअंशग्रहन्यासभी

कहतेहै और कोईकहतेहैं इसमेधैवतभीअंश न्यासग्र

हहै बसइसमेसिवा और कोईस्वरग्रहनहीहै और कुछ

पंचमकी मूर्छणालगतीहै अर्थात् धैवतकोमलहै और

मध्यमतीव्रतरहै और निषादवरा उतरा दोनोहैं रिषभ

कोमलहै और स्वरजपंचमगंधारसुरलगतीहै संपूरण

इसप्रकार देशकारी मारवा मालीगौरा मिलकरके इसरा

सं॰ र॰
मा॰ पृ॰
७९

इसरागणीकी उत्पतीहोतीहै और कोईकहतेहैं के मालवा
देशाकारी विभास इनकरके उत्पतीहोतीहै और कोईकह
तेहै वसन्तकारागइरागणीमालवा मिलकरके उत्पती हो
तीहै एवंच बहुतदेशाकारी मालवा मालीगौरा इनकीमि
श्रतहोनेसेगुणकली कहतेहैं मिलापाध्यायमेभी यहीलि
खाहै किमारवा देशाकार गौरामाली मिलनेसे गुणकली
मालकौंशकी भार्याबाहीहै अब औत्पतिकही आगे सर्वां
गगुणकलीलिखीजातीहै ।। तस्यस्वरूपं ।। गुणकलीरा

76

गरणि मालकौंशाकीण्यारी सम्पूर्णमानस्वर खरज वादी

धैवत पंचम संवादी गंधार रिषभ निषाद मध्यम अनु

वादी करुणारस खंडतानाइका मुष्टनाइक द्वादशाअलं

कार शरदरित दिवसप्रथमप्पाम समय परमात्मादेवता

नारदरिषी अनुष्टुप् छंद पैंऊँबीजकालीशाक्ती ऊँसैंऊँक्री

गंश्रींगुणकलीयेनमः स्वाहा ॥ इतिमंत्रः ॥ ऊँपुष्पंनमः ऊँधूपंन

मः ऊँदीपंनमः ऊँनैवेद्यंनमः ॥ अथध्यानम् ॥ शोकाभिभूतनय

नारुणादिगदष्टिनम्राननानाथरणीष्ममरगात्रयष्टी आसुन॰

सं॰ग
भा॰टी
७७

चारुकवरीदयहरवर्नितसंकीर्तीगुणकरीकहोरूपांगि:

अथभाषाध्यानम्॥ नितपवैदीमलीनधरैपटकोविभुरेसिरकेसत

ज्योंअलकें मुखनीचोकियेमुलखकेउखमोचतहैंअलकें

रुकायरहिजगनेनवहेमरकीनफलकें ननझीनखरीक्ष

विक्षीनपरीलखकेउखमोचतहैंअलकें विरहागानितेंअति

व्याकुलवालवियोगमरिगुणक्षीकलके॥१॥इतिसंगीतभाषाध्या

नम्॥ध्यानम्॥ रंगपीतभयोरसरीतगयोउखहोतनयोअतिशो

कदयोवालमपरदेशगेहो अरुणोनक्कयोअंसुवनपरवाह

देहो अंग क्कारलयो मखनी चेह्वयो कामदेहो अलकैं विथ

रियो बुधव्हथ विसरियो पीयाजीयाकह्यो सांमयीनभरियो

विकलयो शिरकेशखुलयो मलीनभेशडुलयो मालकौं

शाकीरागणिगुणकरीको यंध्यान अयो ।।१।। इति ध्यानम् ।। अथ स्वर

गम विधी आरोही अवरोही लिख्यते ।। खरज मध्यग्रामवाला गंधार म

ध्यग्रामवाला मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामग्रावाला पंचम

मध्यग्रामवाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला निषादमंद्र

ग्रामवाला धैवतअतिकोमल मंद्रग्रामवाला पंचम

सं०१
मा०पृ०
७८

78

मंदरग्रामवाला मध्यमतीव्रतर मंदरग्रामवाला पुनःखर
ज मध्यग्रामवाला पुनःखरज मध्यग्रामवाला पुनःपंच
म मध्यग्रामवाला पुनःगंधार मध्यग्रामवाला पुनःमध्य
मतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनःगंधार मध्यग्रामवाला पु
नःरिषभकोमल मध्यग्रामवाला पुनःनिषाद मंदरग्राम
वाला पुनःखरज मध्यग्रामवाला पुनःरिषभकोमल ।
मध्यग्रामवाला पुनःगंधार मध्यग्रामवाला पुनःरिषभ
कोमल मध्यग्रामवाला पुनःखरज मध्यग्रामवाला॰

इतिअस्थाई॥ सा ग म प सा नि ध

प म सा सा प ग म ग रे

नि धा रे ग रे सा सा ॥ इत्यस्थाई॥

अथअंतरालिख्यते॥ षरज तारग्रामवाला रिषभकोमल ता

रग्रामवाला मध्यमतारग्रामवाला (रिषभकोमल तार

ग्रामवाला) पुनः गंधार तारग्रामवाला रिषभकोमल

तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला पुनः धैव

तअतिकोमल मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला

सं. ए.
मा. १.
७५

पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः षरज तारग्रामवा

ला पुनः पंचम मध्यमग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्राम

वाला पुनः मध्यमतीव्रतर मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोम

ल मध्यग्रामवाला पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभ

कोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्रामवाला पुनः

खरज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्रामवाला

पुनः गंधार मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्राम-

वाला पुनः खरज मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मंदरग्राम

रे ग म ग रे सं स नी ध
उदितहोतकलमलछलछपतें ॥ किमि[illegible] चाहतफल

नी स रे सं स रे ग म ग रे
दिसालवत्रुरवीजवतें ॥ पेसोईयाननमनानगालगलगप

सं स रे ग म ग रे सं स रे
तें ॥ कालकर्मगुणस्वभावसबकेसींसतपतें ॥ रामनामम

ग म ग म ग रे स नी ध नी
हिमाकिचराचाछलछवतें ॥ साधनविनसिद्धिविकल

स रे ग म ग रे ग म ग रे
सकललोकवकतें ॥ पावनहोयनामलेनतलसीसोग्र

सं स नी ध
पतें ॥ ॥ भैरवराग ॥ एकताल ॥ लगिमोहेप्रानपियाः

नी स रे ग म ग रे सं
रीतीखीसविरीबोलनचलनचितवनमुसकान ॥ ॥

स नी ध नी म रे ग म ग
सीसमकुटकुकनीकनककुंडलकरन[illegible] हलकनल

३०
रा० २०
प्र० सा०
२१२

९२

म ग रे ग रे स नी ध नी स

कुटपरथरनकरकंजनरइगारइगवइगमगपगलरवरान ॥

रे ग म ग रे ग म ग रे

रुनकुनपगनपरव्रजनतवेगगाईश्रलकनपलकनपरफैल

ग म ग रे स स नी स रे ग

रहिललकनमनमोहमान ॥ छलकेसिसचरितनकरनवल

म ग रे स नी ध नी स

केजगराजनिरखिपलकनपरनदेरीबुलकेनविचारच्यार

रे स रे ग म

पानजान ॥ ११८ ॥ रागभैरव ॥ ख्यालपकनार ॥ सोनावैमीआवे

ग रे ग म ग रे स स रे ग म

कीम्राखंमालम्राखेनदीनाहिडो ॥ नंसनमाशदिलजाऽ

ग रे स स रे ग म ग रे स म रे

नीमीयावे ॥ चोलतुमांईसदकेकीनीमीयावे ॥ म्राखांयासि

ग म ग रे स

कंदियातमनाही ॥ ११८ ॥ इतिभैरवराग ॥ गायनपदवर्णनम् ॥

रे ग म ग रे ग म ग रे स रे

भैरवराग॥ तालसवारी॥ वाजोरे वाजोम दिलरा ख़ुभ दिन ख़ुभव

ग म ग रे स स नी स नी ध नी स रे ग

धीलालनघरआज॥ सवसखिवनआईकरनमंगलचारआ

म ग रे स ग रे स नी ध

नंदनकेभईआज॥ भैरवराग॥ तालसवारी॥ दिलकीविथामेकासेक

नी स रे ग म ग रे स रे ग म प ध

हूंजोगुजरेमोमेपारवजाने॥ मकादरदसाअंदरादिलअगारजो

नी स रे स स रे ग म प ध

गुजरीसोइहालपर॥ भैरवराग॥ झूमरा॥ कोयलकूकेमाईमोहि

नी स रे ग म ग रे स नी ध नी स रे ग म

गलालनकीवासवमाई॥ यामोतेमोमेंबोलेढोलनकेहे

ग रे ग रे स स नी स

नाइकटरेढोलननाई॥ भैरवराग॥ तालपदताल॥ ध्रुवपद॥ वकमलीजी

रे ग म प ध नी स रे ग रे स स रे ग म

पमोकुंजवदहमानदाता विधातातेरोनाम॥ सदारंगदाता॥१॥

३०
स॰ २॰
प्र॰ सो॰
[illegible]
२५२

प ध नी स रे ग म प ध नी स रे ग म ग

हमगुनहैंगारतंसनारपरवरदिगारधरतैंद्धवहरकेरोदेहोआ

रे स स रे ग म प प नी स

राम ॥ ॥ **भैरवराग॥ पटताल॥** तप्रलामाहवतेरीचाहमेंहोंहीआयो

रे ग म प ध नी स रे ग म ग रे स स रे ग

जवतेंतेरोनामलियोसबदुखदालिद्रगमायो ॥ तंहीतारन

म ग रे स नी ध नी स स रे ग म ग

तरनतेरेनामतेंजगदरीयावपैरायो ॥ लालसभ्रकहेमाहो

रे स नी प नी स रे ग म ग रे स

देहोमननतसम्पतग्रनधनदुधदतहींयमनभायो ॥ ॥

स रे ग म ग रे स नी स नी ध

भैरवराग॥ आडाचौताल॥ प्यारीरीमखिबोलदेखिबोलरैनतोयोहींवि

प म ग रे ग म ग रे रे स स रे ग

हानीअबैवालाकहाजोकहूंनोरेमुखकीवानी ॥ तंजोवानक

म प प नी स रे ग म ग म प प नी स

हनतोनवांनीभोरभयआपलालजववितियांचुहचुहानी

स रे ग म ग रे स नी ध

भैरवराग आसवैताल ॥ अवनोजानेदेमोहैथोरीदैनरहि॰

नी स स नी ध स रे ग म ग रे स रे स

यौउ ॥ फिकौभयोतंवोलवोलनलागेमोरह्लोबनलागिभो

स नी ध नी स रे ग म ग रे स

रे सासननदकेइंरतेंकांपतहैमेरोजीउ ॥ भैरवराग ॥ आडा॰ ॥

स नी ध नी स रे ग म ग रे स स नी स नी ध नी

महादेवशिवशंकरपिनाकपानी ॥ आइंवरमांवंवरजटा

स रे ग म ग रे स

जुटगंगासंगअर्द्धंगभवानी ॥ ॥ भैरव राग सवारी॰ ॥

स नी स नी ध नी स रे ग म ग रे

अमीउदोसुनीयांयांणीभोरांऊणादेमनावणानुवलेजें

ग रे स स रे ग म प ध नी म स नी स

दरीचुमायरगलपायपायपलेखोकपेरीले ॥ सिरानुम॰

नी ध नी स रे ग म ग रे स

ल्हिसमकांयरिकांयभिल्हि ॥ भैरव ॥ सवारी ॥

ॐ
स॰ ३॰
प्र॰ सा॰
२९

94

स नी स ध नी स रे ग म ग रे स
अननजाथविलमरंहिलीपीउनाजानकौंननीयाकेसंग

स नी ध नी स रे ग म ग रे ग रे ग
हुमसोअवधवंदिओरनसोरंगरसकरनफिरतमखिय

म ग रे स स नी स नी ध नी
नसेनपनपढंग ॥भैरवराग॥सवारी॥ दीमननानतनदिरमानन

स रे ग म ध ध नी स रे ग म ग रे स
दिरदिरनानतनदिरनानादानीयारेमनयलाललेदी॰ ॥

स नी स नी स नी ध नी स रे ग म ग
नदिनकोचैनरातकोखावअंखांमेंजवसेवोखानअवाद

रे स स नी स नी ध नी
अंखांमेंदी ॥ ॥भैरवराग॥सवारी॥ नोरीवारीफूलरहीहांरेमली

स रे ग रे स स नी स रे ग म
पामहकरहीलीसुगंध॥ फूलभईहैनरदनवेलरीयांरीसब

ग रे स स नी स नी ध
वरनवरनकेअंग ॥ ॥भैरवराग॥सवारी॥ दुमदुमवाजेरेवाजेवाजे

स रे ० ग ऽम ग ० रे स ऽ स नी ऽ स रे ० ग म ऽ ग
रेमंदिलरासाजनकेघरकाज्ञ॥ सवसाविधनमिलदेहोम

रे ० स रे ऽ ग म ० ग रे स ० स नी ऽ स ध ०
वारवांनबलवनापायाराज्ञ॥भैरवराग॥सवारी॥ घरीमाइहोंपहहं

नी ऽ स रे ० ग ऽ म ग रे स ० स ऽ रे ग ० म प
गीचोलरा हरि यालाचोलराचोलासो॥ पचरंगपागमेंपिया

ऽ ध नी ० स ऽ रे ग ० म ग रे ० स नी स ऽ नी ध ०
कोंवंधाऊंसवसोतनघरमालरा॥भैरवराग॥सवारी॥ राधेतेरीश्रांग

नी ऽ स रे ग ० म ग रे ० स स ऽ रे ग ० म ग ऽ रे स
नश्रमरनफलियोंझलरीयां॥ श्रसुश्रनसौंचसौंचवाहुंगीश्रंवु

० ग रे स ऽ नी ध नी ० स ० स नी ऽ स ध नी ०
वांवीतोसोहवेढिक्कांवरीयां॥भैरवराग॥सवारी॥ पिउभोरहीश्रापस्र

स ऽ रे ग म ० ग ऽ रे स ० स नी ऽ स नी ० ध नी ऽ स
तमोमनभापलागामरंगमसवाप॥ जावक निलकलगापश्रथर

० रे ग ऽ म ० ग रे ऽ ग रे स ० स नी स ऽ
नअंजनलापवोलनमधुरसहाय॥भैरवराग॥सवारी॥ प्यारेमो

३०
स॰म
ला॰ [illegible]
५५

75

स रे ग म प ध नी स रे ग म प ध

रेनिननतोरोमोसोंनेहरा ॥ तमविनमोहेकललनपरतहेभा

नी स रे स स रे ग म प ध

वतनाहीगेहरा ॥ भैरवराग ॥ सवारि ॥ करतरहोप्यारेनितनाद ।·

नी स रे ग म ग रे स

अवधवद निशाकेसिधारेआपहोभनमार ॥ भैरवराग ॥ सवारी ॥

स रे ग म प ध नी स स

हनरततनिजामदीनचितिजरजरीजरवकमपीर ॥ जो

नी ध नी स रे ग म प ध नी

ईजोईयावेनेंईतेंईफलपावेमेरेमनकीमुरादभरदीजेश्र·

स स नी स नी ध नी

मोर भैरवताल ॥ सवारी ॥ अननतजापविलमरहिला

स रे ग म ग रे स स रे ग म प

पिउनजानोंकीनत्रियाकेसंग ॥ हमसोंअवधवदकहिश्रोर·

ध नी स रे ग म ग रे स

नमोरमसंगकरतसखियपनमोंनपनपठंग ॥ ॥ भैरवताल ॥

स रे ग म ग रे स नी ध नी स

सवारी॥ नौगीवारीफुलरहीमलियामहकरहीलीहगंध

रे ग म ग रे ग रे स

फुलभईहैनईनवेलरीयांअववरनववरनकेरंग॥ ॥४॥

स नी म नी ध नी स रे ग म

ॐभैरवराग॥ तारमवंध॥ रागसागर॥ प्रथमभैरवनीकेवमधारेभपरवि

ग रे म प ध नी म रे स नी स म प ध

केउदैआपनामकरियावोत॥ बिवसभपदेखीयनगा

नी म ग रे म रे ग म ग रे स स नी स

नउदैथाकारकौनतिपललितववनवोलतहोंनतरात

रे म प ध नी स नी म रे म ग नी स रे स

वेलावरवीनगईअलीआनहजगईदवगीरीवनिवाज

ध नी स रे ग म ग रे ग म प प नी म रे

कामोसंग॥ घटपटभईरात॥ देशाखमहवरतीयमआ

उ.
स.१
म.मा.
२६

96

नी ध नी ग म ग रे प म ग रे स

रविनतमदेवगंधारीगावतगुनरीझनवीनीपरभात ॥

स नी ध प म म प ध नी स रे ग

नीरीहमसोंप्रीतजोनपुरवसतहैनवलतीयरेश्रीषडुने

म ग रे ग रे स प ध प नी स

जायलावारहोवहाउरीरसात जंगलजंगलकूंछतहारी।

स नी ध नी स रे ग म ग रे स

फिफवटजिनकरोमेरेप्यारेश्रामाजोवतविहात ॥ मा

ग म प ध नी स रे ग म ग

रंगनिनीपामजावोमथुमापवीवरहंसनीमामनप्यारे।

रे स नी ध नी स ध प ध नी ध प

हूंरावनमधरहांलंकतहात ॥ धनधनश्रीमलतनमंत्रप

प नी स रे ग म ग रे म नी स

कराम्रो [illegible] भिमपलसिछनानिरषतनमकोंप्रीयाव

स रे स स रे ग म प स नी स

उभागगात ॥ जैतश्रीवाकीपूरवपूरेबन्यफलजाकोश्वर

स रे ग म ग रे स नी ध

भैरवराग ॥ आसचौताल ॥ अवनोजानेदेमोहैथोरीबैनरहि॰

नी स स नी ध स रे ग म ग रे स रे स

यौउ ॥ फिकौभयोतंगोलवोलननलागेमोरहोवनलागिभो

स नी ध नी स रे ग म ग रे स

रं सासननंदकेरंवतैंकांपतहैमेरोजीउ ॥ भैरवराग ॥ आउ॰ ॥

स नी ध नी स रे ग म ग रे स स नी स नी ध नी

महादेवशिवशंकरपिनाकपानी ॥ आइंवरमांबवरनटा

स रे ग म ग रे स

जुटगंगासंगअर्द्धंगभवानी ॥ ॥ भैरव राग सवारी॰ ॥

स नी स नी ध नी स रे ग म ग रे

अमीउडोसुनीयांयाणीभोरांऊणादेमनावणानुचलेजं

ग रे स स रे ग म प ध नी म म नी स

दरीवुमाय २ गलपायपायपलेलोकपेरीले ॥ सिरानुम॰

नी ध नी स रे ग म ग रे स

हिसमकायविकायभिलि ॥ भैरव ॥ सवारी ॥

उ॰
स॰ र॰
अ॰ स्रा
५८

सोहनी सोहनी करवात मोहें अहीरी नाना गोकुलवाली

घाघराकी घालचलत चलकंद्धं टकहिंनात कपोलक

हांधीकलागीजानिहैन्नुदानिदीपकचंदप्रकासमभली

लांबर श्रीउग्रापर्कलिगाप्रअवधदेखात मेघनस्यामसमला

रनटवरनरहेवाहीकेगोंउपगापरात वांकेश्रीविहारी

लहवलोमपहाउपेकनगासतखंजितानायकाकीवान

वेनववारीसवरीहितनिहारीरागसागरगावततितम

तिलकधिरमांकदेखात ॥८॥ इतिरागसागर ॥८॥

ग रे स ध नी स रे ग स स रे ग म
वालखोत ॥ मारवानेंदई हेकामकीश्रीमहाराजगोरीगोरा

ध नी स रे ग म ग रे स स नी ध प म म
टंकरात ॥ धमनह्नोत कल्याणकोवाहनभूपालवरीह

ग प ध नी स रे ग म ग रे स स
मीरघुवोरातकोमोदीयतकरछायायगारगमभात ॥ पंडात

रे ग म प ध नी स नी प प
जंभातवहोनायकहोनकांन्हरवागे[illegible]नरीकंठमालकोल

म ग रे रे स म म ग रे स नी
भमगोसहनाबोलसहात ॥ वाकेदरवारमेंगापवहारकर

ध नी स रे ग म म स रे
नहिंशेरपांचमेंवसतहोभंवरनामकहात ॥ विहाग[illegible]भर

ग म प ध नी स रि ग म ग रे
मेरीखंभापकरठाडिरहतपरज्योडखवीतीमाकफकासेकहं

म स रे ग म प ध नी स रे स
वात ॥ मोरठनालागीमामभेरीजैजैवतीयांकरारकरगाय

३०
सं०
म० सा०
२८

98

धुंकरत्नकनकधिंकड़ककथकनकधिलांगतीलां
गतिथा धगरधिन्नानगछधिन्ना धिंधिंधागेतिटिधागे
टिगिननागेकिटिकिटनकत्रकटनान तिधानानधा
तिकटधानाधाधिनानधाधाधानाटधीधाधीधाधिनाट
धाधीधिधाम्दतुम्ददंगवजावो ॥१॥ ॥ केसरी ॥ ताल दादरा ॥
करकेउदार्द्दमेरोमनहरलीनो स्नंदकोछैलअतिहीरसी
लो ॥ अन्तरा ॥ यादिननेमधुरामनवाई कुवजाअंगलगीमोटेजे
ननकेसतीलोकरकेउदार्द्दमेरोमनहरलीनो ॥१॥

स नी स नी ध नी स

भैरवराग॥ तितताल॥ चतुरंग॥ चतुरंगकहलगुणगावो रिझावो नंदला

रे ग म ग रे ग म ग रे स

लकों स्वरतानं नताल श्रीरागमंगलोगरी वरी पलपलछिन

रे ग म प ध नी स रे स स रे ग

छिननिषादिन हरिहिमिरनाचि नलावो॥ पपममममपप

म ग रे ग म ग रे स नी प प म

पपनीसासासानीनीसानीधानीपपमगरेसासरसोतान

ग रे स स रे ग म प ध नी स रे

सनावो॥ हिंतिलीतोलानाद्रद्रतंनननारे नारेनारेदानीत

ग म प ध नी स रे ग स ग रे

मनदेनारेननदेरेमनदेरेनिननिनदेरेतंनननननना॥

स स रे ग म प ध नी स नी स

रिझावो॥ भुमाकिटद्रिमिकिटिजननकफनकत्रकडकिं॥

रे ग म प ध नी स रे ग रे स

किफननरेनरेयातियातियारेयापेयापेयापेया॥

ॐ
सं० १०
संख्या
५५४५
१८

११

म ग रे ग म ग रे सा स ध नी स
ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा डा डा ड्राँ ॥ चतुर्थआवृती ॥ ड्रिड डा ड्रिड डा

रे ग म ग म नी ध प म ग म
ड्रा डाडा डा ॥ ॥ पंचमेआवृती ॥ ड्रिड डा ड्रिड डाड्रा डाडा ड्रा ॥ पलटा ॥

ग म ध नी स नी ध प म ग रे ग ग ग रे स
ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा डा डा ड्राँ ॥ ॥ ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा डा डा ड्रा ॥

ग म ग रे स
इति वनिस्वर ॥ अथ त्रतीयगत गंधारस्वरआदवर्तिनम ॥ ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा

नी स स ग प नी ध प म प म
डा डा ड्रा ॥ प्रथमआहृती ॥ ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा डा डा ड्रा ॥ द्वितीयआहृती

ग म ध नी स ग रे नी ध नी ध प
ड्रिड डा ड्रिड डा ड्रा डा डा डाँ ॥ त्रतीयआहृती ॥ ड्रिड डा ड्रिड डा

म प म ग
ड्रा डा डा ड्राँ ॥ ॥ चतुर्थआहृती ॥ इति गंधारस्वरवर्तिम ॥

डा ड्रा डा ड्रिड डा ड्रा डा ड्रिड डाड्रा डाड्रा डाडा डाड्रा डाडा ड्रा

रे ग म ग रे स नी ध नी स

अंतरा॥ स्वरमनखेडजनस्वरग्राममनमंद्रतानमनश्रा।

रे ग म प ध नी स रे ग म ग

नकरागमनभैरवविक्लतमनवादीसोयसौंचगायोहैं

रे स स रे ग म प ध नी स रे

साजनमनवीनावादिनमनम्रदंगतारनमनपकं

ग म ग रे व ग रे स रे स

तारजाकोवीरवागंधरगुणियनकरदेखायोहै ॥

स नी स नी ध नी स रे ग

गीतमनसंगीतअलंकारमनअकारगायनमनमहा

म ग रे ग रे स स रे ग म

देवडमनतेनादवियाउपजायोहै ध्यानमनवियामन

प ध नी स रे ग म प ध

सरस्वतीवेदमनमनउंकारमलितामनसंगातरनम

नी स नी ध प म ग रे स

नवारनश्रोतारनमनक्रमभजआधीनस्वरवपायोहै ।

३। स॰२। प्र॰स्त॰
१००

स नी स नी प नी स सं
ख्यालतीनताल॥ मेराचितलगानीरूअंटेदेनालनीसेयो॥ चंग

रे ग म प प नी स
सांप्यालांहीहीरजठौंगु कहैजादूपायेनीठगा॥ टप्पा तीनताल॥ मे

स रे ग म प ध नी स रे सं
रादिलवेलदिवि चवमदाजाथेरांजनमजियांचारेवे॥ च

स नी स रे ग म प ध नी स
लोनीसैयारलखेउनचली येजांदीत्रकेलीईलोकहू

रे ग म ग रे स सं
सदां॥ ॥ ठुमरी॥ दिखोदेहमको स्यामंकीफलक २ पला

नी ध नी स रे ग म ग रे
उनबिनचैननहींपकपलक॥ दिनअरामरे ननहींनिंद्रा

ग म ग रे सं स रे ग म प
निकसनाननजीयापरकपरक॥ नाउसखीनमवेदाहिल्या

ध नी स रे ग मगरेस
उफटपटगरेलागोलपककपक॥

चतुर्थप्रकारगत तीनतार॥ रागभैरव पंचतस्वरश्रावदेवगान॥

ध नी स ग म नी ध प गं म रे ग रे

डा ड्रा डा डिडडाड्रा डा डिड डा ड्रा डाड्रा डाडा डा ड्रा डा डा

स रे नी स नी ध नी सं

ड्रा॥ प्रथमश्रावती॥ डिड डा डिड डा ड्रा डाड्रा डाडा ड्रा॥ द्वितीयश्रा

ग म ध नी स नी ध प ध नी ध

वती॥ डिड डा डिड डाड्रा डाडाड्रा डिड डा डिड डाड्रा डाडाड्रा

प म ग म ध नी स

डिड डा डिड डा ड्रा डा डा ड्रा॥ तृतीयश्रावती॥ पलटासंयुक्त॥

स नी ध प म ग म रे ग रे स रे ग

डिड डा डिड डा ड्रा डा डा डाडा डा ड्रा डाडा ड्रा डिड डा

स रे नी ध नी सं

डा डिड डा ड्रा डाड्रा डाडा ॥१॥ इतिचतुर्थश्रावती॥ इतिपेव

तत्स्वरश्रावदगतसम्पूर्णम्॥

सं० २
मं० सा
१०९

101

पंचमप्रकारनिबोदस्वरआदगतस्वरवर्त्तिनम् भैरवराग ती

नी सा नी रे सा रे मी सा नी प
नताल॥ गतफरोजबोल॥ ड ड ड्रा ड ड ड्रा डिडडा डिडडा ड्रा

नी सा नी सा ग म प प प
डडा ड्रा॥ इतिप्रथमआवृती॥ डडा ड्रा डिडडाडा डा डिड डा ड्रा

म ग ग म ग रे ग म प
डा डाड्रा॥ द्वितीयआवृती॥ डिडडा डिडडाड्रा डा डा ड्रा डिड डा ड्रा

ग म ग ग रे सा नी सा
डा डा ड्रा॥ तृतीयआवृती॥ डिड डा डिड डाड्रा डा डा ड्रा

ग म प नी सा नी सा
चतुर्थआवृती॥ इत्यस्थाई॥ डिडडा डिड डाड्रा डिड डिड डा ड्रा॥

नी रे सा रे नी सा
प्रथमआवृती डडा ड्रा डाडडाडडाड्रा डाडा ड्रा॥ द्वतीयआवृती॥

म प म प नी सा नी सा नी सा रे
डा डिड डिड डा डाड डा डा ड्रा॥ तृतीयआवृती॥ डा डिड डिड ०

सा नी सा ग म रि सा

डिड आआ ड्रा आ आ ड्रा ॥ चतुर्थ आवृत्ती ॥ इति निषाद स्वर आदि गत ॥

वर्णनम् ॥

104
103

ॐ अथ भैरवरागस्य प्रथमनःस्त्री मधुमाधवीनामवर्णनम् ॥ मधुमाधवी॰

रागणि भैरवकी इस्त्री पहली ॥ अरुणोदयसमा ॥ [illegible] विते

स्त्रजापतिदेवता ॥ प्रकृति छंद ॥ हनुमान ऋषि ॥ ह्रीं बीज ॥

शृंगाररस॰ ॥ स्वकीयानायका ॥ पुष्पनायक ॥ सुंदरलंकार ॥

सतस्वरसंपूर्णा ॥ मध्यमांशाग्रहंन्यासंमध्यमादिकमूर्छनं

मधुमाधवीसातगीयंतेसंपूर्णांभैरविस्तरौ ॥ दोहा ॥ अंग्रशान्या

सग्रहमध्यमजानमधुमाधवीकरतविधान ॥ ग्रीष्मविन

केमाससमेसातसमेंपगाइ ॥ भैरवकेइरागनीसंपूर्णास्वरवर्णाई

३॰
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१॰४

कल्पद्रुमः॥ मध्यमग्रहमाधुमाधवेष्टवरागेनातिवनाद श्रीष्म

रितुमपथनीसविगाहगरमानहेगाद भैरवकिरागनी

मधुमाधवीतिसकावरागेनसंष्टवरागेमानसवकी ॥

अथ ध्यानम्॥ देतश्रलिंगनचुंवनमीनमश्रानंदसोंजकक्रहसि

कै लोचनमोचनहैउखकेछवनीवजहंकीगईनासिकै

कंचनदेहदिपलगेंकुंकुमटोडेमेदीनोमसामसिकै

हरवलमभैरवकीनकगेछविसोंमधुमाधिवहीलसि

सिकै॥॥ इतिध्यानम्॥ ॐ ह्रीं पंपं उंपैं स्वाहा॥ ॐ पं आवाहनम्

ॐ पंठं इति आसनम् ॐ क्लीं अः इति प्राणाः धूप चंदन कर्पूर
दीप ॐ गं यं नमः ॐ पुष्पं नमः ॐ धूपं नमः ॐ दीपं नमः
ॐ नैवेद्यं नमः ॥ अथ ध्यानम् ॥ जपसंख्या ८ अष्टलक्षप्रमाणं ।
अथ विनियोग ॥ ॐ क्लींपं इति मंत्रस्य प्रजापति देवता हनुमान्
ऋषि प्रकृतिछंदः मधुमाधवी रागिणी सिध्यर्थे जपे वि
नियोगः ॥ इति विनियोग ॥ वार्तिक ॥ मधुमाधवी भैरवरागकी स्त्रीपह
ली संपूर्णस्नानस्वरकी इसप्रकारकरके मध्यमस्वर मध्यग्रा
मवाला ग्रह है जिसको वादिकहते है अरुपंचम इसका अवबा

श्लोकः आस्मित्वा तुंबरं
हिप्रियमदरूपालिंगनं
चैवहर्षात् नेत्रेः विस्म
टपुष्पकमलकुविरागान्
देशं प्रहासात् स्वर्णप्र
ख्यंशरीरं हनुनिमित्तम
र्पितं कुंकुमंवै शोभा
ख्या भैरवस्यापतिप्रभ
मधुमाधवी प्रियाभासतेसा
१

उ॰
स॰२॰
ग्र॰स्था॰
१०५

दीहै इसरागनीमे अवादी स्वर कोईनहीहै भैरवटोडी ल
लित इनरागोका मिलापहो करकि इसरागनीकि उत्पा-
तेहोतीहै मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला
धैवतकोमल मध्यग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्
ज तारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला पुनः कोमल धै
वत मध्यग्रामवाला पुनः निषादमध्यग्रामवाला पुनः रिष
भ कोमल तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः
धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला

पुनःकोमल धैवत मध्यग्रामवाला पुनःपंचम मध्यग्रामवाला

पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनःपंचम मध्यग्रामवाला धैवत

कोमल मंदरग्रामवाला निषादमंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्राम

वाला रिषभकोमल गंधार अंतर मध्यम मध्यग्रामवाला पं

चम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल निषाद मध्यग्रामवाला ष

ड्जतारग्रामवाला रिषभकोमल तारग्रामवाला गंधार अंतर

तारग्रामवाला पुनःगंधार अंतर तारग्रामवाला रिषभकोमल

तारग्रामवाला पुनःरिषभकोमल तारग्रामवाला पुनःषड्ज

ॐ
म॰ २॰
प्र॰ स्रा
१०६

106

तारग्रामवाला पुनः षड्ज तारग्रामवाला पुनः रिषभकोमल

तारग्रामवाला पुनः निषाद मध्यग्रामवाला धैवतकोमल म

ध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्राम

वाला पुनः गंधार अन्तार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल म

ध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला॰

धैवतकोमल मंदरग्रामवा निषाद मंदरग्रामवाला षड्ज

मंदिर ग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवा पुनः गंधार अ

न्तर मध्यग्रामवाला पुनः मध्यम मध्यग्रामवाला पुनः गंधा

र अन्तर् मध्यग्रामवाला पुनः कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला पुनः

षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः रिषभकोमल मध्यग्राम वाला पुनः

गंधार् मध्यग्रामवाला म प ध नी सा नी ध नी

ध नी रे सा ध नि ध प म प प नि

सा रे ग म ग ॥ इत्यस्थाई ॥ म प ध नि सा

रे ग ग रे रे सा सा रे नि ध प म

ग रे सा प ध नि सा रे ग म ग

रे सा रे ग ॥ ३ ॥

107

ग म ग रे स म प ध नी नी स स रे

मोहतमसोसुप्रकासू वडेभागउरआवहिंजासू उघरहिं

ग म ग रे स स नी ध प म ग रे स

बिमलबिलोचनहियके मिटहिंदोषदुखभवरजनीके सू

स रे ग म ग रे स स नी ध प म ग रे

झहिंरामचरितमनिमानिक गुपतप्रगटजहंजोजेहिखानि

म म रे ग म ग रे स नी प नी

क ।।दोहा।। यथासुअंजनअंजिदृगसाधकसिद्धसुजान कौतु

स रे ग म ग रे स

कदेखहिंशैलवनभूतलभूरिनिधान ।।रागभैरव।। तीनताल

स रे ग म ग रे स नी ध नी स

चौपाई।। गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन नयनअमियदृगदोषवि

स म प प नी स रे ग म ग

भंजन।। तिहिकरिविमलविवेकविलोचन वरनउंरामकथाभ

रे स स रे ग म ग रे स नी प प म

वमोचन।। वंदौंप्रथममहीसुरचरना मोहजनितसंसयसवहरना

३०
स॰ १॰
प्र॰ सा
१०८

108

म प प नी नी स स रे ग म प
सज्जनसमाजसकलगुणखानी करौंप्रनामसप्रेमसुबा

स स रे ग म ग रे स स रे ग म
नी साधुचरितसुभचरितकपासू निरसबिसदगुनमयफ

ग रे म स रे ग म स स रे ग म ग
लजासू जोसहिदुखपरछिद्रदुरावा बंदनीयजेहिंजगजस

रे स स रे ग म ग रे स स रे ग म प
पावा ॥ मुदमंगलमयसंतसमाजू जोजगजंगमतीरथराजू

ध नी स रे ग रे स स रे ग म प ध
रामभगतिजहँसुरसरिधारा सरसइब्रह्मबिचारप्रचारा बि

नी स रे ग म स स रे ग म ग रे
धिनिषेधमयकलिमलहरनी करमकथारबिनंदनिबरनी

स नी ध नी स स नी स नी स
हरिहरकथाबिराजतबेनी सुनतसकलमुदमंगलदेनी

नी स नी स रे स स रे ग म प स
बटबिस्वासअचलनिजधरमा तीरथराजसमाजसुकरमा ॥

रे ग म प ध नी स स रे ग म प
सबहिसुलभसबदिनसबदेसा॥ सेवतसादरशमनकलेसा

ध नी स रे स स रे ग म स
अकथअलौकिकतीरथराऊ॥ देइसद्यफलप्रगटप्रभाऊ॥

म प ध नी स रे ग म प प स
दोहा॥ सुनिसमुझहिंजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग॥ ल

रागभैरव ताल तीनताल

म प ध नी स रे ग म प ध म प
हहिंचारिफलअछततनुसाधुसमाजप्रयाग॥ चौपाई॥ मज्जन

रागभैरव ताल तीनताल

ध नी स रे स स रे ग म प ध नी
फलपेखियततकाला॥ काकहोहिंपिकबकउमराला॥ सु

स रे ग म प ध स रे ग म प ध
निआचरजकरैजनिकोई॥ सतसंगतिमहिमानहिंगोई॥

रे ग म प ध नी स रे ग म प ध
बालमीकनारदघटजोनी॥ निजनिजमुखनिकहीनिजहोनी

नी स रे ग म ग म स रे ग म प
नी॥ जलचरथलचरनभचरनाना॥ जेजडचेतनजीवजहाना

३.
सं. २.
स. सा.
१.५

10

म प ध नी रे स म प ध नी रे स

मतिकीरतिगतिभूतभलाई॥ जब जिहिं जतन जहां जिहिं पाई

रे ग म प ध स स रे ग म प ध स रे

सो जानव सतसंग प्रभाऊ॥ लोकहुं वेद न आन उपाऊ॥ विनु स

ग म प ध स स रे ग म प स रे ग

तसंग विवेक न होई॥ राम कृपा विनु सुलभ न सोई॥ सतसंगति

म प ध नी स रे ग म प ध नी स रे

मुद मंगल मूला॥ सोइ फल सिधि सव साधन फूला॥ सठ सुध

ग म प ध नी स रे ग म प स रे

रहिं सतसंगति पाई॥ पारस परस कुधात सुहाई॥ विधिव

ग म प ध नी स रे ग म प ध नी

स सुजन कुसंगति परहीं॥ फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

स रे ग म प ध नी स रे ग म

विधि हरि हर कवि कोविद वानी॥ कहत साधु महिमा सकुचा

प ध नी सं रे स स नी स रे ग म प

नी॥ सो मो सन कहि जात न कैसें॥ साक वनिक मनि गन गुन जैसें॥

स नी स नी ध प म ग

दोहा॥ राग भै[रव]॥ तीन ताल॥ वंदौं संत समान चित हित अनहित नहि

रे स स रे ग म प ध नी स रे स स

कोइ अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ॥ संत स

रे ग म प ध नी स रे स स रे ग म

रल चित जगत हित॥ जानि सुभाउ सनेहु बाल विनय सुनि क

प ध नी नी स स रे

रि कृपा राम चरन रति देहु॥ चौपई॥ राग भै[रव]॥ तीन ताल॥ वहुरि वंदि

ग म प ध नी स रे ग रे स रे ग

खल गन सति भाये जे विनु काज दाहिने हु वाये॥ पर हित हा

म प ध नी स रे स स रे स

नि लाभ जिन्ह केरें उजरे हरष विषाद वसेरें॥ सुनत कहत पर

नी ध प म ग रे स रे स स रे ग

श्रवन श्रवांहीं ज्यों दधु शोष मरसन गमाहीं॥ हरि हर जस

म प ध नी स रे ग म ग रे ग रे स

राकेस राहु से पर अकाज भट सहसबाहु से जे पर दोष लख

५
स॰१
प्र॰सा
११

म प ध ० स स रे ग म प ध ० स म नी स

हिंसहमाखी परहितहूतजिन्हकेमनमाखी ॥ नेनकृषानु

रे ग म प ध नी सं नी स स रे ग

रोषमहिषेसा अघअवगुणधनधनीधनेसा ॥ उदयकेतुसम

म प ध ० नी स रे ग म प ध नी स

हितसवहीके कुंभकरणसमसोवतनीके ॥ परअकाजलगि

रे ग स स रे ग म प ध ० नी स

तनपरिहरहीं जिमिहिमिउपलकृषीदलगरहीं ॥ वंदौंखल

रे ग म स स रे ग म प ध ० नी स रे

जसशेषसरोषा सहसवदनवरनैपरदोषा ॥ पुनप्रनवौंपृथु

ग म ० ग रे स नी स ० स रे ग म

राजसमाना परअघसुनैसहसदकाना ॥ वहुरिशक्रसमवि

ग रे स स रे ग म स ० स नी स नी स

नवौंतेही संततसुरानीकहितजेही ॥ वंदौंजगनरसक्रसमा

स रे ग म ग रे स ० स नी ध नी स

ना करहिंउपायकाधिजेहिहाना ॥ ~~[illegible]~~

म सा रे ग म ग रे स

मारो सहसनयनपरदोमनिहारा ॥[illegible]॥ तीनतार ॥

म प ध नी सा सा रे ग म ग म प ध

इहसाकनहरिमोनिहिते सुजनजरहीं दलबीनी जानि कामी

नी सा सा रे ग म प

ह्मपाजोतिनम विनतीकर रसमीनी ॥

म प ध नी सा रे

अथ गीतगोविंद अष्टपदी ॥ राग मधुमाधवी तीनताल ॥ श्रितकमलाकुचमंडल धृत

ग सा स रे ग म ग रे स स रे ग म

कुंडल कलितललितवनमाल जयजयदेवहरे १ ध्रुव

म प ध नी स रे ग म प ध नी स

पदं ॥ दिनमणिमंडलमंडनभवखंडन मुनिजनमानसहंस

स रे ग स रे ग म प ध नी

जयजयदेवहरे २ कालियविषधरगंजनजनरंजनयदु

स रे स स रे स स रे ग म

कुलनलिनदिनेश ॥ जयजयदेवहरे ३ मधुमुरनरकविना

३०
स०२०
अ०सा
॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी स स
शनगरुडासनं सुरकुलकेलिनिदान जयजयदेवहरे ४ अ

प ध दल नी स रे स स रे ग म स रे
मलकमलदललोचन भवमोचन त्रिभुवनभवननिदान ५ जयजय

ग म प ध नी स स रे ग म
जनकसुताकृतभूषण जितदूषण समरशमितदशकंठ ज

म रे स स रे ग म प ध नी रे ग
यजयदेवहरे ६ अभिनवजलधरसुंदर धृतमंदर श्रीमुखचं

म प ध नी स स नी स नी ध प
द्रचकोर जयजयदेवहरे ७ तवचरणे प्रणता वयमिति भाव

म ग रे स स रे ग म प ध
य कुरु कुशलं प्रणतेषु जयजयदेवहरे श्रीजयदेवकवे

नी स स रे ग म प ध नी स
रिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वलगीतं जयदेवहरे ९ पद्मापयोधर

रे ग म प ध नी स रे ग म प ध
तटीपरिरंभलग्नं काश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य व्यक्ता

म प ध नी स स रे ग म ग रे स

नेत्रागमिवहोलदनंगखेदखेदांकुंश्रमन्दुपुरयन्तश्रियंवः ॥१॥

स नी स नी ध प म प ध नी स रे

वसंतीवासंतिकुसुमसुकुमारैरवयवैर्भ्रमंतिकांतारेबहुवि

ग म ग रे स स रे ग म प ध नी स

हितकृष्णानुसरणां॥ अमंदंकंदर्पज्वरजनितचिंताकुलतयावल

स रे ग म ग रे स

द्बाधंराधंसरसमिदमूचेसहचरी॥२॥ ॥इतिश्रीगीतगोविंदेजयदेवकृतौ द्वितीयसर्गः॥

म प ध नी स रे ग म

रागमधुमाधवीतीनतार॥ कैयाकेलिकलाकलापकुशलाः क्रीडंतिनोका

स रे ग रे स नी ध नी स रे स

मिनः कांताःक्वापिकदापिकापिशिरसाकेनापिकिंपाप्यते ॥ गं

स रे ग म प ध नी स स स रे ग म

गांमृधिदयासिनापिवहसिक्रीडंनपर्मेभयं॥ किंवावाच्यमिदं

प ध नी स रे स

निगद्यगिरिजाकुंजांनरंनिर्ययौ॥१॥ ॥रागमधुमाधवी॥ तीनतार॥ मा

३
स० १
प्र० सा०
११२

म प ध नी स रे ग म प
रागमधुमाधवी॥ तीनताल॥ माधवी मकुलामोदममोदमथविभ्रमी॥ वि

म प ध नी स रे ग म
नयामग्राग्राहचेगौरीमुरीकृतनसमरं॥ २॥ रागमधुमाधवी॥ तीनताल॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी स
देविपथपमधीः संधिपथपतनसमहोत्सवं॥ विधेह्निनतितानंगे

रे ग म प म रे ग
रणांगेस्नोतरणास्रवजं॥ ३॥ रागमधुमाधवीतीनताल॥ टहिरसपहिरेफ

म प ध नी स रे ग म प ध नी स
समकुंदेमदम दंचति॥ भ्रणंगोगंनमारेभेकिंतमाकंदकाननं॥ ४

स रे ग म प ध नी
रागमदवतीधुमाधवीतीनताल॥ समीरसमलीनलीदिहत्तामिल्ल

रे स रे ग म प ध नी स रे ग
तारसालाश्रुगानांसमरसं॥ द्विरेफसविवत्रधजीनांप्रिप्रिता

म प ध नी स रे स
विवतापनः पंचमानांपिकस्य ५॥ रागमधवी॥ तीनताल॥

म प ध नी स रे ग म ग रे स नी

घ्राघ्रारन्ध्रघूननयन्हिमकरंकामोरगंखेलयन्हासंकुंजम

ध स स रे ग म प ध नी स स

ह्लीहहस्य॥ जनयन्मकंपिकंवादयन्॥ वध्नन्कामिमनःसमी

रे ग म ग रे स नी ध प म ग

रणारधं निर्घोटकंचालयन्ज्ञानीमोमधुवैभं नालिकरवारि

रे ग रे स

कक्रमाक्रामयति ८ ॥१॥ रागमधुमाधवीनीनतार॥ रूपकतालीमाला॥

स रे ग म प ध नी रे स म प ध

चंपंकचचिनचापमदंचितकेसरकृतनन्तणीरं॥ मधुकरनि

नी स रे ग म प ध नी स रे ग म

करकठोरकवचचपरिचिनचिरचारुधारीरं॥ धानुरनवंजय

प ध स नी रे स रे ग म प ध नी रे

पधपवसंतं विकचबकुलकुलसंकुलकाननकुसममिषे

स रे स स रे स ग म ग

णाहसंतं॥ ध्रुवपदं॥ रागमधुमाधवीनीनतार॥ सरसिजमोरभसहभ॰

गी.
गो.टी.
प्र.सा
११६

113

म प ध नी स रे स स रे ग म प
गसमीरणसमदिनपथिकविषादं कोकिलकलरवकपट

ध नी स रे स ग म
ललनाततिविरचितमणिनिनादं ॥रागमधुमाधवी॥तीनताल॥२॥

स रे ग म प ध नी स रे स ग म
विकसितकिंशुककुसुमसमसमचुरविशिखविलासनिदर्श

प ध नी स रे ग म प ध
नं॥युवतिमानमधुपानसमुन्नतरसनामिवविभ्राणं ३

नी स रे ग म प ध नी
॥रागमधुमाधवी॥तीनताल॥ अविरलमधुजलसिंधुरमदृशकुसुमित

रे स स रे ग म प ध नी
वालतमालं॥ तदितरननिबिडदिकाविघटितकणकोमल

स रे स स रे ग म प
मधुकरजालं॥४॥ ॥रागमधुमाधवी॥तीनताल॥ करुणालवंगरसाल

ध नी स रे स ग म प ध नी स
विचित्रितविविधकुसुमकमनीयं मदनापनमिवदारिदि

रे ग म प ध नी स रे स
खिविनिहितनानामणिरमणीयं ॥५॥ रागमधुमाधवी॥ तीनताल॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी स रे ग
रथपतिरुद्ध्ययत्रदारनानरकेतकमंचनिकुंवं॥ स्मरनटनटनाप

म प ध नी स रे ग म
तिनमत्रुकुटमणिपट्टनरपाटलितुंजं॥६॥ रागमधुमाधवी॥ तीनताल॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी स
यामवतीभुवतीननकषिमलशिथिलितदिनकरयानं विरहि

रे ग म प ध नी स रे ग म
विदारणवहलतमः भ्रमविहितहिमानीयानं॥७॥ रागमधुमाधवी॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी
तीनताल॥ भानदनकविकृतमधुवणिनमम्दनहवसंकाशं जनन

स रे ग म प ध नी स रे
यनगोरीनयनविषवित्तपुरहरहृदयविकासं॥८॥ रागमधुमा

म प ध नी स रे ग म प ध
धवी तीनताल॥ श्रीयानस्पवसंननवामरमहोन्माहंममालोकितं

३.
गी. २.
म. सा.
११४

114

म प ध नी स रे ग म प ध नी स
भर्तुः सांद्रकतूहलस्य वसनं पीतं विधानं रतिः ॥ काश्मीरं किमु

रे ग म प ध नी स रे ग म प
कंठितं कृतवती श्रीश निकुंजोदरे श्यामा कीर्णा निरजां क्षितस्या

ध नी स रे स
पवितः मायः पयागोल्करां ॥ इति श्रीभानुदत्तविरचिते गीतगौरीपतौ नायन

विधिसमाप्तम् ॥ [illegible] ॥ अथ ध्रुवपदं ॥ मध्यमापवीचावनार ॥ ४ ॥

म प ध नी स रे ग म प ध नी
आज शुभ दिन शुभ महूरत शुभ लगन शुभ श्रागमन वेठनवन

रे स म रे ग म प ध नी स
महाराज १ गोविंद नंदके गुण गायन नो श्रावे गावे मंदेम

रे ग म प ध नी स रे ग
वजावें दंश्रीमसवे शुभ काज ॥ २ ॥ सरगमपधनीधपमग

म प ध नी स रे ग म प ध
रेसनीपनीपनी ॥ ममगरमापमांचमांचगाज श्राधीनके प्रभु

नी स रे ग म प ध नी स रे ग म

दीनदयाल तमको रावे वरंनी वग्रटलर है नेरो राजमुवयरज

रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ मेरेमनरामकृष्णगोविंद गोपाल ॥ गोपी

नाथमाधवमधसूदनभजवारंवार ॥ मेरेमनरामविश्वंभर

विश्वनाथनरनारायननरसिंहनरोत्तमनरोपतीपननतउ

धार ॥ दीनदियालदीनानाथदामोदरदुखभंजनवामनवियाप

सवासुदेवनरंकार ॥ परशरामवाराहमत्सकछहयग्रीवक

पलमुनजगननाथग्राधीननतधार ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥

तूंहीकारनकरतातूंहीपोषनभरतातूंहीदातारामनाराय

३· म·२· प्र·सा ११५

म प ध नी म प ध नी स नी स रे स

ननंकारतूंही ॥ तूंही विसविश्वकरतातूंही हरगविरंचसत्रव

स स नी स ध प म प ध ध नी स

नाशी ॥ तूंही कृष्णमायादेवधरनीधारतूंही ॥ तूंही नवखंड

रे ग म प ध नी स रे ग म प

तूंही समदीप चौदाभवनतूंही पांचोंत्रस्थानगकहरवावतूं

ध नी स रे ग म प ध नी स रे ग

ही ॥ तूंही दिनकरसिंधुसुत तूंही तूंही रिद्धसिद्धलेनधभू

म प ध नी स रे ग म प

अधीनमनधारतूंही ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ साहिबमेरे परकरम

ध नी स नी ध प ध नी नी स

करो हावनिवारोतुमहो मेहरफजलकेदाताक्रपाल ॥ १

स रे ग म प ध नी स

~~रागमधुमाधवी ॥ चारताल~~ दीनदयालदयानिधदामोदरमदनमोहन

रे ग म प ध नी स

मुरारीकालीनाथगिरधारीगोपाल ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ २ ॥

नी स रे ग म प ध नी स रे

मछकछवाराहनरसिंहवामनपरशरामव्यासदेव।

ग म प ध नी स रे ग म प ध नी

कपलमुनीनंदलाल॥ प्राचीनकेप्रभूअ्रनहींवचित्रभानु

स रे ग म प ध नी स रे ग म प

श्रीबांकेविहारीश्यामसोहनजगमोहवनप्रनीपाल।

म प ध नी स रे ग म

रागमधुमाधवी॥चारताल॥ वंसीधरमकटधरपीताम्बरधरकुंड

प ध नी स रे ग म प ध नी स

लधरमालधरसोंहेंमूरतमदनकी॥ धकांधेकमलधर

रे ग म प ध नी स नी ध प

लकुटधरमाथेतिलकधरनीकीछविधरहृंदरदनकी

ध नी स रे ग म प ध नी स

नाकबुलाकधरमोतींमोंगधरबीरवलधरशोभासजे

रे ग म प स रे ग म प ध स

सखीलटनागनकी॥ गवारकलधरवनमेंडरतहैं ग्रा

३.
म.१.
प्र.सा
११९
ज्यो

116

म प ध

पीन बिचापरकाकरे सिफनरसचंद्रवदनकी गोपीग्वालपर

नी स रे ग म प ध नी स रे सं

आजबनदेखे अधीन हों बपरकें कासिफनचंद्रवदनकी ॥ ४ ॥

स रे ग म प ध नी

रागमधुमाधवीचारताल ॥ आजमफाबारकहो बेनमकोराजनपतराजा

स रे ग म प ध नी स रे ग

महाराजाधिराजाराजेंद्रपतखेत ॥ १ ॥ शुभदिनशुभमहूरत

म प ध नी स रे ग मं प ध

शुभलगनशुभरागनबैठेजागेउनीकेगखेतं ॥ २ ॥ नवखंडख

नी स रे ग म प ध नी स रे ग

ंडकेगुणीजनजोआवेंगावेअधीरवादभलेरहेंतेरेनख

म प ध नी स रे ग म प

त आधीनकेमभूतमपरसदेवमसन्नहोंबमहापतिहारी

ध नी सं स रे ग म

मददहरबसंत ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ सदाखुरंनीवरहोमख

प ध नी स रे ग म प ध स प
संपतहोसविकरोराननमनराजामहाराजरामचंद जोलोग

ध नी स रे ग म प ध नी स रे स
गाजमनारवीणाषिभविधरणनोलोरहोनमराजमहेत

स रे स स रे ग म ध नी स
कलमवंद ॥ देषादेषाकेभूपतिश्रीविषारणनिहारीदेंजोनम

स रे ग म प ध नी स रे स नी
पाविषावपंहेंश्रागियानंद ॥ श्राधीननवखंडषडसंडकेगुनीजन

ध नी स नी स रे स
गावेंजोदेवेंश्राशीरवादसदारहोश्रानंद ॥ ४ ॥ रागमधमाधवी

प ध नी स रे ग
चारताल ॥ ४ ॥ जयजयगंगेभागीरथीपापहरनीभवानीशिव

म प ध नी स स रे ग म
जटानिवासीश्रानंदीगुणीमानी ॥ ज्ञानहवीविलसीयाविष

प ध नी स रे ग म प प
हरणीसरषवमणीदाविदभंजणीरमाकरभवाणी ५

उ॰
स॰ १॰
म॰ सा॰
११७

म प ध नी स रे ग स प ध

सबनरमनीगुनीग्यानीपशुपंछीमानलोकवासीसेवाक

नी स रे स ग ०म ग म प ध नी स रे

रेपन्नपन्नलपशुनागी आधीनानपरबीनचरनानमेनिहा

स ग म प ध नी स रे ०स

रेकीजेकृपानूपमयामागरत्रिभुवनस्वामी ॥ ॥ ॥

स रे ग म प ध० नी

रागमधुमाधवीतीनताल॥ काहूकेकुलतननाहिविचारत ॥ अवगत

स रे ग म प ध नी स० स

कीगतिकहीपरतननहीसाधिअजामिलतारत ॥ कौनथीं

रे ग म प ध नी स० म प ध

जातअरूपातविदुरकीताहीकेपगधारत ॥ भोजनकरतनहे

नी स रे ग म० प ध नी स

बरउनकेराजमानभंगटारत ॥ श्रीकृष्णजनमकरमकेश्रीकृष्ण।

रे ग म प० म प ध नी स रे ग०

श्रीकृष्णहीअनमारत ॥ यहैहमभावहमरकेमभुकोमनकवल्लल।

म प ध॰ नी स नी स रे ग

प्रनपारत ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ गोविंदप्रीतसबनिकीमानत·

म प ध नी स रे ग म प॰ स रे

जिहिंजिहिंभावकरैनतसेवाअंतरगतकीजानत ॥ सबहीकहु

ग म प ध नी स॰ स रे ग म प

कबेरतजमीठेचाखगोदभरिल्याई जूठेकीकछुसंकनमानीभ

ध नी स॰ स रे ग म प ध नी

क्ककीयेमतनभाई ॥ संततभक्तमित्रहितकारीस्यामविदुरकेआए

स रे ग म प ध नी स॰ स नी ध

अंतरसवाध्धीप्रीतनिरंतरसागमगनदैकषाई कौरवकाजचले

प म ग रे स॰ स ग म प ध नी

रिषय्रापनसागपत्रहिअघाए ॥ सूरदासककरुणानिधानप्रभु·

सं नी ध प॰ स रे ग

जुगजुगभक्तबढाए ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ सबनगपेकोकोन

म प॰ ध नी स रे ग म प ध नी॰

उबारेयो ॥ सबजनबीरपरीसंतननकोचक्रसुदरसनतहांसंभारेयो

उ॰
स॰ २॰
प्र॰ सा॰
११८

118

म प ध नी स रे ग म स रे ग म
भयो प्रसाद जु अंबरीसको दुरबासाको क्रोध निवार्‍यो ॥ ग्वार निहेत पर्‍यों गोवर

प ध नी स स रे ग म प ध नी
धन प्रगट इंद्रको गर्व प्रहार्‍यो ॥ कृपा करी प्रहलाद भक्तकों षंभ फारि उरनष

स नी स रे ग म प ध नी स रे म
हि बिदार्‍यो ॥ नरहरि रूप धर्‍यौ करुणाकर छिनकमांहि हिरनाकुस मा

स नी स रे ग म प ध नी स
र्‍यौ ॥ ग्राह ग्रसत गजकों जल बूडत नाम लेत वाको दुष टार्‍यौ ॥

स रे ग म प ध नी स रे म
सूरस्याम बिन और करैको रंगभूममें कंस पछार्‍यों ॥ राग मधुमाधवी ॥ तीनताल ॥

स रे स ग म प ध नी स रे ग म प ध नी
जनकी और कौन पतिराषे जात पांति कुलकानन मानत वेद पुराण

स रे ग म प ध नी स रे स ग
नि साषे जिहिं कुलराज द्वारका कीनो सुकुलस्या पतें नास्यों ॥ सो

म प ध नी स रे म रे स ग म
ईपन अंबरीसके कारन तीनभवन भ्रमतास्यो ॥ जांको चरनोदक

प ध नी स रे स ग म० म प ध नी
सिवसिरपरतीनलोकहितकारी ॥ तिनप्रभुपंडु

स रे ग म प ध नी स० स रे स
सुतनिकेकारननिजकरचरनपषारी ॥ बारहिबार

ग म प ध नी स रे स० स रे ग म
षबसुदेवदेवकीकंसमहाडरदीनो ॥ तिनप्रभुप्रहला

प ध नी स रे ग म० प ध नी स रे
दहितहिरननरहरिरूपजुकीनो ॥ जगजाननजतुना

ग म प प नी स रे स० स रे ग म
थजितेजननिजभजश्रमसुषपायो ॥ श्रीसोकोजेहिस

प ध नी स रे स ०
रनगयेंसुषकहतसूरइनगायो ॥ रागप्रभुमाधवी ॥ तीनताल ॥

म प ध नी स० स रे ग म प प नी
श्रीरामकाउजननकीपीर ॥ नवजनवरीनरषीभयोनवत

स रे स रे स० स रे ग म प ध नी स
बकृपाकरीबलवीर ॥ गजबलहीनबिलोंकदसोंदिस

उ
स रं
ग्र॰मा
११८

म प ध नी ० स रे ग म प ध नी

नवहविसरनपहौ ॥ करुणासिंधदयालहरमहदेसवसं

नी स ० म प ध नी स रे ग म प

नापहहौ ॥ गोपीग्वालगाइगोसुतहितमातदिवसगि

ध नी ० स रे ग म प ध नी स रे

रलीनो ॥ मागधहत्यौभक्तन्पकीनोम्रतकविप्रसुतदी

स ० म प ध नी स रे ग म प

नो ॥ श्रीनृसिंहवपुधर्योप्रल्हादहितभक्तवचनप्रतिपाल्यौ

ध नी स रे ग म प ध नी ० म

हमिरतनामकुपदननयाकोपटअनेकबिस्तर्यौ ॥ मुनि

रे ग म प ध नी स ० रे ग म

मदमेटदासव्रततराष्योअंबरीषहितकारी ॥ लाषाग्रहते

प ध नी स रे स ० स रे ग म

सत्रुसैनतैपांडवविपतनिवारी ॥ वरुणफांससब्रजपतिमु

प ध नी स रे स ० स रे ग म प ०

कगायोदावानलतुषराहौ ॥ ससूपावमहदेवदेवकीकं

स नी स रे ० ग म प ध नी स

समहाबलमारहो ॥ सोश्रीपतिजगजगमहिमिरनव:

रे ग म प ० ध नी स रे ग म

नवेदविमलजमगावे ॥ श्रमरनमरनमरनाचतहेर

प ध नी स ० स नी ध

कोजोमरनकरावे ॥ १५ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनतार ॥ ठकुरायत

प म ग रे स रे ग म प ध नी

गिरिधरनकीसांचीकौरवनीनजुधिष्ठिरराजाकीरत

स नी स ० स रे ग म प ध नी

तीनलोकमेमांची ॥ ब्रह्मरुद्रइंद्रवरनकालकेकालइ

स रे ग म ० प ध नी स रे ग

रतभुवभंगकीआंची ॥ रावेनमोल्पजातननजान्योमाया

म प ध नी ० स रे ग म प ध

विषमसीसयरिनाची ॥ गुरुमतनग्रानदियेजमभ्रवतेवि:

नी स रे स ग ० म प ध नी स ०

मम्हारामाकियोग्रजाची ॥ त्रं:माननकरबसनकुराव

उ॰
स॰ र॰
म॰ मा
१९

म प ध नी स रे सं म प ध नी स
नंद्यासिरतननामद्रौपदीबांची ॥ हरिचरनारविंदनजिला

रे ग म प ध नी सं स रे ग म
गतअनंतकहूंतिहिंकीमनकांची ॥ सूरदासभगवंतभ

प ध नी स रे सं
जततेतिनकीलीकचहूंजगबांची ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥

म प ध नी सं स रे
भक्तिमहिमा ॥ हरिकेजनसबतेंअधिकारी ॥ ब्रह्मामहा

ग म प ध नी स रे सं म प
देवतेंकोवडतिनकेसेवकअमतभिषारी ॥ जाचककेर

ध नी स रे ग म प धं म ग
जाचककहाजावैजाजाचैसोरसनाहारी ॥ गनकाश्त

रे स नी ध प म ग रे सं स रे
सोभनहींपापवतजिहिंकुलकोउनपितारी ॥ तिनकी

ग म प ध नी स रे स ग मं
साषिदेविहिंरनाऊमरावनकहूंवमहितभियषारी

म प ध नी स रे ग म प ध म

जिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषन सो अजहू राजा री सिला

प ध नी स रे ग म प ध म प

तरी जल माहि सेन बंध लिव हृच्चरन अहल्या तारी ॥ जो रुकना

ध नी स रे ग म प ध स प ध

घमरदन नक आये तिन की सकल आपदा टारी ॥ जिन गोविंद स्त्र

नी स रे ग म प ध नी स रे

विलक्ष वरा घोर वसन सिर दै मद छलना हारी ॥ सूरदास भगवंत भ

ग म प ध नी स

जन बिनु चरनी जन निवो रुक कतमारी ॥ ९ ॥ एगमपुमापवीती

म प ध नी स रे ग म

नतार ॥ ॥ जा परदीना माथ छवै सो ईश्वर लीन वशी हृद रमोई

प ध नी स रे ग म प ध

जिंहि परकृपा करै ॥ राना कोन वज्ञे रावन तैं गरव हि गव वगरै

नी स रे ग म प ध नी स रे ग

रंक व कोन सुदामा हूं ते आप समान करै ॥ रूप व कोन आधिकसी

३
स॰ १॰
ग्र॰ मा॰
१२१

प प ध नी सं रे ग म प ध
नानैंननमवियोगभरै ॥ अपिकरूपकौंनकुवजानैंहरिपतिमार

नी सं रे ग म प ध नी सं सं रे ग
वैंरै ॥ जोगीकौंनवशेसंकरनैंनाकोकामभ्रष्टैं ॥ कौंनविरकत्र

म प ध नी सं स रे ग म
पिकनारदनैंनिसदिनभ्रमितफिरै ॥ अपमसकौनभ्रजामिलहै

प ध नी सं स रे ग म प ध नी
तेनमनहांजातहरै ॥ सूरदासभगवंतभजनविनफिरफिरज

स म प ध नी स
ठरजैरै ॥ १८ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ जाकोमनमोहनअंगकरै ना

स रे ग म प ध नी स रे
कोकेसपासेनहींसिरनैंनोजनगांवरपरै ॥ छिवनकसिपपति

ग म प ध नी सं स रे ग म
ह्राविषकौमप्रहलादननैकरैरै ॥ आनंदलोउजानपादसुतरा

प ध नी सं स रे ग म प ध नी सं
नकरतनमरै ॥ राषीलाजद्रुपदतनयाकीकोपितचीरहरै

ग म प ध नी स रे ग ० म म प ध नी

उरजोधनकोमानभंगकरवसनप्रवाहभरै ॥ विप्रभक्तकल्पपग्रो

स रे ग म प ० ध नी स रे ग म

कृपदियोवलिपछिवेदकौरै ॥ दीनदयालकृपालकृपानिधि

प ध नी ० स रे ग म प ध नी स

कांपकहांपरै ॥ जोसुरपतिकोप्योव्रजऊपरकहिंयांकछुनसरै

रे ग म प ध नी स नी ० नी स रे

राषिव्रजजननंदकेलालागिरिधरिविरदधरै ॥ जाकोविरदहेग

ग म प ध ० नी स रे ग म प ध

वप्रहारीसोकेसेंविसरै ॥ सूरदासभगवंतभजनकरमनगहेउव

०

रै ॥ १९ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ जांकोहरिअंगीकारकियो ॥ जाके

म प ध नी ० स

रे ग म प ध नी स ० स रे ग

कोटिविघनहरिहरिकेअभयप्रतापदियो ॥ दुरवासाअंबरीष

म प ध नी ० स रे ग म प ध ०

सतायोसोहरिसरननगयो ॥ परतितागषीमनमोहनफिरता

३· स·२· म·सा १२२

म प ध नी स नी रे ग म प ध नी
पैपरयो ॥ निकसषंभतेंनाथ निरंतरअपनो राषिलियो ॥ वड्डनसा

स रे ग म प ध नी स रे ग म
मनादैप्रहलादहिताहिनिसंककियो ॥ म्हतकभयेसवसषाति

प ध नी स स रे ग म प ध
वायेविषजललनाइपियो ॥ म्हरदासप्रभवछलहैउपमाकौनकियो ॥ २·

म प ध नी स रे ग
रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ कहाकमीजाकेरामधनी ॥ मनमानाथमनोरथ

म प ध नी स स रे ग म
पुरवैसषनिधानजाकेमौनधनी ॥ अरथधरमअरुकामममोक्ष

प ध नी स स रे ग म प
फलचारिपदारथदेतछनी ॥ कहाक्रुपनकीमायाकेतीकरत

ध नी स स रे ग म प ध
फिरतअपनीअपनी ॥ षाइनसकेमषरचनहींजानेज्यौंभवंगशिर

नी स स रे ग म प ध नी
रहतनिमनी ॥ आनंदमगनरामगुनगावैदुषसंतापकीकाटतनी

स स रे ग म प ध नी ध स

नी॥ सुरकेहितनेभजनतरामगुननितिनमोंहरिसोंमदावनी॥ २॥

स नी स रे स म रे

रागप्रभुमाधवी॥ तीनताल॥ विनतीअंग॥ वंदोंमेचरनसरोजनतुमारे॥ सुंदरस्या

ग म प ध नी स रे ग म स रे

मकमलदललोचनललितत्रिभंगप्रानपतिप्यारे॥ जेपदप

ग म प ध नी स रे ग म म प

दमसदाशिवकोधनसिंधसुतातुरतेंनहींटारे॥ जेपदपदम-

ध नी स रे ग म प ध स रे

परसजलपावनसुरसरिपरसकटतअघभारे॥ जेपदपदमप

ग म प ध नी स रे स स रे

रसरिषपतनीवलन्दपआपिपतिनवहुतारे॥ जेपदपदम

स ग म प ध नी स स नी

रमतवृंदावनअहिशिरपरिअगनितरिपुमारे॥ जेपदपदमर-

स रे ग म प ध नी ध प म

मतपरेवदलहतनभपसवकाजसंवारे॥ जेपदपदमपदसि-

उ
स॰ रे॰
म॰ सा॰
१२२

123

म प ध नी स रे स स रे स ग

ब्रजभामिनसबसदैसुषमदनबिसारे । सूरदासतेरैपदपंक-

म प ध नी स

जत्रिबिधतापत्रयहरनहमारे ॥ २२ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥

स रे ग म प ध नी स रे ग म

हरिजनमनतैंकहानहोंई । बोलैगुंगपंगुगिरिलंघैअरुआवै

प ध नी स रे ग ग म प

अंधाजगजोई । पतितअजामिलदासीकुबजातिनहूंकेकल

ध नी स रे ग म प ध नी

मलसबढोई । रंकसुदामाकियोइंद्रसमपांडवहितकौरव-

स स रे ग म प ध नी

दलषोई । बालकम्रतकजिवाइदियेद्विजजोआपदबढ़ोबैरो-

स रे ग म प ध नी स रे स

ई । सूरदासप्रभुरछ्याहरनश्रीगुपालसिमरतसबकोई ॥ २३

म प ध नी स रे स

रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ बिनतीसुनोदीनकीचितदैकैसैंतबगुन

म प म प ध नी स रे ग म प ध

गावै ॥ मायानटनीलकुटलियेकरकोटिकनाचनचावै ॥॥

स रे ग म प ध नी स रे स रे

दरदरलोभलागिलियेडोलततनानास्वांगवनावै ॥ तमसोक

ग म प ध नी स स रे ग म

केपटकरावतमभजनमेरीवुधभरमावै ॥ मनअभिलाषतरंगन

प ध नी स स नी म नी स

करकरमिथ्यानिसाजगावै ॥ सोवतसपनेमेज्यौंसंपतत्यौं

रे ग म म प ध नी स रे ग

दिषाइवौरावै ॥ महामोहनीमोहआतमामनकरिधारहिल

म प ध नी स रे ग म म प

गावै ॥ ज्योंहतीपरवधूचोरकेलेपरपुरुषमिलावै ॥ मेरेनाथ

ध नी नी रे ग म प स रे ग

तमहींगततमपतितमसमानकोपावै ॥ सूरदासप्रभुतुम

प ध नी स रे स

रीकृपाविनकोमोदुषविसरावै ॥ २५ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥

पु०
स० १०
प्र० सा०
१२४

124

म प ध नी सं म प ध नी स रे
अबकै राषिलेहु भगवान ॥ हम अनाथ बैठे तुम डरियापार धीमं

ग म म प ध नी स रे ग म प
थैवान ॥ जाकि रेष भाज्यो गाहत हैकु परफकौ गासि वानरहु भांतह

ध नी स रे सं स रे ग म
बभयो आनरहुकौ न उबरि मान ॥ हमिरन हौं अहिडस्यौ पारयो

प ध नी सं रे ग म प ध नी
करबूटे संथान ॥ हूरदाम मरलगयो गसि वानहि जयजयकृपानि

सं म प ध
धान ॥२५॥ रागमधुमाधवी तीनताल ॥ ॥ हरितेरी मायाको

नी स सं स रे ग म प ध नी
कौनविगायौ ॥ सोनाजनमरज्ञाद सिंथकी पलमैं राम विलोयो

स रे ग म प ध नी स रे ग
नारदमगन भयमायामै ज्ञान बुद्धि बल षोयो ॥ सांटपुत्र अरु दा

म प ध नी सं रे ग म प
दमकं न्याकं टलगायै रोपौं ॥ संकरकोचिनहूयौं मोहूनी सं

ध नी स स रे ग म प ध नी

नख्वारिभुवमोयौ ॥ नाहिमोहग्राहग्राहकिपोनवनषसिषनं

स म प ध नी स रे ग म प ध

रोयौ ॥ सोभियाउर नोयनरोनोपलमैगरदसमोयौ ॥ सूरदासकां

नी स रे स ग स

वश्रहकांचनपकहियमापपरोयौ ॥ २९ ॥ रागमपुमापवी नी

म प ध नी स रे ग म प

नतार ॥ तुमरीमायामहावलजिनसवजगवसकीनो ॥ नैक

ध नी स रे ग म म प ध

चितमुसकारसवनिकौमनहरिलीनौ ॥ कछुकुलकमिननार

नी स रे ग म प ध नी स रे

नईजाकेरूपसकलजगराच्यौ ॥ विनदेषविनहींसनेहमानन

ग म प ध नी स रे ग म प

कोउवाच्यौ ॥ सनताकेउतपातनैसकसनकादिकभागे ॥ लो

ध नी स रे ग म प म प ध

लोकलाजमभकुड़गईकामक्रोधमदजागे ॥ अकथकथायां

उ॰
स॰ र॰
प्र॰ मा
१२५

125

म प ध नी सं म प ध नी स रे

कीन्हरीकहैकहतनआई ॥ छैलनकैसंगयोफिरैजोंतनसंगछा

सं स रे ग म प ध नी सं स रे ग

ई ॥ इहिविधिइहिडहकेसवजलथलजितयजेते ॥ चतुरसिरोम

म प ध नी सं स रे ग म प

ननंदकेअलकहांकरैकिते ॥ पहिवैरातीकंजकीसिरहीनउ

ध नी म म प ध नी स रे ग म

परैबामोहै ॥ कपटलंहिगानीलोवन्योमोकोजोदेघनमोहै

प ध नी स रे सं स रे ग

चोलीचतुराननठग्योअमरउपरैनावाते ॥ अतिरैराअवलो

म प ध नी सं म प ध नी

ककैसवअम्रमहामदमाते ॥ जोमाजगतवीसरीसवैउदि

स रे सं ग म प ध नी सं

धाइसंगलागे ॥ नैकरद्दिनहंपविगाईसिवसिरटोनाजागे ॥ व

म प ध नी स रे सं म प ध

डनकहांलगिवरनीयेपरवुकघनउवरनपावै ॥ भमिसोवतमु

म प ध नी स म प ध नी स रे

धनी ह मैजहांनाइंजगावै ॥ पकनकोदरमनठगैपकनसंग

स स रे ग म प ध नी स स नी स

तोवे ॥ पकनलेमंदिरवढेइकविरचविगावै ॥ इहिलाजिनमरी

रे ग म प ध नी स स रे ग म प

यैसदासिवकोऊकहनतम्हारी ॥ हरसामरहिवरजिकैमटी

ध नी स म प ध नी स

कलगारी ॥ २७ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ हरितेरोभजनाकियोनजार

रे ग म प ध नी स रे स रे ग

कहांकरोंतेरीसवलमायादेतलहरिवहार ॥ जेवेआंऊंसायसं

म प ध नी म प ध नी स रे

गतकछुकमनदहराई ॥ जैागधंदअन्हादमरनावढूवेवेहेख

स म प ध नी स रे ग म म प

भार ॥ भैवधविपविहसीोपरधनमाधुमाधुकहार ॥ जैसेमनदवा

ध नी स रे ग म प ध नी स

लाेभकारनकरतसंागवनार करोजततनभंयांतमकीक

उ॰
स॰ ४॰
ग्र॰ मा॰
२३४

म प ध॰ म प ध नी स रे सं॰
कुन उधनारि ॥ सरस भुकी मवल मायादेत मोहि भुलाइ ॥ २८ ॥ रा॰

म प ध नी स रे सं॰
राग मधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ अविद्यावनितनमापवननयहमरीइकगाइ ॥ अव

स रे ग म प म॰ म प ध नी सं
ग्राजतिअपग्रागिलेआइयेवराइ ॥ हेअनिहविहाइहवकतहंव

रे ग म॰ म प ध नी स रे ग
द्भुतअमारसजाति ॥ फिरतवेदवनछषउधावतसबदिनअहस

म प॰ म प ध नी स रे ग म प
वरात ॥ हितकरिमिलैलेहुगोकुलपतिअपनेगोधनमांहि॰

ध नी स रे ग म प ध॰ म प
सुषसोउसुनवचनतम्हारेदेहुकृपाकरिवांहि ॥ निरधरक

ध नी स रे ग म॰ म प ध नी
रहंसूरकेस्वामीजनमनजांउफवि ॥ मेममताकरिमोरसुधार

स ग म॰ म प ध
पहिलेलेहुनिवेरि ॥ २९ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ कितेदिनहरि

म प ध नी स रे ग म प
समरन बिन षोये ॥ परनिंदा रसना के रस मैं अपने परत हु षोये

प नी स रे ग म प ध म
नेलल गाय कियो हचि मर्दन वमल मलि मलि धोये ॥ तिलक

प ध नी स रे स म प ध
लगाइ चले स्वामी है विषन के मुष जोये ॥ कालवली तैं सब जग

नी स रे स स नी ध नी स रे
कंध्यौं ब्रह्मादिक हू रोये ॥ हर अपम की हो तको न गति उदर भरे

स म प ध
पच सोये ॥ ३ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तीन ताल ॥ त्रिताल वरनन ॥ माधव जू नैं ऊ हटको

नी स रे ग म प ध नी स म प
गाइ ॥ निसदिना पहु भ्रमन रहत उनत्र अगहग हीन जाइ ॥ क्षुद्रत ॥

ध नी स रे ग म ध ध नी स
वहुत अघात नाहीं निगम दुम दल षाइ ॥ अष्टदस घट नीर अंचव

रे ग म प म प ध नी स रे स
वै तृषा न बुझाइ ॥ चउ दिसि कंपरत आगो विव्है गोपमु हाइ ॥

उ
सं.र.
म.सा.
१२०

स रे ग म प ध स स रे ग

श्रीरसहितअभछभछनगिरावरनिनजाइ॥ श्रीमपरनदसेल

म प ध स म रे ग म प ध

काननरहेतेचरनअग्रजाइ॥ टीरनिझरनझरनिकाहंत्रिगुनहेसमु

स स रे ग म प ध नी स स रे

हाइ॥ हेरेनषवलदनुजमानवमरनिसीसचढाइ॥ रविविर

ग म प ध नी स ध म प

चिमुषभोहछविलेचलतिचितचुराइ॥ नीलषरजाकेअरुन

ध नी स म प ध नी स

लोचनसेनसींगसुभाइ॥ दिनचंदवदमषेतहंदतिसवपहक

रे स म प ध नी स रे स

हांसमाइ॥ नारदादिसुकादिसनजनयकेकरतउपाइ॥ नी

म प ध नी स

हिकहुकैसेहुपानिपिसकतसूरवचाइ॥ ९॥ ॥रागसुमापवी॥ तीन

म प ध नी स म प ध नी

ताल॥ माधवजूमनमायामेवसकीनो॥ लाभहानककुसमुफत

म प प नी स० म प ध नी स रे

नाहींजै पतंगतननदीनो ॥ ग्रहदीपकयनतेलनलतियहन

स ग म० म प ध नी स रे ग म

ज्वालाअतिजोर ॥ मेमनहीनमरमनहींजान्यौंपहोंअधिक

प ध० नी स रे ग म प ध नी

कविदोर ॥ विवसभजोनलनीकेहकज्यौंविनगुनमोहगहौं

स रे ग म प ध नी० म रे

मेअज्ञानककुमरमनजान्यौंपरदुषपुंजमहौं ॥ वहुतदिवस

ग म प ध नी स० स रे ग

भयपायजगमैभ्रमतफिरौंमतिहीन ॥ मूंरिस्यामसुंदरजोमेवै।

म प ध० स रे

कैंहोवैगतिदीन ॥ ३२ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ हृदयकीकव

ग म प० ध नी स रे ग म प

हूनजरनचटी ॥ विनगोपालविथामातनकीकैसेजानकटी

प नी स रे ग म प ध० नी स

अपनीकविनितहीनितषैचितइंद्रीग्रामभटी ॥ होतितनही

३
स॰ रे॰
प्र॰ सा॰
१२८।

म प ध नी स स रे ग म
उठिचलतनकपटलगावंपैनैनपटी ॥ फूटैमनफूटीयहकायाफू

प ध म प ध नी स रे स
टीआरभटी ॥ अहफूटीकेवदननिहारतमारतफिरतलटी

म प ध नी म रे स म प
दिनदिनछीनहीनभईकायाउपजंजालजटी ॥ चिंतागहेहम

ध नी स रे स म प ध नी स
खभुलानीनीदफिरतउचटी ॥ मगनभयोमायारसलंपटसमुफ

रे स म प ध नी स रे स म
तनाहिहटी ॥ तापरमूरचपीनाचतहैंमीचविलीचनटी ॥ षच

प ध नी स रे स स रे स
तखादखानपानरंजोंचातकरटनठटी ॥ सूरजलदसींचैककह

ग म प ध नी म प
नाकिधिजेनिजजनमरनमिटी ॥ ३३ ॥ रागभैरव ॥ तीनताल ॥ माधवजू

ध नी स म प ध नी स रे स
मनहठकठिनपर्यौं ॥ जद्दिपिविद्यमानसवनिरषतदुःखस

म प म प ध नी स रे स म

रीझ्भरहौं ॥ वारवारनिसदिवअनआनवरफिरतदसोदिसधाये

प ध नी स रे ग म प ध म

जैौं खककैंभफलफूलविलोकतजातनहींविनघाये ॥ जग

प ध नी स रे स नी स स

जुगजनममरनअरु विकरतनसवममुफतमतिभेव ॥ जौंरि

नी ध नी स रे स स नी स

नकरउल्लकनमाननतपरीआनयहठेव ॥ हांउचीलमतिहीर

नी ध नी रे ग म म प ध नी

नसकलविपितमहृपालजगजानि ॥ सुरमघुपनिसिकमल

स रे ग म ध

कौसवसककरैंहृपादिनिभानि ॥ ४४ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥

म प ध नी स म प ध नी स

आहोंगातअकारथगाहौं ॥ करीमीनकमललोचनसौंजन

नी स स स रे ग म प प नी

मनवाजौंहारौं ॥ निसदिनविषयविलाससमनविलसतफूट

उ॰
स॰ १॰
ग्र॰ सा॰
१२४

128

ध नी स० म प ध नी स रे ग म
गईन वचा सौं ॥ अवलानै पांबलतान नपाइ उघदीन दई कौ माहौं

प ध नी स रे ग म ध ध०
कामी ह्वपन ऊचौ लऊ दरसन कौन हूपा करतासौं ॥ ३५ ॥

म प ध नी स० स रे
रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ माधव ह्नमन सवही विपिनोंचं ॥ अतिरुक्म

म ग म प ध नी स० स रे ग म
मनि राऊ हमैगल चिंता रहित अलोच ॥ महाम छुअसताननि

प ध नी स० स रे ग म प
मिरमैमगन हैान हपमान ॥ नलीकेविरघभज्यौं भरम्योभ

ध नी स० म प ध नी स रे ग
जतनसारंगपान ॥ गीयोठौ ढिहे मतनसकरज्योंअति आतुर

म प ध० स रे ग म प ध नी स म
मतिमंद ॥ लुवध्यौ आनमीन आमिषज्यौं अवलोकौन हीफंद

प ध नी स रे ग म ०प म प
ज्वालामीनपगटसनक्मघहठिज्यौंपतंगनननजासौं ॥ विषयप

म प ध नी स रे ग म प ध नी

असकअमितअचमाउलतवहमककुनसंभाहौं ॥ जौंकपसो

स रे ग म प ध नी स रे ग म

तहूतासनगुनासिमटहोतलिवलीन ॥ त्यौंमठवियातननतन·

प ध नी स रे स रे ग म प

हौंकवहूंरहतविषयआधीनं ॥ सेंवरफलसुरंगसुकनिरषमुहि

ध नी स रे ग म प ध नी

तहोतषगभूप ॥ परसतचौंचतलउपरतमुषपरतउषकेकूप ॥ ।

स रे ग म प ध नी स रे ग

श्रीमकहांलोंकहौंपकमुषयामनकेकुतकाज ॥ सूरपतनितुमपति

म प ध नी स स रे

तउधारनगहौंविरदकीलाज ॥ ३९ ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनताल ॥ मेरोमन·

ग म प ध नी स रे ग म प

मनहीनगुसाईं ॥ सवसुषनिधिपदकमलछांडिश्रमकरतस्वान

ध नी स रे ग म प ध नी

कीन्याईं ॥ फिरतवृथाभाजनअवलोकततहांनैसदनअज्ञानं ॥ ति

उ॰
स॰ रे॰
ग्र॰ मा॰
१६५

128

म प ध नी स रे ग म॰ म प

हिंलालवकवहंकेसहं त्रिपतिनहंपावनप्रानं॥ जहींजहींजा॥

ध नी स रे ग म॰प म प ध नी

ननहींभ्रमत्रासनत्रसमलज्ञटपदत्रान॥ हूलहूलकारनकवुद्धि

स रे ग म प॰ म प ध नी स रे

नइकिनेमहितग्रपमान॥ नमसरवागमवहीविपिहरनग्रवि॥

ग म प॰ ध नी स रे ग म प

लभवननिजनाथ॥ निनेछाडियहहरमाहामठभ्रमनभ्रमनि

ध॰नी म प ध नी स रे

केसाथ॥१॥ एगमपुमायवी॥ नीमनाग॥ करुणामैंनेरीगनिलषीनपरै॰

ग म प ध नी स रे॰स स रे ग

पमिग्रपमिग्रपमिपमिकविग्रकरनकरनकरै॥ जपग्रहविजय

म प ध नी स रे॰स स रे ग म प

करमकहाकीनोव्रतसहपादिवायो॥ ग्रहरज्योननताउपरहीनो

ध नी स॰ स रे ग म प प नी स

पमिउछेदकरायो॥ पितावचनपंदैसोपापीसोप्रहलादहिकीनो

म प ध नी स रे ग म म प
निकसेषंभवीचेतेनरहेविमाह्यिभयपदहीनो ॥ हानपभेवद्र

ध नी स रे ग म प ध नी स रे
किंयभानहृतमेतमविमृषकंहाबो ॥ वदविह्यमकलपरवह

ग म प ध नी स रे ग म प
नमोतमरेमनभयो ॥ जन्नकरतवैरोचनकोहतवेदविमलविपि

ध नी स रे ग म प ध नी म
कर्मा ॥ सोह्मलवांधपतालपठयोकोनहृपानिपिपमा ॥ द्विज॰

प ध नी स रे ग म प म प ध
कुलपतनतिश्रनामिलविप्रर्ङ्गनकानेहलगयो ॥ हतह्रितनाम

नी स रे ग म प म प ध नी म
लियोनारायणसोवेकुंठपठायो ॥ पतिहृतानालंपरजुवतीसो

रे ग म म प ध नी स रे ग म
पतिहृतनेंटारी ॥ दुस्सप्तुंम्पलीग्रयभमहगनकाहवापफावन॰

प म म प ध नी स रे ग म म
नारी ॥ मंकहेतजोगीश्रमकीमोग्रमरविरोपह्रिपावें ॥ श्रवि

पु॰
स॰ र॰
प्र॰ स्ता॰
१३१

130

म प ध नी स रे स
गतगतिकरुणामयतेरी महकहाकहिगावै ॥ १८ ॥ ३ ॥

म प ध नी स रे स
रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ जयजयजगतजननीज्वालामुखीतीनलोक

ग म प ध नी रे स स रे ग म
जानीश्रीभगवतीअम्बेदुर्गाभवानी ॥ तोहेधूजेविषमुनिगुनी

प ध नी स रे ग म प ध म
गंधर्वज्ञानी ऽ सुरभंजनी सुरनमनमानी तूंहीधाणी ॥ जोजो॰

प ध नी स रे ग म प ध
फलमांगतसोईपावतश्रीशंकरीइंद्रमानीतूमतेंतेरीमयाते

नी स म प ध नी स रे ग म
होतज्ञानी ॥ आधीनकोवरदीजेमोरीमाईतूंहीहैमाताताणपर

प ध नी स म प
मब्रह्मज्योतीस्वरूपमनचंदानी ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥ सिद्धदाना

ध नी स रे ग म प ध नी
रामनारायननविंकारनतमनरहरीपरब्रह्मणममपरूपन॰

म प ध नी स रे ग म प ध

वामदेवनारदमुनीसनकसनंदसनत्कुमारयज्ञपुरुषस्वामी

नी स० स रि ग म प ध नी स रे

श्रवणधाम ॥ विश्नुविश्वंभरशेषसाईखगेशआरूढ हनमानमर

ग म प ध० म ध नी स रे ग

नमोहनकरताजोकाम ॥ गोविंदगोपीनाथगोवरधनधारीगो

म प ध नी स रे ०स

पालदामोदरकोपकुंजआधीनपायोविश्राम ॥ रागमधुमाधवी ॥ चारताल ॥

ध नी स रे ग म प ध नी स

जागरेललनाजागरेजागमोरभईजोकागवोलेउडगणमध्य

रे स० म प ध नी स रे ग म प

मभयो ॥ दीपकाकीजोतघटीचंदढंगीकीचांदनीतिमरगयो

ध नी स रे स० म रे ग म प

करवकीचूंधांशीतलयोजाग ॥ मलोतोनेबोलभईहैंजोफीके

ध नी स रे ग म प प नी

अंजनअंवलेनघटोहैंपीयाआगरवगरकेलीगाजोगेअरुणोद

३॰
स॰ २॰
म॰ मा॰
१२१

13

म प ध नी स रे ग म प ध

दिन्नदिखोईदेतग्रापीनभरोग्रंगाभिंगावरसातलहोनरामकहो

म प ध नी स रे ग

रागमधुमाधवी॥तीनताल॥ तिन्नमेवारवारनांकुंवेनीनातुमपेजागमोरे

म प म प ध नी स रे ग म प

ललना॥ ग्वालवालसब होरेपेठाड़ेभोरभईवनहीकीचललना

म प ध नी स रे

रागमधुमाधवी॥तीनताल॥ तिम्न॥ नंकोजानदामेरीमाऊंवेकम्लारम

ग म प ध म प ध नी स रे ग

लाहोदिलदारमीयां॥ यांईलदीगनबायलज्ञानेनेत्ताहोग्रपी

म प ध नी स म प ध

नमाम्रूकांदेवेहेफेयाणांवदा॥रागमधुमाधवी॥ताल२॥ सोहनावेहस

नी स रे ग म प ध म प ध

वोलग्रसांईनालहोमेनेवेकुरवानकीनी॥ चिरहोयाहूतांदा

नी स रे ग म प प नी

भिरमायावेसदारंगग्रसांनूदीखग्रपीनहोयांमुहमवीनी

म प ध नी स रे ग

रागमधुमाधवी ॥ तीनतार ॥ पायनपरोंपी याप्यारे निहोरे नमहोमेरे रज

म० प ध नी स रे ग म प

साईं ॥ सोतनकेचरमतेजागोरे वलमाआधीनहोअरजांकरदी

ध नी स रे० म म

आविलगजामेंतोंतेरीलेंवोबलांई ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनतार ॥ २ ॥ आव

प ध नी स रे ग म० म प ध

लमदुखदेवेअसान्नजरमेहरदीदेनालवे ॥ हूंतांदामिरमाया

नी स रे ग० म प ध०

मिवमरिहांआधीनपै ॥ तेगअनववोलवे ॥ रागमधुमाधवी ॥ तीनतार

म प ध नी स रे ग म प०

जूंदारहैंपुगांतांहीववन्नामेतेरेमदकेकीत्यांबोलवन्याने

ध नी स रे ग० म म प ध नी

वरत्नकामेहरागूंदपंदमालेनल्यांई ॥ पहेवेसरांगरूरचरहे

स० म रे ग म प

कल्यां ॥ रागमधुमाधवी ॥ ठाई ॥ वन्यामेतेरेवलजांऊंसंतामेरामहघर॰

उ
स॰ र॰
म॰ मा
१६२

म प ध नी स रे ग म प
सुजानसिरनाजवे ॥ जिन्हीराहींजांदाघुशाइंदेसैयोआपीनहोदे

ध नी स रे ग म प
नअसीसांवाजीरखैनेनूश्रीभगवानब्रजराजवे ॥ ॥ ॥ रगमधुमापधी ॥

म प ध नी स रे ग
अरे ईनार ॥ २ ॥ सोनावेकीआघांगलआघनदीनाहींसोहनावे ॥

म प ध नी स रे स
बुध्यकरंभालगैकलेजेवाहरकडंगलवडेहनोदीसो ॥ रगमधुमाध

म स स रे ग म प ध
वीनारफाई ॥ ३ ॥ सवैहुखिदानारांमनवंजनदशारथकेलाल ॰

नी स नी स रे स
दानदिनमेसूजोनोहेतंसाहिवदीनदियाल ॥ रगमधुमापधी ॥ तारपञा ॥

स रे ग म प ध नी स स
पादकरसाहिवनूवंदेनोवावखानहारहैगुणाहनेरहो वली

रे ग म प ध नी स रे
मिहमापकपादकैरडमननूसाहसबतहकोकरदिठारिलमेरहो

रे ग म प ध म प ध नी

रागमधुमाधवीतालरूपका॥ नेवानकाधूमीरीगीत॥ धरमेस्वरवखेचान

म रे ग म म प ध नी म प ध नी स रे

बूतिभवेच्यते॥ लोलविभ्रमह॥ वोलवोलनोधाखुशरोनञ्चाउ

ग म प म प ध नी स म प ध नी म प

नवूभहार॥ गुउन्मकुलभेदमशांक॥ पतफलेभादाम॥ गब्धनेवा

ध नी स रे ग म

सेयारञ्चनननस्तकयागीमलाल॥ भूचान्यललरिभ्रमह॥ रागमधुमा

म प ध नी स रे ग म

धवीतालयका॥ धरिपोधाजननभवगईस्तभुचान्मललरिभ्रमह

प ध नी स रे ग म प ध नी स म

येवानाबोलबोलदेवाननालं॥ कन्योञ्चाउनयालिलालं॥ कर

प ध नी स रे ग म प

मकरतंयेतंसालोभञ्चालवैनइनरेभ्रमहं॥ धरिसहजनभ्रमगइस्तभुचा

म प ध नी स

ललललरिभ्रमह॥ रागमधुमाधवीताल रूपक॥ २॥ सारदाभवानीवाकवाणी

ड॰
स॰ म॰
सा॰ र॰
१२४

134

म प ध नी स रे ग म प ध नी स रे
दयाकरणीश्रानंददराणीतोहेछनैविषीमुनीगुणीज्ञाणीश्राधी

ग म प ध नी म प ध नी
णामणाम्लमकरतानी ॥ रागमधुमाधवी ॥ रूपककर ॥ श्रनवबनवैंयामाश्र

स रे ग म प ध नी स रे ग म प
नववनवैयांवेऽऽऽऽलरियांश्र ॥ करधांगावमवमत्खांवलमिल

ध नी स रे ग म प ध नी स
फलचुवेकोचत्पांनकवेमरश्राधीनमजनतसीमथरियां ॥ रा

म प ध नी स रे ग
रागमधुमाधवी ताररवारी ॥ जानवेजानमूनमोरेपरमेश्वरकोनाममत्र॰

म प ध म प ध नी स रे ग म
जानवेजान ॥ नववांवेंरवन्नसांडकाहेकोफिरेंभूलेश्रंग्रववृत्रमनमें

प ध नी स मध्य ग्राम के ख
पहवानजानवेजान ॥ रागमधुमाधवी ॥ ताररवारी ॥ सनीममनीधप॰

ज मे प्रा रं भ क र णा स र ग म गा य न ते स भं व
मगगरेसममसनीधपमगगगमगरेसनीपनीधपममगरेगरे

स॥ पमगगगरेसंससमगरेससरेरेसगरेसनी नीधपपमगगरे॰

ससरेगगमपधनीसंसनीधपममरेससमगरेससनीसं ॥

म प ध नी स रे ग म

रागमधुमाधवी॥तालखाउवा॥ दीमततनानानादिरदिरनादीमदीमत

प ध नी स रे ग म प ध म प

ननातनांतनारेतनारेतनरेनारेदीमदीमतना॥ ननानारि

ध नी स रे ग म प ध नी स

धतमदिरनादीमदीमदिरनादिरदिरंदिरदिरननानत्रानना

रे ग म प ध म प ध

दीमदीमदिरदीमतनां॥रागमधुमाधवी॥तालखाउवा॥ सकलभूंमहर

नी स रे ग म प ध म प ध नी

त्रावला– नामभईरीविनवमलनकी॥ जंहींफूलीकेसकेस

स रे ग म प म प

रज्वाहरत्रापीनभ्रमकाज ॥॥रागमधुमाधवी॥तालगीत॥ रोयारी

उ॰
स॰ १॰
म॰ सा॰
१३५

१३५

म प ध नी स रे ग म म प ध

यातमदीनयालकृपालसहैयारोयाग्रेग्रेग्रा कारनकरोडुख

नी स रे ग म प ध नी स

निवारोतेरीशरणपरोग्रधीनहोदैयाग्रेरोपा॥ क्रमगतामगगमधमा

म प ध नी स रे ग म प ध

पवी॥ दैखोदेखोरेमोहनमोहेनछेरोसंगकीसखीसवहांसक

नी स रे ग म प ध नी स रे ग

रेगीदेखोदेखोरेमोहन॥ बंगरीपकरमोरीमटकीगिरायदी

म प प नी स रे ग म

नीधरजाऊंमेरीसासलरेगीदेखोदेखोरेमोहन॥ गगमधमापवी॥ क्र

म प ध नी स रे ग म प ध

मगतार॥ सखीग्रानतेरेकाहएनेविगारदिनीग्रंगसेमेबरजर

नी स रे स म प ध नी स रे ग म

हीवरजोनहीमाने॥ होंजोगईजमनाजलभरनेमेरेवाहेपक

प ध नी स रे ग म प ध नी स

रकरईपरकुंघरवदलागेदीनीरंगसेवहकाहकानईरंजाने॥

म प ध नी म रे ग म

रागमधूमाधवी॥तालदादरा॥ आनंदआजवरेखीभयोहैकोहनमिले

प ध नी स रे ग म प ध म प ध

मोहेहमंरमकरकेनोआनतोअनंदभयो मैदोरमिलीगा

नी स रे ग म प ध नी स

लवांहेदरमोहेगहेलरीरहीवंमवमकरके॥ रागमधुमाधवीदादरा

म प ध नी स रे ग म प ध

तार॥ वरजोरीरनकाहनकोमीहेमवजातगालीदेतवएरी

नी स रे ग म प ध नी स

पकंरतकरकीहूडिवांसखीफोरदईफटपटकरतअनी॥ ५॥

शुभमस्तुयात्॥ रागमधुमाधवी॥ गततीनताल॥ शुभमस्तुसर्वजगताम्॥ अथप्रथ

कोमल

म प ध नी सा नी प नी

मआहती॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डां द्वितीयआ

ध नी रे सा प नी प प

हती॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा॥ तृतीयआहती॥

स॰ रं॰
मं॰ सा॰
१२९

136

म प प नी सा रे ग म
ड़िड ड़ा ड़िड ड़ा ड्ढा ड़ा ड़ा ड्ढां ॥ इत्यस्थाई ॥

म प प नी सा रे ग ग
ड़िड ड़ा ड़िड ड़ा ड्ढा ड़ा ड़ा ड्ढां ॥ चतुर्थग्राहणी ॥

रेरे सा रे नी ध प म गरेसा
ड़िड ड़ा ड़िड ड़ा ड्ढा ड़ा ड़ा ड्ढां ॥ इत्यन्तरा ॥

+३ +३
प ध नि सा रे ग मगरे सेरग
ड़िड ड़ा ड़िड ड़ा ड्ढा ड़ा ड़ा ड्ढां ॥

ॐश्रीगणेशायनमः॥ अथभैरवरागणीभैरवरागस्यद्वितीयस्त्रीणायनवर्णनम् ॥

भैरवीरागणीभैरवकीदुसरीस्त्रीप्रथमपहरदिनतेलेकरकि ॥ अ-

थयामडूसमेरेतकगायनकरणीकासमाहै ॥ नामभैरवरागणी ॥

समा॥ पहरदिनचडेतेतडियपहरदिनचडेतक॥ चितशिषव एवंइनानायका

शांतेरस दत्तनायक शिवजीदेवता भावतत्रऋषि अनुष्टुप्

छंदः संपूर्णसातसुर कोमल ओर अन्तर अवरुद्ध तीनग्रा

मकेस्वरकरकेरागणीउत्पतहोंदेहै मंत्र ॐश्रींपंपंपंभंभैर

श्रीं नमः स्वाहा ॐ पं भैरवीं नमः स्वाहा आवाहनम् ॐ पं फं नमः

इत्यासनम् ॐ पं भं नमः इति प्राणप्रतिष्ठा ॐ पं फं ष्ठां नमः

गं पं नमः ॐ भं ष्पं नमः ॐ पं भैरवीं टीं पं नमः - नमः स्वाने देय

म् ॥ अथ ध्यानम् ॥ स्फटिकरचितपीठे रम्यकैलासशृङ्गे विकचक

मलपत्रे श्वेतपद्मासनस्थां कमलधृतवीणापीनवक्षोजयः

नालीकविभिवियमुक्ताभैरवीभैरवस्त्री ॥ ॥ ॥ अथ भाषाध्यानं ॥

गिधक विलासमे विलासमहाभवनि वेदीक ढिककी चौकी

परागिरिजासीजानीहै चंद्रमखीचपलातेंचाहृदेहकुतिर

दिपैकौलक्रूरमनिसिवग्रचाहृठानीहै इंदीवरदलहूँ

नेदीरवहैदेवेंहगकरथरनालवालम्हकुसुमिकानीहै जि

यकरमीतहृविवल्लभयोस्तवजीतश्रीसीरसीतकरभेरम

वीवखानीहै ॥१॥ ॥नादमहोदधौ॥ सरोवरस्यस्फाटिकस्यमण्डपेस

रोरुहेफ्रंकरमर्चयन्ती नालमयोगैः मतिवहवाद्यवीणा

यानादभैरवीयं ॥नादरूपिणी॥ विमलकमलकान्तिस्वरूपिणीमाटं

कवर्णाः स्वरव्यञ्जनानित्वेकासोपमवकामस्गाती पतवमस

१३०

138

वाहम्रूषणवत्नहेमनोहरगणेरमणीयाभैरवीभैरवस्त्री·

ॐ ऐं पं ं इतिमंत्रस्य भारतऋषि अनुष्टुपछंदः महाशिवदे·

वता मध्याऋआदिसमाय भैरवीरागणीसिद्ध्यर्थेजपेविनि

योगः जपसंख्या पंचलष १५००००० उपांते

मध्यमांशग्रहंन्यासं मध्यमादिकमूर्छना संपूर्णभैरवीगीयं

मध्याऋदिवसमे ॥चौपई॥ मध्यमअंशन्यासग्रहहोई कहतराग

णीभैरवीसोई इनरागननोपकहिकीजै समसंपूर्णकोराग

दकीजै ॥दोहा॥ अंशन्यासग्रहपेवतजान गीतमहोदेकरतविधा

न॥ सोरठा॥ संपूरण सुर सातको कोमल ग्रंह बनाइ भैरवी गावै सा
तको तीन राग णि मीलकि॥ दोहा॥ टोडि रामकलि अरु गुजरी इन ती
नो सम भाग इन है मीला गुणी गावहै प्रकट भैरवि राग ॥
संपूरण सातसुर रागणि भैरवि भैरव कि इस्त्री प्रथम पहु
र दिन मे गायन करै टोडी रामकली गुजरी इन तीनु रागण
गा टे मेल करणे को भैरवि रागणि कहते हैं मध्यम सुर इ
स मे न्यास है और ग्रंश ग्रह है ओर पक्रम तमे धैवत सुर ग्रंश
न्यास ग्रह है सो संपूरण प्रकार कल्याणजावेग विषम कोम

उ॰
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१२५

139

ल और धैवत अतेकोमल गंधारअन्तर औरनिषादकोमल
इनसुरोंकरके भैरवि रागणि होतिहै वाकिमध्यम और
पंचम शुद्धसुर होंलगतेहैं मध्यमस्वर इसमें वादीहै ष
ड्ज और निषाद संवादीहै पंचम धैवत और गंधार अनुवा
दीहै इसप्रकारकरके इसरागणीके उपजे होतीहै म
ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला रिषभ अति
कोमल नारग्रामवाला षड्जनारग्रामवाला निषादको
मल मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला ॥

निषादकोमल मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवा

ला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवा

ला मध्यममध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला षड्ज

मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला षड्ज॰

मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम॰

वाला पंचम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला॰

रिषभकोमल मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला॰

मध्यम मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला इत्यष्टार्ई

उ॰
स॰ र
प्र॰ स्व
१५॰

म प रे म नी प नी

प प प म प ध नी

स ग म प ग रे ग

म प इत्यस्थाई॥ मध्यम मध्यग्रामवाला पं
चम मध्यग्रामवाला पुनः पंचम मध्यग्रामवाला म
ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला निषा
द्कोमल मध्यग्रामवाला षड्ज नादग्रामवाला को
मलरिषभ नादग्रामवाला मध्यम नादग्रामवाला गंधा

रनारग्रामवाला कोमलरिषभ नारग्रामवाला षड्ज·

नारग्रामवाला रिषभ नारग्रामवाला निषादकोमल·

मध्यग्रामवाला षड्ज नारग्रामवाला गंधार नारग्रामवा

ला रिषभ नारग्रामवाला गंधार नारग्रामवाला रिषभ

नारग्रामवाला निषाद मध्यग्रामवाला षड्ज नारग्रामवाला

मध्यम नारग्रामवाला पंचम नारग्रामवाला गंधार नारग्रा

मवाला रिषभ नारग्रामवाला गंधार नारग्रामवाला रिष

भ नारग्रामवाला षड्ज नारग्रामवाला रिषभ नारग्रामवा·

३
स॰ १॰
म॰ सा॰
१४

ला निषादकोमल मध्यग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला॰

संकीर्णभैरवी॥ अथ षड्भेदविवरणम्॥ म प प म

प नि सा रे म ग रे सा

रे नि सा ग रे ग रे ग

रे ग रे ग रे सा रे नि

सा म प ग रे ग रे सा

रे नि म ध प म ग रे

सा म प रे स ग ॥ अथ षड्भैरवी

धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला ९

नःकोमलधैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला

पंचम मध्यग्रामवाला गंधार मध्यग्रामवाला मध्यम म

ध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला मध्यम म

ध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमल गंधार म

ध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोमल रिषभ म

ध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला निषादकोमल·

मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला इत्यष्टाईं

उ॰
सा॰ ३
म॰ ता॰
१४२

ध प ध म प ग म ध

म प म ग म रे म नि

ध ॥ इतस्थाई॥ मध्यम मध्यग्रामवाला गंधार कोम
ल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम म
ध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला निषाद
कोमल मध्यग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमल
गंधार तारग्रामवाला षड्ज तारग्रामवाला कोमल
रिषभ तारग्रामवाला षड्जतारग्रामवाला कोमल।

निषादमध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला म

ध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला धैवतको

मल मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला·

षड्जनादग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला को

मल धैवतमध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला को

मलगंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला

गंधारकोमल मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्राम

वाला कोमलनिषाद मंदग्रामवाला कोमलधैवत मं

उ
से॰ र॰
म॰ सा॰
१५२

दयग्रामवाला ॥ इत्यलन ॥ म ग म प ध

नि सा ग सा रे सा नि

ध म प प नि सा नि

ध म ग रे सा ग रे

नि ध म ॥ इत्यलन ॥ इति शुद्धभैरविरागगा

योवर्णनम् ॥ ॥ ॥ द्विती यप्रकारभैरवी दोहा संपूर

णस्वरभैरवी है भैरवकि नारि अंशन्यासग्रहतीनऋष

भग्रादहैसारि ॥ कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला घर

ज मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंद्रग्रामवाला॰

पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला कोमलऋषभ मध्यग्राम॰

वाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम

वाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल म

ध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभ॰

कोमल मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोमल

ऋषभ मध्यग्रामवाला निषादकोमल मंद्रग्रामवाला

षड्ज मध्यग्रामवाला पुनः षड्ज मध्यग्रामवाला ।

उ॰
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१५५

निषादकोमल मंदग्रामवाला कोमलधैवत मंदग्रा

मवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल

मध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला पुनः गं

धार मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला ष

ड्ज मध्यग्रामवाला ॥इतनस्थाई॥ रे सा नि

सा रे ग म ग रे ग

रे स रे नि स स नि

प प ग रे ग ग रे स॰

इत्यस्थाई। पंचममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवा

ला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवा

ला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला षड्ज नारग्रामवाला

विषभकोमल नारग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्राम-

वाला षड्जनारग्रामवाला पुनः षड्जनारग्रामवाला

कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्राम

वाला विषभकोमल नारग्रामवाला षड्जनारग्रामवा

ला विषभकोमलनारग्रामवाला निषादकोमल मध्य

ग्रामवाला षड्जनाद्ग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रा
मवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रा
मवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्राम
वाला पंचममध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला
मध्यममध्यग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला
कोमलरिषभ मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला:

इत्यलं॥ ध ग म प नि स

रे नि स स नि प रे सा

३° स० २० म० सा० १५९

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

रे नी स ध नि प ध

म प ग म ग रे स

इत्यन्त ४॥ त्रतीयप्रकारभैरवेवर्णनम् गंधारकोमल

मध्यग्रामवाला ऋषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्

ज मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला षड्

जमध्यग्रामवाला निषादकोमल मंदरग्रामवाला धै

धैवतकोमल मंदरग्रामवाला निषादकोमल मंदर

ग्रामवाला षड्जमध्यग्रामवाला कोमलधैवत मंदर

सं॰ ३॰
सं॰ २॰
सं॰ स्था॰
१६९

ग्रामवाला पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मंदरग्राम

वाला गंधार मध्यमंदरग्रामवाला पुनःगंधार मंदरग्रा

मवाला मध्यम मंदरग्रामवाला धैवतकोमल मंद

रग्रामवाला कोमलनिषाद मंदरग्रामवाला षड्जम

ध्यग्रामवाला पुनःषड्ज मध्यग्रामवाला निषादको

मल मंदरग्रामवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला

पंचम मंदरग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला को

मलगंधार मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला॰

कोमलगंधार मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रा

मवाला षड्जमध्यग्रामवाला ॥ इतस्याई ॥ ग रे

स रे स नि प नि

स प प म ग ग

म प नि स स नि

प प नि प नि म

ग रे स इतस्याई ॥ कोमलधैवा

न मध्यग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला गंधारको

उ॰
स॰र॰
म॰सा
१५७

147

मल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला निषा

दकोमल मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्राम

वाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला

कोमल मध्यग्रामवाला रिषभकोमल मध्यग्रामवाला

षड्जमध्यग्रामवाला ॥इति॥ षड्ज तारग्रामवाला

निषादकोमल मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्य

ग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला गंधारकोमल म

ध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्य

ग्रामवाला गंधारकोमल मध्यग्रामवाला मध्यम मध्य
ग्रामवाला पंचममध्यग्रामवाला धैवतकोमल म
ध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला ष
ड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमल
धैवत मध्यग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला
षड्ज नारग्रामवाला गंधारकोमल नारग्रामवाला
कोमलरिषभ नारग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रा
मवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्य

ॐ
स॰र॰
म॰सा॰
१५८

148

ग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलगंधार म

ध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदरग्रा

मवाला कोमलधैवत मंदरग्रामवाला कोमलनिषाद

मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोमलऋ

षभ मध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला॰

मध्यम मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला को

मलधैवत मध्यग्रामवाला कोमलनिषाद मध्यग्रा

मवाला धैवतकोमल मध्यग्रामवाला पंचम मध्य

ग्रामवाला मध्यममध्यग्रामवाला कोमलगंधार॰
मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला पंचम मंदर॰
ग्रामवाला निषादकोमल मंदग्रामवाला कोमल
धैवत मंदरग्रामवाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोम
लनिषाद मंदरग्रामवाला कोमलऋषभ मध्यग्राम
वाला षड्ज मध्यग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रा
मवाला कोमलऋषभ मध्यग्रामवाला मध्यम मध्य
ग्रामवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला पंचम म

उ॰
स॰२॰
प्र॰सा
१४५

मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रामवाला कोमलधैवत

मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला कोमलनिषा

द मध्यग्रामवाला कोमलधैवत मध्यग्रामवाला षड्

ज नादग्रामवाला निषादकोमल मध्यग्रामवाला को

मलरिषभ नादग्रामवाला षड्ज नादग्रामवाला

कोमलगंधार नादग्रामवाला कोमलऋषभ नादग्रा

मवाला मध्यम नादग्रामवाला कोमलगंधार नादग्रा

मवाला ऋषभकोमल नादग्रामवाला षड्ज नादग्रा

मवाला कोमलनिषाद मध्यग्रामवाला कोमलधैवत

मध्यग्रामवाला पंचम मध्यग्रामवाला मध्यम मध्यग्रा

मवाला कोमलगंधार मध्यग्रामवाला षड्ज मध्यग्रा

मवाला ॥इयमन्त्रः॥ प ध ग म नि

प ध म ग रे स स नि

प ध म स ध प नि स

ध प नि स स ग रे नि

नि प ग म ध नि प ध

३॰
स॰ रे॰
प्र॰ सा॰
१८॰

म	ग	स	ध	प	नि	स	रे	ग
स	ध	प	नि	प	ध	स	ग	स
प	नि	प	स	नि	रे	स	ग	रे
म	ग	ध	म	प	ध	नि	प	स
नि	रे	स	ग	रे	म	ग	रे	स
नि	प	ध	म	ग	सा	ग	रे	स
रे	स	नि	प	नि	स	॥इत्यन्तरा॥॥		

अथ षड्साय प्रेगीत प्रारम्भः॥ भैरवी रागश्री॥ तीनताल। ३ना३नो विएमंनोत्तीयेतालकथ्यते

चौपई॥ मैंअपनी दिशि कीन्ह निहोरा॥ तिन निज ओर न ला

उब भोरा बायस पालहिं अति अनुरागा होहिं निरामि

ष कबहु कि कागा बंदौं संत असज्जन चरना दुख

प्रद उभय बीच कछु बरना बिछुरत एक प्रान हरि

लेही मिलत एक दुख दारुन देही उपजहिं एक स

ग जल माहीं जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं सु

धा सुरा सम साधु असाधू जनक एक जग जलधि अ

गाध भल अनभल निज निज करतूती लहत सुज

उ॰ स॰ १॰ श्र॰सा ।५।

नि रे म पं म धै रे स

जसअपलोकबिभूती साधुसुधाकरसुरसरिसाधु ग

नि पं रे म पं म धै रे

रलअनलकलिमलसरिब्याधु गुनअवगुनजानतस

०००ै

। भैरवीरागतीनतारबीन॥

स नि पं रे म पं स रे पं गं

बकोई जोजेहिभावनीकतेहिसोई ॥दोहा॥ भलोभलाईपैल

म पं गं म स मं धै रे स नि पं रे म

हैलहैनिचाईनीच सुधासराहीअमरतागरलसराही

०००ै

भैरवरागतीनतार॥

पं स रे पं गं म पं धं म स नि धै नी

मीच ॥५॥ चौ॰॥ खलअघअगुनसाधुगुनगाहा उभयअपार

ग म निरखार गं स म धै रे स नि पं

उदधिअवगाहा तेहितेकछुगुनदोषबषाने संग्रहत्या

रे म पं म धै रे स

गनबिनपहिचाने भलेउपोचसबबिधिउपजाये गि

नि पं रे म पं म धै रे स

निगुनदोषबेदबिलगाये कहहिंबेदइतिहासपुराना॰

नि पं रे म पं म नि धै रे स

विधिप्रपंचगुनअवगुनसाना दुखसुखपापपुण्यदिनराती सा

नि पं रे म पं म नि धै रे स नि

धुअसाधुसुजातिकुजाती दानवदेवऊचअरुनीचू अमिअस

पं रे म पं म धै रे स नि पं

जीवनमाहुरमीचू मायाब्रह्मजीवजगदीसा लछिअलछिरं

रे म पं म धै रे स नि पं

कअवनीसा कासीमगसुरसरिक्रमनासा मरुमालवमहि

रे म पं म धै रे स नि पं रे

देवगवासा सरगनरकअनुरागविरागा निगमअगमगुन

भैरवीताल २

म पं स रे म पं स

दोषविभागा ॥३॥दोहा॥ जडचेतनगुनदोषमयविस्वकीन्हकरतार

भैरवीताल २

धै रे म रे गं स धै स

संतहंसगुनगहहिंपयपरिहरिवारिविकार ॥५॥चौपई॥ असवि

रे पं गं म स नि धै नी ग म गं स

वेकजबदेहिविधाता तबतजिदोषगुनहिंमनराता काल

३·
स· २·
म· सा·
१५२

स्वभावकर्मबरिआई भलेउप्रकृतबशचुकइभलाई सोसुधारि

हरिजनजिमिलेहीं दलिदुखदोषबिमलयशदेहीं खलउक

रभलपायसुसंगू मिटइनमलिनसुभावअभंगू लखिसुबे

षजगबंचकजेऊ बेषप्रतापपूजियततेऊ उघरहिंअंतनहो

यनिबाहू कालनेमिजिमिरावणराहू कियकुबेषसाधुसनमा

नू जिमिजगजामवंतहनुमानू हानिकुसंगसुसंगतिलाहू

लोकहुवेदविदितसबकाहू गगनचढैरजपवनप्रसंगा कीच

हमिलइनीचजलसंगा साधुअसाधुसदनशुकशारी सुमरहि

रामदेहिंगनगारी धूमकुसंगतिकारिखहोई लिखियपुरान

मंजुमसिसोई सोइजलअनलअनिलसंघाता होइजलदजग

भैरवीरागतार ३

जीवनदाता॥५॥दो०॥ग्रहभेषजजलपवनपटपाइकुयोगसुयोग

भैरवीराग॥तार॥३

होइकुवस्तुसुवस्तुजगलषहिसुलछनलोग॥दो० सम प्रकाश त॥

मपाखदुहुनामभेदविधिकीन्ह शशिपोषकशोषकसमुझि

जगजशअपयशदीन्ह॥दो० जड़चेतनजगजीवजतसकलराममम

भैरवीराग॥तार ३॥

यजानि बंदौंसबकेपदकमलसदाजोरिजुगपानि॥दो० देवदनुज॥

भैरवीराग॥तीन॥३॥

नरनागखगप्रेतपितरगंधर्व बंदौंकिंनररजनिचरकृपाकर

रा
स॰ ५॰
म॰ मा॰
१५२

153

००७

हुअवसर्व ॥ ४ ॥ रागमेघ [illegible] ॥ ती॥ नतान॥ चौपई॥ आकरचारलाषचौरासी जा

तजीवनभजलथलवासी सियाराममैसवजगजानी करौं

प्रनामजोरिजुगपानी जानिकृपाकरिकिंकरमोहू सवमि

लकरहिछाडिछलछोहू निजवलवुधिभरोसमोहिनाहीं

तातेविनयकरउसवपाहीं करणचहोरघुपतिगुणगाहा

लघुमतिमोरिचरितअवगाहा सुझनएकौअंगकउपाउ म

नमतिरंकमनोरथराउ मतिअतिनीचऊचिरुचिआछी

चहियअमियजगजुरैनछाछी छमिहहिंसज्जनमोरिढि

॥ ठाई सुनहहिंबालबचनमनलाई जौंबालककहतोत
रिबाता सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता हँसिहहिंकू
रकुटिलकुबिचारी जेपरदूषणभूषणधारी निजकबि
तकेहिलागननीका सरसहोउअथवाअतिफीका जेपर
भणितसुनतहरषाहीं तेबरपुरुषबहुतजगनाहीं ज
गबहुनरसरसरिसमभाई जेनिजबाढ़िबढ़हिंजलपाई
सज्जनसकृतसिंधुसमकोई देखिपूरबिधुबाढ़हिंजोई ॥
८८
दोहा॥ रागभैरवी॥ तीनताला॥ १ भागछोटअभिलाषबड़करउँएक

३
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१५४

154

बिस्वास पैंहहिंसुखसुनिसुजनसबखलकरिहहिंउपहास॥

चौपई॥ भागभेवलपा॥ खलपरिहासहोइहितमोरा काककहहिंकलकंठकठोरा हंसहिंबकदादुरचातकहीं हंसहिंमलिनखलबिमलबतकही कबितरसिकनरामपदनेहू तिन्हकहसुखदहासरसएहू भाषाभनितिमोरिमतिभोरी हंसिबेजोगहंसेनहीखोरी प्रभुपदप्रीतिनसामुझनीकी तिन्हहिंकथासुनिलागहिफीकी हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी तिन्हकहमधुरकथारघुबर

की रामभक्तिभूषितजियजानी सुनिहहिंसुजनसराहिं

सुबानी कविनहोउनहिबचनप्रवीना सकलकलास

बविद्याहीना आखरअर्थअलंकृतनाना छंदप्रबंधअने

कविधाना भावभेदरसभेदअपारा कवितदोषगुणविवि

धप्रकारा कवितविवेकएकनहीमोरे सत्यकहौलिखि

कागदकोरे ॥१२॥ दोहा ॥ राग भैरवी तीनताल ॥ भणितमोरिसबगुण

रहितविश्वविदितगुणएक सोविचारिसुनहहिंसुम

तिजिन्हकेविमलविवेक ॥१३॥ चौपई ॥ राग भैरवी तीनताल ॥ हरिमह

उ॰
म॰ २॰
प्र॰ सा॰
१५५

155

रघुपतिनामउदारा अतिपुराणपावनश्रुतिसारा मंगलभ
वनअमंगलहारी उमासहितजेहिजपत्रिपुरारी भ-
णितविचित्रसुकविकृतजोऊ रामनामविनुसोहनसोऊ
विधुवदनीसबभांतिसवारी सोहनवसनविनावरनारी
सबगुणरहितकुकविकृतवानी रामनामयशअंकित
जानी सादरकहहिंसुनहिंवुधताही मधुकरसरसस
न्तगुणग्राही यदपिकवितगुणएकोनाहीं रामप्रतापप्र
कटइहिमाहीं सोइभरोसमोरेमनआवा कीनसुसंगवड़

पनपावा धूमौ तजै सहज करुआई अगर प्रसंग सुगंध ब

साई भनिति भदेस बस्तु बलि भरणी राम कथा जग मंगल

करणी॥ छंद॥ राग भैर[illegible]वी॥ तीन ताल॥ मंगल करनि कलिमल हर

नि तुलसी कथा रघुनाथ की गति कूर कविता सरित की

ज्यों सरित पावन पाथ की प्रभु सुजस संगति भनिति भलि

होइहिं सुजन मन भावनी भव अंग भूति मसान की सुम

रत सुहावनि पावनी॥ १५॥ दोहा॥ राग भैर[illegible]वी॥ तीन ताल॥ प्रिय ला

गहिं अति सबहि मम भनिति राम यश संग दारु विचार

उ॰
स॰र॰
म॰सा॰
१५९

156

किकरइकोउवंदियमलगप्रसंगा श्यामसुरभिपयविश-
दअतिगुणादकरहिंतेहिपान गिराग्राम्यसियरामय-
शगावहिंसुनहिंसुजान ॥१०॥ चौपई ॥रागभैरवतीनताल॥ मणि-
माणिकमुकताछविजैसी अहिगिरिगजशिरसोहन
तैसी नृपकिरीटतरुणीतनपाई लहहींसकलशोभा
अधिकाई तैसहिंसुकविकवितवुधकहहीं उपजाहिं
अनतअनतछविलहहीं भक्तिहेतुविधिभवनविहाई
सुमरतशारदआवतिधाई रामचरितसरविनुअन्हवाए

सोश्रमजाइनकोटिउपाये कविकोविदअसहृदयविचारी
गावहिंहरिगुणकलिमलहारी कीन्हेंप्राकृतजनगुनगाना
सिरधुनिगिरालगतिपछिताना हृदयसिंधुमतिसीप
समाना स्वातीशारदकहहिंसुजाना जोंबरषैवरवारि
विचारू होहिंकवितमुकुतामणिचारू॥१०॥ रागभैरव॥ तीनताल॥
दोहा॥ युक्तिवेधिपुनिपोहियेरामचरितवरताग॥ पहिरहिंस
ज्जनविमलउरशोभाअतिअनुराग॥११॥ चौपई॥ रागभैरवतीनताल॥
जोजनमेंकलिकालकराला करतबवायसवेषमराला॥

उ
स॰ १॰
प्र॰ मा
१५२

157

चलतकुपंथवेदमगछांडे कपटकलेवरकलिमलभांडे
वंचकभक्तकहाइरामके किंकरकंचनकोहकामके ति
नमहप्रथमरेखजगमोरी धींगधर्मध्वजधंधकधोरी जो
अपनेअवगुनसबकहऊं बाढैकथापारनहींलहऊं ता
तेमैंअतिअलपबखाने थोरेमैंहजानिहहिंसयाने स
मुझिविविधिविधिविनतीमोरी कोउनकथासुनिदेइहि
खोरी एतेहुपरकरिहहिंजेअंसका मोहितेअधिकतेजड
मतिरंका कविनहोउनहिंचतुरकहाऊं मतिअनुरूप

रामगुणगगाउ कहंरघुपतिकेचरितअपारा कहांमतिमोरि

निरतसंसारा जेहिमारुतगिरिमेरुउड़ाहीं कहहुतूलके

हिलेखेमाहीं समुझतअमितरामप्रभुताई करतकथाम

नअतिकदराई ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ रामभिरवतीनतार ॥ सारदसेषमहेसविधि

आगमनिगमपुरान नेतिनेतिकहिजासुगुणकरहिंनि

रंतरगान ॥ ९४ ॥ चौपाई ॥ रामभिर[illegible]वीतीनतार ॥ सबजानतप्रभुप्रभुता

सोई तदपिकहेबिनुरहानकोई तहांवेदअसकारणरा

उ॰
स॰ १॰
ग्रं॰ सं॰
१५८

158

अजसच्चिदानंदपरधामा ब्यापकबिस्वरूपभगवाना जेइध
रिदेहचरितकृतनाना सोकेवलभक्तनहितलागी प
रमकृपालप्रणतअनुरागी जेहिजनपरममताअतिछो
हु जेहिकरुणाकरकीन्हनकोहु गईबहोरगरीबनेवाजु
सरलसबलसाहिबरघुराजु बुधबरनहिंहरियशअस
जानी करहिंपुनीतसुफलनिजबानी तेहिबलमैं
रघुपतिगुणगाथा कहिहौंनाइरामपदमाथा मुनिन्हि
प्रथमहरिकीरतिगाई तेहिमगचलतसुगममोहिभाई

॥२१॥दोहा॥रागभैरु[illegible]॥बीतीनतार॥ अतिअपारजेसरितबरजोंनृपसेतु

कराहिं चढिपपीलिकापरमलघुबिनुश्रमपारहिंजाहिं २२

चौपई॥रागभैरु[illegible]बीतीनतार॥ एहिप्रकारबलमनहिंदेखाई करि

हौंरघुपतिकथासुहाई ब्यासआदिकबिपुंगवनाना जि

न्हसादरहरिचरितबखाना चरणकमलबंदौंतिनकेरे पु

रवहुसकलमनोरथमेरे कलिकेकबिनकरौंपरनामा

जिनबरणेरघुपतिगुणग्रामा जेप्रकृतिकबिपरमसया

ने भाषाजिन्हहरिचरितबखाने भयेजेअहहिंजेहोइहैंआ

उ॰
सं॰ १
ग्र॰ सा॰
१५४

152

गे प्रणउं सबहिं कपट छल त्यागे होउ प्रसन्न देहुं बरदानू

साधु समाज भणित सनमानू जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं

सो श्रम बादि बालक बि करहीं कीरत भणित भूत भलि सोई

सुरसरि सम सब कहं हित होई राम सुकीरति भणित भदे

सा असमंजस अस मोहि अंदेसा तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ

मोरे सिअनि सुहावनि टाट पटोरे करहु अनुग्रह अस

जिय जानी बिमल जसहि अनुहरइ सुबानी ॥१४॥ दोहा ॥

[illegible] ॥ सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं

सुजान सहजबयरबिसरायरिपुजोसुनिकरहिंबषान

सोनहोइबिनुबिमलमतिमोहिमतिबलअतिथोरि

करहुकृपाहरिजसकहौंपुनिपुनिकरउंनिहोरि क

बिकोबिदरघुबरचरितमानसमंजुमराल बालबिन

यसुनिसुरुचिलखिमोपरहोहुकृपाल ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ रागम

भैरवीतीनताल ॥ बंदौंमुनिपदकंज रामायणजिमनिरमैउ स

खरसकोमलमंजु दोषरहितदूषणसहित बंदौंचारौं

बेद भवबारिधिबोहितसरस जिनहिंनसपनेहुंखेद

उ·
स· र·
प्र· सा·
१९·

बरनत रघुपति बिसद यश बंदौं बिधि पद रेनु भवसागर
जिन कीन्ह यह संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल बिष बा
रुणी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ रागभैर[illegible]बी ॥ तीनतारा ॥ बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरण
बंदि कहौं कर जोर होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ
मोर २९ चौपई ॥ रागभैर[illegible]बी ॥ तीनताल ॥ पुनि बंदौं शारद सुरसरिता
युगल पुनीत मनोहर चरिता मज्जन पान पाप हर एका·
कहत सुनत एक हर अबिबेका गुरु पितु मातु महेश भवा
नी प्रणऊं दीनबंधु दिन दानी सेवक स्वामि सखा सिय

160

पीके हित निरुपधि सब बिधि तुलसीके कलि बिलोकि

जगहित हरि गिरिजा साबर मंत्र जाल जिन सिरजा ।

अनमिल आखर अरथ न जापू प्रगट प्रभाव महेश प्रता

पू सो महेश मोपर अनुकूला करौं कथा मुद मंगल मूला

सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ बरणौं राम चरित चित चाऊ

भणित मोरि शिव कृपा विभाती शशि समाज मिलि मन

हु सुराती जे यह कथा सनेह समेता कहिहैं सुनिहैं समु ।

झि सचेता होहिहैं राम चरण अनुरागी ।

कलिमल रहित सुमंगल भाती ॥१४॥ रागभैरव ताल तीनताल ॥ दोहा ॥

सपनेहुं सांचहु मोहि पर जो हर गौरि पसाउ ॥ तो फुर होउ

जो कहउ सब भाषा भनित प्रभाउ ॥१५॥ चौपई ॥ रागभैरव ताल तीन

ताल ॥ वंदौ अवधपुरी अति पावनि सरजू सरि कलि कलु

ष नसावनि प्रणउं पुरनर नारि बहोरी ममता जिन पर प्र

भुहि न थोरी सिय निंदक अघ ओघ नसाये लोक विसो

क बनाइ बसाये वंदौ कौशिल्या दिशि प्राची कीरत जासु

सकल जग मांची प्रगटेउ जहं रघुपति शशि चारु विस्व

सुखद सुवलकमलनघाडू दशरथराउ सहित सब रानी सु
कृत सुमंगल मूरति खानी करौं प्रणाम करम मन बानी।
करहु कृपा सुत सेवक जानी जिनहि बिरचि बड भयउ बि
धाता महिमा अवधि राम पितु माता ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ राग भैरवी ॥
तीन ताल ॥ बंदौं अवध भुआल सत्य प्रेम जेहिं राम पद बिछुरत
दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥ २३ ॥ चौपई ॥ राग भैरवी ॥
तीन ताल ॥ प्रणवौं परिजन सहित बिदेहू जाहि राम पद गूढ़ स
नेहू योग भोग महँ राखेउ गोई राम बिलोकत प्रगटेउ सोई

उ०
स० २०
म० मा०
१६२

162

प्रणवौंप्रथमभरतकेचरणा जासुनेमव्रतजाइनवरणा
रामचरणपंकजमनजासू लुब्धमधुपइवतजैनपासू वं
दौंलक्ष्मणपदजलजाता सीतलसुभगभक्तसुखदाता
रघुपतिकीरतिविमलपताका दंडसमानभयोयशजाका
शेषसहस्रसीसजगकारण जोअवतरेउभूमिभयटारन
सदासोसानुकूलरहमोपर कृपासिंधुसौमित्रिगुणाकर
रिपुसूदनपदकमलनमामी सूरसुशीलभरतअनुगामी
महावीरविनवौंहनुमाना रामजासुयशआपुवखाना

॥ २१ ॥ सोरठा ॥ पागमे र[illegible] वीतीनताय ॥ बंदौंपवनकुमारखलवनपावकज्ञा

नघ जासुहृदयआगार बसहिंरामसरचापधर ॥ २२ ॥

रागमे र[illegible] वीतीनताय ॥ कपिपतिरिछनिशाचरराजा अंगदादि-

जेकीससमाजा बंदौंसबकेचरणसुहाये अधमशरीरराम

जिनपाये रघुपतिचरणउपासकजेते खगमृगसुरन-

रअसुरसमेते बंदौंपदसरोजसबकेरे जेबिनुकामराम

केचेरे शुकसनकादिआदिमुनिनारद जेमुनिवरविज्ञा-

नविशारद प्रणउँसबहीधरणिधरसीसा करहुकृपा-

३
रा॰२
प्र॰सा
१९३

103

जनजानिधनीसा जनकसुताजगजननिजानकी अति

शयप्रियकरुणानिधानकी ताकेजुगपदकमलमना

उं जासुकृपानिर्मलमतिपाउं पुनिमनबचनकरमर॰

घुनायक चरणकमलबंदौंसबलायक राजिवनयनधरे

धनुसायक भक्तिबिपतिभंजनसुखदायक ४४ दोहा॰

राग भैरव धी ती न ता र॥ गिराअरथजलबीचिसमक

हियतभिन्ननभिन्न बंदौंसीतारामपदजिनहिंपरमपदा॰

भिन्न ४५ चौपई राग भैरव धी ती न ता र॥

वंदौराम

नामरघुवरके हेतुकृशानुभानुहिमकरके विधिहरि

हरमयवेदप्राणसो अगुणअनूपमगुणनिधानसो महा

मंत्रजोजपतमहेश् काशीमुकतिहेतुउपदेश् महिमाजा

सुजानतगणराउ प्रथमपूजियतनामप्रभाउ जानआदि

कविनामप्रताप् भयउशुद्धकरिउलटाजाप् सहस्रनाम

समसुनिशिववानी जपिजेईपिवसंगभवानी नाम

प्रभाउजानशिवनीके कियभूषनतियभूषनतीको

नामप्रभाउजानशिवनीके कालकूटफलदीन्हअमीके

३॰
स॰१॰
मं॰सा॰
१९४

164

१९ दोहा वरषारितुरघुपतिभगतितुलसीसालिसुदास

रामनामबरबरनजुगश्रावणभादौंमास २० चौपई ॥ राम

मे ॥ म्रा र वी ती न ता र ॥ आखरमधुरमनोहरदोऊ वरणविलो

चनजननजियजोऊ सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू लो

कलाहुपरलोकनिवाहू कहतसुनतसुमिरतसुठिनीके

रामलषनसमप्रियतुलसीके वरणनवरणप्रीतिविल

गाती ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती नरनारायणसरिसप्रीति

विलगाती ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती, सरिससुभ्राता

नगपालकविशेषजनत्राता भक्तिहीनियकलकरणवि

भूषण नगाहिनहेनविमलविधुभूषण स्वादतोषमम

नगनिस्वपाके कमठशेषसमथरवसुधाके ॐनमनमंत्र

कंजमधुकरसे जोहजसोमतिहरिहलधरसे १० दोहा

रागभैरवीतीन ताल १ ॥ एकब्रह्मएकमुकटमणिसब

बरणनपरजोउ तुलसीरघुबरनामकेबरणविराजतदोउ

१८ चौपई ॥ रागभैरवी तीन ताल १ ॥ समझतसरसमना

मसुरूफनामी प्रीतिपरसपरप्रभुअनुगामी नामरूपदोउ

उ
स॰ रे॰
म॰ सा॰
१६५

165

ईश उपाधी अकथ अनादि सुसामुझि साधी को बड़ छोट

कहत अपराधू सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू देखिअहिं रूप

नाम आधीना रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना रूप बिशेष ना

म बिनु जाने करतल गत न परहिं पहिचाने सुमिरिय

नाम रूप बिनु देखे आवत हृदय सनेह बिशेषे नाम रूप

गति अकथ कहानी समुझत सुखद न परति बखानी अ

गुन सगुन बिच नाम सुसाखी उभय प्रबोधक चतुर दुभा

षी ॥ २१ ॥ दोहा ॥ [illegible] ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह

भेर

देहरिद्वार तुलसी भींतरबाहिरेंजोचाहसिउजारि ष॰

चौपई॥ रागभैरू माधवीतीनतार॥ नामजीहजपिजागहिंयोगी वि-

रतिविरंचिप्रपंचवियोगी ब्रह्मसुखहिअनुभवहिंअ-

नूपा अकथअनामयनामनरूपा जानाचहहिंगूढग-

तिजेऊ नामजीहजपिजानहिंतेऊ साधकनामजप-

हिंलयलाये होहिंसिद्धिअणिमादिकपाये जपहिंना-

मजनआरतभारी मिटहिंकुसंकटहोहिंसुखारी रा-

मभक्तिजगचारिप्रकारा सुकृतीचारिउअनघउदारा

उ॰
स॰ १॰
अ॰ सा॰
१८८

166

चहुंचतुरनकहुंनामअधारा ज्ञानीप्रभुहिविशेषपियारा

चहुंजुगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ॥ कलिविशेषनहिंआन॰

उपाऊ॥ ४१॥ दोहा॥ रामभक्[illegible] तीननाद॥ सकलकामनाहीन॰

जेरामभक्तिरसलीन नामसुप्रेमपियूषह्रदतिनहुंकि

येमननमीन॥ ४२॥ चौपाई॥ रामभ[illegible]वीतीननाद॥ अगुणसगुणदोउ

ब्रह्मसरूपा अकथअगाधअनादिअनूपा मोरेमतबड़

नामदुहूतें कियेजेहिजुगनिजवसनिजबूतें प्रौढ़सु

जनजनजानहिंजनकी कहउंप्रतीतिप्रीतिरुचिमन

की एकदारुगतदेखिअएकू पावकजुगसमब्रह्मबिबेकू

उभयअगमजुगसुगमनामतें कहेउंनामबडब्रह्मराम

ते ब्यापकब्रह्मएकअबिनासी सतचेतनघनआनंदरा

सी असप्रभुहृदयअछतअबिकारी सकलजीवजग

दीनदुखारी नामनिरूपणनामजतनतें सोउप्रगटत

जिमिमोलरतनतें ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ रागभैरवी ॥ तीनताल ॥ निर्गुणतें

एहिभांतिबडिनामप्रभावअपार कहेउंनामबडराम

तें निजबिचारअनुसार ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ रागभैरवी ॥ तीनताल ॥

उ॰
स॰ २॰
प्र॰ सा॰
१९२

167

रामभक्तहितनरतनुधारी सहिसंकटकियसाधुसुखा
री नामसप्रेमजपतअनयासा भक्तहोंहिंमुदमंगल
वासा रामएकतापसतियतारी नामकोटिखलकुम
तिसुधारी ऋषिहितरामसुकेतुसुताकी सहितसे
नसुतकीन्हबिबाकी सहितदोषदुषदासदुरासा द
लइनामजिमिरबिनिशिनासा भंजेउरामआपभवचा
पू भवभयभंजननामप्रतापू दंडकबनप्रभुकीन्हसु॰
हावन जनमनअमितनामकियपावन निसिचरनिकर

दलेरघुनंदन ॥ नामसकलकलिकलखनिकंदन ४७

दोहा ॥ राग भैरव [illegible] वीतीनताल ॥ शवरीगीधसुसेवकनिसुगतिदीन्ह

रघुनाथ नामउधारेअमितखलवेदविदितगुणगाथ:

४८ ॥ चौपई ॥ राग भैरव [illegible] वीतीनताल ॥ रामसुकंठविभीषणदोउ राखे

शरणागतसबकोउ नामअनेकगरीबनिवाजे लोक

वेदवरविरदविराजे रामभालुकपिकटकबटोरा सेतु

हेतुश्रमकीन्हनथोरा नामलेतभवसिंधुसुखाहीं क

रहुविचारसुजनमनमाहीं रामसकुलरणरावणमारा

उ॰
स॰ २॰
म॰ सा॰
१६८

168

सियसहितनिजपुरपगुधारा राजारामअवधरजधानी गाव

तगुनसुरमुनिवरवानी सेवकसुमिरतनामसप्रीते वि

नुश्रमप्रवलमोहदलजीते फिरतसनेहमगनसुखअप-

ने नामप्रसादसोचनहींसपने ४१ दो॰ रागमेश्रुमाय

वीतीनिताव ब्रह्मनामतेरामवडवरदायकवरदानि रा

मचरितसतकोटिमहंलियमहेसजियजानि ४८

चौपई रागमेश्रुमायवीतीनिताव नामप्रसादसंभुअवि-

नासी साजअमंगलमंगलरासी सुकसनकादिसिद्धम

वियोगी नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी नारद जानेउ नाम प्र

ताप जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आप नाम जपत प्रभु की

न्ह प्रसाद भगति सिरोमनि भय प्रहलाद ध्रुव सगलानि

जपेउ हरि नाम पायेउ अचल अनूपम ठाम सुमिरि प

वन सुत पावन नाम अपने वस करि राखेउ राम अप

त अजामिल गज गनिकाउ भये मुक्त हरि नाम प्र-

भाउ कहउं कहां लगि नाम वडाई राम न सकहिं

राम गुण गाई ४५ चौपाई दो॰ रामनाम की कलपतरु॰

उ·
स·२·
प्र·सा·
९५

167

कलिकल्याणनिवास जोसुमिरतभयभागतेंतुलसीतु

०००६
लसीदास ५· चौपई रागभैर[illegible]थवीतीनताल च

हुँजुगतीनिकालतिहुँलोका भयेनामजपिजीवविशो

का वेदपुराणसंतमतएहू सकलसुकृतफलनामस·

नेहू ध्यानप्रथमजुगमखविधिदूजे द्वापरपरितोषत

प्रभुपूजे कलिकेवलमलमूलमलीना पापपयोनि

धिजनमनमीना नामकामतरुकालकराला सुमिरत

शमनसकलजगजाला रामनामकलिअभिमतदाता

हितपरलोकलोकपितुमाता नहिंकलिकर्मनभ
क्तिविवेकू रामनामअवलंबनएकू कालिनेमिकलि
कपटनिधानू नामसुमतिसमरथहनुमानू ॥५॥ दोहा ॥
रागभैरवीतीनताल॥ रामनामनरकेसरीकनककसिपुकलिका
ल जापकजनप्रहलादजेमिपालहिंदलिसुरसाल ॥५॥
चौपई॥ रागभैरवीतीनताल॥ भायकुभायअनखआलसहू नामजप
तमंगलदिसिदशहू सुमिरिसोनामरामगुणगाथा
करोंनाइरघुनाथहिमाथा मोरिसुधारहिंसोसबभांती

उ°
स° १°
अ° स्मा
१०°

जासुकृपानहिंकृपांअघाती रामसुस्वामिकुसेवकमोसे

निजदिसिदेखिदयानिधिपोसे लोकहुंवेदसुसाहिवरीती

विनयसुनतपहिचानतप्रीती गनीगरीवग्रामनरनागर

पंडितमूढ़मलीनउजागर सुकविकुकविनिजमतिअनु

हारी नृपहिंसराहतसवनरनारी साधुसुजानसुसील

नृपाला ईसअंसभवपरमकृपाला सुनिसनमानहिं

सवहिसुवानी भनितभगतिनतिगतिपहिचानी यहप्रा

कृतमहिपालसुभाऊ जानसिरोमनिकोसलराऊ ॥

रीझतरामसनेहनिसोते कोजगमंदमलिनमतिमोते॥

५२॥दोहा॥रागभैरवीतीनताल॥सठसेवककीप्रीतिरुचिरखिहहिं

रामकृपाल उपलकियेजलजानजेहिंसचिवसुमति

कपिभालु हौंहुंकहावतसबुकहतरामसहतउपहास

साहेबसीतानाथसेसेवकतुलसीदास॥५३॥चौपई॥रागभैरवी॥

तीनताल॥अतिबडिमोरिढिठाइखोरी सुनिअघनरकहुनाक॥

सकोरी समुझिसहममोहिअपडरअपने सोसुधिराम

कीन्हनाहिंसपने सुनिअवलोकिसुचितचखचाही॥

उ॰
स॰ १॰
ग्र॰ मा॰
१७१

भाकिमोविमनिसामिसराही कहततनमारहोइअनिनी॥
की रोकतनमज्ञानजनजीकी रहतनमभुचितहूककि
येकी करतकततमैवारहियेकी जेहिअघवधेउव्याधजि
मिवाली फिरीसुकंठसोइकीन्हकुचाली सोइकरततुति
विभीषणकेरी सपनेहुसोनरामहियहेरी तेभरतहिंभे
टतसनमाने राजसभारघुवीरवखाने॥ ५४॥दोहा॥ रागभैरवीतीन १००६
ताल॥ प्रभुतरुतरकपिडारपरतेकियेआपुसमान तुलसी
कहुनरामसेसाहेवशीलनिधान॥ ५५॥दोहा॥ रागभैरवी॥ तीनताल॥ १००७

५९ ॥ दोहा ॥ राग भैरवी तीनताल ॥ राम निकाई रावरी है सबही कों नीक
जो यह सांची है सदा तो नीको तुलसीक ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ राग भैरवी
राग तीनताल ॥ याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई भारद्वाज मुनिवरहि
सुनाई कहियो सोई संबाद बखानी सुनहु सकल सज्ज
न सुख मानी शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा बहुरि कृपा
करि उमहि सुनावा सो शिव काकभुशुंडहि दीना राम
भक्ति अधिकारी चीन्हा तेहि सव याज्ञवल्क्य मुनि पा-
वा तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ते श्रोता बकता सम-

ठ
स॰ १
ग्र॰ मा
१०२

१५२

सीला समदर्सीजानहिहरिलीला जानहितीनिका

लनिजग्याना करतलगतआमलकिसमाना औरौजे

हरिभगतसुजाना कहहिंसुनहिंसमुझहिंविधिनाना

॥५०॥ दोहा॥ रागभैरवीतीनताल॥ ००० मैंपुनिनिजगुरुसनसुनीकथासोसू

करखेत समुझनहींतसिबालपनतबअतिरहेउँअचेत श्रो

ताबकताग्याननिधिकथारामकीगूढ किमिसमुझौं

मैंजीवजडकलिमलग्रसितविमूढ ॥५१॥ चौपई॥ रागभैरवी॥

००० तीनताल॥ तदपिकहीगुरुबारहिंबारा समुझपरीकछुमति

अनुसासा भाषाबंधकरतमैंसोई मोरेमनप्रबोधजेहिहो
ई जसकछुबुधिबिवेकबलमोरे तसकहिहौंहियहरि
केप्रेरे निजसंदेहमोहभ्रमहरणी करौंकथाभवसरिता
तरणी बुधविश्रामसकलजनरंजनि रामकथाकलि-
कलुषविभंजनि रामकथाकलिपन्नगभरणी पुनिवि
वेकपावककहुअरणी रामकथाकलिकामदगाई सु
जनसजीवनमूरिसुहाई सोइबसुधातलसुधातरंगिनि
भवभंजनिभ्रमभेकभुअंगिनि असुरसेनसमनरकनि

३॰
स॰१॰
म॰मा॰
१७२

173

कंदनि साधुविबुधकुलहितगिरिनंदनि संतसमाजपयो
धिरमासी विस्वभारभरअचलछमासी जमगनमुहमसि
जगजमुनासी जीवनमुकुतिहेतुजनुकासी रामहिप्रिय
पावनतुलसीसी तुलसीदासहितहियहुलसीसी॰
शिवप्रियमेकलशैलसुतासी सकलसिद्धिसुखसंपति
रासी सदगुनसुरगनअंबअदितिसी रघुबरभगतिप्रेम
परमितिसी ॥३१॥ दोहा ॥ रामभ्रवीतीनतारा ॥ रामकथामंदाकिनीचित्र
कूटचितचारु तुलसीसुभगसनेहबनसियरघुबीरबिहारु ॥३१॥

००७

चौपई॥ रामभैरवीतीनताल॥ रामचरितचिंतामणिचारू संतसुमतितिय

सुभगसिंगारू जगमंगलगुणग्रामरामके दानमुक्ति

धनधर्मधामके सद्गुरुज्ञानविरागयोगके विबुधवैदभ

वभीमरोगके जननिजनकसियरामप्रेमके बीजसक

लव्रतधर्मनेमके शमनपापसंतापशोकके प्रियपालक

परलोकलोकके॥ सचिवसुभटभूपतिविचारके॥ कुंभजलोभउदधिअपारके॥ कामको

हकलिमलकरगणके केहरिशावकजनमनवनके अ

तिथिपूज्यप्रीतमपुरारिके कामदघनदारिददवारिके॥

उ॰
स॰१॰
म॰मा॰
१७४

मंत्रमहामणिविषयव्यालके मेटतकठिनकुअंकभालके

हरणमोहतमदिनकरकरसे सेवकशालिपालजलधरसे

अभिमतदानिदेवतरुवरसे सेवतसुलभसुखदहरिहरसे

सुकविशरदनभमनउडुगणसे रामभक्तिजनजीवनधनसे

सकलसुकृतफलभूरिभोगसे जगहितनिरुपधिसाधुलो

गसे सेवकमनमानसमरालसे पावनगंगतरंगमालसे

१२ ॥ दोहा॥ रागभैरवीतीनताल॥ कुपथकुतर्ककुचालिकलिकपटदं

भपाखंड दहनरामगुणग्रामइमि ईंधनअनलप्रचंड १२

174

दोहा॥ ता॥ भैरवी तीनताल॥ रामचरितराकेशकरसरिससुखदसब

काहु॥ सज्जनकुमुदचकोरचित हितविशेषबडलाहु॥ १५

चौ॥ ता॥ भैरवीतीनताल॥ कीन्हप्रश्नजेहिभांतिभवानी

जेहिविधिशंकरकहावखानी॥ सोसबहेतुकहबमैंगाई

कथाप्रबंधविचित्रबनाई॥ जिनयहकथासुनीनहिंहोई॥

जनिआश्चर्यकरैहिअसजानी॥ रामकथाकीमितिजगना

ही॥ असप्रतीतितिनकीमनमाहीं॥ नानाभांतिरामअवता

रा॥ सौरामायणशतकोटिअपारा॥ कल्पभेदहरिचरितसुहाये

३
स·१·
म·सा
१७५

भांतिअनेकमनीशनगाये करिअनसंशयअसउरआनी सु

निअकथासादररतिमानी ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ रागभैरवीतीनताल ॥ रामअनंत

अनंतगुण अमितकथाविस्तार सुनिआश्चर्यनमानिहहि

जिनकेबिमलविचार ॥ ९६ ॥ चौपई ॥ रागभैरवीतीनताल ॥ एहिविधिसबसं

शयकरिदूरी सिरधरिगुरुपदपंकजधूरी पुनिसबहीबि-

नवौंकरजोरी करतकथाजेहिलागनखोरी सा

दरशिवहिनाइअबमाथा बरणौंविशदरामगुणगाथा ॥

संवतसोरहसैएकतीसा करौंकथाहरिपदधरिसीसा ॥

नौमीभौमवारमधुमासा अवधपुरीयहचरितप्रकासा॰
जेहिंदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं तीरथसकलतहांचलि
आवहिं असुरनागखगनरमुनिदेवा आयकरहिंरघु॰
नायकसेवा जन्ममहोत्सवरचहिंसुजाना करहिंरामक
लिकीरतिगाना ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ रागभैरवी तीनताल ॥ मजहिंसजनबृंदब
हु पावनसरजूनीर जपहिध्यानधरिरामउर सुन्दरश्याम
सरीर ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ रागभैरवी तीनताल ॥ दरसपरसमज्जनअरुपाना
हरैंपापकहैंवेदपुराना नदीपुनीतअमितमहिमाअति

रा॰ स॰ १॰ मं॰ ला॰ १७८

कहियनसकैंसारदाविमलमति रामधामदापुरीसुहाव
नि लोकसमस्तविदितअतिपावनि चारिखानिजगजीव
अपारा अवधतजेतनुनहींसंसारा सबविधपुरीमनोहर·
जानी सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी विमलकथाकरकी
न्हअरंभा सुनतनसाहिकाममददंभा रामचरितमान
सयहनामा सुनतश्रवणपाइयविश्रामा मनकरिविष
यअनलवनजरई होइसुखीजोइहिसरपरई रामचरि·
तमानसमुनिभावन कलिकुचालिकलिकलुषनसावन·

त्रिविधिदोषदुख [illegible] रिदावन कलिकुचालिकल

षनसावन रचिमहेशनिजमानसराखा पाइसुसमय

शिवासनभाखा तातेरामचरितमानसवर धरिउनाम

हियहेरिहरषिहर कहौकथासोइसुखदसुहाई साद

रसुनहिसुजनमनलाई ॥३५॥ दोहा॥ रागभैरवीतीनताल॥ जसमा

नसजेहिविधिभयोजगप्रचारजेहिहेतु अवसोइकहौं

प्रसंगसवसुमिरिउमावृषकेतु ३० ॥ ॥ चौपई॥ रागभैरवीतीन

ताल॥ संभुप्रसादसुमतिहियहुलसी रामचरितमानसक-

रा°
स·१·
प्र·सा
१०२

बिलसी करौंमनोहरमतिअनुहारी सुजनसुचितसु

नलेहुसुधारी सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू वेदपुराण

उदधिघनसाधू वरषहिंरामसुयशवरवारी मधुरमनोह

रमंगलकारी लीलासगुणजोकहहिंवषानी सोइस्वच्छ

ताकरेमलहानी प्रेमभक्तिजोवरणिनजाई· सोइमधु

रताशीतलताई सोजलसुकृतशालिहितहोई रामभ

क्तजनजीवनसोई मेधामहिगतसोजलपावन सिमि

टिश्रवणमगचलेसुहावन भरिसमानससुथिलथि

गना साखिदसीतकहिबिराना ॥ ११ ॥ दोहा ॥ राग भैरवी तीन ताल ॥ सुठि

सुन्दरसंबादबरबिरचेउबुद्धिबिचार तेइएहिपावनसु

भगसरघाटमनोहरचार ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ राग भैरवी तीन ताल ॥ सप्तप्रबं

धसुभगसोपाना ग्याननयननिरखतमनमाना रघु

पतिचरितउमासिवजेते मोरसकृतीसबमनगहितेते

रघुपतिमहिमाअगुनअबाधा बरनबसोइबरबारिअगा

गाधा रामसीययशसलिलसुधासम उपमाबीचबि

लासमनोरम पुरइनिसघनचारुचौपाई जुगुतिमंजुम

३॰
स॰१॰
प्र॰सा
१२८

णिसीपसुहाई छंदसोरठासुन्दरदोहा सोइबहुरंगकम

लकुलसोहा अरथअनूपसुभावसुभासा सोइपरागमक

रंदसुबासा सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला ग्यानबिरागबि

चारमराला धुनिअवरेबकबितगुणजाती मीनमनोह

रतेबहुभांती अर्थधर्मकामादिकचारी कहबग्यानबि

ग्यानबिचारी नवरसजपतपयोगबिरागा तेसबजलच

रचारुतडागा सुकृतीसाधुनामगुणगाना तेबिचित्रजल

बिहंगसमाना संतसभाचहुंदिसिअवंराई स्रद्धारितुब

नृ

संतसमगाइ भक्तिनिरूपणविविधविधाना दामोदयाद्

मलताविताना संयमनियमफूलफलताना हरिपदर

तिरसवेदववोना श्रीरंकथाअनेकप्रसंगा नेरस्त्रकवि

कवहुववणविहंगा ॥ ॥ इतिरामायणगीता ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथभैरवीरागचारताल ॥ गावोगुणीआजवधावा ऽऽऽ गावोगुणी

आसम राजादशरथकेसुतजोभयोहै सुनजगमुखदेआ

वा ऽऽऽ गावोगुणीआवं सुमनवृंदनुरभवनतेहूआ

येनाविनमंगलगावा ऽऽऽ देतअसीसवरुभागतिहारे

३
स॰रे॰
म॰सा॰
१२५

आधीनदेवनअ्रवपक्षमनवरसाबा ऽऽ गावोगुणीआः

5001

भैरवीरागणी॥चारताल॥४॥ नोहूपुनोभवानीवाकवानीतंदातीज

गतजन्नीयानीनोह तेंहूलोगमेयशानोतिहारक्षेपर

होहेभगवतीसाहिवानी नववंरुबसंउकेशवासीदा

सहैंतेरेपावेंफलनकोरिक्षामनकीमानी आधीनदावेआ

योहेतिहारेकरोकृपाउखहरोमेरातंसाहिववरदाणी

5001

भैरवरागणीचारताल॥ सगामपमपपमगरेससनीपनीपनीरे

ससरेगमपपपमगामगरेस सनीपनीसरेगमपपपपः

पधनीनीसममगमपधनीसरेगमपधनीस ॥ ओगावेसर

गमरागगाधुहउपनेआधीनविश्रामपाधेरेगमगरेस ॥

5001

रागभैरवी चारताल ॥ ननननननननानारेननननदरेदरनादरनदानी

ननोननननरेनदानीदानीनदरेदीमननदरेनदानीदीमन

नन ॥ चषमनेरीदेलकेवोजमानायादहूवा जवनमहम

पकजायेहंसीसेवालनेथमननदानमनयादीमननारेजन

5001

नननरेदीमननः नननननानननन ॥ भैरवीरागएनिताल बोल ॥ मा

ईमोसंमोहननिनङ्गवाइकरेपालोभरनकैसेजाऊं भजनः

३॰
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१८॰

180

हीमानेनहीमदारंगयाने आधीनहोनिसदिनलकाछिप

वरआंउं ॥भिरवीरमहोचायताल॥ अथस्तरूपागरः॥भिरवीरागणीतीनताल॥ ॥अप

नेभगतकेहूभगवान कोटिलालचजोदिषावोनाहिनेरूवआ

न जतनज्वालागिरनगिरनैंमकरकाटनसीम देषिसाहमम

उवमानतनएषसेषनईस कामनाकरिकोपिकोनोकरतक

पहचान सिंहिसावकजानग्रहितजिंइरअपिकउरान॰

नादिनातेननमपयायोपहेमेरीरीत विषयविषहरविषा

ननाहीटरतकरतअनैकन षकेकिंकरनृषनमकेटषोट

रतनमेक नरककूपनिजारजमगुरपरौवारअनेक महा-
मायलमारवेकोमलकूचनाहींमोहि परौहोंमनलिपेहावे
लाजमनकीतोर नाहिनेंकावोकूपानिपिकरोकहाविस
र सूरतबढूनहारछ्याडिराविहोकिछ्याराः।।१।।भैरवीरागतीन
ताल।। जनकेउपजततुषकिनकाटत जैसेमगमगसमाछके
छूतनिषितहलनिरषउपाटत जैसेमीनकिलकिला
दरसनतअसेरहोमनसरटत पुनिपाछेअघसिंधुवढत है
सूरषागकिनपाटत।।२।।भैरवीरागतीनताल।। कीजेमप्रभुअपने-

३
स॰ दे॰
म॰ स्ना
१८१

विरदकीलाय महापतितकवहूंनहीग्रायोनेकुतमोवे

वाज मायासवलथामथनवननावाथ्योह्नोरसिंह्राज देषत

स्ननलसैवेनाननह्नोंनकुतग्रायोवाज कह्निपनपतितवडु

ननुमनारेश्रवननिस्नेश्रवाज दईननानषाचउनएईवाह्रन

षल्कनजह्राज लीजैपारउनारव्हवरवौमहारानव्रजएज॰

नईनकारनकह्निनमभुनमसौमहागरीवनिवाज ॥२॥ भैरवी

रागणी तीनताल॥ महाप्रभुनमेहूविरदकीलाय कृपानिधानदी

नदासोदरमहासवारनका नवगजग्राहचरमगाह्निएथ्यौ

नवहीनाथघुकायो नजिकैगरुउठ्याति उग्रतिग्रातउप

करचक्रकरमायो निमनिमहीं विघलियेमहंमवलउर

वासापवपायो नातकालतवपगटभपहरिराजानीवग्वा

✱ यो हरिनाउमप्रहलादभककोंवहूतमामनमायो

रहिनमकेनरसिंघरूपधरिगाहिकेप्रहरपछ्या

यों उःखामनमाहिकेमहाणपदीनगनकवनकोंलायें स

भितहीनतकालकृपानिधिवसनप्रवाहवदाय मागर

पतिवहूजीनमहीपतिकछुनियमेगारवाये जीसोंजग

उ॰
स॰ १॰
ग्र॰ सा
१८२

18

संपति विभ्रमा सौवकलरि म्रूपळुराय महिमा अति अगाधक

रुणामय भक्त हेत नहित कारी सरदास पर कृपा करो अवर

रमन देह मुरारी ४ भैरवी राग गणेती नं तार॰ ॥ सरन आवे

कीला जनी यथ रीये सखोन हीं थरम म्हवपोल पति हूतक

कुकहा सबले तुमे विनती करीये कछुवा हो कहो मोच

मन मैं रहों करम कछु नेजानत आस आवे यहै तिन मार आया

मैर यहै पतित पावन विरद वेद गावै जनम तै पकठ कला

गआ सार ही विषय विषपात न ही त्रिपत मानी जोंपं किया

क्षुद्रकरसकलसंतननतजीतासमतिमूढरसपीनदानी

पापमारगजिनितेवकीनेनितेवच्यौनहीकोठजहामम

नमेरी ॥ सबग्रौगुनभरयौंग्राइद्वारेपरयौंताकीगोपालग्रबस

रनतेरी ॥ ५ ॥ भैरवीरागएतीतौंतताल ॥ प्रभुमेरेगुनग्रौगुननविचारो

कीजैलाजसरनग्रायेकीरविसुतत्रासनिवारो ॥ जोगजग्य

जपतपनहीसाधनोवेदविमलनहिंभाख्यौं ॥ ग्रतिरसलु

ब्धस्वानजूठनज्यौंग्रनतनहींचितराख्यौ ॥ जिहिंजिहिंजोनिफि

रयौंसंकटवसतिहिंतिहिंयहैकमायो ॥ कामक्रोधमदलो

भग्रमतनमैविषयपरमनविषयाथो जोगिविपतिमसवोसरद

पिमेलैमहरतरुनिजहाथ ममकृतदोषलिषोवस्रुपाभति

तउनहीमितनाथ कामीकुटिलकुचीलकुदरसनअपरा

धीमतहीन तोहेसमानअघारनहीं हमजोनाहि भज्योविकदीन

अविमलअनंतदयालकृपानिधिअविनासीसुषधाम भ

नतप्रनतापनाहि मैजान्योंवधोंमोहकीफांस तुमसव

नमवहींविधिसमरथअसरनसरनसुरारि मोहसमसुहृ

सरहृदिनहेलीजैभुजापसार ॥८॥ भैरवीराग॥ तीनतालताल॥८॥

अबकैंनाथमोहिउबार॥ मगनहौंभवअंबुनिधिमेंकृपासिं
धुमुरार॥ नीरअतिगंभीरमायालोभलहरितरंग॥ लिये·
जातअगाधजलमेंगहेंग्राहअनंग॥ मीनइंद्रीअतहीका
टतिमोटअघसिरभार॥ पगनइतउतधरनपावतउरझमो॰
हिसिवार॥ कामक्रोधसमेततृष्णापवनअतिझकझोर॥
नाहिंचितवनदेततियसुतनामनाकाओर॥ थक्योबीच·
बिहालबिह्वलसुनोकरुणामूल॥ स्यामभुजगहिकाढ॥

॥ ३५ ॥
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
१८४

184

००७

ढिलीजैसबब्रज केकुल ॥ १ ॥ भैरवी रागणी तीनताल ॥ नमहु विसाकौ वैकेसाथी

मननतउकारणरमन्नाजरकेदौवल्लभयोहाथी गरवपरी

ब्लिनरत्नाकीनीवेदउपनिषदसाषी वमनवज्रारवडुपदतन

याकेसम्मामांकपनिराषी रानरवनिगाईब्याकुलकेटटे

हतकोंधीरक मागधहतिराजासवक्षोरश्रेसमभधीरक

कपटसनूपपहोजवकोकिलरूपसतीतिकरसानी क

ठिनपरीतवहीतमममगाटेविपहतिसवकषरानी श्रेसे॰

कह्योकहांलोगनगनलिषतअंतननहींपैये कृपासिंधुउन

ह्वीकेलेषंमनमलजानिरवहीये सुनहुमारीअमीतिवहीं

संकटमैतनमसाथी ज्योंजानौंत्योंकरौंदीनकीसकलवात

तमाहाथी ८ एगएीभेरवीनोंनतार ॥ तमविनसांकर

कोकाको तमविनदीनदयालदेवमुनिमामलेऊंपोका

को गरभपरीछितरताकीनीकुतोनहींवसमांको मे

टीफोरपरमपुरुषोतमरघमेसोंग्रहबाको ह्याकरुनामेऊं

३
ख.१
प्र.सा
१८५

185

गर्दैहोंरहेौंनहीबलनाको लागिछकारन्तरतकुटका

योकासोंवंधनपाकों श्रवरीषकोंश्रापदेनगयोवड्डरपमा

योताकों उलटोगाद्धपरीउखवासहिदहतनछदरमनजो

को निधरकहारपंडुसतशेलेहोतानहीउरकाको चरि

वेदचवरमखबस्मानसगावतहैजाको क्षोरीविंदवि

दाकीयोराजाराजाहोरकवंको जमासंधिकोजेमउहलों

फारिकियोकेफांकों सभामांफडोपदीपतिराखीपति

पानपभुननाको वमनघोटकरिकोटिविसंभरपरनव
नपायेफांको भीरभरेभीषममनराधौंस्रजेनकोरथहां
को रथतेंउनरचक्रकरिलीनोभक्तवछलमननाको गो
पीनाथमहूरकेस्वामीहैसमद्रकरुणाको नरहरहरिगिहि
रनाकुसमाहौंकामपहोहीवांको ॥२॥भैरवीरागतीनतार॥ता॥
मकूपागेपालगुसांईहोअपनेबग्रत्तानीमानत उपजतहे
घनेननहीमकनरवकीकिरनउलकनमानत सबम्र
घनिथहरिनाममहातमपायोहैनांहींपहिचानत:

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ सा
१८९

186

परमकुतुहिनरूपरसलंपटकोउजीवदलैमगरह्यानन सि

वकोसाधनकोसरवसमहिमावेदपुराणनवषानन इतेमा

निपहसरमहामठहूविनगावदलविषयषलग्रानन १

भैरवीरागतीताला॥ अपनेजानमेंबहुनकरी कौनभांतहरि

कृपातुमारीसोस्वामीसमुझीनपरी हरगयोदरसनकेना

तेंव्यापकप्रभुनामसवविसरी मनसावाचाकर्मअगोचरा

सोमूरतनहीनेनधरी गुनविनगुनीसरूपरूपविनना

मलेनश्रीस्यामहरी कृपासिंधुअपराधअपरामितक्षमो

सूरतेसबबिगारी ॥११॥ भैरवीरागणीतीनताल॥ तुमगोपालमोसोंबा

हुतकरी नरदेहीसुमरनकोदीनीमोपापीनेकछुनसरी

गर्भवासअतित्रासअधोमुखतहांनमेरीसुधबिसरी पाव

कजरतननहिंदीनोकंचनसेमेरीदेहकरी जगमेंजनम

पापबहुकीनेंआदअंतलोंसबबिगरी सूरपतितनतुम

पतितउधारनअपनेबिरदकीलाजधरी ॥१२॥ भैरवीरागणी॥

तीनताल॥ माधवजूजोजनतेंबिगरै तउकृपालकरुनानिधि

केसवप्रभुनहींजीयधरै जैसेंजननीजठरअंतरगति

उ॰
स॰र॰
स॰सा॰
९०

सनग्रपरायकरै नतुमनिजतनकरैअरुपोषैनिकसेअंक

भरै जद्दपिमलयहृक्षजडकाठनकरत्कुठारपकरै नतु

स्वभावसुगंधहुसीतलविमुतननताप्रहरै स्रोहलगह

यरयरनकूमीवलवारिवीजविथरै साहिसनमुषसोमी

नडफलकोसोईसफलफरै द्विजरमनाजोउषितहोइवह

तोवसिमकहाकरै जद्दपिअंगविभंगहोनहैलेसमीप

सचैरै कारनकरनदयालकृपानिधनिजभपदीनउरे

इहिकलकालव्याकुलमुषग्रामतसरसरनउवरै ९२

भैरवी रागिनी तिनताला॥ दीनानाथ अबबारतुमारी पतितउधारन
विरधजानकैबिगरीलेहुसुधारी बालापनषेलतहीषो
योजोवाविषेरसमाते वृधभयेसुधिप्रगटीमोकोदुषित
पुकारतताते सुतनितज्योतियतज्योभ्राततजितनतें
त्वचाभईन्यारी श्रवननसुनतचरनगतिथाकीनैनब
हेजलधारी पलितकेसकफकंठविरोध्योकलनपरै
दिनराती मायामोहनछाडैत्रिस्नापदोऊदुषदाती अ
वयाविथादूरकरिवेकोऔरनसमरथकोई सूरदासप्रभु

उ॰
स॰ र॰
प॰ सा॰
१८८

188

करुणासागरात्मने ह्रौं स्ह्रौं ॥ ६ ॥ भैरवीरागणीतीनताः ॥ पति

तपावनमरनस्त्रायै उदधिसंसारस्थनाम नवकातरनिरुद्ध

लग्रह्यानतिननिगमगायै मायग्रहणीयगनिकाग्रजामि

लद्विजचरनगीतमनारपरसपायै अनतौमरग्रधनामसखा

रकरहननगनग्राहतैतमकुञ्जायै अवलमहलादवा

लदैत्यस्वष्टहींवचतदासभवचरनचितसोमनायै पं

डुमतविपतमोचनमहादामलषिदैपदशीचीरनाना

वष्ठायै भक्तवत्सलकृपानाथ्याअमरनमरनभारभूनल

हरनजमसयो सुरमभुवरनचितचेनचेननकरतनमस-
सिवश्रादिहकसेमगायो ॥ ७ ॥ भैरवीरागतीतीनतार ॥ श्रीनाथस-
रंगायरकृपाकरदीनपरउरनभवत्रासनेताषिलीजै ना-
हिजपमाहिंतपनाहिंहमिरनभकसरनश्रापकी-
लाजकीजै जीवजलथलजितेभेवपरिपरितिनेरचे-
लघुदीर्घवदृश्रचलभारे ममहलमदमारहननत्रिवि-
पिकरमननाननमोहदंडनपरमहनहारे वृषभकेसी
मलयेनकरहतनारजकचानरमेरछनारे श्रमामिलते

३ ।
सु । र ।
प्र । सा ।
१८५

189

कह्नोंमैक ह्नाचरकियोतमजुग्रवह्नरचिननेविसारे ॥ ६ ॥ भैरवीरा
गणी॥ तीनताल ॥ कवहूंनाहींगहरकियो मदाह्नभावह्नलभह्नमि
रनवमभकनिग्रभपट्टैयो गाइगोपगोपीजनकारननिरिक
रकमललियो अचअरिष्टकेसीकालीनधिराखनलहिपियो
कंसवंसवधिजनरसंधिहतिगुरुसुतआनदियो करघत
सभाद्रुपदतनयाकोअंबरअक्षयकियो ह्नरसामसवत्त
कृपानिपकरुणाम्हलहियो कावीसरनजांकुकरुणाम
पनाहींआरविवियो ॥ ७ ॥ रागगौरीभैरवी ॥ तीनताल ॥ मांनेतमाघेभटोमार

ग्रौवे दीनानाथपतितपावनजसवेदउपनिषद्गावे जो

जमकहौकौनलषनारेतोहोवालौंसाषि पुत्रहेतहरि

लोकगयोद्विजसकौनकोउराषि मनकाकियाकौन

व्रतसंजमसहकहिंतनामपढावै मनसाकरसमसौ

गनवधुरेग्राहपरमगतिपावै वकीजगईद्योषमेछल

करिजसथाकीगतिदीनी श्रीरकहतस्वामिहृषभआथ

कौनसौगतिनमकीनी उपदस्वनाइदृधुरजोधनसभामां

ल्हिपकरावे श्रीमोश्रीरकौनकरुणामयवमनप्रवाह्व

उ॰
स॰ १॰
प्र॰(५॰) सा

स्नावै दुखितजानकेसुतकमेरकेतेंहलगआपवंधावै छे

सोकोठाकुरजनकाबनदुषसहभलोसनावै दुरवासाद

रनोधनपठयोपंरवग्रहितविचारी सुमिरतनीनोलोक

ग्रह्याप्रन्हानभन्योक्रमरारी देवराजमघभंगजानकेवरसो

वनपरआई॥ सुरसामराघेसवनिजकरगिरलैभपसहाई

१८ रागभैरवीतीनताल॥ दीनकोरयालमन्योग्रमेदानरामा सांची

विरदावलीतुमजगमेकेपितुमाना आपगीयगनकाग

जःहिमेकोहैजाना सुमिरततुमसबहिआपेत्रिभवन॰

विषाना केसीकंसउष्टमारिमुष्टककियोनाना अपनेअ

वराजकाजकेतकयहवाना तीनलोकविभपदियोतेरुभ

लकेषाना सवसप्रभुरीफरेततलसीकेपाना गीतम

कीनारितारीनेकपरसलाना श्रीवक्रटिलनानीरकाहेग

रवाना मांगनहैसरनागजिहितनमनविलवाना अ

पनेप्रभुभक्तदेहुनामेंतमनाना ॥रागभैरवीतीनताल॥ मोकहा

२५

तुमेनिकियोनांपेमोईमोईचितपरिहो पतितपावन

विरधरसांचकौनभांतकरहो नवतेंमगातनमलियो

उ
स· र·
अ·सा·
१९१

जीवनामकहायौ नवतेकूटप्रोगुनइकनामकहिआयौ

मापनिंदकस्वादलंपटकपटीगुरुद्रोही जितनेअपरा

धजगतलागतसवमोही ग्रहग्रहग्रहद्वारफिरोतुम·

कोप्रभक्ताउ अंपअंपटेकचलैंकोनपरैगाढे कमल

नैनकरुणामयसकलअंतरजामी विनतीकहाकरै·

सूरकूरकुटिलकामी ॥रागभैरवीतीनताल॥ कौनगनकरोमेरी·

नाथ होंतोकुटिलकुचीरकुदासनरहतविषयकेसाथ

दिनवीततमायाकेलालचकुलकुटंवकेहेत सारीरैन·

नीरभविसोवतनैमेपमह्यवेन कामादयानकवैकुमलेषा॰

ननलमापरममगोर लिषगनेमजनमभरिममह्कनन॰

कुदोषनह्रीश्रोर गननगनकाश्रहविमश्रनामिलश्रगिनन

श्रपमउथोर श्रपथवालश्रपरापकवैमेतिनहूंनेश्रतिभोव

लिषलिषममश्रपरापजनमकेचिमगुमश्रकुलाप भ्ट

गुविषिश्रादिम्हनतवक्षिनभपजमहनसीमडुलाप परम

पुनीनपविव्रह्रपानिपिपावननामकहाथी म्हवपतिन॰

जिवम्हन्पोविवदपह्नतवथीरजमनश्राथी ॥पगभेरवोतीगनाय॥

२२

३
स॰ १॰
प्र॰ सा॰
१५२

मेरी गोनगति त्रजननाथ भजन बिनमघसत ननमाही फिरन बिष

पनसाथ हो पतित अपराध हूं बन जनो कर्म विकार कामक्रो

ध अहं लोभ चित बनन नाथन तुमे बिसार उचित अपनी कृपा॰

कर हो नबे नीवन नार मोह करो नो चरन मे वे सर जन ठन पार

२२ राग भैरवी तीननाथा ॥ मोह्क कछु बी जे दीन दयाल जानेजननाछि

न वरनन कछु उहे कहणा सागर भक्त कर साल इंद्री अजित बुधि

विषयारति मन की दिन उलटी बाल कामक्रोध मद लोभ

महा भय ग्राहि नि मना थ भ्रमत बेहाल जोग जत्त जपत

पतीरथमनतरनमैपकोग्रकंनभाल महांकरोंके हिंभांत·

रिफाउंहोतमकोसंदरनंदलाल हनिसमर्थसर्वज्ञक

पानिधिअसरनसरनहरनजगजाल कृपानिधानसुर·

कीयहरानिकामोकहेकृपनहिंकाल· ॥ १८ ॥ इतिसवसागर॥

1001 गुरुद्वौ लघुसंज्ञौ चतुर्थे तालसंज्ञकः

१ श्री अथराग भैरवी चौताल॥ अस्थाईदीज्येकृपालदयालहमकांतिहा

रीभलकनिजचरणचरकरतार तंहीआदतंहीअंततंही

निरगुनतंहीसरगुनतंहीहैजगतआधार ॥ आभोग॥ एकही

अनेकहोयव्यापोहैजगतमेनानारूपरंगनामभेदवहू·

उ
रा. ३.
म. सा.
१९३

193

नमस्कार करूं जलथलकरूं पवनकरूं पखानकरूं स्वच्छ

हर नागपशुपंक्षीकरूं गगनसागरहोयकरूं नरकरूं

1002

नार॥ राग भैरवी॥ चौताल॥ कुटिलकुंतलकुंडलकाछनीकां।

तिकुवलयभावरे किंवेकुंचिताधरकुमुदकौमुदीकुंर

कैरवहासरे कान्हकालिंदीकूलकाननेकुंजेकुंजरर

मेरे किंवेकामनीकुचकुंभकुंभांविनकामकोटिविर

अवे कनककिंकनीकंगनांदकुंडलांचितअंशरे के

लिकोकिलकंठकुंठककाकलीकूलवंशरे केशरीक

दिकंबुरकंदरकुंजनकेप्रारदामरे कलिकालकालीयक

5001

वलेकंपितदासगोविंदनामरे ॥२॥ भैरवीरागताली चौताल ॥ तारणी श्रीजमु

नाश्यामकमलदलनैंनी दरसपरसदोषहरहोन हे श्र·

वकाटनकोंछेंनी सानसमदकोंभेदकरन हैभक्तिम

क्तिकीनिश्रेंनी शरणआयगुणगावतनितप्रतिवल

5001

भकुंवांछितफलदैंनी ॥४॥ भैरवीरागताली ॥ चौताल ॥ अचलएनकरोकोद

धर्मलेंविरंगीवरहोनश्यामतनेरेलालदवनदेखिभय·

निहालमेंजोगीसुखपायोमेरेजियआनंदभयोउरनम

३॰
स॰१॰
म॰स
११५४

194

मानहै जौंलौंध्रुवधरनतारो जीवेनेरोभाजउलारोतोले

रविससिहमेरगगनपवनपानिलोमंवकीसोआविल

होयपयरहअघोघदेजातहै डिमडिमडमरुवजापासें

गीनारदकरमरालमेंगापमंहादेवजोदरसनपापअल

खेकीकविनिरखेमंदमंदससकयानहै पांचमार

केरोकरकक्षुअवगालागमंत्रधरवैज्ञनाथकैलासके

वासीमेमनमानननावेनांउवलामीनकथंगानकाढ्ढ्ये

गानिरवननअपनेंमनमलखेपातहै ॥भैरवीरागणि॥ चौताला॥ बेवे

१००४

नैंननामेलाललालडोरेकारेकारेभौंरानीकेमंडरातहै

श्रुतरसवातरभएहैंत्रियाकेवसनाकेदृगादेखेमीना

खंजनलजातहै जोंलोंदेखियतनसबीतोंलोंपायपत

खबेदहकेदरदडुखेतेहुमिटिजातहै लालगिरिधर

पियनीचेनजरकियेलाजकेजहाजमानोंमोतीभरे

जातहै ६ ॥भैरवीरागतीतालताल॥ 5001 नादब्रह्मदेवहुनगायहैसापघर

नरगुनीगंधर्वरचपचगायचिदसमार काहुनपायोपार

करकरथाकेविचारकेंवलब्रह्मनरायोवग्रवगापारअंत

३
म०१
मंमा
१२५

नीनंदनकहेउवारसवारसवनितरनलगीहियमेंदोनंवाउार

ममसरतितनग्रामईकरईममछनामईमसरतउनंवाममहू

टतांतग्रंमनमामविक्रतथार ब्रतागछनीमरागणीश्रोउ

वदोरवकेभेदसपमद्रासपवानीतानमेंनकरोविना

नजाकोमभजननश्रापपार॥ भैरवीरागणीचौताल॥ चातकचकोरवकवा

कवंवरीककुलकोकलाकलापकलिकाकलीककम

लं दलदरविंदहूंउगंधवंधगंधवाहमंदमंदडोलातल॥

नाविशेषविमलं हूंदावनमनुचलितालिकालिश्रातया

माइ थां नम्रत्रवक्तमक्रे रणमकलं संदरथिरोमरणम्र

कुंदभरविंदुमत्रवमं नरेण हूंतनैवजानत्रजीवतमलं ॥ ८ ॥ भे

5001

रवतागलीम चौतारा ॥ अनहदेनी परीसजनी प्यारे कीमिहीमि

हीवति यं लागातमो हिंग्रंगग्रंगगरे मरोमरहीयतमो हा

गप प्रेमभरिंगतृपरत्वभरिदाउकी मोहककहतहोमेनो

हेमेवाहे षाडुंवेमोहेमिलिहे आमहृजापहोनीहोपमे

5001

होप ॥ भे रवतागलिम चौतारा ॥ करतफिरतमीतमेरोतेरोकरताहे

तमगरीबनिवाज ममदीपतिंकुं लोकममकलमथभर

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ स॰
१५८

196

निहारोहिपाकिछनराज लखेवौरामीनीवजौननैनेनव

रावरलखनकोंकाज रामश्रासकरनरावनश्रायोरावित्तव

5001

नकीलाज ॥ रागभैरवी ॥ चौताल ॥ श्रवलखनकरोकोटवरसलों

चिरंजीवरहोरामअधिराजराजारामचंद जौलोंध्रुवधरन

नरनपवनपानिगगनमेंकलोमकीसीश्रारवलहोयमार्कें

डुयश्रादिकरूखश्रसीसदेतजौलोंजगमेंभानइंद गुनिगंध

वकिनरगावोनारदमुनिवैनवजावेब्रह्मावेदपढ़करे

श्रमंगलमवदूरहोयेदूरवदंदहफंद सिंघासनवैठेश्रभयपरिश्रम

दिनसुभपलमङ्गलतसुभनछत्रसापग्रमतनेभागसुभचंद

रागमालागरमननभयोआनंद ॥ १९ ॥ रागगौरीभैरवीचौताला ॥ 5001 दिनेदिदारहो

वेकरारमनकुंतमहोजगतकेआधार अलखिजोतनिरंक

कारवच्योसविलसरदारभकमतुकदातारतमहोंमधुसू

दनमुरार निहारोगतअपरंपारपकहोअनेकहैव्यापो

संसारतहीवसतविलत्रिभुवन तुहीआदतुहीअंतनही

सवजगामबखुदरहोरागमालागरकेप्रभु निरंजननिरा

कार ॥ १२ ॥ रागगौरीभैरवीचौताला ॥ 5001 मंदरमहगनैंनीकामनत्रसनमानन

उ
स·र·
म·स·
१२८

197

पतिसंग भृतपरसीसकपोलदसननमपङ्कषपरकंचुकी

तेग जांगनपरजांगमखवेतंवोलश्रपरनपरटपकतरंग·

यहभांननकेसुखदेसवलेरंगलालवीजकेलश्रंग ॥ रागभै १६

5001
रवीचौताल॥ मेरीसुपलीज्योतमहीसवेरीहरिगोपालतमम

नकीजोदेरी मनईक्षासवहीपुरणकरीहरिमोहेश्रास

रामरनहूंनेरी गीपक्षानगाजगानिकाश्रनामेलादिकम

नितनमननावेकाहेभुलेहोहमरीवेरी रागमागरमन

श्रामरोनिहारीचरणकमलमांचिनउरभेरी ॥ रागभैरवी॥चाताम॥ १७
5001

अवलरानकरोलालखिवरमला कायमरहोमहमदमाअ:

कवरमापानमाहकुंमोहनछवनखिनमवदेमदेमनैनी

मेखिरान अनेकनआनतोरानकरोरकेरहोपपेमही

नैसैंहीअमनखिनजागेमवडुनिपांकेभयमनकोकाम

5001 १५ नचान ॥रागभैरवी॥चारताल॥ भेदनमहरसमहरनकेपावेजवमव

गुरुनकीसेवाकरेजीवअपनेंको सांचेगुरुनसोंसीखे

नोआवेविद्यानीकीनोकुं गुरुज्ञानध्याननकरवाइकोंमन

5001 १६ मेंतवगुणीयनकहेवाको ॥रागभैरवीचारताल॥ आगमेरेभागमागे

३
सं०२
प्र०सा
१९८

पियभोरहीसुथलई इतनीभईनिहालपियतुमपैंबलबल
गई तनमनमानतुमहीनिशादिनतुमरेरंगरंगई तांनसें
नप्रभतुमचतरशिरोमणिरसवसनिहारेभई॥७॥रागणीभैरवी
5001
चौताल॥ बीततहमपरजैसेंहोंहमसोंकहतहोरावरे काहे
तेनेंओरपहचानेहमजानतजहांजावरे रैनदिनामोहे
कलनपरतहैतेंतेंलैलावरे साहवहाउतमवहोना
यकहमसोंभपलउवावरे॥८॥रागणीभैरवी॥ 5001 चौताल॥ नकनवैठीमहाव
लीईखरहोपञ्चवनार हेसदेमकेसेवाकरतेहेवकमत

कंचनथार जोइआवनमोइफलपावतमनइछापूरनआथा

र तांनमेंनकहेमाहनलालदीनअकवर गुनिजननके

2001

कानकरमकोकियाकरतार ॥रागनिभैरवी॥ वारतार॥ रामसकाम

सभुरागननताहुमरावसीमैननवेहरसों रागमकामन

वामरहेरममालावमोअंखियांमरसों रामरचौरमज्ञा

लजहोजरविघनाहलघरमसों रागमैंसामलसेरविहा

मनमोरमलैवमकेमनमों मारमवानीमरामरामि

सीराममरामनवारमसों मारनमारीहं मैरमचैनन॰

३
स.२.
म.सा
१९४१

१९९

चैरसमैं रूरिसानन सों मासवरे सहंनाविकव्याईरव्याकरि

नाहवरोवरसमां मांगवचैवरहमैं रुनिवोमसवेनिरुमोहरवे

5001

रंगमां ॥२॥ रागहांसिभैरवी चौताहक चौताल॥ पंचदससमायोगु निचतरदिसदरि

या हादशविनवनविषिपिगकेगरजेतसमप्पायतिरीया

समसवरतिनग्रामगुकइस गुरञ्जनावाइससरनखरीया॥

उरपतिरपलागराटग्रतितग्रनावानखिरीया ग्रातकवा

तकसवरांनकज्ञोरवणोरुव संहूणोवेञ्जकरीया ॥२१॥ भैरवीराग

5001

राणि॥ चौताल॥ चंदवदनप्यारीवे हिसिंगभकवनहेमवोकीम

पप्यारीपरेंभूषनसाज नितेकारनिरतकरतसमरहरमन।

होतगाननाविचप्यारीलीनीमोढीतानवजतसाज ॥भैरवरा २२

गनि॥चारताल॥ऽ भपरविउदैहोतआपहोभैरवीमेंलागतभ

परवनीवसप्यारें भैरवीतानमरलीमेंवजावोंविका

वेंकाहीतियारेंनकेंजागेंनंदलाले ॥२४॥ ॥इतिकल्पद्रुमः॥

लघ्वोगुरुश्चसंज्ञकौहृस्वत्रयतालसंज्ञकः

रागणिभैरवीतालधीमामितालः॥ऽ अथमउथारनीजेश्रीगंगा दरसपर

मश्रवहरहोतहैसदारहतशिवकेसहसंगा गामनवा

नपरमकेथापसगारवेशपावनभपत्रंगा वल्लभनिहाल

भयजब ही तें छबि निरखत मन उठत तरंगा ॥२५॥ रागुभैरवी धीमा

तिताला॥ प्यारी मन क्यान लियो मन मोही प्यारी आज नो होय प्या

री तव म्हारो बोही प्यारी छबि देखि चकित भयो चंदा तो पटत

र न हीं है कोई मान जीवन प्रान धन प्यारी पिय हिय तो गल

माला पोई प्रेम कथा जानें सोई बल्लभ जा सब बीती होई ॥राग ॥२६॥

रागुभैरवी धीमा जलद तिताला॥ प्यारी तेरे मन मैं क्या नो सो हार रनिरति

नो सी वहो न दिन मतें तोरत लाज न आई निरमोही हो रही

वे दरदी परस्मि खेकों ना सिखोई तेरे निय कीने जानें प्यारे

वलभश्रीरतिभाई [२७] ॥ भैरवी रागताली धीमा तितारा ॥ [११८] दिलजानमोरीजानितो

मोलागिअखियांविमानी तेरोध्यानदिशिवासरमेरेतेंका

मनमेंठानी अपनोंजानिकेकिरपाकीजेनेकहूंदयाउर

आनी वलभपियकीजीवनकाहियेसदारहोगुनगानी॥

[२८] भैरवी रागताली धीमा तितारा ॥ [११८] किसनकहीरेमेंरीजाईदिलोंरीगला॥

सोनेदेअंदरहकेउठदीविरहसतावेमेनआईदिला ॥

तेदेहाउंकलनहींपरदीउमनवेखणहीवाई वलभपि

यकीआनपियारीवेगिमिलोरीमनभाई [२९] ॥ भैरवी रागताली धीमा तितारा ॥ [११८]

३॰
स॰१॰
ग्रं॰सा
२१

३॰ भैरवी रागणी धीमतिताल ॥८ वडनन ही देपखिताई सजनन बिन मेरा

हिलवर हु सिरहा है कोई ल्यावो नी समझाई कहो रे रमा

सब मांडे तन न दी वरषगाम दिन जाई वल्लभ पिय पर विफोर

ही हां उस बिन कुब्जन सो हाई ॥ भैरवी रागणी धीम चौ ताल ॥८ सजन

दावीना ही कि किरिया दम्या रसेरा विरह दी मारी मैं वन वन

कुकां वल्लभ कर दाना हीं याद ॥ भैरवी रागणी धीमा तिताल ॥८ प्यारी

चलोनी निकुंज भनी रंग ठनैं तन विन न षिवि रव वजा प॰

चने समतनी नम्रकार स वाम सो छती म छनी सगाय गने॰

००६

रागललितभैरवीतीताल।। पनीसारेंगमपपपममगमगरेसागगरेसा

पनीसासानीसारेगममगरेसा गगमपपनीसागसानीप

पपपममपपपममपपपममगगमनीपनीपपमग ।।

००६

भैरवीरागसितिताल।। ग्राजसोहागभलीरतियांछातियांब्रज-

नाथकेहाथबूबाई मेंवरभागिनहतिहूंलोकमेंतिन-

लोकपतिपीतमपाई देवसखिमुनिमनमोंनदेखत

मेरोगावलोभाई कुबरकोंवरवरजोरतसर्वसखीमेवत

नसंदरताई पकनेकनभईवतियांकितियोसखियन-

उ॰
स॰१॰
प्र॰सा
२२

उसासहसमाई तूपग्रन्तपसथानिपराधासंगकेलसेमनरंग

रमाई ॥ भैरवीरागणीतिताल ॥ रामनामजपलेमनमेरेकटतपाप

एकछिनमैंतेरे पंचसनजगादीशगुसांईरसनारटलेसं

कलवैरे धनजोवनकछुथिरनरहैंगेकोटपावकरीब

हूलेरे हरकेमभुग्रंतरजामिठाकुरहूमदासहैतेरे ॥ भैरवी

रागणीतिताल ॥ गावतेहरिकींजसप्रानीतेंजगममैंधनयन

गुणीग्यानी सोईहरिविग्यासोईवडभागीजिनकीप्रीत

रामसोंलागी सोईपंडितसोईदानीमिटेववनसवनसों

बोलेतेननजगमेंनिर्भैडोलेतेकुलमंतेपरमस्थानी प्रभ

पदरतिमनवचक्रमजिनकीवरनचूलंएकोशिरतिनको

जानकीदासपरमहितमानी कृष्णागमानीमेरेमनवसत

वे इसजगमेंक्यारीश्रीरनहींभांदातिसदिनअविचवहो·

लसदावे वहीध्यानवहीमानवहीसवधहीतनमनध

नकुटंववसदावे प्रानपतिपरमेश्वरश्रीहरिनंदनंदनस्ट·

दुमुखेहसदावे खोनमानजगधीचमहींनादाश्रीरस्ट·

तदिलविचवहींपसदावे कृष्णारसिकरंगमवतनसोलो

३
सु॰र॰
ग्रं॰सा
२॰२

गावत हरि हरि हरि जस दावे ॥ भैरवी रागणी तिताला ॥ राम सुमाना

सारी पी जरत वूफटावे तैं उरे दरस बिन ब्याकुल रहे जान

की रत वुफ टावे ॥ भैरवी रागणी तिताला ॥ राधे वंशी कीन ली नी चोर

चंचल चपल नार पक संदर स्रव ही गर या ही ओर हा हा मो

यवनावो प्यारी विनती करूं कर जोर जानकी दास की आ

स पुजावो निरख दृगन की कोर ॥ भैरवी रागणी तिताला ॥ श्याम संदर

गिरिधारी वनवारी धुन वंशी फेर वजावे जैसी वजाई वाहि

न प्यारे नैसी तान सुनावे ग्वाल वाल सव सखा संग ले मेरे

गलियांविचआवरे जानकीदासरसिकवनमोहनभज

भरकंठलगावरे ॥भैरवीरागतिताल॥ यारदासखवरमेंनभांदावी

भांदावेसांवलमारीवलआंवदानीजांदावे जानकीदासहो

हनीसरतनवजरपडीजवसेवोसूरतगललगाएनूजीचांद

निबांहदावे वंसीवजावदाछैलाजोरनागरनंदकिशोर

विनवेखेकलनपरनहैक्यासबुक्याभोर ॥भैरवीरागतिताल॥

वेरीननेरीननेरेबवाकीवेरीगलीमोक्यापैरलडैंहों मों

तमबाहनवारवनमारवनमोहममारवननेकनपैहों कं

उ°
स°र°
प्र°स्त
र°ध

सकेराजमेंप्रमनहींवरीआईविवाकी सोहूंदनदेहों टूटेगीहो

रहूजारनकोंतवनंदजशोदासमेतविकेहो भैरवीरागणी

तिताला वेसांवलइयारलागितोओरनिभाना तेडेमिलन

बूसवजगचांदाविनदीठीयांदादिवांना ॥भैरवीरागणीतिताला॥ ००६ पा

वननामतमारोरबुवरमोसेपतितकुनारे जलथलवल

वहूंदिसमनचपटनसवहगदोषनिहारे प्रेमरंगरंगेगोवन

स्यामकेलगतनरकोपियारो ॥भैरवीरागणीतिताला॥ ००६ वेसपारल

गापटेमेरामांकोवालामांकोधारमेंवयाववहावतमता।

पनवारप्फेरादे मनगुरुकौंगुनलगनसकतहैसमदमंदउदे·

लोयदे प्रेमरंगभवसागरउतरतनिजपदध्यावहुथंभायदे·

७००

भैरवीरागणीतितालाा॥ सुमिरनरामसुमिरनसुमिरनजोसोधनका·

मसोधनसोधनजौं जगतजोधामजगतजोजगतजोभगत

जोनामभगतजौं मनकरसामसमकरमनकरजोलगनन

सामलगनलगनजौं निशादिनजामनिशादिननिशा

दिनजोरंगनरामप्रेमरंगरंगनसरंगनजौं॥भैरवीरागणी

०००

तितालाा॥ प्रभुपवनेव्रजकुंजवनेव्रमदावमनोहरवंशधरं रंगा

३॰
स॰ १॰
प्र॰ सा॰
१०५

205

सखुत्यितथेवनरागविमोहितदेवतदेसनरं मानमपाकुरं

गछविलछवलंसकलेहरिरूपवरं विलवियोगीजनारस

रंडुसहाकिंछकजालसरं निस्येयानिस्येयात्रंत्रंद्दगगड्दांग

ड्दांकेलविलासरणावरं ॥रागललितभैरवीतीनताल॥ ००० कृष्णललाश

रणागततेरीराखवानय्रपनैजनकेरी श्रयारणायारगातजे

जगजाननमदीनदयालदयाकरहेरी डुनोग्रीभवकोंसम

थंहे जाकेनामकटेभववेरी कृष्णावंगमभ्रमणतपालह

नितरीयेकटातकमलहगफेरी॰ ॥भैरवीरागललितधीमातिताल॥

भलोभलोभांतहैजोमेरेकहेलागिहे ममरामनामकौंह

भायअनुरागिहै रामनाममोदककहथामनेहपागिहे प

यपरतोषतेनहारद्वारमांगिहै रामनामकोप्रभावजानतज

डेआगिहै सहितसहायकलिकालभीरुभागिहै राम

नामकल्पतरुजोरजोरमांगिहै तुलसीस्वारथपरमारथ

नखांगिहै ॥ भैरवीरागणीतिताल॥४५॥ भोलाभोलाप्रवरजा वि

पारहायक पलनहीं भलदाकीकरां दिलउषदावोमीयां ए

नदेहांमें नध्यान नमाउावोमीयांनमीवरीहरीकौंहकदामी

उ॰
स॰ १॰
भ॰ मा
२८

घं॥ रागली भैरवी॥ तिताल॥ ००० फोखें गालेमि यावे विवहदी मारनकम

लावे मैं ननतीदक्षोउनज्योंमतदे ह्यलवे॥ लोकांफों॥ भैरवीरागली

००० तिताल॥ मांवरे ह्योमुरलीवाले हौं णवरे हौं कान्ह मेमउमवीउम

गाई नेकमली विनवजा रहोमान॥ भैरवीरागली तिताल॥ ००० खेउँ दा

परवेलाभलामियां वेसान्हववा जवौंजवां भांदाकोई वे वि

क्षोनुमन्हवेलेवलखिरे वे मियां सानुवाकजवांनादकोई।

भैरवीरागहीतिताल॥ ००० नैंनुमनमफायरहिदिलवरवेखेनकारनलो

कोंदियां वदियां मरहैंदे इश्कदीगलांमनमफदानांहींनादमरहा

लखनायकेहन ॥ भैरवी रागनी ॥ तिताला ॥ १०८ सांवलियां दिने मम होवन

इस्कदेनाल दिल मांझे लगदी इस्कल जाकरवेख्रूट दावीनां हीं

मैं उमीयां ने भैर रखेन हीं रहदी भलामियां हां ॥ भैरवी रागनी तिताला ॥ १०८

जालम जा विषं वेर घा जारीयां देनाल गुजारीयां दीठीयां जमा

नैं दी कुडियारीयां मनीं करो उस नियरे इन भाव मा सा इपीगली

नक्कीं न हीं श्रांव दारीयां लाल वीमाहाय्य सब कडी वेवां कोइ

नैं नादी श्रांन मारीयां नतवीव दिल दा सोड मोरीमियां महो॰

हैयां गा चल वेशी माडी इस्क दी विमायायां ॥ भैरवी रागनी ॥ तीनताल ॥ १०८ ॥

दिलमनन्कीताहमफरेमस्तहोहम्वकुमतहरांवमेरांलैली
मरहौंशीमेश्रोरीमेन्निमदमलवलवग्रपग्रभविनयली ।०

भैरवीरागणी ॥ तिनताल ॥ नईनईनपन्यांजमोंभरीपसीसोंजगुदाजिमे
कौंनशंकेहरेकदमनैंदमसानमियां नपदहंतिहीमदाय
नाईमेवालेश्रोरीहरदमगोलेपरीपरी ॥१॥ ॥भैरवीरागणीएकताल॥

प्याएवोमोनासांवलयार नैंउदमविनकलनसींपड़हीरैंन
देश्रावेकयार हरमवेमाजामाउीश्रामरजाजामैंतजपरबलि
हार जानकीदामनिमानेतूवावलेदेश्रपनादिदार ॥भैरवीरागणीएकताल॥

मिलज्जानाहोप्यारानंदकिशोर वेषनजरभरज्ञायलकीना

वांकेनैंनारीकोर तैंडेदरसविनफिरावेदिवानीकुंछरीफिरा॰

वहुंश्रोर जानकीदासवेषतसीहरषानैमेसचंदयकोर ॥

लघुविरामपति

भैरवीरागतीनताल ॥ हरिनामभजोजिंदगीथोरी ग्रवसरवीतपीछे

पछुतेहोजनमफुरजैहोगारेफंदगी तिशवासरहरिनामउचा

रोतजोमनुवाकपटविंदगी कृष्णादासजगमैंनोकहावोहर

करोसबकुलछिंदगी ।भैरवीरागतीनताल। कृसभजोनोहेकृसउहा

इश्रोवनउजोतोहेसमहाई होपदसतकीलजाराखीद्रुवतमन

३॰
रा॰ १॰
प्र॰ मा
२॰८
408

ग्राहग्रानक्रुडाई खंभफारहिरणाकुशमारयोप्रहलादभक्त

हितनरहरिभ्राई शंखचक्रगदापमलिपहरिप्रपनेंजनकी

औरनिभाई ॥भैरवीरागणीतंत॥ मेरेपासरीपियानआप कयारेकरू

कछुवसनहींश्रावेनिकसततनहींजियसासरी ॥भैरवीरागणीतंत॥

मंतोनेंनुग्रांखेदिरहरीरंफणावे फुंछटीफिरेंदिवाविवेमि

लदाविनाहींमेरामोणमदकेकितिजिंदमेरी ॥भैरवीरागणीतंत॥

चलोथनहमरिवारीरेहमरिवारिमोडनकुंकलियांरे ले

हगातेंजघुमघुमेणाउरपटनेंदिसारी अनवटगाउदेविछु

वामंगादेपायलकीफनकारी ।।भैरवीरागणीवेमहाताल।। मोतेमेनों
लङ्घादिगालोकेसिमसिद्धपकतालिका

दृउबटगईरनीयांमेनाजानूपीकीथरगयीरे आवनआवेना

लिखेभीजेपतीयांमेंकैसेकेपठइंसंदेसवाजान ।।भैरवीराग

णीवेमहाताल।। इंनजारीमेंमेमैतोजानगईवेकरकेनदंननेरीदो

खमें कांकननिरखनसवनिधावीनीकवननवलनीयावि

समायलरवे ।।भैरवीरागणीवेमहाताल।। मोरेसईयांवेचककवासोंप्रीनक

रीग्रयनेंसेमुजकुंविगानीकरी नोमेजाननीमारीनकर

द्रुतोलघुगुरुप्तोकोफंपतालष्ठजायते
०।ऽ।।
तिपमीरासीमोमेंजियमेजरीमुं ।।भैरवीरागणीफपतालवारना।।

उ॰
सं॰ २॰
ग्र॰ सा॰
२॰५

तेंरीभुवेकालीयांवेश्रा॰ डियाहनिवेनेंनारीनोकसंभालश्रा

श्राहनितेंरी वहमलमराणवसदपेवताविगिरहसादशवरा॰

वयेश्राफतापतेंरी ॥भैरवीरागतीनहसीतालल वारीवानवारीहेंदयवनस

रिवपतनसखापनकरतनरामगोपाल हतकारीजनकारीबजेरा

नसमंगकटपिपिकपुमनतकवकटतानताधा ॥भैरवीरागतीगतोप्रा

ताल॥ मनमोहनमनमानीयातेंतंप्रवीनसयानी संदरवदन

चंदकलालजानीनोमीतहीतियाग्रीरनाहींनिइलोकसानी

तांनमेंनचिरचिरजीवोपमीप्रीनरहांजोलोंनमनगंगपानी॰

रागनि भैरवी रुद्रताल॥ आरे श्याम मोरे चरन मन मोहन मेरे मन कों प्या
रे तुम बिन मरकुं कल ना परत है मुरली टेर सुनारे॥ भैरवी राग
णी रूपकताल॥ आदेश करगुरु कों जो गुरुन के गुरु कों ब्रह्म गुरु कों
नासें मम सुरतीन ग्राम आवे सुर भरकों इकर सम सुर छनाउं
वास कुटतां न ग्रस्ताई संचारी अलंकार दैजस भके वरणा यरकों
भैरवीरागणीताल सवारी॥ फूलवन सेज बनै इंकरि इं सिंगार पिया
मिलो भावतो मो हे आज ॥ गावो री बधावा सब मसिव
पत मिल संगत सों मेरे चतुर श्याकाज ॥॥ ॥ ॐ श्री श्री रघुनाथाय नमः॥

३॰
म॰ ९॰
प॰ सा॰
२१॰

210

भैरवीरागणिसवारी॥ आह्नेनाद्दरीमहीमननदिरनायललीयलली

यलायलायललेननने आशाकंतावेगमलमवरकेयावदि

मलादयेमनचुंडुवावेतावेरा॥ भैरवीरागणिसवारी॥ वेरवामेनआमग

नमाउवेरखलेसाउडीलाज वैंनदिनामेंनध्याननमाउा

रहदांमेरामीयांओरनहींकोईकाज चीनामसलानादर

आनमनजरकरकेकेअजवदमसीयमआनमहजरकर

भैरवीरागणीतीननार रांकेदेनालकरारमेरावेकीकरांत्तीनहीं

लगदामेरा रांकेदीमरनमेरेमनपरवमयीवेमियांरांकेदेनालमन

पगटावे आपणखेउसेमनतजाननोवदनामनहोवे

दीवानानावोहीहै जिसें आपणमनहोवे रवातेमनिगा

हउसोषकीगरदमरहेवाकीनइफाकरेविसमि॥

लजें आगरकामनहोवे ॥भैरवीरागगणीधीमानिताल॥ नक॥

केवलाईसान्नसंगविरहदीनेंनौंवालेंमियां दिल

नेंआलगीघोरीदिलरहगयाउचककेलाईमिया॥

भैरवीरागणीधीमानीतालरा॥ रोनेंनादेनीआगेवेसपाईउमेरा

मीयांन्दणजीरहनामेरीयां आपनआवेवारीवेनालिखेभेजें मेणमि

उ॰
स॰ ६॰
प्र॰ सा॰
२॥

यांसबबसेमलतांनवेसेपाईंशमेरीजांत॥ भैरवीरागणीतीन॥

॥ मस्तिसहहरामेंजामस्तिकीजिपपिजिपपियालामदहो

पीकामस्ती मनमग्नअपनेंअपनेंदिलमेंखोरीहैहूत्तरसो

नदहस्ती भैरवीरागणीतिताल तेंशमिलवदाचावबेमें

नूश्राभिपियारावेमियांडरदियांवदनामीहूलतेंडी तें

डेकावनमेंसवकुछछडियाअवरदिवांविनदामोदिग्रनमो

लतेडी, भैरवीरागणीतिताल मईशानभूलकोंगया॰

वेमहिदेचावनवाक आपछडजांदेनालमेंहिदेखोरीमि

2V

यांमाह्नि न उरी कनियां वे पैं उदियां नी उउ दि खो केवे ।

भैरवी रागणी तीन तार आमिलरां याजानवे आमिल

मैं तोतां उमदके की तीयार गमानिउा आशाकतें माधक

करमकरे माउरी जान रमजग विच जोवन महमान ॥

भैरवी रागणी तीन तार ह्मवेडे लामन पर वां दियां कमाम्

पालेदी जदियां आंखिलूउदी यांभों वां मटकों दी चितव

छनां दियां वेछो भैरवी रागणी तिं तार भलाकोई रवा

तलावणामें न्नूरक्कदाफंदाकोंकरक्कूददावे आपक्काउ

उ॰
स॰२॰
प्र॰मा
२१२

212

लगीलड़ेनेरीवेमियांकविनोदरसवेषावनमैंन्ह् भैरवी॰

॥ऽ रागणीतिताला सोनावेदरदियारवेमान्हतोरहूंदानेड़ा

प्यारवे बजविनधोरीमैंन्हकलनहींपउदीमाउेलेदाकों

॥ऽ नहीमारवे भैरवीरागणी तिताला टपाटपकारमदीगांह

मैमकीघूंटपीवेमोईजानैं इश्कदागुलफलधोरीख़ुशाबो

ग्रांदीजवचउजांदीदमदीग्रांव मियांवेखुड़कोंचलानैंनी

नैंनानकरीचुपकीती भटपईनैंड़ीचाकरीखेड़ांदीधो

रीजोजांदीमैंनेड़ाभला भैरवीधी॥ऽरागणी तिताला ॥

किवींनमें उग्रदरदगवांवींयारवे रंफनमेंडावारीवेमें

रंके दिवेमेरीमियांनेरीभलाईमेलांजीवांजीवांनमा

उग्रदरदगवांवीयारवे भैरवीरागणीं॥ऽ तिनाग धीमा चिर

चंपदावावालमजीवसपयाकीसीदीशोरी सिरनेरे॥

भैरवीरागणीं॥ऽ तिनाग धीमा चंपणीदामाणवेसोणवसपउ

यांवेमेंनेडेसोणा जीनहीलगदाशोरीकीकरांवहाणा॥

वे भैरवीरागणीं॥ऽ तिनाग धीमा लालालडकेभडकेफगडके

श्रापभोवभपमेरेवडके उगामगापगडिगाथरनपरनपवा

उ॰
स॰ १॰
म॰ सा॰
२१२

213

नवनावननहोयउयडे भेरवीरामणीं ॥ऽ नीनताव जांवोनी
पीमा

समफावोउसन्कोइप्पासम्मेसाडेनालनक्षांमिलदावे

तजविनमिंदमैंडीवेकलवहुदीघणोरीलगावोनीसमघा

उसन्कोई भेरवीरागणीं ॥ऽ नीनारा माहिघावेवमाहि
पीमा

यावेकीगुजरीमाडीहालवे वीचपंगरादीवेपईवनरके

दीमेरामियांमुद्पदरमनार भेरवीरागणीं ॥ऽ नीनारा॰
पीमा

लालावालाजोवनकीसीदावेरनीरहनानोवनवालावो॰

गुलवीलालावागवहांरावेगुलविनाफलमानिदावेदा॰

गाजिगरविचकालाला भैरवीरागणी ॥ऽ धीमा तिताग ॥ सं

फामैंनून विसारी मैं मोतें ईसदबीकीती यारगुमानीश

पाह्लिगला पंजाबदि मेंशी दिल विचकारियां मानून विसा

रियां भैरवीरागणी ॥ऽ धी॰ तिताग सईयांदे मरदा मवेवूं हीन

खेतमकान चहूलतन. पंजतन पाकदी वैजारत चलि

यांगे मन मकलन हां न चहूलतन भैरवीरागणी ॥ऽ धीम ति

ताग मानिवे वंसतियार वेचीवाजरी दाशिर देवन आयान

रंजरीदा सोने हूवीवे मावग्रतेआवागावहारोंदाशोरीसोना

३॰
स॰२॰
म॰सा॰
२१५

जमजममम्रवारकवादिवेज्ञानि भैरवीरागणी पी तिताला

लाईयांवेमैन्रलाईयांकईयांत्रतंगासैलालाईयां पंचका॰

न्ननाखेतहूफावांदासांईयांह्रीरसियालेदीजाईयां भैरवी

रागणी पी तिताला सेनासेनालगदामुखेडाज्ञानीयारदा॰

फुलिसांजिषेषवहारदावे पीरीहजारगुललालाना॰

फरमानदिवेसदकेकीनीसदकीजांदियारदा भैरवी पीमा॰

रागणी तिताला ज्ञालमम्रखेडापवीदापायातेतोजोरलगा

दातरहेदारवे पीरीदीसरदारयारपवियांदाकरगईयांप

स्यिंघिरथेमाया भैरवीरागणी ॥ऽ धी तिताल कोकोंवेषण

जंद्यियांवेरंकेटानैंऽयांवे ंफणमिलियामैंजुवेसवड

ख्वभ्रूलियांघोरीफूलीश्रगनसमादियांवे भैरवीरागणी ॥ऽ धीमा

तिताल मिरजाजानवेजिंदतोलाईहूनतेंडडेनाल दि

द्नीजारेदामेलाठेलाघोविमियांगविवोंसख्वमान ॥

भैरवीरागणी तिताल मखवडसोणेदापरीपेरकरपा

यावे भलिलगदीघोलियांदिमेन भैरवीरागणी ॥ऽ धीमा

तिताल जानिजियणनैंवाज्जसाजभूलदानाह्वीमान्लें ऽ

३॰
स॰ र॰
प्र॰ म्रा॰
२१५

215

विसंभाल श्रंखियांलगघटकेदीभटकदादिलकीतार॰

कौंलतैंडेनालवे भैरवीरागणी॥ऽ पी तीननार ठगठगीले

वैंनातेरलैहेमाडेदिलनूभलाकंु पकनोदिलवारिवेते

ठगलीनावेमियांडजेनहींहोंदामिलन भैरवीरागणी॥ऽ पीमा

तिताए दिलनहींलगदावेंश्राश्रातडजेनूवेघोतोजिवें

वेमियांतुसीजींदारहियालाथवदमलोंश्रदावंगनूपार॰

उनावढंजापाणिपिवें भैरवीरागणी॥ऽ पीमा तितार॰

मिलनाहोतोमिलजाओलनकयोंकुडेलावे माढीमें

वेषवकिनेडेनितदेवायदेमनवेरांफाविर ह्रमानुर

हृदा ॥ भ ॥तीनतार वोमियांज्ञानिरभतेंउभलाकेरे
पीमा

कविनोआमिमांउडेकोलवो वंदिहोवीतेंउविनदांमो

दिगुणमीनगलेलगनेदामानुदेई मउवोल भे॥तीनतारपीमा

ज्ञलेवेदरदांनालपालेमनमेरमदांगअहूलावाले।

दोस्निकिनोवगाकहूंमेंपडगमनकेविषदानगले मेकि

मगुणउमनूममफावेदवदमेवेगलनहींमानदा अप

नीनोआपज्ञानेंपरवोवीमोदाभलावुरानहींमानदा।

३॰
म॰ १॰
भ॰ सा
२२८

216

भे॰ खवरागंतीमतार धीमा महोवतलगिवेमियांकीकरांमेंडेतेडेना

लतबीजानदानाही महमदमापियासदारंगीलेजो

रधियानांमेंठगी भे॰ खवरागंतीनतारा धीमा मैंनूवावद्यनैरावेतैं

डेवेघणदावोमेडेसांईयां कहाकरूकिनजाउसवे

रीदरदअवतोरकनेवेरा यादलागितेंरीमियांनबी

करदायादकेनाहीं दरदक्याहरयांरानेंजोरदसगरे

वांहीं भे॰ खवरागंतीनतारा धीमा नहीजानदामेंशहालअपनेंजि

यकीवीया तमसिवामेंकासेकहूंतहीसभलमतपाल

115
भे रवगगीतीननार। धीमा वेषनकारनयारनूदिलठगादिलवगाया

रनूकीहरयांहंगीवीचथलाघरानाइस्करामोईसजापा

रलगांकानगालेलगाले 115 भे रवंतीननार। धीमा वेडवरनामिवो

मेनूमेंरामयानूसलारदावे वेलचमेंलीदमनामहू

वागलेफूलांदाहावदानिवो 115 भे रवरगंतीननार। धीमा खुइकेनजा

नावेमेनूमेंरामहरमपारसपाही रेंनदीहामेंनूधा।

ननूमागनेहूगलगातोनिभाही वेमेंनछ। 115 भे रवतीननार। धीमा

पारेदिकोईल्पावीघभरांजोवनजांदारलोमाडीअवयां

३°
स°र°
भ°सा
२१०

२१७

रैंनगुजरेमान्हऽहिकांनिवेरियांदिनगुजरेमेंन्हकह्वांतें

येजबतें भै ॥ऽ ख्याणंतीनता धीमा वेदरदांदावालीन्हंसाशवोमसवाजे

मांऽवे कोईकिसिदावारिवेकोईकिसीदामेरासियां

असनिमानिदातस भै ॥ऽ वतीनताना धीमा वंपेदीशलियांवीवां

वह्वांरांदेनालभलियांवेरवमिलेनोमैंवारियां मवे

उतैंशवारीवेअजववह्वारदावशोविमियांकांनोसाहै।

वूंदेवालियां भै ॥ऽ ख्याणंतीनताना धीमा दिरदिरदिम ३ ननननः

ननननयललललयललललले लगाहै।इसकप्यारेका

जिमवमैछूटनानाहीं मिलावोमांईकुग्रपनापहि जीवन

हमारा है भे॰रवरागतिनना[118] पीमा मैं जानुमेराजीवजानैं लोकदिवं

नैंक्याजानेवो कामेकहूंग्रालिकोईनजानैंमेरीदिलरी

दादखुदाजानैं भे॰रवपीतिनतार॥[118] सांतोंकिनलावोयांवेमे

नुसांगभलीनैंनावालीमियां जंगशियालेमेनूवोरीग

ई यांमेरामियांचककवीवानैंनावालेमियां भे॰रागपीतिनतार॥[118]

ग्रामिलवेप्यारामांवलमैं ३३ मैं वी वलांमोनानालता ३

३३ तांनाविदेंदावारीमैं नावीदेंरामैंरा कुमामदकेकीती

उ॰ स॰ र॰ प्र॰ सा॰ २१८

218

सिंदमेंररे भे॰ ॥ऽ रवगगतीननारा धीमा मानवीकारनलितीफकीरीगर

जनहींकछ्नेरीयांनिमेरियां सालउसालामेंरेमननहीं

भावेकमेलखिसाउेकामरकारियां भे॰ ॥ऽ रवगगतीननारा धीमा केहि

यांरमफांलाईयांवेमेंनमेशप्यारामननमोहनसांवलावे

रसकलमयानेंशवेकिमवलछूटदाहोनमहनमयवकन्हा

ई भे॰ ॥ऽ रवगगतीननारा धीमा फोबोंनसंभालवेछ्वारमहीयरछामिम

वे रावेपमीतीमांउरीकोलवे याविचोरेवालियांवेवाव

उमाराचाकछांरमैंरी भे॰ ॥ऽ रवगगतीननारा धीमा यारनालवेदिल

दारनालवेमियांग्रासकानुतलवदिदारनालवे हतिसो

115
नांपेरीसोनागलसोनेदासोनानालसोनाग्रा भेखणगंतीननार॥
धीमा

ग्राप्छोम्हांरेडेरवोमनमोहननंददेगुमानीछेलापारवे

कांइमनहारकराम्हांरेसायबाकिनालिनासोनाकरले

115
म्हांम्हप्यारवे सिंपभेखीतीननार
धीमा
तांडेकुरबांनकीतेसोनेंन

ग्रानमिलामि वसरहीनांडिसरनमनपरतेमेंउगिंदाखु

115
सकरलीती भेखणगंतीनना
धीमा
बहार लालानाफरमानइस्क

देजनमेंपीछेरमनाइवेबातुमघोरीग्राप्दिनवहारदेइस्क

उ॰
स॰ रं॰
भ॰ सा॰
२१५

२१

नकेतामार भैरवी ॥ऽ तीन धीमा सोनियादिवह्मारवेसाडेनालकिति

मेंडेयारवे विनविकलनपरदीसनवेमेंडेयारवे भैर ॥ऽ धतीन धीमा

सोनियादिवह्मारवेसाडेनालकितिमेंडेयारवे विनवेक

लनपरदीसनवेमेंडेयारवे भैरवी ॥ऽ तीन धीमा भांदावेसाडेदि

लन्नमह्रेरमयारदेनिजोरदिगमजां वेषतासोरेडनवेतो

रमफतजनेंनादियांगमफां भै ॥ऽ रवागतीननारा धीमा दवदिम

नदीमनदीमनमननननननननदिरनाननदिरनानन

दिरनादानिदानिदोमा नाडडंतरडनननननदीयनवे ॥

115

नदीयनवेरनदियनवेनाद्रइतननदिरनाहानि भे२ वी रागनी धीमा तिताल

वोलमैंडेनालवोलवेष्यारावोलमैंडेनालवोल मैतातेरी

सोवा एकलगदेषांमैंदोलगदेषांभावनदेषांनालरोफ

115

नमेंउवारीवमेरांभनदीलाकोदीकीजोववो भे२वी रागनी तीनताल धीमा

115

वेषोनीमांउमइयांहीरांफेदाकिमान भे२वी वी रागनी तीनताल धीमा

इकलालमहोवनमवजगछंडाकयाअपनावयाविगा

ना लटकवालवलेवारीवमइकेनवेषमेरीजानपछिम

115

हवूवंदीआन भे२वी रागनी तीनताल धीमा रांफेदामैंनदामलगावेह

३
स॰ १॰
ग्रं॰ सा॰
२२॰

220

नलीनेखिंडेवालीनीकुडीए विनवेषामानुकलनहींए

उदीहीरसियांलीसंगज्ञडीए ॥ भे॰ खवागंतीननार ॥ कीवहा
115 धीमा

रांदेनालचंपेदीडावियांकावियां खिलवहियांगुल॰

जारीयां हांहांवेवेषनजावानेमेंवावियां केवडावंपाव

मेलीगुखोवफलवहीग्रपनीडमगामेजवयावामिलतो

वंदियारीयां ॥ भे॰ खवागंतीननार ॥ नाजामहरमनाजावेकवी
115 धीमा

तोसाडेमनमानवालावेग्राजा तग्रोवीदीकसममन

करममफरमफदिलजा भे॰ खवागंतीननार ॥ जीयेवलोउथे
115 धीमा

लै बल मैं नू मैं वीच लां तें ऊ नाल मैं रामा।। महो वतन लगी

तें ऊ साथ थोरी मियां ज्यों भा मित्पो पाल मैं रामा।। भे ॥५ रवराग तीन तार।। भीमा

तें ग्रा पीना ही यां मिल दा वे भूल गई हथ मैं री तें नू सा।।

तन जे हा मैं नू हो रन दिस दा नू नो म हर म दिल दा वे तं:

भे ॥५ रवराग तीन तार।। भीमा मेरा महीवाली यां वे मियां मेरी रकार हा।।

वे वाक से ही उठे मीयां हूटा हूटा करपाली या भे ॥५ रवराग तीन तार।। भीमा

मैं दी यां रन्नी वेले ठमे डा सांई यां ग्रान मिले तो मैं नी वां वे:

हु णनी ही वे गं कानघत हुका वें दा सांई वाकमे ही दा मकी

उ॰
स॰ ९॰
म॰ सा
२२१

वालावो मै ख्याणपीमातीत आदमआदमआदमदमदेदमविना

नाहीकिसीकमदे किभरवासामेंनजींदहीदाणापाप्र

नोथीनगाविचरमधी मै रवपीमातिता कोईगन्हामेंथां

कोकीथाछेमानवनापदोसायवाराजा कोटाविदेयां

थांनेहूंदीवोदेथांथांकोलगयोछेम्हाकोकानाराजा मै

साथीसमम्हावासाथवीभांणा हमपदेसीलोगविभा

राणा मै खपीमातीतारा नामलेलेलीदीकोलीनामजरा

नमीयामहरामहराहरपमल वीनाआयाकदेजा

221

पकेह्र र दमम्मे रवदह्रोष्ठाननननग्रह्रल्लमेगोयंदम्मवारख्रे॰

वादरगोल्ल भे स्वरागतीनतार ॥[॥८] [धीमा] भलीयांसाडीयावनीनांरेह्रमां

ख्रिचख्रुवदाख्रला ह्रप्योमेदीपावंमेदीकियेजेनरह्रांदा

रनीग्रणनीमं भे स्वरागतीनतार [॥८] [धीमा] घ्यारकाउढपीवोघ्याला घो॰

रीकोन्नघोमेंग्रवह्रकावह्रकाफिरेमल्लघ्यलस्त भे स्वरागतीनतार ॥ [॥८] [धीमा]

नामदारमेंन्नग्रामराईभांदावेमेंन्न नजविनह्रउग्रोरन॰

कोरेघोरीनह्रांनईजवदा भे स्वरागतीनतार ॥ [॥८] [धीमा] गलीयांवेमोए

दिमेंन्नभांदी वाजपीयागमेज्ञदरदनज्ञांएसिवेमीयांरं

३·
स·१·
प्र·म्रा
२२२

223

फेदेनालरहांदीवेकलींयांवे जावोनिकोईमइलेआवोख

वरांरांकेविनानहीभलीयां ॥भैरवरागतीनतार॥ देखोरी·

धीमा

मोरीगुइयांकजरवादेख पांवांद्दिलालिवारिवेत्रजवू

मोहावदीदेखिमिसीदेख ॥भैरवरागतीनतार॥ सीपाईमोरी

धीमा

ग्ररजमनजाइयोहोजानेवालेमें कवकीमेठाविढारि

ग्ररजकरेघांडतनीग्ररजमांडीमानवो ॥भैरवरागतीनतार॥

धीमा

वेनजावामहवमननांमींयांवेनेडीवलालकवीनसाडंमो

न तेनशोरीपकममहठमनकवतनाया गलगताहे·

कीनानीकोलकरार ॥ भैरवरागंतीननार ॥S धीमा गह्रवीनदीयावारीवथे

लशगुरानामेलोलामावेवेजपार ॥ भैरवरागंतीननार ॥S धीमा ॥ नांडेवि

ल्हुडेमेश्रवेननश्रावेकोच्छार वलापरदेश मुसलमा

केसाज्ञनेदिलनजापखेशनेमहामनाहदवंकसोवुंश्रम

नापखेशनेमन भैरवरागंतीननार ॥ धीमा वालमयांएांनालवेकम

लीश्रपीलायानीपच्छ्तावएालगीयांएोमनवेजीवेलाव

वरमह्रोनमेजमांईयां यानदेह्रामह्रोवन ह्रावमाडीलग

रहदाध्याननेजवेजीं ॥ भैरवरागंतीननार ॥ धीमा लवोनेजवुभदार

३
स॰ २॰
प्र॰ स्वा॰
२२३

223

दिलविचगुमांनीआयारमीयां चंपेजेहानेआवंगविरंगी

लाखोणाआंखांविनवेखेसानकलनेपउदासांवलमेनआ

यानि ॥ भे रवगगंतीननार। (115, धीमा) खेड़ामलाआंबांदीफांकां भे रवगगतीननार ॥ (115)

रखांमिलामीसाणायारमिले आवपहरमेनवेध्यानन

साड़ामेरामीयांमोलाकरेनमीसींदावहीयोपहिमांगमि

यांदोहाईसीणायारमि॰ ॥ भे रवगगंतीननार ॥ (115, धीमा) माहीअठगव

जावदाओमेन वंदीतेंडीयादनेरीमोगेंमांनीअहोननोदि

लववहूजावदा भे रवगगंतीननार ॥ (115, धीमा) जानीजीयरानेबाजवेमीयां

साउेमहरमदानीविसभालावे अखीयांलउघटकदीभ-

टकदादिलकीस्कलफरेयारवेमीयांवें ॥ भेरवरागनीनतार ॥ ॥ऽ पीमा

अतीवेतीयांनेदीदगाभरभाद्र चायलकीनामाउेदिलडु·

मीयांरथाकलगाषारीयांदगलीना ॥१॥ भेरवरागनीनतार ॥ ॥ऽ पीमा

किनकूकीयांवेमीयांतेंडेकांनोंवीचपहीगलाफडीयांस·

चीयांमंदरमंदरवारीवाध्यांनत्रसाउवेमीयांनाहकमैंउे

दिंजिंदलटीयां भेरवरागनीनतार ॥ ॥ऽ पीमा जाउकीनावेमीयांचरी

पलछिननहीकटदी तगविनजिंदवेकलरहदीईस्क

३°
स° १°
ग्रं° सा
१२७

224

लगाहगालिता भै रवरागतीनतार॥ (॥ऽ धीमा) मैनौंतेहीवातनमातेतसौख्यामि

लमोहतनंददेगुमानी रैंनदिनामैंनुध्यानतलाजवोख्याम

पकचरीपलकछिनकलनपरतजानी ॥ भै रवरागतीनतार ॥ (॥ऽ धीमा)

जींदमैंजोकुरवांनवेमियांतेंनक्कीतावेजार नसाशेवंदियां

भलीनहींलगदीगुणमीनरवनुमान भै रवरागतीनतार ॥ (॥ऽ धीमा) की

घीवभेजभेजमनरखणा तैंशेजदाईमैंनुभलीनहींलगा

दीरमनुनियांविचकोईनहींअपना ॥ भै रवरागतीनतार॥ (॥ऽ धीमा) दिलव

हांसंदेभांदावेमनहुवांतानुजमजम गुलफूलामियांगुल

सनविचनैरेखुलखुलबोले । चहूचह्नावागवाह्नारंगुलालं

नालमानदेनरगम धोरीवागवह्नारयारकीधोवतकारन

हमकूवंगभरदीजे ॥ भै रवरागंतीनतार ॥ऽ धीमा कंपांजीपीवेप्यालासजन

रसकेफीयनकाकीजेनधापूप्यारे चडनाजीलवंगनैमेयामी

यांचलीयांसकारम हूंगसबन्नसजदेहम हमाव्याहूंनंसहे

रांसरीहदनिह्नादवरकफुसरेमनफिदाहैएहेविसियारमे

ह्नोवाद ॥ भै रवरागंतीनतार ॥ऽ धीमा मिलजाजानिमिलजावेग्रसीतंडे

सदकीकीती चोलघुमार्डमेंउसांवालाप्राजा ॥ भै रवरागंतीनतार ॥ऽ धीमा

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ मा
२२५

225

भैरवरागतीनताल ॥ऽ धीमा ददरदीमननदीमततदीमततमततननततननततननादीरना

ननदीरनाननदीरनादानिदानिदोस्न नादद्दतंद्दततननततदी

यनवीनदीयनवीनदीयनरेनाद्दद तननदिरनादानि भैरव

धीमा ॥ऽ
रागतीनताल ह्रीरवंकेदाकीमाणवेश्रुनिवषोमस्रयोंमेडीयां ल

टकवालवलेवामेवेमुस्केनवेवावमेरीजानपुहीमदहूवांदी

श्रान वे॰ वलिनेंणानुभालवेमीपांजालमजटोयपंजा

वदीवेमेगणमीयां मोलवांदाइस्कनुअंगाशियालेजायजंग

पुणियालेदीजटलागखेंगोविरमाय ॥ भैरवरागतीनताल ॥ऽ धीमा जपताल

ह्रावेमांनभांदियांजदीयांभोंवेकालीयां च्छुंकवालेतेंडे॰

२॥ मखवपरमोहुंफमकरहीकानोंविचवालीयां भे॰ स्वरागौंतीनताल॥ ॥ऽ धीमा

हीरयांकेदानवेसर्इयावेषानी सावनमांर्इअल्लांकानीकी

होषीकिकेरगाकोर्इ ॥ भे॰ स्वरागौंतीनताल॥ ॥ऽ धीमा जिनजारेवालममेज

शेयांस्तनडीनूआनकेजगार्इ ह्राह्राकरनोरपरयांपहप

तीकरननिहुएर्इ ॥ भे॰ स्वरागौंतीनताल ॥ऽ धीमा नितादनजारानेंनारानेंडभ

लालगदाभैंन्हइकमखशवेलामी अजवाखुमारभरेकुख

रहीअगवियांनिमागिरेहरआमी ॥ भे॰ स्वरागौंतीनताल ॥ऽ धीमा प्यारावोव

श्री
स॰रे॰
म॰ना
२२९

226

रखिआमिसवेरेखोयदरायागमतेंसवेरुमानीअ उठघोरिमिलजा

रनकरिपभ्रलकरोकभाभीफेरागुमानीअ भै रवरागधीमातीनता॥ 115

तेंजीयादमेंनुहरदमदिलमेंतुजाविननन्हींकीसीजालनमदे

गुजरगईगुजरानघोरीमीयांहोयजोगीरमजगमेंरमदे भै॰

115 रवरागधीमातीनता आवोमजनहिलमिलजुलरहियेजगमेंजिवन॰

घोरारेवलमा तुमिहरीवाविहमितुमारेजियमोरामननोरा

रेवलमा भै रवरागधीमातीतार 115 मईयांवेलोयांवोउरनजावमदेलोग

विगानें मीनतकरदीमेंखेडीयांसोरागावेमांरकरेमइआवो॰

भै॰ धीमा तीता॥ सईयां वेली यां वोइ रन जा वसदे लोग विगानें

मीन तकरदी में खुशीयां सोणा वेसां इकरे मस्याबो भै॰ धीमा तीताल

वसकी तावे जिंद मेंडी नूं सहन वे जाल मयार नेहूं लगा करवे

भूलवेंगया मेरा मीयां कोई यां जिंद मेंडी नू भै॰ धीमा तीताल

मेरा मजना लीनो जी सिपाही आपनी गलां सेदोनें णावे स

लामदसले करनामज दरहे मेरा दिलवा हे तो मनरंगली॰

भै॰॥ धीमा तीताल नारनवाला वेग्रामरा में नूं तेरा देवी महारदमें

दी वे मसकल करो आसान वहनी पीर मेरा भै॰ धीमा तीताल

भैरवराग॥ श्रीमालीनताल भैरवराग श्रीमालीताल

छंद॥ भैरवीरागतीताल॥ नमामिभक्तवत्सलं कृपाल

शीलकोमलं भजामितेपदांबुजं अकामिनांस्वधामदं

निकामश्यामसुंदरं भवांबुनाथमंदिरम् प्रफुल्लकंज

लोचनं मदादिदोषमोचनम् प्रलंबबाहुविक्रमं प्रभोः

अमेयवैभवम् निषंगचापसायकं धरेत्रिलोकनायकम्

दिनेशवंशमंडनं महेशचापखंडनम् मुनींद्रसंतरंज

नं सुरारिवृन्दभंजनम् मनोजवैरिवंदितं अजादिदेव

सेवितम् ॥

विशुद्धबोधविग्रहं समस्तदूःषणापहम् नमामिइंदिराप
तिं सुखाकरंसतांगतिं भजेसशक्तिसानुजं शचीपति
प्रियानुजं त्वदंघ्रिमूलजेनरा॥ भजंतिहीनमत्सरा॥ ॥॥
छंद॥ भैरवीरागणीतीताला॥ दासजनदियोबहुभांतिउ
निकरजोरिहिमभूधरकन्यौ कौदेउंभूषणाकामसंकरा
चरणपंकजगहिरह्यौ शिवकृपासागरस्मरकरपा
विनोमसवभांतिनकियौ पुनिगहेउपदपाथोजमयना
प्रेमपरिपूरणाहियौ॥

छंद॥ भैरवीरागणीनीताल॥ जननिहिबहुरिमिलिचली

उचितअसीससबकाहूंदई फिरिफिरिबिलोकतिमातुतन

तबसखींलैसिवपहिंगई जाचकसकलसंतोषिसंकर

उमासहितभवनहिचले सबअमरहरषेसुमनबरषि

निसाननभबाजेभले॥ छंद॥ भैरवीरागणीनीताल॥

जगजानषट्मुखजन्मकर्मप्रतापपुरुषारथमहा तेहि

हेतुमैंवृषकेतुसुतकरचरितसंछेपहिकहा यहउमा

संभुविवाहजेनरनारिकहहिंजेगावहीं कल्याणकाज

उ॰
स॰२॰
म॰सा॰
२२५

२२९

विवाहमंगलसवदासहखपावहीं ॥ छंद भैरवीरागगीता ॥ मनमानिसकलवरातआदरदानविनयवडा यकै प्रमुदितमहामुनिवृंदवंदेपूजिप्रेमलडाइकै॰ सिरनायदेवमनायसवसनकहतकरसंपुटकियें सुरसिंधुजाहतभावसिंधुकिनोषजलअंजलिदियें करजोरिजनकवहोरिवंधुसमेतकोशलरायसों वोलेमनोहरवननसानिसनेहसीलसुभावसों संबंधराजनरावरेहमवडेअवसवविधिभये यहराजसाजसमेतसे

वकज्ञानिवेविनुगयलये येदास्काापविचारिकाकरि

पालवीकारुणामयी अपराधक्षमिवोवालिपठयेव॰

हृतहैौंछोध्दीदयी भनिभानकुलभूषणसकलसन

मानिविथसमथीकिये कहिजाननहिंविनतीपर

सवप्रेमप्रविष्टरामहिये हृंदास्कागणसमनवरष॰

हिंराउजननवासहिचले जंतुभीजयपउनिवेदधुनिनभ॰

नगरकौतूहलभले नवसषिनमंगलगानकरति॰

मुनीशआश्रायसमपारके उलहउलहिनिसहिनसंद

उ॰
म॰२॰
मं॰सा॰
२३॰

230

तियलीकुंहवरल्याइकै ॥छंद॥ भैरवीरागणीतीनारा॰

गंधेमहामणिमौरमंजलअंगसबचितचोरहीं पुरना॰

रिसुरसुंदरिविलोकहिंनिरषवक्षाविन्तणतोरहीं म

णिवसनभूषणवारिआरतिकरहिंमंगलगावहीं ॥

सुरसुमनवरषहिंसूतमागधवंदिसुयशसुनावहीं

कुहवरहिआनेकुअरकुवरिसुआसिनिन्हसुष॰

पाइकै अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागीकरणमंगा॰

लगाइकैं लहकौरिगौरिसिषावरामहिंसीयसन॰

सादरकहें। रनिवांसहांसविलासरसवसजननसको

फलसबहे। निजपाणिमणिमहंदेषिप्रतिमूरतिस

रूपनिधानकी॥ चालनिनभुजवल्लीविलोकनिवि

रहबसभईजानकी। कौतकविनोदप्रमोदप्रेमनजा

यकहिजानहिंअली। बरकुंवरिसुंदरसकलसषिन

लवाइजनवांसहिंचली। तेहिसमयसुनिअसीसजहँ

तहँनगरनभआनंदमहा। चिरजियहुजोरिचारुचा

रिउमुदितमनसवहींकहा। योगीन्द्रसिद्धमुनीसदेव

231

विलोकियभुङ्ङभिहनी चलेहरषिवरषिग्रहननिज

निजलोककजयजयजयमनी ॥ ॥ भैरव रागेण गीयते ॥

जागर मरि मजनिततनिद्रावल विगलद्वाचकवर्णा

मलपतिरमनाकिमपिलवोन्नररचनवचस्पथमर्णा

१ मेह्निंशंकरमेह्निप्रवहरमातवजवितमेका मा

विषयववनंकुहकायिपह्नातवनिकृतिरनेका ॥

ध्रुवपदम् ॥ मलिनिमहरविप्रवितमंतस्लवाकिलवा॰

स्लिन्टर्षांसं ननमकटयंतिवाह्निगजनेल्पभिमेनाप्ति

तिंनिजमंशं २ अलकाकुलमतिलकमनलंकृतिमि

लितकुङ्कुमलवभावं ममननवाननमातनुतेमदमरु

णनयनरुचिजालं ३ कंकणकटकहारविहारिचंदन·

कुचकुंकुमकृतविकं वज्रपिधनमदभेदमिंदनवभ

वकथमघविभिन्नं ४ श्वाशाथरशाशुलंमरुशानखपद

नलिकरमिलमनिजवजाता त्वदलिकश्राधिपरिष्टव

णिकाकिमनुमांग्रथयलमनुपयाता ५ रमणीश्वरणाल

ककरकमिदंनवहृदयकपाटं गलयकजलविंदुरपि·

उ॰
स॰१॰
प्र॰सा
२३२

232

घसमतनुतेनतमविपाटं ८ इंद्रनदीजलमध्यलानिजांगकः

सहर्षाननवंचरित्रं विषयरसंपर्कसमर्पितमिदमतिप

रमपवित्रं ७ श्रीकृविरामगुंफितखंडिकगिरिजावचन

खंडे खंडयतीदमकांडकृतांतलितांलपतनस्पृदेडं ८

गलंगलेकज्जलंचरूदयंहत्सांश्रियाकुंकुमंनेत्रेनेत्रगाला

रुणत्वमपिनेमयः समनुहीत्यमे हवकुलन्यापिसंकुचः

त्यमनोरजन्यापिहेरुपिभ्रष्यत्यमुखीनमुखसमपितनु

मुखाम्निकुर्वेनाकिं ९ वंध्येवेदमिसमत्रपत्रपत्रमुरपोकिं॰

कार्यमित्यच्युते चित्ते चिंतयति स्म मन्मापि यमेवं देवं तं स्रक्

लेवम्बुधौ शिवनिव्रजनमपरवौ वेवविषमथागतं शंभुः

स्मितमेव पीतगरलः पायादपायात्स वः ॥ ५८ ॥ इति श्री

गीतगिरीशे श्रीभोपालनोमाः स्मः सर्गः ॥ स्वंभूपालः

अथहरमागरभ्रपदे ॥ रागवि [illegible] ॥ लावल ॥ ओं हरिविहरिविह

रिहरिस्मितविनकरो हरिचरनारविंदउरधरौं स्मकदेवह

रिचरननिचितलाइ राज्यामोवोल्योयाभाइ तमकथ्योसम

दिवममममश्राइ कहोहरिकथास्मनोचितलाइ चिंताछा

उं
स॰ १॰
ग्रं॰ सा
२३२

233

डिभजैौनङ्गरा१ सूरतनेहृविकेगुनगाइ॥ ॥रागकेदारा॥

मोर्इ रसनाजोहृरिगुनगावै नैननिकीछविर्यहैचतुरता॰

जोमुकुंदचरननचितलावै निरमलचितनोमोर्इ श्रीवोकु

लविनाजियश्रौरनभावै श्रवननिकीजयहैअधिकाईव

नरमकथामृथारसप्यावै करनेइजोसुमामहिसेवैचरननि

वलवृंदावनजावैं सूरदासजैयेवलनाकैंजोहरिजुसोप्री

तलगावै॥२॥रागसारंग॥ ॥जयवनेरसनारामकह्यौं

मानोधरमसाधसववैसौपदकवौंमंथोंकहारवौ ग्रगठ॰

प्रतापज्ञानगुरुगमनितेंदायिमथहुंनजोमर्हौं साधकौंसा

रसकलसृष्टहनुमानसिवज्ञानगर्हौं नामसतीनभईजा॰

गनेकेलेआनंदद्वष्टहरिकियौ सूरदासथनिथनिवाहिप्रा

गीजोहरिकौंवनलैनिवायौ॥ १॥ रागमारंग॥ गोविं

दस्रोपतिपाइकहामनञ्चननलगावै गोपालभजनविना॰

सृष्टनहींजोवहंनिसथावै पतिकोव्रतनजथरैनियासो

सोभापावै आनपुरुषकोनामलेनतजियपतहीलजावै॰

गनकातेउपजैसुतकहौकाकोकहावै वसतसुरसरी॰

५
स॰२॰
प्र॰सा
२३५

234

तोरमंदमतिकूपपरनावै नेमैंसखानकुलालकैपाछें॰

पाछैउरढियावै आनदेवहरितजिभजैसोजननमगंबावै

फलकीआसाचितमयरिसोवृक्षववढावै ॥ रागभैरो ॥

हरिहरिहरिहरिसुमरनकरौ हरिचरणारविंदउरधरौ

रैं हरिचरननअंबरीसचितलायौ विषमखापतैंताहि

बचायौ विषकौनायफेरपठायौ सकल्पमौयहक

ह्रिसमकायौ अंबरीसराजाहरिभक्त रहैसदाहरि॰

पदअनुरक्त अवनकौरतनसुमरनकरै पदसेवन॰

श्रवनउरधरै वंदनदासपनसौकरै भक्तनसुषहिभा॰

वश्रनुसरै कारनिवेदनसदाउचारै प्रेमसहितनवधा

विस्तारै नौमीनेमभलीविधिकरै दसमीकोंसंजमवि

स्तरै एकादसीकरैनिराहार द्वादसियोंपोषैलेआहस

पतिव्रतानानारूपकीनारी अहनिसपतिकीआज्ञाका॰

री इंद्रीसुषकोंदोऊत्यागा धरैसदाहरिपदअनुरागा॰

ऐसेविधिष्टजेहरिसदा हरिहितलावैंसबसंपदा ग

नकाजनककुमननहिंधरै चक्रसुदरसनरक्षाकरै॰

उ॰
स॰२॰
प्र॰सा॰
२३५

235

चरीद्वैकह्यादषीजानि रिषम्रायौकियौल्टपमनमान कह्यौंभो

जनकीजैरिषयार रिषकह्यौंआवतह्यौमेन्हारै यह्नकह्नकेरिष

गयेग्रन्हान कालविनायोकरतग्रप्मान राजाकह्यौंकह्याग्रवकी

जै रिषकह्यौंवरनोदकलीजे राजानवकरिदैषेत्तान यारिष

होइनरिषग्रपमान लैवरनोदकानिजव्रतमाय्यो अैसीविधि

हरिकोंग्रायायौं इह्निअंतरउरवासाग्राए अंवरीषसोंवचनसुना

ये सुनराजातेरौव्रतटह्यौं कयौंकरतेरभोजनकरै कह्यौंल्टप

तसुनायेरिषयार मैव्रतह्नितयह्नाकियोउपार वरनोदकले

रतनमतपायौ अवलौंअन्नतनमांषमैंअहौं रिषकरक्रोधयपहज

टाउपावे सोकृत्याभईज्वालाभावे जवन्दपशैारटष्टउनकरी व

कमदरसनसोसंहारी पुनिरिषहूंकौंजारनलाग्यौ तवरिषा

आपनजीलेभाग्यौ ब्रह्माकब्रलोकहूगयौ उनहूंताहिअभय

नहीदयौ वहुरौंरिषवैकुंठसियौ करतनमनामयहूवचनम्हना

यौ मैंअपराधमककोकियौ वकमदरसनअतिदुषदियौ और

कहूंमैंठौरनपायौ अमहरनसरनजानकैआयौ महाराजअवरछा

कीजै मोकोजरतराषमभलीजै हरिजूकहींसांम्हनरिषराइ ॥

उ॰
स॰ १॰
प्र॰ सा॰
२३९

230

मोपैतहितिषोनहिजाइ तेअपराधभक्तकोकीनों मेंनिजभक्त

निकेआधीनो ममहितभक्तिसकलसुषतजें औरसकलतज

मोकोंभजे विनममचरननउनकेआसा परमदयालसदाममस

सा उनकीमनताहीसवारि तांतेंकहौंउनहीसोंजाइ सो

सांप्राजाय

तिहीउषलयौ विषममहावरतेफिरगयौं विषमराजोहुतवरष

विनायौ पैंभोजनतौडूंनसिरायौ अंबरीषपैनवरिषआयौ ॥

हाथजोरनवसीसनिवायौ विषकोदेषन्दपकसौंयाभाइ लेहु

सुदरसनयाहवचार आप्तगाहरिहरिभक्तपियारो तांतेअब

याकोमनजानै चक्रसुदरसनसीतलभयौ अभयदानदेखा·

मालसौं पुनन्दपतिहिभोजनकरवायौं विषन्टपसोयहवच·

नसुनायौ मैंनहींभक्तमहातमजान्यौ अवमैंभलीभांतपहि·

चान्यौ हकराजासोंयोमसुजायौ सुरदासन्यौहीकहगायौ·

जोयहलीलासुनेसुनावै सोहरिभक्तपावसुषपावै ८ रा

गगूजरी फिरतफिरतवलहीनभयौ कहाकरौंरहिगाससकुपा·

निधिजनपतपकोअभिमानगयौं धायौदरसनमैलविदिसदिस

तहांचक्रहचाहिलियौ जाच्यौंसिवविरंचसुरपतिसवकाहू·

सू॰
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
२३०

237

नैकुनसरनदियौ भाज्यौंफिरयौंलोकलोकनमैंपत्रपुरातनपव

नहूयौ सूरदासप्रभुदीनजानप्रनतवनिजजनसन्मपदयौ॰

रागभैरौ॥ स्वकदेवकरयौंसुनोभरनाहि गंगाज्यौंआईभवमाहि

कहौंस्वकथासुनोचितलाइ सुनैसुभवतरहरिपुरजाइ स

ससजनतसगरजवढयौ इंद्रश्रसकोहरिलेगयौ कपिलाश्रमले

ताकाराख्यौं सगरसुतनतवन्तपसोभाख्यौं हमसवलोकमां

हिफिरआये घोजश्रसकोकहूंनपाये अन्नाहीरजंनांहिंपाताल॰

जाइनहींभाख्योभूपालतिनकेतिनकेखोदेसगरभए कपिल

आश्रमतेपुनिगए अश्वदेषकसौंथावडुथावडु भागनाइमत

विलवनलावडु कपिलकुलाहलसुनअकुलायौ कोपदृष्टि

करितिनिनहिंजरायौ सगरनृपनजवयहसुपपाई अंशुमानकों

दियोपठाई तिनिकपिलस्तुतिवहुविधिकीनी कपिलताहि

यहअज्ञादीनी जगकेहेतअश्वरहलेडु भ्रातनमारेभएसुषह

सुरसरीजवभूउपरआवै उनकोअपनौंजलपरसावै तवहीं

वुनसवकीगतहोइ ताविनऔरउपायनकोइ अश्वल्याईजगपू

रणकियौ अंशुमानराजापुनभयौ अंशुमानपुनराजविहाइ

उ
स॰१॰
प्र॰स॰
२२८

238

गंगाहितकियोतपजाइ याहीविधिदिलीपतपकियौ पैगंगाउन्न॰

वरनहीदियौ भागीरथजववहुतपकियौ तवगंगाउन्हदरसनदि

यौ कह्योमनोरथपूरनकरौ पैमेंजवआकासतेपरौं मोकौंकौन

धारनाकरै त्वपकह्यौसंकरतुमकौंधरै तवत्वपसिवकीसेवाकी

नी सिवप्रसन्नहोइआज्ञादीनी गंगासोंत्वपआइसुनाइ तवगंगा

उन्हमैंआई सातसहस्त्रसगरकेपुत्र कीनेसरसरीसरनपवित्र

गंगाप्रवाहिमांहिंजोन्हाइ सोपवित्रहैहरिपुरजाई गंगाइहवि

धिभूपरआई त्वपमैंतुमसोभाषसुनाई सुकत्वपसोंज्यौंकहिस

३॰
म॰रं॰
प्र॰सा॰
२२५

239

कुलाहलगरस्तकणहराविनी ॥ २२ ॥ इति भैरवीस्तवम् ॥ अथ णमक

ल्लोणगणीलिख्यते ॥ अथ ध्यानम् ॥ हेमप्रभाभास्वरभूषणाच्चनीलंनि

चोलंवपुषावहन्ति ॥ कांतेसमीपेकमनीयकंठामानोन्नतणमक

रीमतेयं ॥ इति ध्यानम् ॥ अथ मंत्र ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं नमः ॥ अथ प्रीति ॥

येवनांशाग्रहंन्यासंस्थणिरामकलीमता प्रथमामूर्छनेन्नातेयारहे

कारुण्यपुन्यते भैरवगुर्जरीटोडीत्रियोगतिणमङ्गीभवेत ॥

प्रातकालीप्रगीयन्तेभैरवप्रियवल्लभा प ग सा

रे म ग प ध म ग म ग

रे सा प सा म म सा ग प प

म सा सा रे रे सा सा प प

सा सा नी रे सा प नी प म

प प म ग प प म प सा

सा नी सा नी प प म ग रे सा॰

रागरामकल्लीगीतगोविंदः॥ताला॥ चंदनचर्चितनीलकलेवरपीतवसन

वनमालीकेलिचलन्मणिकुंडलमंडितगंडयुगस्मितशाली ॥

पीनपयोधरभारभरेण हरिंपरिरभ्य सरागं गोपवधूरनुगाय

३
म॰२॰
प्र॰ष्ठा॰
२५

240

तिकाविदुदंचितपंचमरागं २ कापिविलासविलोलविलोचनखे

लनजनितमनोजं ध्यायतिमुग्धवधूरधिकंमधुसूदनवदनसरोजं ३

कापिकपोलतलेमिलितालपितुंकिमपिश्रुतिमूलेचारुचुचुं

वनितंववतीदयितंपुलकैरनुकूले ४ केलिकलाकुतुकेनचका

चिदमुंयमुनावनकूले मंजुलवंजुलकुंजगतंविचकर्षकरेणदुकूले ५

श्लिष्यतिकामपिचुंवतिकामपिकामपिरमयतिरामां पश्यतिस

स्मितचारुपरामपरामनुगच्छतिवामां ६ श्रीजयदेवकवेरिदमद्भु

तकेशववकेलिरहस्यंवृंदावनविपिनेललितंवितनोतुशुभानियशस्यं ७ ॥

अथकल्पद्रुम॥ रागरामकली॥ मोहनजागिहौंवलिगई ग्वा
लवालसववडारवनाछेवेरववनकीभई पीतपटकरिहरसखवतेंछा
डिदेअरसई अतिअनंदितहोतजसुमतिदेखिइतिनितनई जा
गेजंगमजीवपसुखगछैरवृजसवई सुरकेपभुदरसदीजेअरुन
कीरनछई॥ रागरामकली॥ भोरभयोजागोहोललनाक
हातुमअजहूंरहेहोसोइ पीअोधारअपनीयारीकीजैसेंदेहुवल
होइ वेनीगुहूंदेउटगाअंजनमसिविंदुकामुषधोइ हूंसतवदन
सखवसदननिहारोंनान्हींनान्हींदतियांदोइ देरनगवालवालखे

३
स॰ग॰
प्र॰सा
२४।

लनकोंगोरंभनहुहोर व्रजजनमनवशीमुखदेखनप्रतिआरतम

वकोर ३ उठिवैठेलपगोदजसोदासुंदरसुतनिहुंलोर रसिकप्रीत

मलगिगवेंजननिकेमांगनरोटीरोर ॥२॥ रागरामकली मैयाते

रेलालकोमुखदेखनहोंआई कालिमुखदेखिगईदधिवेचनजा

तहिगयोहेबिकाई दिनतेंदूनोंदामलाभभयोगाइनिवछियाइ

नाई आईसभेयंभायसाथकीगिरिधरदेहुजगाई सुनितियवचन

विहसिउठिवैठिनागरिनिकटवुलाई परमानंदसुजानीग्वा

लिनचलीसंकेतवनाई ३ रागरामकली लालको

२४१

दरसनभयेसवेरो वह्नतलभपाउंनीमाइ दह्योविकेंह्नैमेरो

गलीजुसांकरीएकजनीकीभेटभयोभटभेरो अंकदेचलीस

यानीग्वालिनहरिकोंवदनफिविहेरो मातहीमंगलभयोस

खीरीकैहैसवकाजभलेरो परमानंदप्रभुसवनिरघततमिटो

भवसागरफेरो ५ ॥ ॥ क उगामगचलतिश्रव

रहीभांति नवनिकुंजतेंएथाभांमिनिअरुणउदेवरजाती २

तिकीकलिसुमिरिस्रदगनैनैंनीवारवारमुसकाती वदनजोति

तेसुनिरीभामिनिमिटतउडपतिकीकांती निसकेचिन्हसकलढ॰

सू०
स० १०
प्र० सा०
२५२

252

देखियतहैंकामकेलिकुलकाती भीतमम्रागारतननसंपुटकुचभे
टिजगईछाती नंदकुमारसरनसंगलीनैंसरदविमलकीराती कू
सदासगिरिधरपियकेसंगग्रथरसुधारसमाती ॥५॥ इतिकल्पद्रुम॥
अथसूरसागरः॥रागरामकली॥ मेरीतवकाजिनचाछौंत्रिभुवनपतिराई मो
देषतयाहूनउरेमेरीकाठकीनाइ मैंषीवीहीपारकौंतुमउलटमगा
ई मेरोजिपयौंहीउरैदैमतिहोइसिलहाई मेनिरवलमेंवलनहीं
मोग्रीरगाछाऊं ममझूठवियाहीलगैपाऊंप्रेमीकहांपाऊं मेनिरय
नमेंरैंपननहींपरवारजनेरा मेभलछाकपलासकान्हमवांधेकेरा
हि

बारबारश्रीपतिकहैंधीवरानहिंमानैं मनपरतीतिनआवहीउतरी

होंजानैं मैंरोंहीजलथाहिहैचलोतमैंवताऊं सूरदासकीविन

तीनाकैंपडुचाऊं ॥रागरामकली॥ गोरसकोनिजनामभुलायो लेहुले

हुकोऊगोपालहिग्वालिनगलिनयहमोबलगायो कोउकहैस्या

मकूसकहिकोउआनंदरसनाहीहमपायो जाकीसुधिनन

कीकछुआवलेहुदहीयहतिनैसुनायो इककहिउठतदानमां

गतहरिकहूंभरकौतमहिंचलायो सुनोसुवनसुनीजोवनमद

नापरस्यामसमहारसघायो ॥१॥ ॥इतिसूरसागरेरागरामकली॥

ॐ
स॰ १॰
प्र॰ सा॰
२५६

243

अथ भैरवमतरागणी टोडी लिख्यते॥ अथ ध्यानम्॥ तुषारकुन्दोज्वलदेहयष्टिका स्मी

रकरपूरविलसद्देहा विनोदयन्ति हरिणं वनान्ते वीणाधरा राजती

टोडीकेयं॥ इति ध्यानम्॥ ॐ ऐं ह्रीं नमः॥ अथोत्पत्ति॥ गांधारांशग्रहं न्यासं कवि

तथैव नरी विन संपूर्णा टोडीकाज्ञेया आदिज्ञामे प्रगीयते॥ रागणी

टोडी॥ सुरगमनताल चौताल॥ प नी सा ग रे सा म ग रे सा

नी प प प नी सा रे ग म ग रे सा॥

मम पप प सा रे सा ग रे सा म ग रे सा सा

नी प नी प प प प म प म ग ग म ग रे ग

रे सा नी ध नी सा ।। ।।तोडीरागतालि। चौताल।। ग रे सा नी

ध सा ग सा म ग रे सा नी ध रे सा

ग ।। ग म ध नी सा रे ग म ग रे सा नी

ध प म ग ।। ग ग म म प ध सा नी सा

ग रे सा म ग रे सा नी ध प म ग ।।

ग ग म म ग ग रे सा प म ग सा

ग रे सा नी ध ध नी नी ध प प ध नी ध प

ध प ध ग नी ध प म प ग रे सा नी

उ॰
स॰र॰
प्र॰सा॰
२४४

244

प ग ॥ टोडीरागणि ॥ चौताल ॥ टोडीरागणीअलापनगावतवीणावजाव

तउपवनमनगानरिझावत ॥ गांधारस्वरग्रहप्रथमसमूर्छनासंपूर्णि

तांनस्मनावत समतांनवाइसोअकईसउनंचासकोतांननाकोंव्यो

रोजनावत उज्वलवसनपहरकेसरकरस्तुरचर्चितरतननआभू

षनतांनसेंनतांनसाजत टो ॥ डीरागणि ॥ चौताल ॥ मेरेमननर हरिना॰

मजिनरच्योअखिलधामकामक्रोधनजलोभवह्योजानसंसार

जिनरच्योसृष्टिमनस्वरूपानारनिरंजनसोईसाकारनिशदिनज

नपलेश्रीसुगाव दीनवंधुदीनानाथकाठनउरखदंदफंदताहेचरी

पहलाछिनन विसार तांनसैंनकहेनिरमलरहीपभजीपभगवान

मनुषजनमनहींवारंवार ॥ टोडीराग ॥ चौताल ॥ मेरेतोकुसलनामगाथा

रजिनरच्योजगपसार लोभग्रसनाकामक्रोधनजोजंजार जि

नरच्योआदिग्रंतभववर्ग्रकामनईलोक निरंजनसाकार निश्चय

करजपोश्रीहरिसुरार जगजगभककहेनम्रवतारलेतहैभक्त

नमानगाथार वेजुवावरेमभकोचरनशरनगहीपमनुषजन

मनहींवारंवार ॥ देश ॥ टोडीतालपमार ॥ अवकोकिलपुममवाईअवगो

कुलपुममवारी पियविदेसमोहेघाईअकेलीविरहनजानस

उ॰
स॰२॰
प्र॰सा॰
२४५

245

नाई अबकीकहीनजानजैसोउनकीनीवोरीकरतचल्हाईमो क

हूककहूककउरपावतअनहीहियमेहूककवल्हाई यहसोतमोरपा

छेपरीहैकहाकरुंहूंमाई वोलवोलवानेंजवलागततनमनवे

धनआई वीनेवसनतआयोहैफागुनदेनकामअधिकाई यह॰

वेरनमोरेपाछेलगीहैसदारंगहोइमहाई वोलवोलवानें॰

जिमिलागततनमनवेधनआई ॥१॥ रागतोटोडीधीमातिताला ख्याल ॥

अथरयरेवनवांसरीवजावैकान्हमकुटसीसकटपीतांवरसो॰

हे सांवरेअंगछोटानीकीतांननमनायसवहीकेमननमोहे ॥

रागतोडी॥तिताल॥अथस्रसागर॥गोपीजनहरिवदननिहारत कुंचतअ-

लिकविथुररहीभूपरतापरतनमनवारत वदनसुधासरसीरुह

लोचभ्रकुटीदोउरषवारी मनोमधुपमधुपानहिआवतदेषड

रतजियभारी इकइकअलककलटकिलोचनपरइहउपमाइकआव

त मनोपन्नगीउतरगगननैंदलपरफनपरसावत मुरलीअधर

धरैंकलकरहरतनमंदमंदसुरगावत सूरस्यामनागरिनागिनिके-

चंचलचितहिचुरावत॥इतिसूरसागर॥गुर्जरीप्रारंभः॥अथध्यानम्॥ॐश्यामास्तु

केशीमलयद्रुमाणां मदजलमनुपल्लवतल्पमध्ये श्रुतिमूराणां

दधतिविभागं मंत्रिमुखादतिएगुर्जरीयं मंत्रः ॐपंश्रींनमः ॥

ध नी सा ग रे सा नी ध प म ग रे सा ॥ म ध

नी सा म ध ग सा सा नी ध म ग रे सा। मगगुरे

धेवतांशग्रहन्यासं संपूर्णा गुर्जरी मता
सप्तमे मूर्छना तस्या बहुल्यात ह्यनिश्रुता

नीनसाधाराराग्धारननधारा धनधनसोनरारागमनधारा ॥ रागगौजरीनिनाग॥

रामकलीनोतिसंयुक्ता वाटेमिश्रता पुनः
गुर्जरी जायते विद्वत्सु आदिया सप्तगीयते

हमरहमरमेरेमनरामनाम रामरामहमरहमररमनधरधरमनसग

रेनरहरधाम ॥ गुजरीरागणी ॥ चौताला ॥ पग्राजभोरहीआपहैकांन्हगुर्जरी

केधाम समम्हरमोगावतमोननमुरलीमैंगुर्जरीनाम उरपतिरप

लागगटग्रानकवोनम्वरांनकश्रोडवाबोरवमोविफावननाम ॥

तांनसैंनप्रभुनितप्रतआनंददेतघरघरगोकुलगाम ॥ गुजरीरागणी ॥ चौता

ल ॥ आदिपरब्रह्मदेवनदेवनारायण निरंजननिरंकारसोईसाकार

वाहीतेत्रइलोकरचनारजसततमपंचभूतवारनेअठाईसततवज

गतपसार वहीआदिवहीअंतवहीचराचरमथभरपुरसहीसंसार

वेतप्रभुकरैसोहोयकरताअकरतासकलकोटकोटब्रह्मांडएक

एकरोमप्रतिताहेमजोवारंवार ॥ ॥ इतिकलद्रुमः ॥ जुगलीला ॥ रागगुजरी ॥

अथरूपसागर ॥ कुंजभवनतेनिकसभीरहीस्यामास्यामघेरे जलदनवी

नतरुनिदामिनिमिलिवरषिनिसाउची गोरस्यामतननीलपीत

पु॰
स॰२॰
म॰सा॰
२४१

247

पटआलसचितहियरे स्रमजलबूंदकहूंकहूंउडगनवादरमैंनिकरे
भूषनविविधछूतेमदवारेअंतरसउमगिछके काजरअधरनवोरनै
तरंगअंगअंगफीलभरे प्रेमप्रवाहछूटीमनोसरता टूटीमालगोरे
सोभाअमितविलोकसूरप्रभुनाहीजानतटरे ॥३॥ रागगौरीजतितिताल ॥
मुरलीलईकरतेंछीन नामसंभेकछविकहीजातिनचतुरनारिनवीन
कहतसुनिसुनिस्यामआगेमोहदेहुसिखाय मुरलीपरमुखजोर॰
देहुअरमपरमसवजाइ कुसलहरिननादसुखलनप्यारीरिसकरिगात
बारबारहिअधरभयेनंदलाल सीमधरतिचरननितविसुनिसुनि

पियकोरूपनिहारति ॥ स्वरदासप्रभुमानथयौंहठदिधिपरतीनषनी

विदारत ॥१॥ इतिसूहवरागः ॥ अथकल्पद्रुमः ॥ आसावरीवरननम् ॥ ॐ अथध्यानम् ॥ ॐ

श्रीखंडशैलशिखरेशिखिपिछवस्त्रामातंगमौक्तिककृतोद्यमहा

रवल्ली आकृष्यचंदनतरोरुरगंवहन्ति सासावरीवलयमुज्वलनी

लकान्ति ॥ अथमंत्रः ॥ ॐ ह्रींक्लींनमः ॥ इतिमंत्रः ॥ नीषादांशाग्रहंन्यासंकवित

गंधारस्वरते द्वितीयप्रहार्द्धेदिवसेगीयतेसासावरी गंधारदेशी

तोडीख्यमिश्रितत्रिपर्वसुता ॥ आसावरीजायतेयत्रनीसारेगामपधस्पधः ॥ इतिआसा

वरी ॥ आसावरीचौताला ॥ नि सा रे म नी प नी सा रे म नी

उ॰
स॰ १॰
प॰ सा
२५८

248

प प प सा नी प प म प नी सा नी प प म ग म प नी

सा नी प प म ग रे सा ॥ म प प रे सा नी सा

नी सा नी प नी सा ग रे सा म ग रे सा नी प

प म प प म ग रे सा म ग रे सा नी प ॥

आसावरी चौताल ॥ प प म म रे रे सा रे रे रे नी नी सा

रे म प प प म ग रे रे सा सा नी प प

म प प सा रे रे सा नी नी प नी रे सा रे

सा ॥ प प सा प प प प प सा सा सा सा॰

प प नी रे सा रे सा नी प प म म रे रे म प प नी

सा· रे म ग म ग रे सा नी प प म प नी नी

प रे रे सा नी नी प नी रे सा म ग रे सा ग

रे सा ॥॥ इति सगमः ॥ श्रासावरीरागेणगीयते ॥ कलयतिकचिरुचिरंसक

लंकंविरहिचितामिवचंद्रमशांकं १ भूतपतेभूतपतेरविघाति

गिरिजातादाहवने ॥ ध्रुवपदं ॥ मलयपवनभुतकमलसधूलीगिरि

नाहृदिपिन्दवनगतधूली वलतिचविश्लथतरपदवारावि

वनुग्रहकृतविविधविकार २ मदनर्द्रवश्रुक्षमलितमण्डणालं

उ॰
स॰ २॰
प्र॰ सा॰
२५५

247

नुदनिशामलभुजगारवालं ४ स्मरमथयोरथिमिलदिकनालं
मनुलेशैवलमगाउहितालं ५ स्वहशादिशिदिशिमधुकरचि॰
त्रं चित्रयतीवशिवोसविचित्रं ६ व्याधपतिकव्रिरिकेवकरा
ला रत्ननिमहमामनुङ्कीकसमाला ७ श्रीकविरामरचितमिति
गीतं कुसुमांजलिविहरमुपनीतं ८ पलाशांवापज्याविशा
मशारः कुंदकलिकामथलीमलीयत्रिजकरहच्छीकाश्चतरा
ततोभिन्नाभिन्नासुरमनोसिद्यमदनोविपते॥ तोमथशकृश
ततंभगीमुरलीं १ शंकेशंकरशीलदीधितिकलाः काकोलको

लामयीरेनाः पंचदशांबरेम्टतमयीन्वडालगामेकिवां यज्योन्त्नागर

तूर्णातेवगिरिजासद्यः परांनिहितंप्रसंगमरणोनवालिकशाशाका

शंविविंत्याश्रुते २ प्रणायकलयंहकालेयातिवामेमकुण्णतरदिशि॰

गिरिजांशावहिनारीष्परोयं कृतकनकहृतेदतिणोन्दविणांस्वपद

मनुवलयनवःपांकवःपांकरोत ॥॥ः॥ इतिगीतगिरिशेतुर्गादशानिर्दोषीनामषष्ठ

मः सर्गः ॥ कल्पद्रुमः श्रासावरीचौताल॥ मलयागिरिकेवनमेंवनिताहरिवल्लभ

आनंदभावभरी हारहारगरेगजमोतीनमोरपाखोवनमारीकरी

चंदनकेद्रुममेंगाहिनागिनिकेलरमेंगरवानीखरी निजदेहके·

उ॰
स॰ २॰
प्र॰ सा॰
२५॰

25

दिपतिह्रींसेंआसावरीदीपतिस्यामघटाकीछरी ॥॥॥ आसावरी॥ चौताल ॥

अंजनपहरिचोरछविसेंविराजीअतिवनीअंगअंगस्यामनीलवदनह

हावनी नागेनिलपटीरहितनपरचंदस्यवधीतलशिवेरजलआ

निमनभावनी चंदनकोखोरकिपवैदिठुमतानिवामनिमथरेगमप

ह्ररमेंआनंदवछावनी हगोजातिनिषादभवनरतिहेमदिनरेढ

पहरआसावरीकुंगावनी ॥ आसावरी॥ चौताल॥ मलयागिरिनीविफरेफरना

वनकीछविदेखतिआनंदभारी करमोलिपटायविहमकरेतह

चंदनतेंगहिनागिनिकारी गजमोतिनकोंउरहारवन्योंपिविपि

छिनकी सिरमो भिनसारी ॥ ॥ इति कल्पद्रुम ॥ आसावरी ॥ रूपताल ॥ ढोलन आ

वरे आवरे तजवे वनदामैन वावरे तफ विनमफेक कुन हा वरे

औरस्य रनउ विहंभा वरैन दिना मफे दरम वे वावरे ॥ ॥ आसावरी ॥

रूपक ॥ आनंद नरसदानी तंजाल पाभवानी बुधदानी मग्रको दंगनी

अतबुध हृदेम यानी मुअमथमग ढजो जानि मनमातनमन जि

यमें जानी ॥ आसावरी ॥ धीमा तिताला ॥ दे खिपदरवार मोनदीनकों दीमनन्यास

तहो भरे जेतो हीयावततें फल पावत प्रमो रहम करम नमकोंक

रीम नहो करी ॥ आसावरी ॥ आडा ॥ चौताला ॥ माई री जाहरपीर मीरां जाहरपीर।

५
स॰ र॰
प्र॰ सा॰
२५।

25

मेरांसाहवालमहोयसफल दीदारदेखिनोसकलपापहरतओरदी

नकोवल ॥ आसावरी ॥ आडा ॥ चौताल ॥ परीआलीरनलाननसकोचनवोलन-

सकों ससिकायतनसवकोंयहविथजियतेंअकेलीवेकों ॥

आसावरी ॥ एक ॥ वंसीमेंसामममगावावोलवोलसुनावे सुनरीवीरधीरन

धरोजीविनदेखेनभावे ॥ ॥ आसावरीजततिताल ॥ पंछीनदाणीआवो-

दिलवरमैंडावे प्यारेनमेंखिडीवडीकांवघननजांएणावेरावेआस

नएमैंरेसामणोमैनेरीतंमेंडावे ॥ ॥ इतिकल्पद्रुमः ॥ अथसोरसागरः

॥ आसावरी ॥ सिवशंकरहरिकोंफलदीनो पूरणपापननामफलमे

वाघठरस्तग्ररपनलैलैकीनो पाऽपरीज्ञवतीसवयह्मकह्निय॰

न्यधन्यत्रिपुराति त्ववनह्निफलह्नवनह्नमपायोनंदह्नवनगिति॰

याति विनयकरतसविनावममरकोपयश्रंज्ञलिकविज्ञोति॰

ह्नवस्नामपतित्वमनेपायोयह्निकह्निवरह्निवह्नोति॰ ॥रागश्रमाव

री॥ श्रानंदश्रेमउमगिजमोहागोपालवाऽखिलावेरी मस्तयगमिल

ह्नक्नतकीमेमनमैंमोटववज्ञावेरी शिवमनकादिह्नकादिग्रस्ता

दिकघोजनतश्रंननपावेरी गोद्दलियेजह्नदाड्डल्मावेन्तनरेवोल

वुल्लावेरी कवह्नंतालवजावनगावनरागश्रन्नपमल्यावेरी क

४॰
स॰र॰
म॰मा
२५२

25

बहुंतालवजावतगावतरागअनपमल्यावैरी कवहुंकरपल्लव

जुगहावतअंगनमांफहिंगावैरी मोहेसुरनरकिन्नरमुनिजन

नरविरथनांहिचलावैरी मोहलईव्रजकीवनतांजिंहिंसुरदा

सजनसगावैरी॥इतिसुरसागरः॥आसावरीनिनाए॥ॐशिवशिवशं

करहरहरमहादेवभोलानाथपशुपतिपार्वतीअर्द्धंगी अकना

शीकैलासीवनवासीहंस्वामीनाथशंभुस्वामीदिगंबरजैजोगेश्वरजो

गेश्वरसुरसतेश्वरमहेश्वरसुरनरसुरदेवनदेवआदिदेवअनार

पुरुषनिरंजनभवभयभंजनतुवंदंदजमफंदकाटनगोसांगे

मेली कंठ खपर डवरु पिनाक कर त्रिशूल धजा सेत फरहरात सिंगी

नाद फुंक त अलख जगा प भस्म भूषन व्रषभ वाहन वाघंबर वसन

श्मशान पन्नग राज तनील कंठ त्रिलोचन मुंडमाल शीश सोहे चंद्रमा

लसीस सीस जटा जूट गंगे रूप रंग कौ भसम दीजे दरस सरसरस

वेसंपत आनंद रिद्ध सिद्ध तान ध्यान भक्त मनक ताल श्रीछत्रनाद वि

ग्या वरस्र्व वरगुनी नपरसंगे ॥१॥ ॥ इति श्रीमहावीरागणी ॥ कल्पद्रुमः

अथ तुलसीरामायणे मंगलाचरणं ॥ भैरवराग तीनताल ॥ वर्णानामर्थसंघानां रसानां
छन्दसामपि ॥ मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भैरवराग तीन
ताल ॥ भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति
सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ भैरवराग ॥ तीनताल ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शं
कररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ भैरवरागतीनताल ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वर
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं
कपीश्वरौ ॥ ४ ॥ भैरवरागतीनताल ॥
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ भैरवरागतीनताल ॥ यन्मायाव
शवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा ॥ यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं र
ज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादःप्लवमेव भाति हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां ॥ वन्दे
ऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ भैरवरागतीनताल ॥ नानापु
राणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ॥ स्वान्तः
सुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७
भैरवरागतीनताल ॥ अथ भाषा ॥ सोरठा ॥ जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिब
र बदन ॥ करउ अनुग्रह सोइ ॥ बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥ मूक होइ बाचा
ल पंगु चढै गिरिबर गहन ॥ जासु कृपा सु दयाल ॥ द्रवउ सकल कलि
मल दहन ॥ नील सरोरुह स्याम ॥ तरुण अरुण बारिज नयन करउ सो मम
उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ कुंद इंदु सम देह उमा रमण करुणा अ
यन ॥ जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ बंदौ गुरु पद कंज ॥ कृ
पा सिंधु नर रूप हरि ॥ महा मोह तम पुंज ॥ जासु बचन रबि कर निकर ॥

३॰
स॰ २॰
प्र॰ सा॰
५

अथ अष्टपदी गीतगोविंदः॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय॥ इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रु
मं राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः १ वाग्देवताचरितचित्रितचित्तस
द्मा पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतं एतं करोति
जयदेवकविः प्रबंधं २ यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलं
मधुरकोमलकांतपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीं ३ वाचः पल्लवयत्युमापति
धरः संदर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुते शृंगारोत्तरसत्प्रमे
यरचनैराचार्यगोवर्द्धनस्पर्द्धी कोपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविक्ष्मापतिः ४ माल
वरागेण गीयते॥ प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदं के
शव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥ ध्रुवपद॥ क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे २ वसति
दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलंककलेव निमग्ना केशव धृतशूकररूप
जय जगदीश हरे ५ क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमि
तभवतापं केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्प
तिकमनीयं दशमुखमौलिबलिं रमणीयं केशव धृतरघुपतिरूप जय जगदीश ह
रे ७ वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं हलहतिभीतिमिलितयमुनाभं के
शव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ८ निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं स
दयहृदयदर्शितपशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ९ म्लेच्छनि
वहनिधने कलयसि करवालं धूमकेतुमिव किमपि करालं केशव धृतकल्कि
शरीर जय जगदीश हरे १० श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं शृणु सुखदं शुभ
दं भवसारं केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ११ वेदानुद्धरते जगन्निव
हते भूगोलमुद्बिभ्रते दैत्यं दारयते कारुण्यमातन्वते म्लेच्छान्मूर्छयते दशा

कृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ इति श्रीगीतगोविंदे जयदेवकृतौ प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥:॥

अथ शिवगीतवर्णनं ॥ भैरवरागतीनताल ॥ ॐ संध्यानंदते विधोभजगणपतेर्गौतामस्तंभपुवतः
मत्यालिस्खलितममोदसलिलस्लोमेतनोमर्पति मौलेरूपथगाकिमुत्रिपथगा
जानेतिशंकाकुषः देवस्यत्रिपुरांतकस्यचकितंव्यालोकितंपातुनः १ भानोर्गी
तेसथास्फीतंपूभोउमेरु दिंडिमः विडुघारमनाभंगभूमिभावतिन्वतां २ अंत
ष्प्राविशिलाशेत्यकाविशिलासुथाराधाचमत्का विशिला ध्यांतः कर्षिशिलाहस्मवषिशिलानेट
त्रंदलत्रविघोतितिनिमायाकुरूपपट्टघटोहिशिलासुयाथीशाडुमहाद्हिशिला क्रीडाकलि
तवेष्याधाविशिलापुरारांतोमनोमजत्र ॥ ॥ इतिरागभैरवतीनताल ॥ अमसितेजगतिसके
लेमतिलवमवपुषापुमयितमिवजनविदमशोषम पुरहरकृतमाकतवेषाज
यभुवनाधिपते ॥ ध्रुपदं ॥ मवहसिमभुमथनंनवनीरदललितं मरकतमणिमिवव
तस्मितवलितं पुरहरकृतगलविषारीजयभुवनाधिपते २ नीरसिंधुलहरीरुचिरं
हविजाले परमधामकिमवहसिविशाले पुरहरकृतहिमकरूप जयभुवनाः
यिपते ३ घनतिमिरचयंचिरमयगतंधोके हरसिलगनमिवजगतंकंपपुरहरकृ
तदिनकररूप जयभुवनाधिपते ४ कलयसितेत्वंकुलंहविषामानंदयनरवपय
सावातकहंदं पुरहरकृतजयमानशरीरजयभुवनाधिपते ५ वहसिग्रहनिवकं
परिष्फलपरिशिलांपं करुणातयाविवकुसुमकलापं पुरहरकृतगगनाकारजय ६
कपटकोलदशनेरचयसिमविलासं कुंददामगीतमधुकरभामं पुरहरकृतयर
लाकायजय ७ वहसिशिलानिचयंहिमसंघातभरं प्रमतरोविवशाखानिकरं
पुरहरकृतहुतवहदहजयभुवनाधिपते ८ ॥:॥ अथ शंकरसागरप्रदपदं ॥ रागभैरवचपताल ॥
गंचरनकमलवंदोहदिवाहु नाकिक्रुपाकटाक्षअंतपकोमवककुदरसाहु वहरे
शीहमकुपतिवोलेरंकचलेसिरकनैकराइ सेवदामस्वामीकरुणामैवारवार
वेदो निहिपाइ १ ॥ इतिरागभैरवतीनताल ॥ अविगतगतिकछु कहत न आवे ओगू

सरस्वतागरः
रागकल्यान
वीचलिख्यारे

कान्हरा

३
स. रे.
म. सा.
४

6

गै मीठे फलके रस अंतर गतही भावे परम स्वाद बहीज निरंतर अमित तोष उ
पजावे मन बानीको अगम अगोचर सो जाने जोपावे रूप रेख गुन जाति जुगति बि
न निरालंब मन चक्रत धावे सब विधि अगम विचारहि तातें सूर सगुन लीला
रागमारु पद गावे २ ॥रागभैरवतीनताला॥ भक्त वत्सल अंग वासुदेवकी बड़ी बड़ाई जगत पिता
जगदीस जगत गुरु अपने भक्तकी सहित छिठाई भृगुको चरन आनि उर
अंतर बोले वचन सकल सुख दाई सिव विरंचि मारनको धाए यो गति काहू दे
व न पाई बिन बदले उपकार करत हैं स्वारथ बिना करत मित्राई रावन अरिको
अनुज विभीषन ताको मिले भरतकी नाई बकी कपट कर मारन आई सो हरि जू
रागधनाश्रीत बैकुंठ पठाई बिन दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं जदुनाथ गुसाई ३ ॥रागभैरवतीन
ताला॥ करुनी करुणा सिंधुकी कछु कहत न आवे कपट हेत परसेवकी जननी
गत पावे वेद उपनिषद जस कहे निरगुन हि बतावे सोई सगुन ह्वै नंदकी दांवरी
बंधावे उग्रसेनकी आपदा सुन सुन विलखावे कंस मार राजा कियो आपन सिर ना
वै जरासंधकी बंद काट नृप कुल जस गावे असुरमे बन निगले पिता ताको साप
नसावे उपरे सोक समुद्रते पंडव गृह ल्यावे जैसे गाय बछको सुमरत उठि धावे
बरुन पासते ब्रजपति हि छिन मांझ छुड़ावे दुषित गयंदहि जानके आपन उठ धा
वे कलमें नामा भक्त टोयो ताकी छान छवावे सूरदासकी बीनती कोऊ ले पहुं
रागमारु चावे ४ ॥रागभैरवतीनताला॥ ऐसी कोन करे है और भक्त काजे जैसे परे जगदीस जीय
मांझ लाजे हिरनकसिपु बढ्यो उदय अरु अस्तलो हठ्यो प्रह्लाद चित चरन ला
ग्यो भीरके परते धीर सवहून तजी खंभते प्रगट कर जन छुड़ायो ग्रस्यो गज
ग्राह लै चल्यो पाताल कों कालके त्रास मुख नाम गायो छांड़ि सुख धाम अरु ग
रुड़ तजि सांवरो पवनके गवनतें अधिक धायो कोप कौरव गहे केस जब सभा
मे पंडकी बधू जस नेक गायो लाजके साजमें हुती ज्यौ द्रोपदी बढ्यो तन चीर नहीं

अंत पायो गेरुके जोरसे सोर चरनी कियो चल्यो द्विज कृस्नके द्वार दाछो जोर अंजुलि
मिले छोर तंदुल लये इंद्रकी विभवतें अधिक दाछ्यो ॥ सकुके दानको मान मुनिवर
कियो गहेयो मिपि पान जस जगत छायो ॥ यहै जिय जानके अंध वृद्ध आसतें सूर
कामी कुटल सरन आयो ॥ ५ ॥ भैरव राग तीन ताल ॥ जहां तहां सुमरे हरि जिहिं जिहिं वि — राग रामकली
धि तहां तैस उठि धाय हो दीनबंधु हरि भक्त कृपानिधि वेद पुरानन गायहो सुत
कुबेरके मत मगन भये विषयरस नैना छायहो मुनि सरापते भये जमल मल तरु
तिन्हि हित आप बधायहो बसनकुचील दुर्बल द्विज देखत ताके तंदुल खायहो सं
पत दई वाकी पतनीको मन अभिलाषि पुरायहो जब गज गहेयो ग्राह जलभीतर
तब हरि नाम पुकारयो हो गरुड छाडि आतुरके धाय सो तत काल उबारयो हो
कला निधान सकल गुन सागर गुरु थों कहा पढायहो तिन्हि उपकार मृतक
सुत जाचे सो जम पुरते ल्यायहो तुम मोसे अपराधी माधव केतक स्वर्ग पठाय
हो सूरदास प्रभु भक्त वछल तुम पावन नाम कहायहो ॥ ६ ॥ भैरव राग तीन ताल ॥ — राग धनासिरी
अति गंभीर उदार दधि हरिजानि सिरोमनराई तिनका सो अ
दोषो देषो एक सभार
पने जनको गुन मानत मेरु समान सकुचि समुद्र गनत अपराधहिं बूंद तुल्य भगवा
न बदन प्रसन्न कमल ज्यों सनमुख देषत हो हरि जैसे विमुख भये अकृपा न निमिषहूं
फिरि चितवो तो तैसे भक्त विरह कातर करुणामे डोलत पाछे लागे सूरदास ऐसे
स्वामीको देहि पीठ सु अभागे ॥ ७ ॥ रागभैरव तीन ताल ॥ हरि सो ठाकुर और न जन
को जिहिं जिहिं विधि सेवक सुख पावै तिहिं विधि राषत तिनको भूषे वहे भोजन
नु उदरकों तृषा तोय पट तनकों लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत संग उचित गवन गृह
वनकों परम उदार चतुर चिंतामन कोटि कुबेर निधनकों राषत है जनकी पर
तिज्ञा हाथ पसारत कनकों संकट परै तुरत उठि धावत परम सुभट निज पन
कों कोटिक करै एक नहिं मानै सूर महा कृतघनकों ॥ ८ ॥ रागभैरव तीन — राग नट
हरि सो मीत न देष्यो कोई अंतकाल सुमरन तिहिं औसर आनि
नार ठां ॥ ३ ॥

ॐ
स॰ स॰
स॰ सा॰
धनासीरी

मनुष्य होइ ग्राहि ग्रहें गज पति मुकरायो हाथ चक्र ले धायो तजि वैकुंठ गरुड़ त
जि श्री तजि निकट दास के आयो ॥ दुर्वासा को साप निवार्यो अंबरीष पति राषी ॥ ब्र
ह्म लोक परजंत फिर्यौ तहं देव मुनी जन साषी ॥ लाषा ग्रह तें जरत पंडुसुत बुद्धि बल
नाथ उबारे सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे ॥ ५ ॥ रागभैरव तीनताल ॥ राम
भक्त वछल निज जानो जाति गोत कुल नाम गनत नहीं रंक होइ के रानो ॥ ब्रह्मा
दिक सिव कौन जाति प्रभु हौं अजान नहिं जानो ॥ महता तहां तहां प्रभु नाहीं सो हैता
को मानो ॥ प्रगट षंभ ते दई दिषाई जद्यपि कुल को दानो ॥ रघुकुल राघव कृस्न सदाई गो
कुल कीनो थानो ॥ बरनी न जाई भजन की महिमा बार बार बषानो ॥ ध्रुव रजपूत
बिदुर दासी सुत कौन कौन अरगानो ॥ जुग जुग बिरद यहे चलि आयो भक्तन हा
थ बिकानो ॥ राजसूय में चरन पषारत स्याम लियें कर पानो ॥ रसना एक अनेक
स्याम गुन कहां लों करों बषानों ॥ सूरदास प्रभु की महिमा हैं साषि जु वेद पुरानों ॥ ६ ॥

रागधनासीरी

इति रागभैरव ॥ तीनताला ध्रोपद ॥ गुरु गणेश गणपति गणराज गजबदन गौरीनंदन
इति स्थाई ॥ विघ्नहरण विनायक बुद्धि विधाता करत जग फंदन ॥ अन्तरा ॥ एकदंत आद
अंत अति अनंत नमस्तक चंदन एनेरा जा आधीनन किंकर तत प्रभ काज न रूवत तुं
घंडुन ॥ इति आभोग ॥ भैरवराग ॥ चारताल ॥ गणपति विघ्न हरण गजवदन भाल विराजत चंद्रमा
माल ॥ इति स्थाई ॥ चतुर्भुज एकदंत आनंद कारण गणपाल सोहे मुक्तामाल ॥ इति अन्तरा ॥
रिद्धि सिद्धि पति आनंददायक हरिवके ... दीनदयाल ॥ तानसेन के प्रभु कृपा कीजे
दीजे नाद विद्या मैं हे पार्वती के लाल ॥ भैरवराग चारताल ॥ ... सो मन में है शोषित को जो मन ना
वांछित फल पावें रिद्धि सिद्धि दाता दुष निवारण भाल चंद जाके ता हे गावे रिषि मुनि गु
णी सब ध्यान जो परत है वा ही को सिर नावे ॥ कहत बैजू बावरो सुनो ... वरमेति को दे
रहती लगावे ॥ रागभैरव चारताल ॥ सेवो जी गणपत गणराज गजमुख गौरी के लाले रिद्धि
सिद्धि दायक संकट निवारण जाके चंद भाल आनंद कारण विघ्नहरण याके सा
गर हे याल जगन्नाथ कवि राई सरण तिहारि आई तं कृपाल ॥ भैरवचारताल ॥ ११ ॥

रे ग म ग रे स नी ध नी स रे ग रे ग स नी ध नी

लंवोदवक्रनेत्रतनमोंहरगजवदनशशिकपालईशचंद ॥ गणेशगणनाथसं
कटहरमंगलकरणहिमगिरसुतानंद ॥ एकदंततिलकभालगजमुक्तामा
लगरमोंहयेसिमूर्तिआनंद ॥ हरिदासउग्रदासहैंतेरेकोजेश्रुवदासदीजेना
दसव कंद ॥ भैरवराग चारताल ॥ है आज आनंदभयो रिमाईसोमनमेनवते
दर्शनपायोईशचंदको ॥ रिधसिद्धकिभंडारभरिदोईहेंहेंहेंहेंनोदाताष
गणपरमानंदको ॥ सिंहरनतभालसिंधुरुनविराजउजलवदवहाई
गजदंदको आधीनप्रभानवरणनवाहोमेविनतेकरतहैंशुद्धमननिसवा

मरष्टजे हाहाहाहाहाहाहाहाहाहाहागोविंदईईईईईईईईईईकेनंदको ॥ गीतभैरवरागगीतताल

गणपनगणेशमहेशकेसुतगोरीलालको ऐजोविमामनगगगगगगग
णनायकहौंतसहायकतुंभितअवरणादीजो अदेषोमनोगुणहानिधा
निसवाकैरवैंको आयोपुयाआआपेया आधीनकिमनुधीवदाईसहाईही
आअपेया आअपेया आअपेया ऐजोगणेशमहेशकेसुतगोरीलालको ✕ सरगमभैरोराग
गोमन ॥ सामगरेसासामगरेसागममगमपधानीनीपपमगरेसा गीतताल ४
सासागरेसागममगमपधानीनीपपधानीपपमगरीसासागरेसागम
गावोसरगमगुणायन ऽऽऽऽ सानीधपमगरेगमगरेसासासागरे
सागम ॥ गीतध्यार रागभैरवो ध्रुवपद चारताल लंवोदरगज

आननगिरिजासुतगणेश ॥ एकरदनममत्रवदनअरुणाभेश नष्ला
रीगुणीगंधर्वकिन्नरजतलैवरमिलिब्रह्मा विलसआवतसुजवतमहेश ॥

ॐ
स॰ रे॰
म॰ ता॰
८ धै

6

अहो सिद्ध नव निद्ध मूषक वाहन विद्यापति नो हि हम्मिर तति न कों विन
शेश ॥ तां न सें न के प्रभु तम महो कुंथ्या विघ्न विघन हरण विनायक रूप
स्वरूप आदेश ॥ भैरवराग ॥ चौताला ॥ शुभ्र जो देम गणेश को गुणी नी ॥ रिद्धि
सिद्धि के दाता विघन हरन हुनी जिन ध्यायो तिन पायो मन इच्छा भूनी
वक सके प्रभु कों ध्यान जन हरन रम्भु नि भैरवराग चौताला तुम हो गणा
पति देव बुध दाता शीश प्रेगन सुंदर नैन नैश ध्यावे ते हैं ते इफल पावे चंदन
लेप कियें प्रभु दंड सिद्ध सबरी ना मनुमा रो कहि पति नेम विद्या धरत मिन लोक
मध्य मदीपन वखंड तां न सें न तुम कों नितु हम्मिर त सुर नर मुनी गुणी
गंधर्व पंडित भैरवरागचौ चौताल ॥ सां धो विद्या पुरु गुण निधान गुणदा
ता सरस्वती माता को करूं आदेश नमो नमो रिद्धि सिद्धि के स्वामि सकल
विद्या प्रवेश जो इन को ध्यावे मन इच्छा फल पावे हरे हो तन न तें कलेश
कहे तान सेन प्रभु तुम महो कों ध्यावे व्रह्मा विष्णु महेश भैरवराग ॥ चौताल
प्रमणा राजा महाराजा मजा नन जो विद्या जगदीश सम सरस्वती सों गाउं वंजा
उं सब राग रागणी पुत्र वधू न सहित छतीश बाईस सुरत ग्रुक ईस मुर
छना उनचास कूट तान आवे जगदीश तां न सें न को दीज्यो छ राग छतीस
रागणी नाल लय संगीत मन तुमो हो यकं प्रवेश ॥ भैरवराग ॥ चौताल ॥

ॐ स्वस्तिश्री गणेशाय नमः ॐ श्री सरस्वत्यै नमः ॐ श्री रघुनाथो जयति अथ द्वितीय
रागः मालकौश प्रारंभः ॥ सर्व संगीत दर्पन मतानुसार लिख्यते श्लोक मध्यमांश ग्रहं
न्यासे मध्यमादिक मूर्छना ॥ ओडवं मालकोशोयं रिषभ पंचम स्वर वर्जितो ॥१॥ द्वितीय याम
रात्रि न समुद्भूतं मनःशंकृतो ॥ कोकिल किलगायंते रागेसा मालकौशकः ॥२॥ बाघेस्री कौशक
श्चैव वसन्तेन मिश्रतो ॥ माधवं च रतेमध्ये वीररसे न संयुतः ॥३॥ पंचस्वरेण संयोजो
श्रुतीश्च पंचदशो ॥ उत्पती मालकौश्चैवं कथ्यते न गुणीजनो ॥४॥ अथ भाषा दोहा मध्यमअं
श न्यास ग्रह म ग ध नी सा जान ॥ दूजे प्रहरे रात के शिवमत कह्यो विखान ॥१॥ दोहा ॥ पं
चम रिषभ स्वर के बिना पांच शुद्ध स्वर लाय ॥ मालकौश द्वितीय राग को गुनीजन कहो सु
नाय ॥२॥ दोहा बाघेस्री बसन्त संग कौशक जब ही मिलाय ॥ तौ मालकौश उत्तम भयो
गुनीजन कहत सुनाय ॥३॥ दोहा ॥ पांच सुरन को ओडुके पंदरै सुरती सहेत ॥ मालकौश की
उत्पती समकसों च गुणी कहेत ॥४॥ अथ वार्तिक मालकौश राग दूसरा पांच स्वर का जिस्को
ओडव कहते हैं मध्यम सुर मध्यग्राम का इसमे वादी है निषाद इसमे संवादी है स्वर ज देन
न गंधार इसमे अनुवादी है रिषभ और पंचम ईसमे विवादी है अर्थात ये दोनो सुर इसमे म
ना है इस राग की पांच स्वर पंदरा स्रुती हैं और इस्को ओडव कहते हैं अर्द रात समय
वीर रस का घस्करी और कौशक और वसन्त इन तीनो रागो को मिलाने से मालकौश की
उत्पत्ति होती है ॥ ईस्का नाम शुद्ध मालकौश कहते हैं इस्का देवता रिषि छंद वीजरस

१
सं॰ र॰ प्र॰ मा॰

नाईका नाईक पूजन विधी संयुक्त लिखा जाता है॥ अथ समय वर्णनं॥ आधी रात के निकट मे पाछिले पहले याम॥ मालकौश दुती राग को गावत सुख के धाम॥१॥ अथ ऋतु वर्णनं॥ शिशिर बसन्त के मध्य मे मालकोश नृप होय॥ काह्यतन्ती सुर मेल के गावत गुणमत लोय॥२॥ अथ रस वर्णनं॥ दोहा॥ अलंकार रस मध्य मे बीर कह्यो प्रधान॥ मालकौश नृप राग को गाइन करैं बुद्धिमान॥३॥ अथ नाइका वर्णनं॥ दोहा॥ सुखिया उत्तम नाइका सब हूं मे बिख्यात॥ मालकौश सों रमर हो मुखनी के मुसकात॥४॥ अथ नाइक वर्नन॥ गुणीयन निश्चे करी कहो शास्त्र मत ज्ञान॥ अथ ऋ मालकौश रागको नाइक धृष्ट प्रमान॥ ...बी वर्णनं॥ दोहा॥ लम्बर ज्ञानी गायन कीयो मालकौश जो राग॥ ताते रागरिषपदवी मई सन उपजत अनुराग॥६॥ अथ देवता वर्णनं॥ नृप सरूप ये राग है करे ब्रह्म को सेव॥ ताते सब जन मान्यो या को ब्रह्मा देव॥७॥ अथ छंद वर्णनं॥ दोहा॥ दीर्घ मात्रा स्वर नते ... नहीं दीर्घ बोल॥ छंद पंगती कहत हैं पंडित ता को तोल॥८॥ अथ स्वरूप स्वर राग वर्णनं॥ दोहा॥ म ग ध नी स नी ध म ग जान॥ मालकौश इन स्वर्न तें मध्य मंद रस्थान॥९॥ इती शिव मते न॥ अथ हनुमान मत वर्णनं॥ श्लोक॥ मालकौशरागेण निशा मध्ये न गानितूः॥ खर्जग्रहन्यासेष्वरिय म पंचमस्वरवर्जितो॥१॥ दोहा॥ शारदा भगवति युं कहो मालकौश विस्तार॥ स्वर ज अंश और न्यास ग्रह है सनी ध म ग विचार॥१॥ दोहा॥ दूजे प्रहर रात के पंच मरिष मन लाई॥ पांच सुरन के बीच मे गाइ [illegible] रदिख लाई॥२॥ वार्तिक॥ श्री सरस्वती भगवती जी के मतनानुसार

मालकोंशकी उत्पती षरज स्वर ग्रह ओर न्यास अंश है पंचम रिषभ ए इसमे विवर
जत है ओडव रागको कहते है रातको पहर रात के पाछे ओर आधी रात के पहले स
मे ले पांच स्वर कर के गान विधी लिखी है शुद्ध मालकोंश रागको कहते है इती शार्दी॥
कालीमरत मतेन तथा च॥ मध्यमांश ग्रहं न्यासं मध्यमादिक मूर्छना॥ पांच स्वरे ण
संयोज्य मालकोंश गायनकुरु:॥१॥ वसन्त वाघेश्वरी कौंशके न मिश्रत:॥ निशमध्ये
नर्तीयं नेरागोयं हरि वल्लभ:॥२॥ इती सर्व मतेन वर्नेती॥ मालकोंश पांच स्वर रिषभ
विवरजत मध्यम गंधार षरज धैवत निषाद शुद्ध स्वर लगते हैं जो आगे लिखे जाते है
म ग स ध नी स ग म ग म मंदर मध्य दो स्थान की आवृती निवृती कही है
ब्रह्मा देवता तुम्बर रिषी पंङती छन्द ध्रुपद नाइका रुकीया नाइका शिशिर बसं
त रित ३ ४ प्रहर रात गाई समे तन्त्री वली क्लीं बीज ॐ श्रीं ल्हीं क्लीं मंत्र नाटक
२ प स्वाहा॥ श्री आवाहनं ल्हीं आसनं क्लीं मं प्रान प्रतिष्ठापनं नम: पुष्पं नम:
धूपं नम: दीपं नम:॥ नैवेद्यं नम:॥ अथ ध्यानं॥ आरक्त वर्णो धृत रक्त
यष्टी वीर: सुवीरै युकृत: प्रवीर्य वीर वृतो वैरी कपाल माला मालीम तो मालव कों
शको यं॥१॥ अथ भाषा॥ कंचन ते कमनीय कलेवर काम कलान मे कोविद मानो॥ मा
ने महार सवीर रही मे नित राते रुचे वसनो जग जानो॥ वैर न मार कपाल की माल धरी
बहु वीर न हे मन मानो॥ जो हरि वल्लभ रुप अनूप सो मालव कौंस राग बखानो॥१॥

सं॰ र॰ प्र॰ मा॰
२

अथ विनियोगः॥ ॐ तुम्बरु ऋषिः पंक्तिः छंदः महादेवता श्रीजै मालकौश राग सि-
द्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ जप संख्या पंच लक्ष विष्णु मंदिर वा विष्णु मूर्ती सन्मुखे
न धूलता जपं कृत्वा॥ अथ तीन ताल राग मालकौश संरगम बनाने विधि लिखते हैं
शिव मत सरगम विधी॥ मध्यम मध्य ग्राम स्थान वाला गंधार मध्य स्थान वा-
ला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः गंधार मध्य स्थान वाला पुनः धैवत
मंद्र स्थान ग्राम वाला पुनः निषाद मंद्र स्थान वाला पुनः खरज मध्य स्थान वाला
पुनः गंधार मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम मध्य
स्थान वाला पुनः गंधार मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः गंधार
मध्य स्थान वाला पुनः खरज मध्य स्थान वाला पुनः धैवत मंद्र स्थान वाला पुनः नि-
षाद मंद्र स्थान वाला पुनः खरज मध्य स्थान वाला पुनः निषाद मध्य स्थान वाला पु-
नः धैवत मंदर स्थान वाला पुनः निषाद मंदर स्थान वाला पुनः धैवत मंदर स्थान
वाला पुनः मध्यम मंदर स्थान वाला पुनः गंधार मंदर स्थान वाला पुनः खरज म-
ध्य स्थान वाला पुनः गंधार मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः गं-
धार मध्य स्थान वाला पुनः खरज मध्य स्थान वाला॥ इत्यस्थाई मध्यम मध्य स्थान
वाला गंधार मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः गंधार मध्य स्था

धैवत मध्य स्थान वाला निषाद मध्य स्थान वाला स्वरज मार स्थान वाला
निषाद मध्य स्थान वाला धैवत मध्य स्थान वाला पुनः निषाद मध्य स्था
न वाला पुनः मध्यम मध्यम मध्य स्थान वाला गंधार मध्य स्थान वाला मध्य
म मध्य स्थान वाला गंधार मध्य स्थान वाला धैवत मंदर स्थान वाला निषा
द मंदर स्थान वाला स्वरज मध्य स्थान वाला निषाद मध्य मंदर स्थान वाला धैवत
मंदर स्थान वाला मध्यम मंदर स्थान वाला गंधार मंदर स्थान वाला स्वरज मध्य स्थान
वाला गंधार मध्य स्थान वाला मध्यम मध्य स्थान वाला गंधार मध्य स्थान वाला स्वरज
मध्य स्थान वाला इति सरगम शिव मते॥ अथ शारदा मत सरगम विधी लिख्यते॥
स्वरज मध्य स्थान वाला निषाद मंदर स्थान वाला धैवत मंदर स्थान वाला निखाद मंदर ८
स्थान वाला स्वरज मध्य स्थान वाला मध्यम मध्य स्थान वाला गंधार मध्य स्थान वा
ला पुनः मध्यम मध्य स्थान वाला पुनः गंधार मध्य स्थान वाला पुनः स्वरज मध्य ग्राम
वाला पुनः निखाद मंदर स्थान वाला पुनः धैवत मंदर स्थान वाला पुनः निषाद मंदर स्था
न वाला पुनः स्वरज मध्य स्थान वाला इत्यस्थाई॥ निषाद मध्य स्थान वाला धैवत मध्य
स्थान वाला पुनः निखाद मध्य स्थान वाला पुनः धैवत मध्य स्थान वाला पुनः स्वरज
नार स्थान वाला पुनः निषाद मध्य स्थानं वाला पुनः धैवत मध्य स्थान वाला पुनः मध्यम

सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
।३।

मध्यस्थानवाला गंधार मध्यस्थानवाला पुः मध्यमस्थानवाला गें धार मध्यस्थानवाला खरज मध्यस्थानवा निषाद मंदरस्थानवाला धैवत मंदरस्थानवाला पुनः निषाद मंदरस्थानवाला पुनः षड्ज मध्यस्थानवाला॥ इत्यन्तः॥ इति शारदामतेन॥ तथा च संगीतकल्पद्रुमः तथा च संगीतरत्नाकरे॥ तथा च संगीतदर्पणे तथा च संगीतनारदसंहितायाम् स्वरोंका निरने सब मतों मे इसी परकार मालकौंश रागकी उत्पत्ति कही है खरज और मध्यम से बिना दूसरा सुरवादी नहीं है इसमे भी इसी वास्ते दो ही प्रकार रखेगे हैं प्रथमस्

अथ स्वरान्तर॥ म ग म ग सा ध नी स नी ध नी ध म ग स
ग म ग म ग स ध नी स म ग स॥ इति स्थाई॥ म म ग म
म ग म ग सा स नी ध नी स नी ध नी ध म ग म ग
स म ग म ग स॥ इति अन्तरा॥ स नी ध नी स म ग म ग
स स नी ध नी स॥ नी ध नी ध म ग म ग स स नी ध
नी स॥ अथ पाठान्तरः॥ संगीतरत्नाकरे भरतमत॥ श्यामाङ्गः पीतवासस्मधुरयुगलज्ञो वंशवाद्यस्मिंगी कण्ठे रत्नेकमालो विरचिततिलकः कुंकुमैर्मालमध्ये॥ रागोयं मालकौंश प्रचरतु शिशिरे कण्ठदेशो जनानां प्रायः सूर्योदयान्तः स्वरनिचयविदां तुष्टये भूपतीनां॥ इति संगीतरत्नाकरे॥ अथ संगीतदर्पनमतेन॥

हनूमानमत दोहा तीनंन सकारन सौं बन्यौ ओडुव रिपु सुर हीन॥ तीन पहर पर मालव हीगा
वत वडे परवीन॥ इती संगीत दरपने॥ अथ कल्पद्रुमः॥ मालकोश कोखरज ओडुव रिपु
विनगाय॥ शारद रैन चौथे पहर सुन पाहिन पिघलाय॥ स्वरूपं॥ तनज्यो वन गौर मरोरिन
सोरस वीरद्ध कौ मन धीर धरे॥ कर मैं नकर वाल लिये छबि सौं पट लाल प्रबाल कौ जो
नी हरे॥ रति कोक कला प्रवीन महा दृगन देखत रूप अनूप धरे॥ यह मालव कौंश अनंगम
रखौ तरुनी मन रंजन रंग करे॥ इती संगीत कल्पद्रुमः॥ अथ संगीत रत्नाकरे॥ सिंहासन
स्थ स्मर चारुमूर्ती धीरो लसत्‌ चामर छत्रयुक्तः॥ मैत्रीजनै र्वेष्टित नर ऋवस्त्रः॥ =॥
अथ सर्व संगीत मतनिश्चयं श्यामाङ्गः पीतवास मधुरिपु गल जोवंश बाघ स्त्रि संगी
करठेर त्नैक मालो विरवत्त तिलकः कुंकमे भाल मध्ये रागोयं मालकौंशं प्रचरतु
शिशरे कण्ठदेशे जनानां प्रायाः प्राय स्त्रैयादयौ त्तः स्वरनिचयविदां तुष्ट भूपतीनां॥
इती सर्व संगीत मतन गानुसार मालकौंश लिख्यते॥ भरतैमतेती॥ अथ संगीत सिंहता नादम
होदे नारायणादी मतेन लिख्यते॥ पलासी मालवयुक्तः कोशक ख्यत ततः परं जायते मा
लवकोशोयं मध्यम स्वर गृहंतथा रिषभ पंचम त्यागा गमधनिसा गम स्वरा निशायां तृती
यप्रहरे गेयं मालवकौशकः॥ रिपवर्जितसंप्राप्त ओडुव परिकीर्तितः कौशक कान ऊजाता
१ २
वाघेश्वरी कवित मतः॥ इती च॥ अथ मालकौंश अलंकार वर्णनं॥ मगध धनीस
३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सनि सा नि धनि धमग सगम मगम गमग॰ सनिध धनिस सनिधमगस

सं· र· प्र· सा·
४

इति द्वादशालंकारम्॥ अथ आलापादर स्वरूपम्॥ ननइ ना आ नउ अ न अदननौ
तानै नेतनन नौ॥ ननननन नन्नौ ता ननानौ ननतन नतन नानौ तानौ नै न ना तौ॥
तानौ तन मौ ननननत नौ ना ननानआन तान तनानौ तन नातौ तानौ त न न तानौ
नै नन तौ॥ ननन नननन न ननननैन तनौ तनौ नैतन नौं॥ नन नन नन न ननननना
तानननतनौ तननौ ननना नौ नै तन तौ नन नन नन ननननननननौ नन नन ननौन
तौनौ ननतौ तननौ तनन नौ तन न न ननतनौ तनौ नन नौ तना ता ना नौ नै ननतौ॥२
इति आलापादरम्। अथ स्वरसरगम आलापम वर्णनं॥ स नी ध नी सम ग मग मस
नि धनि स॥ नी धनीध म ग म ग स स नि धनि स॥ सनि ध म ग स नि ध
नि स म ग म ग स इति षड्जादि स्वर सरगम॥ अथ मध्यमादि स्वर सरगम व
र्णनं॥ म ग म ग ध नि स ग म ग स नि ध म ग स ग म ग म ग म ग स॥ म ग म ग ध
नी स नी ध म ग स ग म ग स स नि ध नि स ग म ग म ग स म ग म ग स इति म
ध्यमादि स्वर सरगम॥ अथ गत सितार मध्यम स्वरादि लिख्यते॥ डिड़ दा डिड़ दा
दा दा दा दा॥ डिड़ दा डिड़ दा दा दा दा दा इति अस्थाई॥ डिड़ दा डिड़ दा
दा दा दा दा॥ डिड़ दा डिड़ दा दा दा दा दा॥ अथ अंतरः फिर वह तोड़ा कहि
के आमिले तीन ही मे तार की समझ्झावर होवेगी॥ अथ षड्जादि गत सितार राग:

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५
दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा॥ दिड़ दा दिड़ दा ड़ा
स नि स ध नि म म ग म ग स म नि

६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
दा ड़ा ड़ा॥ आस्थाई॥ दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा
ध नि स नी ध नी ध म ग म ग

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
दिड़ दा दिड़ दा रा ड़ा दा ड़ा॥ इत्यंतरः फिर पहली आवृती
स नि ध नि स म ग स

मे आमिले इति षड्ज स्वरादि गत सितार मालकौंश राग वर्णनंम्
इति ओड़व मालकौंश वर्णन समाप्तो॥ अथ षाड़व मालकौंश प्रकार लिख
ते॥ दोहा॥ मध्यम स्वर अंश ग्रह वा को न्यास हि जान॥ तामे रिषभ मिला
इके मालकौंश गुनी गान॥ दोहा॥ मध्यम धैवत रिषभ स्वर षड्ज गंधार
निषाद॥ मालकौंश छै स्वरन को गावत गुनी श्रुति साध॥ दोहा॥ कौशकी
र वागेश्वरी मालवकाण्डा संग॥ निस आधी के आद मे गावत ऊठत तुरंग है
गुनीजन मन संगीत के कहा वही अनुसार॥ मालकौंश षाड़व भयो मे
ग रे सं नि धे उच्चार॥ श्लोक॥ मालकौंश षाड़वं गेयः पंचम स्वर वर्जितो॥
मध्यमांश ग्रहं न्यासे नरिषभस्वरेन संयुतः १॥ कौंशको यं वागेश्वरी का
णिड़र मालवे च मिश्रतो॥ अर्द्धं निशादेन मालवकौंशेन गीयते॥२॥ अथ
संगीतकल्पद्रुमः तथा चरत्नाकरे दर्पने चान्य संगीते च॥ मध्यमांश
ग्रहं न्यासं पंचम वर्जितं स्वरं॥ षाड़वा स्तु जाति विज्ञेया मालकौंशक संज्ञ
कः॥ मालवा काण्डा युक्ते वागीश्वरी समिश्रतः कौशिको जायते यत्र

स·र·प्र·सा·
१५।
पृ·

मध्यमसुखाईरितः॥ म ग रे स नि ध म ग रे नि ध ग स ॥
म नि ध नि स ग ग ध नी ध म ग ध नि स ग ग ध नि ध म ग ध नि
स स रे नि ध नी म ग ग रे ग म ग ग स ग स सा रे नी ध नी ध
नी म ग ग रे ग म ग ग सा ग सा सा रे नि ध नि ध नि स ग म
ग म ध ध ध म म ग म ध नि ध ध म ग रे ग म ध म ग स
इति स्थाई॥ ध नी सा सा रे रे ध ध ध म ग म ध म ग ध नी ग ग
म रे रे सा ग ध नि नि स ध ग ग सा नी ध नी सा ग म ध नी ध ध म
ध म म ग ध नी स नी नी नि ध ध म म ग म ध नी ध स रे ग म ग
म ध नी स ध म ग म ध नि स॥ इ षाडव मालकौंश संगीतमतेन
॥ अथ प्रकारांतर षाडव मालकौंश वर्णन करते हैं॥ मालकौंस किसी आचा
र्जो का मत है के छह स्वर का भी होता है उसका स्वरूप येह है जो रि
षभ स्वर का मेल होता है और मध्यम स्वर अंश न्यास ग्रह होता है र
प्रीत मध्यम स्वर इस राग में वादी स्वर है रिषभ इसमें तीव्र लग
ता है जिसको चढा भी कहते हैं और वोही स्वर रागकौंशीकानुडा मे भी
लगता है म ग रे स ध नि॥ इनो स्वरों से मालकौंश षाडव की उ
त्पती होती है और मालवा कानुडा कौशाक बागेसरी इनको जब
तक जगमूक कब करें तो मालकौंश होता है और इसको षाडव माल
कौंश कहते हैं सब संगीत वालो ने भी कहा है ऐसी प्रकार करके अ
तंर सप्रकार॥ मध्यम मध्यम ग्राम वाला गंधार मध्यग्राम का त

रिषभ मध्य ग्राम वाला षड्ज मध्य ग्राम वाला निषाद मंदर ग्राम
रे स नि

वाला धैवत मंदर ग्राम वाला पुनः निषाद मंदर ग्राम वाला पुनः षड्ज
ध नि स

मध्य ग्राम वाला पुनः षड्ज मध्य ग्राम वाला पुनः निषाद मंदर ग्रा
स नि

म वाला पुनः धैवत मंदर ग्राम वाला मध्यम मंदर ग्राम वाला गंधा
ध म ग

र मंदर ग्राम वाला रिषभ मंदर ग्राम वाला निषाद मंदर ग्राम वाला ष
रे नि

ड्ज मध्य ग्राम वाला ॥ पुनः मध्यम मध्य ग्राम वाला पुनः गंधार म
स म ग

ध्य ग्राम वाला पुनः रिषभ मध्य ग्राम वाला षड्ज मध्य ग्राम वाला
रे स

निषाद मंदर ग्राम वाला धैवत मंदर ग्राम निषाद मंदर ग्राम
नि ध नि

वाला षड्ज मध्य ग्राम वाला ॥ इति स्थाई ॥ अथ अंतरा मध्यम
स म

मध्य ग्राम वाला निषाद मध्य ग्राम वाला धैवत मध्य ग्राम वाला
नी ध

निषाद मध्य ग्राम वाला षड्ज तार ग्राम वाला गंधार तार ग्राम वा
नी सा ग

ला पुनः गंधार तार ग्राम वाला पुनः षड्ज तार ग्राम वाला पुनः म
ग स

ध्यम तार ग्राम वाला पुनः गंधार तार ग्राम वाला पुनः रिषभ तार
म ग रे

ग्राम वाला षड्ज तार ग्राम वाला निषाद मध्य ग्राम वाला धैवत
सा नी ध

मध्य ग्राम वाला मध्यम मध्य ग्राम वाला गंधार मध्य ग्राम वाला ॥
म ग

सं. र. प्र. सा. ६ पृ

इति अंतरः॥ अथ आलाप स्वर सरगम वर्णनं॥ म ग रे स नि ध नि स स
नि ध म ग रे नि स स ग रे स नि ध नि स इति स्थाई॥ अथ अंतरः॥
म नी ध नी स ग ग सा म ग रे नी ध म ग म ग रे स नी ध नि
स॥ इति अंतरः॥ और इसमे गंधार कोमल और रिषभ तीव्र और सब
स्वर शुध लगते हैं॥ अथ गत सितार सितार तिताला॥ डिड डा डिड डा
स ग रे स
डा डा डा डा॥ डिड डा डिड डा डा डा डा डा॥ इति स्थाई॥ अथ
नि ध नि स स नि ध म ग रे नि स
अंतरः॥ डिड डा डिड डा डा डा डा डा॥ डिड डा डिड डा डा
स नी ध नी स ग ग स म ग रे स नी
डा डा डा॥ इति अंतरा॥ इति मालकौंश बाउ विधी स्थापनं॥
ध म ग

ॐ: इति मालकौंशा राग विधि वर्णनं प्रथमोध्यायः संगीतरनवीर
प्रकाशसार ग्रंथ गोस्वामि जन मनपाकृत ध्यायः सीतारामजी स
हाय शुभं भूयात॥ श्री राम राम राम राम राम कृष्ण रामान म:॥

॥अथ खंभावति रागणी मालकौंश राग भार्या ३ स्त्री वर्ननम॥ धैवतांश ग्रहं न्यासं धैवतादिक मूर्छना॥ सम्पूर्नं खम्भावती प्रोक्ता मालकौंशस्य वल्लभः॥१॥
निषाद्स्वर कोमलत्व रिषभ तीवरच तु श्रुतिः निशांदि त्येया मे गीयं ते खम्भा
वती॥२॥ द्वितीय प्रकारः निषादांश ग्रहं न्यासं धैवतादिक मूर्छना खंभावति च
रागिन्याः मालकौंशवराङ्गनाः॥३॥ संगीत रत्नाकरे॥ खम्भावती स्यात सुखदा रस
ता सौंदर्यलावन्यविभूषितांगी॥ गानप्रिया कोकिलनाद तुल्याप्रियंवदा कौशकरागणीयं॥१॥ धैवतांश ग्रहं न्यासं खम्भावती इति स्मृता धनी सारे गमप स्वरा त्रौढि
तीय जाममाकः॥ परजवसन्तपंचमस्यं खम्भावती जन्मभूः कोकिलनाद संतुल्या
मालकौशस्य वल्लभा॥३॥ इति रत्नाकरे॥ अ संगीतसंग्रहितायां॥ धैवतांश न्यासस्य
ग्रहन धैवउच्यते॥ निषादस्वर कोमलो प्रोक्ता रिषभे लक्षणे तीव्रो॥१॥ खम्भावती कौशक
प्रेया निशा मध्येन गीयते॥ परजवसन्त सैंधव्या रागिरायः मिश्रता कुरुः कोकि
लकिलनादे न गीयं खम्भावती मधुर स्वरः॥ इति संगीतसिंहतायां॥ नपाच संगीत
दामोदर नारायणे तो। नपाच संगीत वृहित नाद महोदद्दोच॥ अथ भाषा दोहा॥ अं
शन्यास ग्रह धैवत स्वर ता तै मत प्रधान॥ सम्पूरण स्वर गावैं खम्भावती माल।
कौंश की बाम॥ कोमल स्वर निषाद कर तीवर रिषभ वनाय॥ निश मध्य धी केस मे
कोकिलकंठ सो गाय॥ दोहा॥ परजबसन्त वहार मे सैंधव युत कर लीन॥ रा

पृ·
सं· र· प्र· सा·
७

१

खम्भावती कौंशाङ्क इस्त्री गावत गुणि प्रवीन ॥ संगीत दरपन नतथा राग माला ॥

संगीत कल्पद्रुमः दोहा तीन धकार न सो वनी अरु पंचम करि दूर खाडव हैं खम्भाव

ती जान रहे रस पूर ॥ सगमप धनि सम्म धपमगनिधप मग मगरेस ॥ इति राग

माला ॥ दोहा ॥ धैवत ग्रह खम्भावती षट सुर षाडव जान ॥ धनि स रे ग म प नि गाइये

सं दृग आधी रात ॥ इति संगीत भाषा ॥ नाद महोदधौ खम्भावती स्यात् सुरस्त्रा रस ज्ञा

सौंदर्य लावन्या विभूषतांगी ॥ गान प्रिया कोकिल नाद तुल्या प्रियंबदा कौंशाकरा

गणीयं ॥ धैवतांश ग्रहं न्यासं खम्भावती सुसम्मता ॥ धनि सा रे ग मप ज्वरा त्रौ

ज्ञा मद्वितीयके ॥ पर्यो बसन्त पंचमस्य खम्भावतीच जन्म भू ॥ कोकिला नाद

कंठश्च मालकौंशस्य बल्लभः ॥ ध नि सा रे ग म ग प ध नि ध प म ग रे सा ॥

ध धनी ध नी सा रे सा नी ध प म ग सा रे ग म प ध नि नि सा सा नि

ध प म ग रे सा ॥ इति नादमहोदधौ ॥ वार्तिक खम्भावती रागणी माल

कौंशा की इस्त्री सम्पूर्ण स्वर की निषाद को मल रिषभ तीव्र औ स्वर शुद्ध लगते हैं ॥

और आधी रात के समे गायन करते हैं और इन रागों के मिलाने से इस राग

णी की उत्पत्ति होती है परन्तु बसन्त पंचम मिलने करके इह रागिनी वनती

है खम्भावति जिसको मशहूर खम्भावच कहते हैं मालकौंशा की प्रथम इस्त्री

है और धैवत इसमें ग्रह है और निषाद भी से उठते है लेकन कोमल स्वर है इस

वास्ते कोमस्वर पूरा नहीं होता है जो स्वर पूरा न होवे उस स्वर को ग्रहन हीं कहा जाता इस
लिये इस रागणी मे धैवत स्वर अंश ग्रह न्यास सम्पूर्न माना वालो ने रखा है और बिना
दो स्वर के और कोई स्वर इसमे वादी नहीं है धैवत वा निषाद को मत उतरा मंदर
स्थान वाला देशान्तरो मे कोई मध्यम मध्य ग्राम से उठते हैं सो शास्त्र विरुद्ध.
भी हो जाता है और राग मिलाप मे भी फरक हो जाता है जिस्की वर्णता आगे की
जाती है अर्थात उसमे परज बसन्त का मिलाप थोरा होता है और कोशिश बहोत
होजाता है इस्का मिलाप परज बसन्त पंचम वा परज बसन्त से धैवत होने से
खम्भावती रागणी मालकौंश की इस्की पहली होती है और कोई कोई इस्को
षाडव भी पंचम स्वर रहत भी कहते है परंच असल मे ये सात स्वर की सम्पू
रण है किस्वास्ते जो इस्को छ स्वर कहते हैं वाही सरगम के विस्तार करने मे
पहले ही पंचम स्वर को आवृती मे देते हैं तो छ स्वर के सरहे जो इस संगीत
ग्रंथ मे लिखा है आद मे ही इस वास्ते है। असल मे सात स्वर की प्रंच ग्रंथ को लिपी
के वास्ते छ स्वर की लिखी जावेगी ॥ अथ उत्पती स्वर सरगम द्वारा लिखते
हे सम्पूरण सात स्वर मध्य ग्राम जानना चाहिये के मध्यग्राम के रागों मे मंदर
स्थान का निषाद को मत होता है और आप ने अस्थान मंदर के उपर वो पूरा है

पू
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
८
8

इसवास्ते इसको इस रागनीमे ग्रह अंश न्यास मानते हैं कियो के अपने स्थान
पर पूरन जाती रखता है इसी वास्ते इसमे निषाद अंश ग्रह न्यास मीरखा है
निसा ग म प ध म प म ग ग म म ध ध नी नी ध म प म ग म स स रे नी प ध म म ध ध
नी नी ध म प म ग इस प्रकार इसकी सरगम बधी जावेगी करणारस ब्रह्मादे
वता गायत्री छंद हनूमान रिषी मध्यानार्‍का शाठनारक दादश अलंकार
ओं खंखं खं रों श्री खम्माबती ब्रह्म कुरु चैयंती स्वाहा ॥ इती मंत्र: ओं खं छंदसे नमः ॥
इति आह वाहनं ॥ ओं खंखं नमः इति आसनं ॥ ओं खं देवाय नमः इत्ति प्रान प्रति
ष्टा ॥ ओं खं खं रौं नमः पुष्पं नमः ओं गंधं नमः ओं धूपं नमः ॥ ओं दीपं नमः ओं
नैवेद्यं नमः ॥ अथ ध्यानं ॥ खम्मावती स्यात्सुखदा रसज्ञा सौंदर्य लावण्य विभू
षणांगी ॥ गानप्रिया कोकिल नाद तुल्या प्रियंवदा कौशिक रागरागिणीयं ॥ १ ॥ अथ भाषा
ध्यानं ॥ भूषन अंग जराव जरे तनकी दुती कुंदन ते सरसावे ॥ चंद्रलाल रहित्र
ह्रिया उर मोतिन माल विशाल सुहावै ॥ सुंदर तानन बानन सो चतुरानन सों बहु
भांति रिझावे ॥ गावे खम्मावती प्रेम भरी पर बीननि या कर बीन बजावे ॥ १ ॥
इति मम्मावती ध्यानं ॥ जपानसंख्या तीस हजार ब्रह्मा की मूर्ती सन्मुख रख के
जप पूजन करना बिना इस रागणी के और रागणी राग को गान नही करना
तब ये रागनी सिद्ध हो जाती है तत्सा सरगम गान बनाना न विधी लिखते हैं ॥ अथ

निकोमल

सरगमविधी॥ निषाद मंद्र स्थान का खड़ज मध्य स्थानी गंधार मध्य स्थानी

मध्यम मध्य स्थान का पंचम मध्य स्थानी धैवत मध्य स्थाई पुनः मध्यम

पुनः मध्यम पुनः मध्यम पुनः धैवत पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः निषाद को

मल मध्य स्थाई पुनः कोमल निषाद मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः

मध्यम मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थान का पुनः मध्यम मध्य स्थाई पु

नः गंधार मध्य स्थाई॥ ३ त्य स्थाई॥ धैवत मध्य स्थाई निषाद कोमल मध्य

स्थाई खड़ज तार स्थाई पुनः खड़ज तार स्थाई पुनः खड़ज तार स्थाई पुनः रि

षभ तार स्थाई पुनः रिषभ तार स्थाई पुनः निषाद कोमल मध्य स्थाई पुनः

कोमल निषाद मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पु

नः मध्यम मध्य स्थाई पुनः मध्यम मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः धै

वत मध्य स्थाई पुनः निषाद कोमल मध्य स्थाई पुनः निषाद कोमल मध्य स्था

ई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः मध्यम मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्यम मध्य स्थाई

पुनः मध्यम मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई॥ ३ त्य अंतरः॥ पुनः धैवत म

ध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः मध्यम मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई

पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः मध्यम मध्य स्थाई पुनः धैवत मध्य स्थाई पुनः नि

पू
स·र·प·सा·
१

९

दको मलम ध्यस्थाई खउज तार स्थाई खउज तार स्थाई पुनः खउज तार
स्थाई रिषभ तार स्थाई पुनः निषाद को मलम ध्यस्थाई पुनः खउ ज मार स्थाई
पुनः रिषभ तार स्थाई पुनः रिषभ तार स्थाई पुनः निषाद मध्यस्थाई को मल।
पुनः को मल निषाद मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्था
ई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्था
ई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः निषाद को मल मध्यस्थाई पुनः निषाद को
मल मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः पंचम
मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई॥ अंतरः॥

सरालरम॥ नि सं ग म प प म म ध म प म ग ग म
म ध ध नी नी ध म प म ग इति स्थाई॥ ध नी सा
सा सा सा रे रे नी नी ध ध म म ध ध नी नी ध
म प म ग॥ इति अंतरः ध ध म ध ध म ध नी सा
सा रे नी सा सा रे रे नी नी ध ध म म म म
ध ध नी नी ध म प म ग॥ नि सं ग म प प ध
म प म ग ग म म ध ध नी नी ध म प म ग इती
च॥

अथ धैवतादि स्वर गमस्व स्थावर्ती रागणी वर्णनं ॥ धैवत मध्य ग्रामवाला पु
नः धैवत मध्य ग्राम वाला पुनः निषाद कोमल मध्य ग्रामी पुनः धैवत मध्य
ग्रामी पुनः निषा मध्यम मध्य ग्रामी पुनः पंचम मध्य ग्रामी पुनः मध्यमम
ध्य ग्रामी पुनः गंधार मध्य ग्रामी पुनः मध्यम मध्य ग्रामी पुनः मध्यम मध्य
ग्रामी पुनः धैवत मध्य ग्रामी पुनः निषाद कोमल मध्य ग्रामी पुनः धैवत
मध्य ग्रामी पुनः धैवत मध्य ग्रामी पुनः मध्यम मध्य ग्रामी पुनः पंचम मध्य
मध्यम मध्य म मध्य ग्रामी पुनः गंधार मध्य ग्रामी पुनः खडज मध्य ग्रामी पुनः
पुनः खडज पुनः निषाद कोमल मंदर स्पाई पुनः खडज मध्य स्पाई पुनः गंधार
मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य स्पाई पुनः धैवत मध्य स्पाई पुनः मध्यम म
मध्य स्पाई पुनः पंचम मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य स्पाई पुनः गंधार
मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य स्पाई पुनः धैवत
मध्य स्पाई पुनः धैवत मध्य स्पाई पुनः निषाद मध्य स्पाई पुनः निषाद को
मल मध्य स्पाई पुनः धैवत मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य ग्रामी पुनः पंचम
मध्य स्पाई पुनः मध्यम मध्य स्पाई पुनः गंधार मध्य स्पाई पुनः धैवत मध्य
स्पाई पुनः निषाद कोमल मध्य स्पाई पुनः खडज नगार स्पाई पुनः रिषभ नगार
स्पाई पुनः रिषभ तार स्पाई पुनः निषाद कोमल मध्य स्पाई पुनः निषाद कोमल
स्पाई पुनः

पु·
सं· र· प्र· सा·
१०

तमध्यस्थाई पुनः धैवतमध्यस्थाई पुनः मध्यममध्यग्रामी पुनः खड्ज
पुनः पंचममध्यस्थाई पुनः मध्यममध्यस्थाई पुनः खड्जमध्यस्थाई
पुनः निषादकोमलमंदरस्थानतातापुनः खड्जमध्यमस्थाई पुनः गंधार
मध्यस्थाई पुनः मध्यममध्यस्थाई पुनः पंचममध्यस्थाई पुनः मध्यम
मध्यस्थाई पुनः धैवतमध्यस्थाई पुनः निषादमध्यस्थाई पुनः धैवत
मध्यस्थाई पुनः मध्यममध्यस्थाई पुनः पंचममध्यस्थाई पुनः मध्य
ममध्यस्थाई पुनः गंधारमध्यस्थाई ॥ ३ त्यस्थाई ॥ धैवतमध्यस्थाई पुनः
निषादकोमलमध्यस्थाई पुनः खड्जतारस्थाई पुनः रिषभतारस्थाई
पुनः रिषभतारस्थाई पुनः निषादकोमलमध्यस्थाई पुनः धैवतमध्य
स्थाई पुनः मध्यममध्यस्थाई पुनः पंचममध्यस्थाई पुनः मध्यममध्य
स्थाई पुनः गंधारमध्यस्थाई ॥ ३ त्यंतरः ॥ अथ स्वरा हारं वर्णनं सरगमम

धै धै नी(को) धै नी(को) धै मे पे मे गे मे गे सां नि सां गं मं पं मं धं नि(को) धं नी(को)
सां सां रें रें नी(को) धै मे पे मे गे मे धै नी(को) धै धै नी(को) धै
नी(को) धै मे पे मे गे मे मे धै धै नी(को) नी(को) धै मे पे मे ग

इति स्थाई ॥ धैवत ॥ धै धै मे धै धै मे धै नी सा सा
सा रे नी सा सा रे रे नी नी धै धै मे मे
प प मे मे धै मे प मे गं मे गं सा नि सा
गं मे प धै मे प मे गं इति अंतरः इति धैवतादि
क सरगमः ॥ तृतीय प्रकार देशान्तरे ॥ मध्यम मध्यम ग्रामी गंधार
मध्यम ग्रामी मध्यम मध्यम ग्रामी गंधार मध्यम ग्रामी पुनः मध्यम
रिषभ मध्यम ग्रामी गंधार मध्यम ग्रामी मध्यम मध्यम ग्रामी पंचम मध्यम
स्थाई पुनः गंधार मध्यम स्थाई पुनः मध्यम स्थाई मध्यम पुनः रि
षभ मध्यम स्थाई पुनः खडज मध्यम स्थाई पुनः रिषभ मध्यम स्थाई
पुनः मध्यम मध्यम स्थाई पुनः गंधार मध्यम स्थाई ॥ इति स्थाई ॥
अथ स्वरान्तरम् ॥ मे गं मे गं मे रे गं मे प गं मे रे
सा रे मे गं ॥ इति स्वराणि ॥ अपअंतरः खडज मध्यम स्थाई
रिषभ मध्यम स्थाई निषाद अति कोमल मंदर स्थाई धैवत मंदर
स्थाई पुनः निषाद अति कोमल मंदर स्थाई पुनः खडज मध्यम
स्थाई पुनः रिषभ मध्यम स्थाई पुनः निषाद अति कोमल
मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः धैवत मंदर

पू॰ मध्यम मंध्यम दरग्रामी पंचम मं दरग्रामी पुनः निषाद कोमल मंधर

सं॰ २॰ प्र॰ सा ग्रामी पुनः खडज मध्य ग्रामी पुनः मध्यम ग्रामी पुनः गंदार मंध्य

२२

ग्रामी इति ग्रंतरः ॥ अथान्तरं ॥ सां रे नि ध नि सां रे ग मि

ध प ध म प नि सां रे मं ग म ध नि सां

रे रे नि नि ध ध म म ध ध नि नि ध

म प म ग म ग म ग रे सा नि ध नि सां

रे ग म ग रे म ग इत्यंतरः ॥ अथ देशी मंद खम्मा

वति वर्ननं ॥ अथ गतसितार तार निषेनिषादादीवरसानंम् ॥ डिर

डा डिर डा डा डा डा डा ॥ डिर डा डिर डा डा डा

सा ग म प ध म ग ग म ध नि ध प म

डा ॥ इत्यस्थाई ॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा ॥ डिर डा

ग ग म ध नी सा नि सा सा रे नि

डिर डा डा डा डा डा इति ग्रंतरः ॥ डिर डा डिर डा डा

नी नी ध प म ग ध ध म ध ध

डा डा डा ॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा ॥ इत्याभो

ध नी सां सा रे नी सा रे नी ध म

गः ॥ इती निषादग्रादीगतसितार अथ मंम् खम्मावती राग ती ॥ अथ

अथैव तादिस्वर गत सितार तार ति कोखम्मावती राग गी ॥

१ डिड़ ध २ दा ध ३ डिड़ नि को ४ दा ध ५ ड़ा नी को ६ दा सा ७ दा सा ८ ड़ा रे ॥ १ डिड़ रे २ दा नी को ३ डिड़ नी को ४ दा ध ५ ड़ा म

६ दा प ७ दा म ८ ड़ा ग ॥ १ डिड़ म २ दा ग ३ डिड़ सा ४ दा नि को ५ ड़ा सा ६ दा म ७ दा ध ८ ड़ा म ॥ १ डिड़ प २ दा म

३ डिड़ ग ४ दा म ५ ड़ा ध ६ दा ध ७ दा नी को ८ ड़ा सा ॥ इतिस्थाई ॥ १ डिड़ सा २ दा नी को ३ डिड़ सा ४ दा रे

५ ड़ा सा ६ दा रे ७ दा नी को ८ ड़ा ध ॥ १ डिड़ म २ दा ध ३ डिड़ नी को ४ दा ध ५ ड़ा म ६ दा प ७ दा म ८ ड़ा ग

इतिअंतरः धैवतादिगतस्मातस्मा॥ खम्भावतीरागरागिण्यपदेशात्तरभेदवरणनं गतसितारतारतिच्छाराग रागिनी खम्भावती॥

गतफरोजखानी॥ १ दा म २ ड़ा ग ३ दा म ४ ड़ा ग ५ दा म ६ दा रे ७ ड़ा ग ८ दा म ९ डिड़ प

१० डिड़ ग ११ डिड़ म १२ दाड़ रे १३ दाड़ सा १४ दा रे नि को १५ दा म १६ ड़ा ग ॥ इतिस्थाई ॥ १ दा सा

२ ड़ा रे ३ दा नि को ४ दा ध ५ ड़ा ध ६ दा नि को ७ डिड़ सा ८ डिड़ रे ९ दाड़ नि को १० दाड़ प ११ दा ध १२ ड़ा ध १३ दा नि को

१४ ड़ा सा १५ दा म १६ दा ध इतिअंतरः जानना चाहिये के इसमें और इसमें किया भेद है इसमें तीबर स्वर हैं और परंज १ व २ स ३ ता सें धवराग मिलता है

इसमें कोमलस्वरव होत हैं और परंज पंचम कोरियामिलता है॥

पृ॰
सं॰ र॰ प्र॰सा॰
१२

और राक तरागिणी की जंग ले कोरियस्री होजा ती हे॥ अपनी अस ली यतपर न हीं रहती॥ लेकन देशान्तर के भेद कर के लिखनी जरूरत है इस्वास्ते लिखी गई॥ अथ अंतरः॥

१ ओ म॒ २ हो ग॒ ३ ओ म॒ ४ हो ग॒ ५ ओ रे ६ ओ सा॒ ७ हो रे १ ८ ओ ग॒ ९ डिर म॒ १० डिर ग॒ ११ डिर रे १२ ओर म= १३ डार ध= १४ डा धु १५ ओ म॒ १६ हो पु ॥ ओ मू॒ २ डिर ग॒ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३

डिर डिर ओर ओर डा हो ओ ओ हो ओ डिर म= ग= रे= नी सा= प= म= नि=को ध= म२ प= म= ग= रे= ५को म॒ प॒ १४ १५ १६ डिर डिर ओ ॥ इति अंतरः॥ इति श्री रणवीरप्रगाशसार नाम संगी रे= म= ग=

त ग्रंथ गोस्वामिजगन्नाथकृत खम्भावतीरागणी मालकौशमध्यम

१ इस्ली ओ त्ताति प्रकार द्वि त्यो ध्या यः२॥ ते स्थानालाप म अद्ध्र खम्भाव कोनि= स= ग= म= प= प= ध म प म ग ग म म प ध कौ नी नी नी॥ ननरीई नों ऊ नां अ द त तौ ता नो नतना तौ॥ ननरी न ना न ना न ध म प म ग ध नीको सा= ग म प ध प्र म ध ध नी को नी नानो तना आन ता नरा नु ता नो ने त ना तौ ता नो नै त ना तौ॥ नननन ध म प म ग ध कोनी स= स= स= स= रे= रे= नी को नी नतन ता नो ननन न री नि ना ना नो नै ननानो तनन न री ता न आन ध ध म म ध ध नी को नी ध म प म ग नि=को न ता न न रा न त ता न न न त तो नो त तु रे नु रा य न ता नो नत नो ता नो स= ग म ध प म म ध ध नीकोनी ध म व न प म ग ध तै त ना नो त न न न न ननन नो ननो न नरी इ ना आ नो ऊ आ नां अद प म ध ध म ध नी स= तनो ता नो नै त न नो॥ इति खम्भावतीरागणी मालकोश स्यप्र

१ २
थमआरयास्वरूप मं॥ इती च द्वि त्यो ध्या यः समं भू पातसर्वंज गतः

अथ टोडीरागिणी मालकौशरागद्वितीय भार्या वर्णनं ॥ खरज न्यंश ग्रहं
न्यासं स्वर जातिक मूर्छना॥ स्पूर्णी टोडी रागिन्य: मालकौशप्रियाइस्म ॥१॥ प
लाशी भीमवराटि स्य मिश्रतं कुरु: ॥ दिवसे प्रथमे मयामे न टोडी रागिणी गी
यते ॥२॥ दोहा खरज न्यास ग्रोर अंश ग्रह है कोमल तीव्र होई॥ बराटी भीमपला
शका मेल के टोडी होई ॥१॥ दिवस पहले जाम मे सात सुर न को लाय॥ मा
लकौंश की भार्या टोडी रागिनि गाय॥२॥ वार्तिक यो टोडी रागिणी मालकौंश की
दूसरी इस्त्री स्पूर्णी सात स्वर की खरज ग्रह ग्रोर अंश न्यास है ग्रोर भीमप
लाशी बराटी धनाश्री इन रागों से इकत्र करने से यो टोडी रागिणी होती है इस्मे इ
स्मे इस परकार सात स्वर लगते हैं मध्यम तीव्र निषाद तीव्र धैवत गंधा
र रिषभ कोमल लगते हैं खरज पंचम ये स्वर शुद्ध लगते हैं इस पर
कार करके दिन मे प्रथम ही पहर मे गाने मे आती है ॥ नाइका नाइक र
सत्रलंकार दव नारियी छद मं त्रआवाहिन विसर्जन ध्यान आगे लिखे
जाईगा॥ संगीतरत्नाकरे ॥ गंधार ग्रह संयुक्ता: कुचित मध्यम ईरता: ॥
सम्पूर्णा टोडिका ज्ञेया ग म ध प नी सा रे स्वरा ॥१॥ तुखार कुंदोज्व
ला: देहा षट्टी काशमीर कर पुर बिलस देहा॥ विनोदयन्तीह
रिणां वनीते बीणां धरा राजती टोडिका यं ॥२॥ गुजरी वराटी
युक्ता च काण्डाचतत्पर: टोडिका जायते प्रात: दिवसे प्रथम प्रह
के ॥३॥ इति संगीतरत्नाकरे च॥ अथ संगीतदर्पनमतेन॥

पृ॰
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
१३

दोहा ॥ न्यासमंश ग्रह खंड जन्मंग परपूरण जोत ॥ दोई पहर पर रागणी टोडी नितहीं होत ॥ १ ॥ अथ रागमालायां ॥ दोहा ॥ खंड न ग्रह स रि ग म प ध नि सा तो सुर अभिराम टोडी गावत सरद रितु दिव दूसरे जाम ॥ तथा च संगीत कल्पद्रुमः संगीत कल्पद्रुम में और संगीतरत्नाकर में इत्ना ही फरक है ॥ पाठ संगीत कल्पद्रुम ॥ गांधारांश ग्रहं न्यासं कुचित चैव तरीरितः ॥ सम्पूर्णा टोडिका ज्ञेया दिवसा दौ ज्ञा मे पगीयते ॥ १ ॥ नादमहोदधौ तथा च ॥ षड्जांश ग्रहं न्यासं खंड जादिक मूर्छना ॥ सम्पूर्णं टोडिका ज्ञेया कथ्यते न सरस्वती ॥ १ ॥ भीमपलाशी वराटी च तिस्त्र भिनिः संकुरुः टोडिका प्रथम दिवसे गीयं मालकोशस्य बलभः ॥ २ ॥ ये टोडी रागणी मालकोश की इस्त्री वाई प्रकार से मानते हैं और उस जगा इसका अलग अलग नाम है अब सलये टोडी है और इहां पहीं टोडी लिखी जाइगी और बाकी टोडियां आगे संकीरण रागों मे लिखे जावेंगे इस जगा अनूरबी मर्यादा लिखी जाइगी टोडी रागणी मालकोश की दूसरी है भीमपलाशी व राटी इन्हाको रोक जगा कर के गावो टोडी रागणी होगी ॥ दिन के पहले पहर मे इसको गाते हैं श्री शारदा जी हनूमान जी ने इसी प्रकार से गाइ नि कीया है इ सकी नि तु और देवता नाइक नाइकार सम्र

अलंकार मंत्रसवी गसवलि खे जाते हैं प्रथम कित्ते भेकी टोडी रागणी है॥ टोडी १ बहादुरी टोडी २ जौनपुरी टोडी ३ गिरनारी टोडी ४ महीरी टोडी ५ तुर्की टोडी ६ षट टोडी ७ देसी टोडी ८ सिंधूरी टोडी ९ गंधारी टोडी १० करनाटी टोडी ११ रामतोडी १२ गुर्जरी टोडी १३ वराटी टोडी १४ मुधूमाधवी टोडी १५ आनंद टोडी १६ सूहौ टोडी १७ विहारी टोडी १८ बंगाली टोडी १९ जोगिया टोडी॥२० कल्ले टोडी २१ दे स्कारी टोडी २२ इस्को दक्षन टोडी भी कहते हैं और भी तेहैं॥ अथ थे टोडी वर्णनं और टोडी को आसावरी टोडी भी कहते हैं॥ टोडी रागणी शरद रितु॥ स थे की टोडी भी कहते हैं टोडी यह हो है॥ टोडी रागणी शरद रितु॥ सवेकी टोडी भी कहते हैं टोडी यह हो है॥ टोडी रागणी शारद रितु॥स

[illegible]

अथ ध्यानं ॥ तुखार कुंदोज्वलः देहा यष्टी का काश्मीर करपुर बिलस देहा विनो
दयन्ति हरसं बनीते वीरणा धरा राजनती टोडी कोयं ॥१॥ अथ भाखा ध्यानं ॥ सुं
दुर अंग अनंग भरी छबि स्याम लबिंदुति राजनटोडी ॥ अंमर स्वेत उरोज उतंग वि
नागिसी अलकैं जु गङ्घोडी ॥ घूमत ताननचान नसो कर चूमति कानन के मृग मो
डी ॥ ताहि नचावत वीन बजावत प्रीतम को गुण गावत टोडी ॥१॥ इति ध्यानं मः ॥

१ २ ३ ४
अथ उत्पत्ती ॥ मध्यमा शी वराटी धनाश्री इन मिश्रत करने से टोडी रागिणी
होती है करुणा रस यतस्य आवृत्ती मिकृती हरा टोडी रागणी स्वर मा है ॥ खडज

सां रे= ग= म=
मध्य ग्रामी रिषभ कोमल मध्य ग्रामी गंधार कोमल मध्य ग्रामी मध्यम तीव्र म
को प= ध को नी नी
मध्य ग्रामी पंचम मध्य मध्य ग्रामी धैवत कोमल मध्य ग्रामी नीषाद तीव्र मध्य
को ती
ग्रामी र ने स्वरो से ये रागणी बनती है ॥ अथ सरगम बनाने विधी लिख्यते

सा= रे= ग=
खडज मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई गंधार कोमल मध्य
म=क को. प= ध= को
स्थाई मध्यम तीव्र मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई धैवत कोमल मध्य
ती नी सा= को नी
स्थाई नीषाद तीव्र मध्यस्थाई खडज तार स्थाई पुनः नीषाद तीव्र मध्य
ती ध= प= ती
स्थाई पुनः धैवत कोमल मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः
म= को ग=
मध्यम तीव्र मध्यस्थाई पुनः गंधार कोमल मध्यस्थाई पुनः रिष
रे= नी सां= को सा
भ कोमल मध्यस्थाई पुनः खडज मध्यस्थाई पुनः खर्जे मध्यस्थाई
को नी ध प
पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः पंचम
को

मंदर ग्रामी पुनः मध्यम तीव्र मंदर ग्रामी पुनः धैवत कोमल मंदर
ग्रामी पुनः निषाद कोमल मंदर ग्रामी पुनः खडज मध्य ग्रामी पुनः खडज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल
मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल मध्य स्थाई
पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खडज मध्य स्थाई इति ग्रस्थाई
गंधार कोमल मध्य स्थाई मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य
स्थाई पुनः धैवत कोमल मध्य स्थाई पुनः निषाद तीव्र मध्य स्थाई
खडज तार स्थाई पुनः रिषभ कोमल तार स्थाई पुनः निषाद तीव्र मध्य
स्थाई पुनः खडज तार स्थाई पुनः रिषभ कोमल तार स्थाई पुनः गंधार
कोमल पुनः रिषभ कोमल पुनः खडज तार स्थाई पुनः निषाद तीव्र
मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः
गंधार कोमल मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खडज
मध्य स्थाई पुनः निषाद कोमल तीव्र पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई
पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मंदर स्थाई पुनः धैवत कोमल
पुनः निषाद तीव्र मंदर स्थाई पुनः खडज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल

पृ.
सं.र.प्र.सा.
१५

पुनः गंधार कोमल पुनः मध्यम तीव्र मध्यग्रामी पुनः गंधार कोमल मध्यग्रामी पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खर्ज मध्य स्थाई
पुनः खर्ज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य
स्थाई पुनः धैवत कोमल मध्य स्थाई पुनः निषाद तीव्र मध्य स्थाई पुनः खर्ज तार स्थाई पुनः नीषाद तीव्र स्थाई पुनः धैवत कोमल मध्य
स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खर्ज
मध्य स्थाई पुनः निषाद तीव्र मंदर स्थाई पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः निषाद तीव्र पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः पंचम
मंदर स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मंदर स्थाई पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः निषाद तीव्र मंदर स्थाई पुनः खर्ज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः गंधार कोमल मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः खर्ज मध्य स्थाई प्रतिग्रंतरः आस्वरावरम॥

सा रे ग म प ध नी सां नी ध प म ग रे सां नी
को को ती को ती ती को ती को को ती

सां नी ध प म ध नी सां रे गं मं गं रें
ती को ती को ती को को ती को को

सां इति अति स्थाई॥ अथ अंतरः गं मं पं धं नीं सां रें गं गं रें सां
को ती को ती को को को को

नीं धं पं मं गं रें सां रें गं मं पं धं नीं सां नीं धं
ती को ती को को को को ती को ती ती को

पं मं गं रें सां नीं धं पं मं धं नीं सां रें गं मं
ती को को ती को ती को ती को को ती

गं रें सां इति अंतरः इति टोडी रागिणी सरगम लिख्या। अथ
को को

अलंकारस्वरूपम् सा रेग रेगम गमप मपध पधनी पधनी
को को को को ती को ती ती को को ती को ती

धनीसा सानीध नीधप धपम पमग मगरे गरेसा इति अलं
को ती ती को ती को को ती ती को ती को को को को

कारस्वरूपम॥ इसी से गंधार अंश की भी सरगम बन सकती है पर च गं-
धार अपणी असल अस्थान पर नहीं इस वास्ते इसको अंश रखने की और
लिखने की चंदा जरूरत नहीं है लेकण कुछ थोरा सा लिखा जासक
ता है॥ गंधार कोमल मध्यग्रामी मध्यम तीव्र मध्यग्रामी गंधार कोमल
मध्यग्रामी रिषभ कोमल मध्यग्रामी खड़ज मध्यग्रामी निषाद तीव्र
मंदर स्थाई धैवत कोमल मंदर स्थाई निषाद तीव्र मंदर स्थाई खड़ज
मध्य स्थाई रिषभ कोमल मध्य स्थाई गंधार मध्य स्थाई मध्यम तीव्र
मध्य स्थाई पंचम मध्य स्थाई धैवत कोमल मध्य स्थाई निषाद तीव्र

पृ.
सं. र. प्र. ता.
१६

16

मध्यस्थाई धैवत कोमल मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई मध्यम तीव्र
मध्यस्थाई गंधार कोमल मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई खरज
मध्यस्थाई गंधार कोमल मध्यस्थाई मध्यम तीव्र स्थाई गंधार कोमल
मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई खरज मध्यस्थाई मध्यम तीव्र
मध्यस्थाई गंधार कोमल मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई ॥
खरज मध्यस्थाई निषाद तीव्र मध्यस्थाई धैवत कोमल मंदरस्थाई नि
षाद तीव्र मंदरस्थाई खरज मध्यस्थाई ॥ ३ निस्थाई ग्रथ अंतरा विस्तार
मध्यम तीव्र मध्यस्थाई धैवत कोमल मध्यस्थाई निषाद तीव्र म
ध्यस्थाई खरज तारस्थाई रिषभ कोमल तारस्थाई गंधार कोमल तार
स्थाई रिषभ कोमल तारस्थाई खरज तारस्थाई निषाद तीव्र मध्य
स्थाई धैवत कोमल मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई मध्यम तीव्र मध्य
मध्यस्थाई गंधार कोमल मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई खरज
मध्यस्थाई निषाद तीव्र मध्यस्थाई धैवत कोमल निषाद तीव्र मं
दरस्थाई खरज मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई गंधार कोमल

अथ कुकुभरागणी मालकौश द्वितीय भार्या वर्णनम्॥ षडजांश
ग्रहन्यासं षडजादिक मूर्छना सम्पूर्णी कुकुभरागिणयः मालकौशस्य
वल्लभः ग्रीषमरितौ प्रथम दिवसे या मेत्रिभिरगिराभिस्मृतः॥ जैजै
वंती अथैलैया अवेलावलीस्तथा॥ कुकुभरागिणी नित्यं गीयते
गुणीजनै॥ मालकौशराग रागणी प्रिया कथ्यते हनुमानमते॥
भाषायां दोहा॥ अंश न्यास ग्रह षडज स्वर सम्पूर्ण प्रमाण॥ कुकभ प्रिया मा
लकौश की गावत षडज के धात गुणी सज्ञाण॥ सात स्वर सम्पूर्णक
ही कुकुभ कौश की बाम॥ जैजैवंती बेलावली अहै या मिले एक होय था
मा॥ दोहा कुकुभरागिणी उत्पत भई मालकौश की नो॥ गावत बुद्धि
वान जन सारेगमप धनीसा॥ वार्तिक कुकुभरागिणी मालकौश की द्वि
तीय भार्या सम्पूर्ण सात स्वर की सब मतों के अनुसार है और षडज
स्वर इसमें अंश न्यास ग्रह है और जैजैवन्ती और बेलावली और अथैले
या इन तीन रागों को एकत्र करने से इस रागणी की उत्पत्ती होती
है और कोई कोई ये भी कहते हैं के के जैजैवन्ती बेलावली देव
गिरी इन तीनों के एक होने से इस रागणी की उत्पती होती है
पन कर के अथैलैया न मिले तब तक
कामल व होनों बातें रो कहीं है कि पां के जब तक देवगिरी मेयां

ए:
सं·र·प्र·मा·
१८
18

देवगिरी नही होती इस्वास्ते ये दोनो बातां ए कही हैं कुकुभा
रागिणी मालकोशकी उत्पती लिखी है॥ सा रे ग म प ध नी
सां नी नी ध प म ग रे सा॥ अथ पसंगीतदर्पण करे लिख
ते उपोषि तो गीरति मंडितो गिचन्द्रानना चम्पक दाम पुंजा॥
कात्यामणी त्यात पर मा विचित्रा दानेन पुंजा कुकुभा मनोज्ञा
वेलावली देवगिरी पुंजा जैनेव तीत पर कुकुभा जाय ते
भा ता दिवसे प्रथम जाम कः षडजांश ग्रह न्यास संपूर्णा कुकुभा
मता सा रे ग म प ध नी सा नी नी ध प म ग रे सा॥ इतीच॥ अथ
संगीतदर्पणे॥ धैवत न्यास अंश ग्रह सुरव संपूर्ण चंदा॥
तीन पहर पर रागणी कुकुभा करे अनंद॥१॥ अथ रागमाला॥
दोहा॥ धैवत ग्रह ध नि स रे ग म प पूर्ण जात बखान॥ सरद
रेन चौथे पहर कुकुभ रागिणी जान॥ इति रागमाला यां॥
इसने धैवत स्वर मंद रस्या ग्रह और न्यास और अंश कहा
है प और इनोने इसकी सरद रितु लिखी धप धपम
है रसा तका लिखा है य अर्थात प्रातःकाल ३ रा...

अथ कुंकुम सर्वांग वशीकरण तंत्र नाइका। छंद नाइका मध्य शारद्र ईश

दिवसादयाम समय शिवदेवता पंक्ती छंद नारद रिषी हनूमान तत

पा मंत्र मत सरस्वती मत ॥ कालीशक्ती क्रीं बीज ॥ द्वादशाक्षर लंका

र वंजन गना घराई नाइका संजर वाणी ॥ ओम् क्रीं ह्रीं हीं मं मं स्वाहा ॥

इति मंत्रः ॥ ओम् क्रीं बीजं काली शक्ती शिव देवता पंक्ती छंदः कु

कुमा सिद्धीर्थे जपे विनियोगः ॥ धूप दीप पुष्प कुंकुम नैवेद्य स

सहित पंचोपचार पूजन आवाहनं आसन सर्व मंत्र शिवा वासी मन षट

मास जप एक दश लाख करने से सिद्ध हो जाती हय ॥ ओं ह्रीं आ

वाहनं ॥ ओम् ह्रीं आसनं नमः क्रीं मं प्राण प्रतिष्ठां कुरुः ओं मं क्रीं

स्नानं नमः ओं क्रीं ह्रीं गंधं नमः ओम् क्लीं पुष्पं नमः ओम् ह्रीं मं

धूपं नमः ओम् ह्रीं मं दीपं नमः ओम् क्रीं मं मं नैवेद्यं नमः अथ ध्या-

ध्यानं ॥ उपोषतां कुंरती मंडतां कुंकी चंद्रानना च मका दासपुत्रा

हे संसार की स्यात पर मा विचित्रा दाने न पुत्रा कुंकुम मनोरमा ॥

शिरी रूलतीन के ॥ त्रिपुरी अलकें अंवीयालतकें प्रतिजोवन की

तंवा नओं पटके सरिया उपरी छती या दर की अंगिया परं म

न मे॥ सवरे न जगी ष लना ह तगी छल सो करि प्रीत ठगी वन मे॥
पीय बोल सुन्यो दुख पावत है कुकुभावती रोवत कुं जन मे॥ इति
भाषा ध्यानं॥ अथ वार्तिक ध्यानं॥ रोक नाई का बड़ी संदर सो तो पद
मणी कुंद पुष्प की न्याई वर्ण और यौवनवती मानो रती ए या काम
की चंदर मुखी चपल थी तपट ली ये हुए काम से भरी हुई पती से
विना चात्रिक के शब्द उ न से दिखत तल जाई मार्ग कुं जन मे ते ऐसे
वियोग रूपी नदी को पर वाह पर गया रह रही है॥ इति ध्यानम्॥

स= रे= ग=
ग्रस्योत्पत्ती खड्ज न मध्य ग्रामी रिखभ मध्य ग्रामी गंधार मध्य

म= प= ध=
ग्रामी मध्यम मध्य ग्रामी पंचम मध्य ग्रामी धैवत मध्य ग्रामी

नी= सा= नी=
निषाद मध्य ग्रामी खड्ज नतार स्थाई निषाद मध्य स्थाई पुनः नि

नी= ध= प= म=
षाद मध्य स्थाई धैवत मध्य स्थाई पंचम मध्य स्थाई मध्यम मध्य

ग= रे= सा=
स्थाई गंधार मध्य स्थाई रिखभ मध्य स्थाई खड्ज मध्य स्था

ई॥ सा रे ग म प ध नी सा नी नी ध प
म ग रे सा॥ इति स्थाई॥ सारेग रेगम गमप म
प ध पधनी धनीसा सानीध नीधप धपम

१ २ ३

प म ग म ग रे ग रे सा, सा रे ग म रे ग म प ग म प ध, म
प ध नी प ध नी सा, ध नी सा नी, नी सा नी ध, सा नी ध प, नी ध प
म, ध प म ग। प म ग रे म ग रे सा सा रे ग म प रे ग म प ध, ग
म प ध नी म प ध नी सा, प ध नी सा नी ध नी सा नी ध नी सा नी ध
प सा नी ध प म नी ध प म ग ध प म ग रे, प म ग रे सा सा रे सा
रे ग रे ग रे ग म ग म ग म प म प म प ध प ध प ध नी ध नी ध नी
सा सा नी सा नी ध नी ध नी ध प ध प ध प म प म प म ग म ग म ग
रे ग रे ग रे सा सा रे ग म प ध। रे ग म प ध नी २ ग म प ध नी सा ३
म प ध नी सा नी ४ प ध नी सा नी ध प ५ ध नी सा नी ध प ६ नी ध प म
सा रे ग म प ध नी १ सा नी ध प म ग रे २
ग रे ७ ध प म ग रे सा ८। सा
रे ग म प ध नी सा ३ सा नी ध प म ग रे ४ ग म प ध नी सा नी ५ नी सा
नी ध प म ग ९ म प ध नी सा नी ध ७ प ध नी सा नी ध प ८ ध नी सा नी
ध प म ९ नी सा नी ध प म ग १० सा नी ध प म ग रे ११ नी ध प म ग रे सा १२

स्वर्ज तार ग्राम सा रिषभ तार ग्राम वाला गंधार तार ग्रामी मध्यम तार
ग्रामी गंधार तार ग्रामी। रिषभ तार ग्रामी स्वर्ज तार ग्रामी नीषाद धैवत मध्य ग्रामी

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
२॰
20

पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार म
ध्यस्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खडज मध्यस्थाई पुनः
खडज मध्यस्थाई पुनः निषाद मंद्रस्थाई धैवत मंद्रस्थाई पुनः
पंचम मंद्रस्थाई पुनः मध्यम मंद्रस्थाई खुलासितार का पु
नः पंचम मंद्रस्थाई पुनः धैवत मंद्रस्थाई पुनः निषाद
मंद्रस्थाई पुनः खडज मध्यस्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पु
नः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार म
ध्यस्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खडज मध्यस्थाई पुनः रि
षभ मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई
पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः निषाद मध्यस्थाई पुनः खडज म
ध्यस्थाई पुनः निषाद मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः
पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्य-
स्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खडज मध्यस्थाई इति तं
तरः ॥ अथ स्वरांतरम् ॥ सा रे ग म म रे सा नी ध
प म ग रे सा रे ग म ग रे सा सा ध प नी ध
म प

ध नि सा रे ग म ग रे सा सा रे ग म प ध

नी सा नी नी ध प म ग रे सा रे ग म ग

रे सा इति अंतरा:॥ अथ द्वितीय प्रकार सरगम कुकुभ राग की लि

म मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई रिषभ मध्यस्थाई खउज

खते॥ मध्यम मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई रिषभ मध्यस्थाई मध्यम मध्यस्था

म मध्यस्थाई रिषभ मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई मध्यम मध्य

पंचम मध्यस्थाई धैवत मध्यस्थाई रिषभ मध्यस्थाई खउज मध्यस्थाई

स्थाई गंधार मध्यस्थाई ॥ इति स्थाई॥ अथ स्वरान्तरा॥

रिषभ मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई ॥ इति स्थाई॥ अथ स्वरांतरा॥

रिषभ मध्यस्थाई रे ग म ग म प ध प म ग रे

म ग रे सा सा रे ग म ग रे सा रे ग इति स्थाई॥ अथ अंतरा॥

सा रे ग म

म मध्यस्थाई म मध्य म मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई निषाद मध्य

गंधार मध्यस्थाई खउज तारस्थाई पुन: खउज तारस्थाई पुन:

पुन: निषाद मध्यस्थाई खउज तारस्थाई पुन: खउज तारस्थाई पुन:

खउज तारस्थाई पुन: निषाद मध्यस्थाई पुन: गंधार तारस्थाई पुन:

गंधार तारस्थाई पुन: मध्यम तारस्थाई पुन: गंधार तारस्थाई पुन:

रिषभ तारस्थाई पुन: खउज तारस्थाई पुन: खउज तारस्थाई पुन:

पू.
सं. र. प्र. सा.
२२
21

निषाद मध्यस्थाई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई
पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्य
स्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः पंचम
मध्यस्थाई पुनः खउज तारस्थाई पुनः धैवत मध्यस्थाई पुनः धैव
त मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पु
नः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्य
स्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खउज मध्यस्थाई पुनः रिषभ मध्य
स्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गं
धार मध्यस्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खउज मध्यस्थाई
पुनः निषाद मंदरस्थाई पुनः पुनः धैवत मंदरस्थाई पुनः पंचम
मंदरस्थाई पुनः रिषभ मंदरस्थाई और ये रिषभ मसि तार मे रसात
रांसे बनता है जो जब दोनो खउजां पितलकी यां पंचम की सुंदरी मंद
र स्थान वाली दवाने से रिषभ मंदरस्थानी होता है पुनः पंचम मं
दरस्थाई पुनः निषाद मंदरस्थाई पुनः खउज मध्यस्थाई पुनः रिष
भ मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई
पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्य
स्थाई पुनः रिषभ मध्यस्थाई पुनः खउज मध्यस्थाई पुनः रिषभ म

गं
म ध स्थाई ३ तानाः गे धार म ध स्थाई ३ तिरूमेतराग्रा भोगः॥ आप स्वर

ग्रा तरम्॥ ग म प ध नी नी सां सां सा नी सां

ग ग म ग रे सां सां सां नी ध प म म म

ग म प सा ध ध प म ग म ग रे सां सां

रे ग म ग म प ध प म ग रे सां सां रे

रे ग म ग म प ध प रे प नि सां रे गं

ग॥ म ग रे सां नि ध प रे प म ग रे सां

म ग रे सां रे ग म प ध प सां रे ग म

सां रे ग इति थंतराः भोगः अथ अलापातरम्॥ ननरी ई नाग्रा

सां रे गं नी नी ध प म ग रे सा

प ध नी नी सां तनानरानन तनौ ता नौ नै तना

उग्रा नाग्र दनाता नौ नै तु नातो॥ ग्रा सां नी नी ध प म

सां रे ग म ग रे तनातो॥ नन नाता नौ ननननन

तो॥ तननननननता नौ नै सां नि ध प म प ध नि सा

ग रे सां सां नि सां नि ननौ तानौ तनन नौ नै तनातो॥ तनौ

तानौ नै तनातो॥ तनननतत नौ नी नी ध प म ग रे सां

रे ग म प ध तनौ नौ तन नौ नाना तनौ नै तनतौ

ताननरीतानौ नननातौ तानौ नौ तन नतो। १ २ ३

२ तिश्रालापातरम्॥ अथ गतसितारतारतिन धीमे॥ डिर डा डिर
स्वउजस्वरा दी गत है ॥ सां रे गं

४ ५ ६ ७ ८ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
डा डा डा डा डा॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा
म प ध नी सां नी नी ध प म ग रे सां
इति स्थाई धैवतके ऊपर इस्की समहै म

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
२२
22

डिर डा डिर डा डा डा डा डा॥ डिर डा डिर
सा नि सा नि ध प म प ध नि सा

डा डा डा डा डा॥ डिर डा डिर डा डा डा डा
रे ग म प ध सा रे ग म ग रे सा

डा॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा॥ डिर डा डिर
सा नी नी ध प म ग रे सा सा रे ग

डा डा डा डा डा। डिर डा डिर डा डा डा डा
म प ध नी सा नी ध प म ग रे सा

डा॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा॥ डिर डा डिर
सा सा नि ध प म प ध नि सा रे ग

डा डा डा डा डा। डिर डा डिर डा डा डा डा डा
म प ध नी सा नी ध प म ग रे सा सा

इति स्थंतरा॥ अथ दुतीप्रकार गत सितार मध्यम स्वरादी तिनतार लिख्यते॥ डिर डा डिर डा डा डा डा डा। डिर
म ग रे सा रे ग ग ग ग

डा डिर डा डा डा डा डा। डिर डा डिर डा
म प ध प म ग ग म ग रे सा

डिर डा डा डा डा॥ इति स्थाई॥ अथ अंतरा॥ डिर
रे ग ग ग ग ग

डा डिर डा डा डा डा डा डिर डा डिर डा
म प नी नी सा सा सा नी सा ग ग

५ ड्रा=म ६ आ=ग ७ आ=रे ८ ड्रा=सा । १ डिरे=सा २ आ=सा ३ डिरे=नि ४ आ=ध ५ ड्रा=प ६ आ=म ७ आ=म ८ ड्रा=म

१ डिरे=ग २ आ=म ३ डिरे=प ४ आ=सा ५ ड्रा=ध ६ आ=ध ७ आ=प ८ ड्रा=म ॥ १ डिरे=म २ आ=ग ३ डिरे=रे

४ आ=सा ५ ड्रा=रे ६ आ=ग ७ आ=ग ८ ड्रा=ग । १ डिरे=म २ आ=म ३ डिरे=प ४ आ=ध ५ ड्रा=ध ६ आ=प ७ आ=म

८ ड्रा=ग । १ डिरे=म २ आ=ग ३ डिरे=रे ४ आ=सा ५ ड्रा=रे ६ आ=रे ७ आ=रे ८ ड्रा=रे ॥ १ डिरे=म २ आ=ग ३ डिरे=रे

४ आ=सा ५ ड्रा=नि ६ आ=ध ७ आ=प ८ ड्रा=रे । १ डिरे=प २ आ=नि ३ डिरे=सा ४ आ=सा ५ ड्रा=रे ६ आ=म ।

७ आ=म ८ ड्रा=ग । १ डिरे=म २ आ=ग ३ डिरे=रे ४ आ=सा ५ ड्रा=रे ६ आ=ग ७ आ=ग ८ ड्रा=ग ॥

१ डिरे=म २ आ=म ३ डिरे=प ४ आ=ध ५ ड्रा=ध ६ आ=प ७ आ=म ८ ड्रा=ग ॥ १ डिरे=म २ आ=ग ⊢

३ डिरे=रे ४ आ=सा १ ड्रा=रे ६ आ=ग ७ आ=ग ८ ड्रा=ग ॥ इति अंतरा इस गत को यथायो
ग लिखा हय इति कुकुभ राग रागनि माल कोश राग स्पष्टतीय
भार्या वर्णनं गोसाईं जगणनाथ कृत संगीत रणाबीर प्रगासा
सार नाम ग्रंथो चतुर्थो ध्याय: समाप्तं मि ४ शुभं भूयात सर्व
जगतांम्

पु.

सं. र. प. म.

२३

23

अथ गौरी रागणी मालकौंस राग स्त्रु तर्थी इस्त्री वर्णनं सर्व संगीत
मतेन लिख्यते॥ खर्जअंश ग्रह न्यास खर्ज आदिक मूर्छना॥ रिपु
रहीत कर्तव्यं गौरी गीयतु ऊडवं॥१॥ दिवसे त्रतीय याम स्तु श्री पूर्वी गौ
राच मिश्रतो॥ गौरी रागिणकथ्यतव्यं मालकौंश प्रीया इमा॥२॥ शर्द रितौ
सिंगार रस प्रोक्ता मध्यानाइकातु कथ्यते॥ स नी ग म ध प पंच रिपू धेवत
च वर्जीतो॥ अथ भाषायां॥ दोहा॥ अंश न्यास ग्रह खर्ज स्वर मूर्छन वाकी
जान॥ रिषभ और धेवत के विण पांच सुर न सो गान॥ चौपई॥ गौरा पूर
बी श्रीरागगुन की जे राकही पाई॥ गौरी तब उत्पत भई कौशका पूयाा
चौथे पहर रवी जब पश्चम जाई॥ मध्या नाइका
कहाई॥ शारद रित सिंगार रस गुणी राजत नोगाई॥ दोहा॥ गौरी ऊडव रागणी मालकौं
शकी बाम॥ कोमल स्वर रिपु धेवत बिना गावत हो बिसराम॥१॥
अथ पं वातिक गौरी रागिणी मालकौंश की स्त्री ऊडव पांच सुर की
है और कोमल सुरों से बनती है यह
खउज स्वर इस में अंश न्यास ग्रह है
और रिषभ धैवत इस में विवर्जित है यह और श्री राग पूर्बी गौरा इ
न रागों को इकत्र कर के से पैदा रागणी गौरी नाम मालकौंश की भार्या
/ मध्यानाइका राडनाइ कहप
चुतर्थी होती है यह शारद रित सिंगार रस दिन के चौथे पहर पर

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
२४

24

गान करनी चाहिये और रिषभ भी इसमे अंश न्यास कहते हैं और ।
सम्पूर्ण भी कहते हैं ॥ संगीतरत्नाकर तथा संगीतपारिजात नादमहोद
दौ ॥ रिषभांश ग्रहं न्यासं रिषभादिक मूर्छना ॥ गौरीरागिणी गीयन ते
मालकौशस्य वल्लभा ॥१॥ श्री टंक मालवायु जो दिवसे तुर्थयामे ॥
गौरी गान कर्तव्या मालकौश प्रियाइमा ॥२॥ अथ संगीतमते नालिख्य
ते ॥ निवेशयंति श्रवसे बंसंसमानरांकुरं कोकिल नादरम्यं स्या मा मधु
स्फंदि सुस्तम नादा गौरीयमुक्ता कहहलेन ॥ श्री टंक मालवायुक्ता गौ
रीच गीयते तुर्थे दिनान्ते समयजाते सम्पूर्ण रिषभादि च ॥३॥ संगीत
मायायां ॥ दोहा ॥ खर्ज ग्रह सरेगमपधनी औडुव धरि सुर हीन ॥ शरद दिव
स चोथे पहर गौरी गात प्रबीन ॥१॥ संगीतदरपणे ॥ दोहा अंश न्यास ग्रह
खरज तें धग सुर हीन बनाई ॥ मूर्छना पहली बहुरनी न पहर पर गाई ॥१॥
ये गौरी रागिणी मालकौश की भार्या शिव मत तथा हनुमान मत अनुसा
र हय दो प्रकार कर के इसको गाना लिखा हय एक सुर पाँच और दूसरा
सात सुर का इसको खरज सुर ग्रह अंश न्यास मानते हैं दूसरा रिषभ सु
र अंश न्यास ग्रह मानते हय जो खरज ग्रह पाँच सुर मानते हय सो कह
४ नही लगती और जो रिषभादि मानने
ते हैं धैवत और रिषभ नहीं लगती और बाजे कहते हय धैवत गंधार

वो इस्को सम्पूर्ण मनते हैं और लतता गोरी भी इस्को कहते हैं अव गोरी के वनाने की व्याख्यान करते हैं गाइती मिरती द्वारा तस प्रकारं गौरी रागणी मालकोश की भार्या शरदरित दिवस के चौथे पहर सूर्य के अस्त काल ते पहले समय शिव मत विष्णु देवता हर मान रिषी पउ तो छन्द मध्यानाइका द्वादश अस्तंकार शिंगार रस गा ठनाइका श्री टंक मालवा॥ वा श्री पूर्वी गौरा॥ इन रागों के मिलाप से ये रागणी उत्पत्त होती है॥ ओं ह्रीं ह्रें भं पं ठं गं गं गौरये नमः इति मंत्रः ओं भं पं आसनाय नमः ओं ठं पं गं गौर ये आवहनं॥ ओं ह्रीं ह्रीं पं नमः इति पाद्यः॥ ओं पं पदमाक्षेनमः॥ इति पुष्पं॥ ओं ठं ठं कोकि लकिलकोल यंति॥ इति धूपः॥ ओं विं विं त्रां गी गौर वर्णी गं गौरी श्या नमः इति दीपः ओं त्रैवेद्यं नमः॥ अथ ध्यानं॥ निवेश यंत्नि अव णी वसंत समा भरा कुरं कोकिलनाद रम्यं स्यामामधुरस्फीतं स्तत्तमनादा गौरी यमुक्ता कतूहलेण॥ अथ भाषा ध्यानं॥ सीसकी फूल जडाव जडयो अनुराग भरयो मुख चंद विराजे॥ बाल रसाल की मंजरी कान धरी मन्न राकृत कुंडल राजे॥ भ्रमर खेत मनोहर भूषण उज्जल अंग महा छवि छाजे॥ गौरी गुमान भरी गत सो अति रंग दिखावत है पति काने॥ १॥ दि
इति ध्यानं॥ कान रसाल की मंजरी राजि

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ ता॰
२५
25

त कोकिलतें किलकंठ गही हे॥ गोरी सगी सूरति सो हनि सूर निस्
र त मेर सरी त गही हे॥ केलकतू हलमें नित्रहीरति आनंद में चि
त ही उमही हे॥ भूषनचीर बने तन्के हरिवल भराग़िनी गोरी कही हे
॥१॥ इति ध्यानं॥ अथ ग्रंथ प्रकार कृत ध्यानं॥ गोरी थोरी भोरी नवलत्रि
या पति काज जो साज समाज सजाकर बेठी मधूमाती हे॥ चीर स्वे
त लगे तनपे हीरा मोतिन जवाहिर के भूषन जो अंग अंग मेल गाती
हे॥ कोकिलते मीठे बेण अमेण काम भरे कर के कतूहल नाद रती
पती को रिझाती हे॥ प्रीतम के हित चित बेण करे नैन सोरा सी गो
री रागिणी प्यारी मालकोंस की कहाती है॥१॥ इति ध्यानं॥ अथ प्र
रूप म॥ खड्ज स्वर रिषभ कोमल मध्यमती व्रतर निषाद को
मल धेवत कोमल पंचम स्वर इस प्रकार ये रागिणी बनती हैं औ
र निषाद मंदर ग्राम का शुद्ध लगता हे और निषाद मध्य को मलहे
सं रे गं मं पं धं नीं सं प्रथम प्रकार म॥ द्वितीय प्रका
को ती को को
र म॥ सं नि धं पं मं मं पं धं नि सं रे मं पं
को ती॰त॰ ती॰त॰ को को
धं नीं सां नीं धं पं मं रें सं निं सं रे मं पं
को को को को ती॰त॰ को को ती॰त॰

म ग रे सा ॥ और जो सम पूरन गौरी इस प्रकार करके

होती है तस्य वर्तीनं ॥ सा रे ग म प ध नी सा सा

नी ध प म ग रे सा ग ग रे रे नि सा

सा सा रे ग रे सा नि सा सा सा रे ग म

प ध इत्याह ॥ अथ द्वितीय प्रकारः ॥ रे ग म प ध

नी सा सा नी ध प म ग रे सा नी रे

सा रे ग म प ध नी सा सा रे ग म

ग रे सा नी ध प म ग रे सा नि ध

प म ग म प ध नि रे सा ग रे सा

ग ग रे रे सा ॥ इत्याह ॥ अथ पूर्ति सरगम बनान ।

विधी लिखते ॥ खरज मध्यस्थाई रिषभ कोमल मध्यस्थाई

गंधार मध्यस्थाई मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई

धैवत अति कोमल मध्यस्थाई निषाद मध्यस्थाई खरज जतार

पृ: सं· र· प्र· सा
२६

26

स्पाई ध्रुव नः खरज ता र स्पाई ध्रुव नः निषाद मध्य स्पाई ध्रुव नः धैवत
ग्य तीकोमल मध्य स्पाई ध्रुव नः पंचम मध्य स्पाई ध्रुव नः मध्य मती
व्रत र मध्य स्पाई ध्रुव नः गंधार मध्य स्पाई ध्रुव नः रिषभ कोमल
मध्य स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः गंधार मध्य स्पाई ध्रुव नः
गंधार मध्य स्पाई ध्रुव नः रिषभ कोमल मध्य स्पाई ध्रुव नः रिषभ
मध्य स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः निषाद मंदर स्पाई ध्रु
नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य
ध्रुव नः रिषभ कोमल मध्य स्पाई ध्रुव नः गंधार मध्य स्पाई ध्रुव नः रि
षभ मध्य स्पाई कोमल ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः निषाद
मंदर स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः
खरज मध्य स्पाई ध्रुव नः रिषभ कोमल मध्य स्पाई ध्रुव नः गं
धार मध्य स्पाई ध्रुव नः मध्य मती व्रत र जिसको कडु रा मध्य
म सि तारिये तोग कहते हैं ध्रुव नः पंचम मध्य स्पाई ध्रुव नः धै
वत ग्य तीकोमल मध्य स्पाई ध्रुव नः धैवत ग्य तीको मध्य स्पाई

ऽ·को· ऽ·को ऽ·को·

इति स्थाई॥ सां रें गं मं धं धं नीं सां सां

नीं धं धं मं गं रें सां गं गं रें रें

सां नि सां सां सां रें गं रें सां नि सां

सां सां रें गं मं प धं धं धं ॥इति

स्थाई॥ अथ अंतरा॥ विधी लिख्यते सर्व संगीत शास्त्र अनुसार तार स्थाई गंधार तार स्थाई मध्यम तार स्थाई खरज तार स्थाई रिषभ कोमल तार स्थाई पुनः खरज तार स्थाई पुनः गंधार तार स्थाई पुनः रिषभ कोमल तार स्थाई पुनः धैवत तीव्र कोमल मध्य पुनः खरज तार स्थाई पुनः निषाद मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई पुनः गं स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्था गंधार मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः निषाद मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः दर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई

पू: सं: रः मः सा: २२

27

पुनः निषाद मंद्र स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई
पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई गंधार मध्य स्थाई
मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई पंचम मध्य स्थाई धैवत अति कोमल म
ध्य स्थाई पुनः धैवत अती कोमल मध्य स्थाई पुनः धैवत अति कोमल
मध्य स्थाई इति अंतरा: पुनः अ स्थाई की आवृत्ती को मिलजाना हो

अथ स्वरा तरम्॥ सा रे(को) ग म ग रे(को) सा सा नि

धै(ऽ·को) प म(ती·त·) ग रे(को) सा ग ग रे(को) रे(को) सा नि सा

रे(को) ग रे(को) सा नि सा रे(को) ग म(ती·त·) प धै(ऽ·को) धै(ऽ·को) धै(ऽ·को)

सा रे(को) ग म(ती·त·) प धै(ऽ·को) नि सा सा नी धै(ऽ·को) प म(ती·त·)

ग रे(को) सा ग ग रे(को) रे(को) सा नि सा रे(को) ग म(ती·त·)

रे(को) सा नि सा सा रे(को) ग म(ती·त·) प धै(ऽ·को) धै(ऽ·को) धै(ऽ·को) इति

अंतरा: और आगे आभोग इस प्रकार इसी आवृत्ती को धैवत अति
कोमल से आगे चलपरणा इस प्रकार करके जो आगे लिखी गई है

निषाद मध्य स्थाई स्वर ज तार स्थाई पुनः स्वर ज तार स्थाई पुनः

निषाद मध्य स्थाई पुनः धैवत तर तीकोमल मध्य स्थाई पुनः पंच

म म ध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र तर मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पु

नः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः स्वर ज मध्य स्थाई पुनः निषाद मंदर

स्थाई पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः म

ध्यम तीव्र तर मंदर स्थाई पुनः मध्यम तीव्र तर मंदर स्थाई पुनः पंचम

मंदर स्थाई पुनः धैवत कोमल मंदर स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः

स्वर ज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य

स्थाई पुनः मध्यम तीव्र तर मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः धै

वत तर तिकोमल मध्य स्थाई पुनः निषाद मध्य स्थाई पुनः स्वर ज तार

स्थाई पुनः स्वर ज तार स्थाई पुनः निषाद मध्य स्थाई पुनः धैवत तर तीको

मल मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्र तर मध्य स्था

ई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः स्वर ज म

ध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ को

मल मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः स्वर ज मध्य स्थाई

पृ॰
तं॰ र॰ पु॰ सा॰
२८

पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई
पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ मध्य स्थाई
पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई
पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार म
मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई
पुनः धैवत अति कोमल मध्य स्थाई इति आभोगः अथ स्वरान्तर म॥

नी सां सां नी धं पं मं गं रें सां नि रें सां
रें नि धं पं मं मं पं धं नि सां सां रें गं
मं पं धं नी सां सां नी धं पं मं गं रें सां
गं मं रें रें सां नि सां रें गं मं रें सां नि सां
सां रें गं मं पं धं धं धं इत्याभोगः गौरी सम पूरण स्वरों
से सरगम बनाई गई है इसी को इसी सरगम द्वारा ओडव बनाते ना
सां नी रे मं पं पं मं रें सां॥ अथ प्रतीओडव प्रकारः॥ सां गं मं पं मं गं सां नि सां

अथ पुनः ओडव गौरी धैवत रिषभ विवर्जित वर्जी सां॥ खरज मध्यस्थाई

गांधार मध्यस्थाई मध्यम मध्यस्थाई तीव्रतर पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्य

म तीव्रतर पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई पुनः गं

धार मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई तीव्रतर

पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई

पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पु

इति अस्थाई॥ अथ स्वरांतरं॥ सां गं मं पं मं पं मं गं पं

पं मं गं सां नि सां सां सां इति स्थाई॥ अथ अंतरा॥ खरज ता

र स्थाई गंधार तार स्थाई पुनः मध्यम तार स्थाई पुनः गंधार तार स्थाई

पुनः खरज तार स्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम तीव्रत

र मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पु

नः निषाद मंदर स्थाई खरज मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई

इति अंतरा॥ अथ स्वरांतर॥ सां गं मं धं सां पं मं गं

पं मं गं सां नि सां सां सां॥ इति अंतरा॥ अथ आभो

नः खरज मध्यस्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य

पू॰ स्थाई ध्रुव नः पंचम मध्य स्थाई ध्रुव नः मध्यम मंदर स्थाई ध्रुव नः पंचम मंदर

सं॰ र॰ प्र॰ सा॰ २९

स्थाई ध्रुव नः निषाद मंदर स्थाई ध्रुव नः षरज मध्य स्थाई ध्रुव नः गंधार मध्य स्थाई

ध्रुव नः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुव नः गंधार मध्य स्थाई निषाद मंदर स्थाई

ध्रुव नः षरज मध्य स्थाई ध्रुव नः षरज मध्य स्थाई इति आभोगः ॥ अथ आभोग स्वरा

तर॥ सा नि सा नि ध म ध नि सा ग म ग नि

सा सा सा ॥ इति आभोगः ॥ अथ गौरी ध्रुव ती प्रकार सरगमपंच स्वर की धे

वत गंधार विव रजत जोड बम प्रकार लिख ते ॥ षरज मध्य स्थाई ध्रुव नः रिषभ

कोमल मध्य स्थाई ध्रुव नः निषाद मंदर स्थाई ध्रुव नः रिषभ कोमल मध्य स्थाई

ध्रुव नः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुव नः पंचम मध्य स्थाई ध्रुव नः मध्यम

तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुव नः पंचम मध्य स्थाई ध्रुव नः मध्यम तीव्रतर मध्य

स्थाई ध्रुव नः रिषभ कोमल मध्य स्थाई ध्रुव नः षरज मध्य स्थाई ध्रुव नः निषाद

मंदर स्थाई ध्रुव नः षरज मध्य स्थाई इति अस्थाई ॥ सा रे नि रे सा

रे म प ध रे सा नि सा इति स्थाई ॥ ध्रुव नः षरज तार स्थाई ध्रु

नः रिषभ कोमल मध्य स्थाई ध्रुव नः निषाद मध्य स्थाई ध्रुव नः रिषभ कोमल

मध्य स्थाई ध्रुव नः मध्यम तार स्थाई ध्रुव नः रिषभ कोमल तार स्थाई ध्रुव नः

मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुवनः पंचम मध्य स्थाई ध्रुवनः मध्यम तीव्रत
र मध्य स्थाई ध्रुवनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई ध्रुवनः खरज मध्य स्थाई ध्रुवनः नि
षाद मध्य स्थाई ध्रुवनः खरज मध्य स्थाई ॥ इति स्थाई इति स्वरान्तरम॥ साँ रे
नि रे सा रे म प म रे सा नि सा ॥ इति स्थाई ॥ अथ
अंतरा ॥ खरज तार स्थाई ध्रुवनः रिषभ कोमल तार स्थाई ध्रुवनः निषाद मध्य स्थाई
ध्रुवनः रिषभ कोमल तार स्थाई मध्यम तार स्थाई ध्रुवनः रिषभ कोमल तार स्थाई
ध्रुवनः खरज तार स्थाई ध्रुवनः निषाद मध्य स्थाई ध्रुवनः पंचम मध्य स्थाई ध्रुवनः
मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुवनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई ध्रुवनः पंच
म मध्य स्थाई ध्रुवनः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई ध्रुवनः रिषभ कोमल
मध्य स्थाई ध्रुवनः खरज मध्य स्थाई ध्रुवनः निषाद मंदर स्थाई ध्रुवनः खर
ज मध्य स्थाई ॥ इति स्थाई अंतरा ॥ अथ स्वरान्तरम ॥ सा रे नी रे
सा रे म म रे सा सा नि प म रे प म
रे सा नि सा ॥ इति अंतराः ॥ अथ गत स्मितार तारतिन ३॥
रिषभ धैवत विवरजत ॥ दिर् आ दिर् आ दा आ आ दा
सा ग म प म प म ग

पू. दिर दा दिर दा रा दा दा रा॥ इति स्थाई दिर दा दिर

सं. रं. प्र. सा. प म नि सा नि सा सा सा सा ग सा

३० दा रा दा दा रा। दिर दा दिर दा रा दा दा रा

सा सा ध म म प म ग सा नि सा सा सा

इति अंतरा॥ दिर दा दिर दा रा दा दा रा। दिर दा

दिर दा रा दा दा रा॥ इति आभोगः अथ द्वितीय प्रकारः

म ग नि सा सा सा

तीवरी सिंहनन्दन तार तिन लिख्यते॥ गौरी रा॥

ग त सि तार गंधार धैवत स्वर विवर जन तार लिख्यते॥

दिर दा दिर दा रा दा दा रा। दिर दा दिर दा रा

सा रे म प म प म रे प म रे सा नि

दा दा रा॥ दिर दा दिर दा रा दा दा रा। दिर दा

सा सा सा सा रे म रे सा प म रे प म

२ इति स्थाई २

दिर दा रा दा दा रा॥ इति अंतरा॥ अथ समपूरण गत

रे सा नि सा सा सा

गौरी राग गिरणी तार तिन लिख्यते॥ दिर दा दिर दा रा दा दा

सा रे ग म प ध नी

रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा दिर

सा सा नी ध प म रे सा ग ग रे

दा रा दा दा रा। दिर दा दिर दा रा दा दा

रे सा नि सा सा सा रे ग रे सा नि सा

रा॥ दिर दा दिर दा रा दा दा रा॥ इति स्थाई समपूरण

सा सा रे ग म प ध नि सा

अथ यंत्र तराना॥

दिर सा | आ रे को | दिर ग | आ म | दिर | आ | दा ग | आ रे को | आ सा | दा सां

दिर सा | आ नी | दिर ध ऽ·को | आ प | दा म ती·त· | आ ग | आ रे को | दा सां | दिर ग | आ ग | दिर रे को | आ रें को

दा सा | आ नि | आ सां | दा सां | दिर सां | आ रे को | दिर गं | आ रे को | दा सां | आ नि | आ सां | दा सां

दिर सा | आ रे को | दिर ग | आ म ती·त· | दा प | आ ध ऽ·को | आ नी | दा सां

इति यंत्र तराना॥ अथ पग्गा भोग:

दिर सा | आ नी | दिर ध ऽ·को | दिर | आ प | दा म ती·त· | आ ग | आ रे को | दा सां | दिर सां | आ नि | दिर सां

आ रे को | दा नि | आ ध ऽ·को | आ प | दा म ती·त· | दिर म ती·त· | आ प | दिर ध ऽ·को | आ प | दा म ती·त· | आ ध ऽ·को | आ नि | दा सां

दिर सा | आ रे को | दिर ग | आ म ती·त· | दा प | आ ध ऽ·को | आ नी | दा सां | दिर सां | आ नी | दिर ध ऽ·को | आ प | दा म ती·त·

आ ग | आ रे को | दा सां | दिर ग | आ ग | दिर रे को | आ रे को | दा सां | आ नि | आ सां | दा सां | दिर सां | आ रे को

दिर ग | आ रे को | दा सां | आ नि | आ सां | दा सां | दिर सां | आ रे | दिर ग | आ म ती·त· | दा प | आ ध ऽ·को | आ ध ऽ·को | दा ध ऽ·को

इति को, आभोग: इति समपूर्ण गीति गतं को

को ती.त. ती.त. को को

सां रें गं मं पं मं. गं रें सं रें गं

पू. गपञलापञ्ञातरं॥ तनरीरें नाउंञ्ञानांञदनतोतातोतनातततनरी

मं पं मं धं सं गं रें सं नी ध प सं गं मं

सं र. प्र. सा. तानतोतानरानतकोतेनाकोतनानननताणरीततनोमेतनातौ॥ तनातोत

सं रें गं मं पं ध नि सं नी ध धं गं गं रें

३१ मौतनातोताकोतनतुमननतमौतननररी तमोतामोमेतनतो तनरीरओ

मं नि ध प ह ध नि सं रें गं मं ध मं गं रें

३/ ननरीतानोमेतनातो तननरीरेनानततौ नतततौ तनननरीउनोतो

मं नी ध प मं गं रें सं नी ध प मं गं सा

तननरीरेनाञ्ञामोमेतनो नेतनातो तननरीनानोनततनातोतानोनतनतो

इति अलापाकारम्॥ इति संगीत रत्नावीर प्रकाशसार ग्रंथ नाम गोस्वामीज

गणनाथकृत गिरीधारीलाल कौंशाकृत पंचदशी गानविधी पंचमो-

ध्यायः समाप्तम् श्री राम राम राम राम राम राम राम राम श्रीं

भूयात सर्व जगताम्॥५॥

अथ गुणकली रागणी मालकौंश राग स्य पंचम भार्या गान विधी प्रारम्भः ॥॥

खरजांश ग्रहं न्यासं खरजादिक मूर्छना ॥ संपूर्ण गुणकली तेयाहनुमान मतेन

रव ॥१॥ धैवतांश ग्रहं न्यासं कथित पंचम मूर्छना ॥ संपूर्ण गुणकली राग्नी शिवम

तेन कथ्यते ॥२॥ पंचमांश ग्रहं न्यासं पंचमादिक मूर्छना ॥ संपूर्ण गुणकली तेयं

कपतेव भरतं मुनी ॥३॥ रिषभ धैवत कोमलं प्रोक्ता । मध्यमस्यंतर तीव्रं निषादस

तीव्रं शुद्धं तथा गंधार पंचमः ॥४॥ शरद रितौ दिवसे प्रथम यामतुः करुणारसेन सं

योजनारकां खंडितां सिमरेत ॥५॥ द्वादशेनलंकार शठनाइकंठ कथ्यते ॥ प्रमात्मा

देवताय स्वरि वीनस्येतु नारदः ॥ ॐ श्रीं क्लीं बीज शक्ती छंदो भव गुणकली चरा

निरयः मालकौशस्य भार्या ॥७॥ दोहा ॥ अंश न्यास जो खरज स्वर ग्रह भी वाको

जान ॥ संपूर्ण सुर गुणकली आप कहत हनुमान ॥ ग्रह अंश न्यास धैवत

स्वर पंचम की मूर्छनारोक ॥ मतहि मगिरके नाथको राखे हैं गुणकली टेक ॥ दो

हा ॥ पंचम अंशोर न्यास ग्रह संम्पूरण स्वर वतीइ ॥ गुणकली कोशकाम्य हु

ना भरत कहो चित लाइ ॥ दोहा ॥ देशकारि और मारवा माली गौरा संग ॥ रा

रिन पहले पहर दिवस के गावे गुणकली रंग ॥ दोहा ॥ करुणारस ब्रह्मणी नाइ

काशठनाइक जो जान ॥ गुणकली प्यारी मालकौश की आनंद सो गुणी गान ॥

४ मध्यम तर तीव्र गंधार श्रुती दोइको

दोहा ॥ कोमल रिष और धैवत अतितीनि षाद तीव्र शुद्ध दोइ ॥ पंचम शुद्ध

पू॰

सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
३२

३२

इति संगीतरत्नाकरे रागाध्याये ॥ अथ संगीतरत्नाकरे गुणकलीउत्पत्तिकथनं ॥
धैवतांशग्रहन्यासं कुंचितपंचमस्वरं ॥ मारवादेशकारस्य गौरशाखा यते बुधै ॥१॥
धग सा रे नी रे मग सा नी सा ध सा म ग रे सा ॥ इति च ॥ संगीतनादमहोदय ॥ पंचमांश
ग्रहं न्यासं गुणकली च इति स्मृता ॥ सौवीरी मूर्छना ज्ञेया कौशकस्य वरांगना ॥ इतिः
संगीतरागमालायां ॥ पंचमांशग्रहंन्यासं गुणकरी च इति स्मृते ॥ मारवादेशकारस्य
मिश्रता मालीगौरकः ॥१॥ इति च ॥ पंचमांशग्रहन्यास गुणकरी च इति स्मृता सौवीरी मूर्छ
नाशेया मालवादेशकारस्यवि भार्यासु जन्मभूः पमगरे सा नी ध प म म प ध नी सा रे
ग म ॥ इति संगीतमतेन च ॥ अथ भाषाया संगीतदरपणे ॥ दोहा ॥ खरज ग्रह स रे ग म प
ध नी पूरण मानत बतांई ॥ शरद दिवस पहले पहर गुणी गुणकली गाई ॥ इति च
होहा न्यास अंश ग्रह खरज ते अरु संपूरण होई ॥ एकपहर पर गाईये कहत गुणी
जन लोई ॥२॥ स ग म प स स नि ध प स प ग म रे स इति च ॥ वार्तिक ॥ ये गुणकली
रागणी मालकौशकी पंचम भार्या सम्पूरण सात स्वर की खरज अंश ग्रह
न्यास भी कहते है और की कहते हैं इस
ह न्यास है और पंचम अंश ग्रह न्यास
मे धैवत मी अंश न्यास ग्रह है बस इस से सिवा और कोई स्वर ग्रह नही
है और कुछ पंचम की मूर्छना लगती है अर्थात धैवत कोमल है और म
धम तीव्रतर है और निषाद चढ़ा उतरा दोनो है रिषभ कोमल है और ४ खरज पंचम गंधार अक्कलगती ४

है संपूरण इस प्रकार देशकारी मारवा माली गौरा मिलकर के । इस रागणी की
उत्पती होती है और कोई कहते हैं कि मालवा देशकारी विभास इन कर के उत्पती होती
है और कोई कहते हैं बसंत का रण इ अरण माल वा मिलक के उत्पती होती है परंच
बहुत देशकारी मारवा माली गौरा इन की मिश्रत होने से गुणकली कहते हैं मिलापा
ध्याय में भी यही लिखा है कि मारवा देशकार गौरा माली मिलने से गुणकली मालकौं
श की भार्या वा ही है ॥ अब उत्पत्ति कही आगे सर्बांग गुणकली लिखी जाती है यत स्स
स्वरूपं ॥ गुणकली रागणी मालकौंश की प्यारी सम्पूर्ण सात स्वर खरज वादी धे
वत पंचम संवादी गंधार रिषभ निषाद मध्य मग्रनु वादी करुणा रस खंड
ता नाइका धूष्ट नाइक द्वादश अलंकार शरद रित दिवस प्रथम याम
समय प्रमात्मा देवता नारद रिषी अनुष्टप छंद रौं ऐं बीज काली रा
क्री ओंम् ऐंधौं क्रीं गंगं श्रीं गुणकलीयै नमः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ओंम् पुष्पं
न मः ओंम् धूपं नमः ओंम् दीपं नमः ओंम् नैवेद्यं नमः अथ ध्यानं ॥ =
सो कामि हृत नयनारुण दिग दृष्टि नमान नाधरणी धूसर गात्रयष्टी आमृत
चारु कवरी प्रयदूर वर्ति संकीर्तीगुणकारी करुणे कृशाङ्गी ॥ अथ भाषा ध्यानं
तिय बैठी मलीन धरे पट को बिथुरी सिर केस तज्यो अलकें ॥ सखनी चोकि पेम
रकाय रहि जुग नैन बहै सर कीन कलकें ॥ तन छीन खरी छबि छीन परी
लखकि उखसो चत है अलकें ॥ बिरहागति तें अ
ति व्याकुल बाल वियोग भरि गुणकली कलकें ॥ इति संगीत भाखा ध्यानं ॥ ४

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ सा॰
३२
33

ध्यानं रंग पीत भयो रस रीत गयो दुख होत नयो अति शोक दयो बालम
परदेश रे हो॥ अरुणैन कुयो अंसुवन पर वाह वे हो अंग छार लयो मुख
नीचे छयो काम दे हो॥ अलकैं विथरियो बधसु धबिसरियो पीया जीया
कहो प्यासंस शीत भरियो बिकल यो॥ शिर केश खुलयो मलीन भेस दुल
यो मालकौंश की रागिणी गुणगुणी कोयूं ध्यान भयो इति ध्यानं॥ अथ स्व
र ग्राम विधी आरोही अबरोही लिख्यते॥ खरज मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई
मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई निखाद
मंदर स्थाई धैवत अति कोमल मंदरस्थाई पंचम मंदरस्थाई मध्यम तीव्रत
तर मंदरस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः पंचम
मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई पुनः गं
धार मध्यस्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्यस्थाई पुनः निखाद मंदरस्थाई
पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्य
स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई इति अस्थाई

सा ग म (ती॰त॰) प सा नि ध (अ॰को) प म (ती॰त॰) सा सा प

ग म (ती॰त॰) ग रे (को) नि सा रे (को) ग रे (को) सा सा इत्यस्थाई

सा रे ग
अथ अंतरालिख्यते खरज तार स्थाई रिषभ कोमल ताार स्थाई गंधार तार स्था
म को रे नी
मध्यम तार स्थाई पुनः गंधार तार स्थाई पुनः रिषभ कोमल तार स्थाई पुनः निषा
ध को प
द मध्य स्थाई पुन धैवत तत्र तीकोमल मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पु॥
म ऽ· को सा प
नः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई पुनः खरज तार स्थाई पुनः पंचम मध्य
ती·त· ग म रे
स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर मध्य स्थाई पुनः रिष
ती·त· को
ग रे
भकोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य
नि सा को
[illegible]ः स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिष
ग रे
रे
भकोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य
को नि को ध
को सा
स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः धैवत तत्र
प म ऽ· को
तिकोमल मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर
ती·त·
सा प
मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः गं
म म
ग
धार मध्य स्थाई पुनः मध्यम [मध्य स्थाई पुनः] मध्यम तीव्रतर मध्य
ती·त· ती·त·
रे
ग
स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई पुनः
को रे
नि सा
निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्य स्थाई
को

पृ० सं० र० प्र० सा०
३४

पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्यस्थाई पुनः
खरज मध्यस्थाई ॥ इति अंतरा: अथ आलाप ॥ सा ग म

म म प ग म म ग रे नी सा नी ध प
को ऽको

म ग सा सा ग म प सा नि ध प म
ती० त० ती० त०

सा प ग म ग रे नि सा रे ग रे सा
ती० त० को को को

इति अंतरा: अथ द्वितीय प्रकार: पंचमांश तथा च धैवतांश लिख्यते ॥ अथ

स्थाई पंचम मध्यस्थाई मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई
ती० त०

रिषभ कोमल मध्यस्थाई खरज मध्यस्थाई निषाद मंदर स्थाई धैवत कोमल
को ऽको

मंदर स्थाई पंचम मंदर स्थाई मध्यम तीव्रतर पुनः मध्यम तीव्रतर पंचम मंदर
ती० त० ती० त०

स्थाई पुनः धैवत अति कोमल मंदर स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज
ऽ० को

मध्यस्थाई पुनः रिषभ कोमल मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः
को

मध्यम तीव्रतर मध्यस्थाई ॥ इति स्थाई अथ आलाप ॥ प म ग
ती० त

म ॥ इति स्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ आरंभः

रे सा नि ध प म म प ध नि सा रे ग
को ऽको ती० त ती० त ऽको को

पंचम मध्य स्थाई धैवत ग्रति कोमल मध्य स्थाई निषाद मध्य स्थाई खर
रज तार स्थाई रिषभ कोमल तार स्थाई गंधार तार स्थाई मध्यम तार स्था
ई पुनः मध्यम तार स्थाई मोरा संपूर्ण पुनः गंधार तार स्थाई पुनः रिष
भ कोमल तार स्थाई पुनः खरज तार स्थाई पुनः निषाद मध्य स्थाई पु
नः धैवत ग्रति कोमल मध्य स्थाई पुनः पंचम मध्य स्थाई पुनः मध्य
म तीव्रतर मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः रिषभ कोमल
मध्य स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः धैव
तग्र ती कोमल मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः मध्यम तीव्र
तर मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई पुनः धैवत ग्रति कोमल मंद
र स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः खरज मध्य स्थाई पुनः रिषभ
कोमल मध्य स्थाई पुनः गंधार मध्य स्थाई पुनः मध्यम तीव्रतर म
ध्य स्थाई ॥ इति अंतराः ॥ अथ पञ्चाऽतरम ॥ पं मं पं धै नी

सा रे गं मं मं गं रे सा नी धै पं मं

गं रे गं मं गं रे सा नि धै प म म

पू॰ प ध नि सां रें गं मं इत्यस्थाई अन्तरा प्पग तनि सितार तार ३

सं॰ र॰ प्र॰ सा॰ ३५

दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा दिर दा
सा ग म प सां मी ध प नि सां सं प

रा दा दा रा दिर रा दिर दा रा दा रा
सा म ग रा नि सा नि सा रे ग रे

रा इति स्थाई॥ अन्तरा॥ दिर दा दिर दा रा दा रा
सा प म प ध नी सा रे

दा दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा दिर
रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा रे
सा सा नी ध प ग म ग रे नि सा

दा रा दा दा रा॥ इति अन्तरा॥ दिर दा दिर दा
प ग म ग रे नि सा रे ग

रा दा दा रा दिर दा दिर दा रा दा गा
रे सा प ग म ग रे सा नि ध प

रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा इति आभोगः
म म सा सा प ग म ग रे

अथ पंचमादी गत सितार तार ति ताल३॥ दिर दा दिर दा रा
नि सा रे प ग

दा दा रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा
म ग रे नि सा रे ग रे सा प ग

दिर दा दिर दा रा दा दा रा॥ इत्यस्थाई दिर
प म म ग रे सा प ग प

दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा दिर दा
ग रे नि सा प ग रे नि सा रे ग

॥ ३ त्वं तरा ॥ ३ तिगतकितारलिख्यते ॥ अथ पंचमादि

॥ ३ त्वस्थाई ॥

॥ ३ त्वं तरः अथ धैवता

दीगतलिख्यते ॥

रेतस्थाई अथ अंतरा लिख्यते गुणकली राग एणी मालकौंश की पंचम भार्या

पृ०
सं. र. प्र. सा.
३६
36

सा नि सा सा रे ग ग रे सा सा सा

२ तंत्र राग ॥ आगे जो पतयाते न होवे तो आठ अंतर बजा कर फिर अस्थाई
में मिल जावे तो बराबर तार में मिल कर सम पर हो जावे गीयक सुर की तान
दो सुर की तान तीन सुर की तान चार सुर की तान पांच सुर की तान छै सुर
की तान सम्पूरण सात सुर की तान देवे तस्य स्वरूपं ध नी रे सा ग म प ॥ इसी प्रकार
सब तानों को गाना बजाना चाहिये ॥ अथ अलाप हरम् ॥ त न न न री ई ना आ नो ता
नो त न न न री त ना नो ने त ना तो त ना न न री ई ना आ नो त न न त ना नो त ना नो ताना
न रा न ता नो ने त ना तो ॥ त न न न री ता नो त ना न ना ता नो न न री न ना ना ता नो ते नो ॥
इति अलाप हरम् ॥ इति गुणकाली रागणी मालकौश पंचम भार्या वर्णितं संगीत रत्नावी
र परम सार नाम ग्रंथ अष्टो ध्यायः में सांई जिग्माथ कृतानः महाराजाधिराजेंद्र
महाराजाज्ञानुसार लिख्यते इति अध्यायः समाप्तम् ॥ ८ ॥ राम राम राम राम

इति मालकौंश पंचभार्या वर्णनम्॥ अथाष्ट पुत्र मालकौंश रागस्य वर्णनम्॥
प्रथम पुत्र मालकौंश रागस्य मारू नामा वर्णनम्॥ पंचमांश ग्रहं न्यासं पंच
मादिक स्रुछिना॥ खाडव राग मारू यं रिषभ स्वर वर्जितो॥१॥ दोहा॥ पंचम न्यास
अंश ग्रह रिषभ स्वर कर हीन॥ तृतीय प्रहर रात मे मारू गावत गुणी प्रवी
न॥२॥ पंचम स्वर इस राग मे न्यास अंश ग्रह है और रिषभ स्वर इस मे वि
वादी है॥ षाडव इसको कहते हैं मालकौंश का प्रथम पुत्र है रात को
तीसरे पहर गायण करते हैं मारू इसका नाम है और बिहाग मार
वा किंतु इन रागों को मिश्र करने से मारू राग की उत्पत्ति होती है
दोहा बिहाग कि और मारवा मिल होंवें इस ठौर॥ मारू राग अ
नूप कों गुणीगन वें कि लकोर॥१॥ दोहा कोमल तीव्र स्वर गण तें उ
पजत है ये राग॥ मारू राग जो गाविये पंचम दे सिर पाग॥२॥ दोहा
श्रिंगार रस सुकीया नाइका शठ नाइक परमान॥ प म प ध नी सा नी
पमगसा मारू राग सो जान॥३॥ दोहा देव गंधार रिषी मंतर की व्याख्या पू
रण देख॥ अंश ग न्यास स सह पूजन कर गावत राग विशेख॥४॥ वार्तिका
मारू राग मालकौंश राग का बेटा छः स्वर का रिषभ स्वर से बिना॥

सं॰ र॰ प्र॰ सा॰ खाडव छेखर का है रात को तीसरे पहर इस राग के गाने का समय है
३७
और पऊती छंद है और शान्ती रस द्वादश अलंकार और सुकी।
या नाइका छष्ट नाइक परमात्मा देवता ओ दया रागनी है
नारद रिषी है ओंम् मं धं धं पं पं मारु तं स्वाहा॥ इति मंत्रः
ओंम् धं धं इति मंत्रस्य परमात्मा देवता ओ दयाश नी नारद
रिषिर्प ऊती छंदो मारु राग सिद्धयर्थे जपे विन योगः॥ इति
विणयोगः अथा ऊन्यासः ओंम् धं अकाश रूपने नमः ओ वाहने
ओंम् मं धं पृथ्वी रूपने नमः इत्यासनं ओंम् धं पं पं अग्न्ये रूपे
नमः इत्यप्राणः ओंम् धं पं मं मारु त रूपने नमः इत्यस बीगेषु
साव धानं कृत्वा॥ अप धूप दीप नैवेद पुष्पादी पूजनं कृ
त्वा पुनः ध्यानं कुंता पुधः कुंकुम चंदनाभ्यां लिप्तो सिंगो रोध
तकाम रूपः रक्ताम्बरो हास्य समेत वक्तो मारु कि रीट कण्ठ
तो मुनै दे॥ भाषा पां सौलास भाव हसा वसमें और रीकरि काव
त मोह तन करी जू॥ परीत बडावत दिन दिन पे छबि छै लदिखाव
त है प्यारी जू॥ चंदन लिप

प्यो लाल ब स्त्र लग्यो ना पै कोट मदन छब वारी जू ॥ करी टसजाति
र पै कुंकुम दै यूं मारू राग स्वरूप निर्धारी जू ॥२५३ तिध्यानं ॥
अथ मारू राग मं बनान विधी आरोही अवरोही द्वारा लिख्यते है ॥

पं मं गं मं
पंचम मध्यस्थाई मध्यम मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यमम
गं पं गं
ध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः गंधारम
सां नि धै
ध्यस्थाई खरज मध्यस्थाई निषाद शुद्ध मंदर स्थाई धैवत मंदर मंदर
मं पं
ध्यस्थाई खरज मध्यस्थाई निषाद शुद्ध मंदर स्थाई पुनः पंचम मंदरस्थाई
पं सां
स्थाई पुनः पंचम मंदर स्थाई मध्यम मंदर स्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई
धै नि पं
पुनः धैवत मंदर स्थाई पुनः निषाद मंदर स्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई
गं मं गं पं
पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्य
मं
पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई

पं मं गं मं गं पं गं सां नि धै
स्थाई ॥३ त्यस्थाई पं मं गं मं गं पं मं गं पं ॥
पं मं पं धै नि सां गं मं

नी सां
रे त्यस्थाई अथ पुनः अंतरा निषाद मध्यस्थाई खरज तार स्थाई पुनः ख
पं मं
नी
पंचम मध्यस्थाई मध्यमम
सां
रज तार स्थाई पुनः निषाद मध्यस्थाई पंचम मध्यस्थाई मध्यमम

पू॰
सं॰ र॰ प्र॰ मा॰
३८

मध्यस्थाई गंधार मध्यस्थाई पुनः पंचम मध्यस्थाई पुनः गंधार
मध्यस्थाई पुनः खरज मध्यस्थाई पुनः निषाद मंदरस्थाई पुनः धैवत
मंदरस्थाई पुनः पंचम मंदरस्थाई पुनः मध्यम मंदरस्थाई पुनः पंचम
मंदरस्थाई पुनः धैवत मंदरस्थाई पुनः निषाद मंदरस्थाई पुनः खर
रज मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः
पंचम मध्यस्थाई पुनः मध्यम मध्यस्थाई पुनः गंधार मध्यस्थाई
पुनः पंचम मध्यस्थाई॥ २ स्थंतरा॥ नी सा सा नी ध म
ग प ग सा नि ध प म प ध नि सा
ग म प म ग प २ स्थंतरा: जे कर आगे विस्तार का
र ना होवे तो फिर भी वैसा ज भी और ऊपर गले से निषाद से खरज
के ऊपर से फेर शिरू होवे खरज तार स्थान को से चलकर के फे
र गंधार तार स्थान पर चले और मध्यम तार स्थान पर और
फिर गंधार तार स्थान पर और फिर खरज तार स्थान पर और फिर
निषाद मध्यस्थाई पर और फिर खरज तार स्थान पर और खरज

तारस्थाईपुनः निषाद मध्यस्थाईपुनः पंचम मध्यस्थाईपुनः मध्यम मध्य
स्थाईपुनः गंधार मध्यस्थाईपुनः मध्यम मध्यस्थाईपुनः गंधार मध्यस्थाई
पुनः पंचम मध्यस्थाईपुनः गंधार मध्यस्थाईपुनः खरज मध्यस्थाईपुनः
निषाद मंदरस्थाईपुनः धैवत मंदरस्थाईपुनः पंचम मंदरस्थाईपुनः म
ध्यम मंदरस्थाईपुनः पंचम मंदरस्थाईपुनः धैवत मंदरस्थाईपुनः नि
षाद मंदरस्थाईपुनः खरज मध्यस्थाईपुनः गंधार मध्यस्थाईपुनः पंचम म
मध्यस्थाईपुनः पंचम मध्यस्थाईपुनः गंधार मध्यस्थाईपुनः पंचम म
मध्यस्थाई॥ इत्याभोगः नी सा सा ग म म ग सा सा
नी प म ग म ग प ग सा नि ध ध म ध
ध नि सा ग म प म ग प इत्याभोगः॥ अथ गतसि
द्ध तार तारतिल्लरागमारूस हू पंचमसे प्रारम्भ और पंचमपर विसराम
होगा अर्पात पंचमसुर पर इसकी समहै जिसको आकहते हैं इस प्रकार
जोआगेलिखीजातीहै॥ गतं॥ डिर प ड़ा म डिर ग ड़ा म ड़ा ग ड़ा प ड़ा ग ड़ा सा॥
डिर नि ड़ा ध डिर ध ड़ा म ड़ा ध ड़ा ध ड़ा नि ड़ा सा॥ डिर ग ड़ा म डिर प ड़ा म ड़ा ग ड़ा ध ड़ा श्री
इत्यस्थाई॥ ह

पू: अथ पगं तरा॥

सं. र. प्र. ना. ३९

39

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १
दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा॥ दिड़
सा नी प म ग प ग सा नि

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४
दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा॥ दिड़ दा दिड़ दा
ध प म प ध नि सा ग म प म

५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७
ड़ा दा दा ड़ा॥ द्वितीयंतरा॥ दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा
ग प नी सा सा ग म ग सा नी सा

८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १ २ ३
ड़ा॥ दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा॥ दिड़ दा दिड़
सा सा नी प म ग प ग सा नि ध प

४ ५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
दा ड़ा दा दा ड़ा॥ दिड़ दा दिड़ दा ड़ा दा दा ड़ा॥
म प ध नि सा ग म प म ग प + +

प म ग म ग प ग

इत्याभोगः॥१॥ अथ अलापान्तरम्॥ न न ना नी त न न र ई नाआ नोम

सा नि ध प म प ध नि सा ग म प मगप

द ना तो ऊँ आ ना आ न रा न ना न त नो न न री ई ना आ नो ना नो ने त ना तो॥

इसी प्रकार आगे आरोही अवरोही कीतानें आउ कि वाउ कर के अलाप करना

चाहिये॥ इति अलापम्॥ इति मारू राग शुद्ध वर्णन मालकोंश रागप्र

थम पुत्र गान बजान विधी गोस्वामी जगन्नाथ कृत राजनराजेश्वर म

हाराज रणवीरसिंह जम्मू काश्मीराधीश ने का देशाधीशाजी की आज्ञा

अनुसार संगीत रणवीर प्रकाश नाम ग्रंथ पे न सम्मो ध्याय:६ साम्मत मख्य

म्मे सुवातसरब जगतां॥ श्री रांम रांम रांम हरे हरे हरे रांम रांम॥

त्र्यसिंधुरागमालकौशद्वितीयपुत्रवर्णनं॥ मध्यमांशग्रहन्या

संमध्यमादिकमूर्छना॥ धैवतस्वरपरीत्यज्यसिंधुरागेनगीयते॥

१॥ गंधारस्वरश्रतीकोमलोनिखादकोमलस्तथा॥ रिषभमध्यमश्रु

दूपंचमसंवादीकथ्यते॥ ॥२॥ दोहा मध्यमन्यासअंशग्रह

निश्चिकरकेजान॥ मालकौशकेकुंवरसिंधकोगावतगुणीप्रमा

ण॥ ॥१॥ कोमलनिखादगंधारश्रतिकोमलकहया॥ सिंधुरागको

तीजेपहरहोलीमेंआनंदलयो॥२॥ वार्तिकसिंधुरागमालकौशरा

गकोदूसरोपुत्रजिसमेंमध्यमांशन्यासग्रहहैमध्यस्था

नकोशुद्धऔरपंचमसंवादीहैऔरस्वरश्रतुवादीहैधैव

तविवादीहैनिखादकोमलहैऔरगंधारश्रतीकोमलहै.

पंचमरिषभषडजयेशुद्धस्वरहैंऔरतीसरेपहरहोलीसम

इसकोगानकरतेहैंषाडवरागहैधैस्वरकातथाचकईइसको

सम्पूर्णसातस्वरकाभीकहतेहैंराकधैवतमंदरग्रामका

चउ गंधीत ती अओर रीके धैवत सुद्धमध्य ग्राम का लगाते हैं लेक
ण जिसमे धैवत मंदर ग्राम लगता है उसमे जंगला सिंधु हो जा
ता है ग्रौर जिसमे धैवत सुद्धमध्य ग्राम लगता है उसमे सिंधुरीटो
डी भी बन जाती है ग्रौर धैवत स्वर न लगाने मे सुद्ध सिंधुल बनती
है इस्वास्ते ये राग सिंधु षाडव छे स्वर का कहा जाता है। इस्का मंत्र देव
ता बीज रिषी छंद नाइका नाइका रस अलंकार आगे सब प्रकार लि
खा जाता है तिस्की उत्पती भी लिखी जाती है सरगम इस की इन्ती हो
है मे गे रे पे मे गे रे सां नि सां रे गे मे पे सां नी पे मे गे रे गे सां नि सां
ऽको ऽको स्रु ऽको को ऽको ऽको स्रु
रे गे मे पे इति सरगम सिंधु राग वर्णन षाडव॥ अथ सम्पूर्ण
ऽको
मे पे मे गे रे सां नि ध सां सां रे गे पे। मे गे रे मे पे मे गे रे पे मे गे रे
ऽको को ती ऽ॰को ऽको ऽको ऽको
सां॥ इस्मे जंगला मिलता है ग्रौर सिंधु जंगला हो जाता है ग्रौर दूस
रा प्रकार सम्पुरण जिस्मे टोडी भी हो जाती है वो ये सरगम है
मे म रे पे मे गे रे सां नि सां रे गे मे पे सां नी ध पे मे गे रे सां नि सां
ऽको ऽको स्रु ऽको को को ऽको स्रु

रे॒ग॒ म॒ प॒ इसमे टोडि होजाती है सिंधूरी॥ यथ शुद्ध सिंधुरा गऊत्पती ऽको

लिख्यते॥ अहीरी बरवा मिलत हौ सिंधुरा गऊपजाय॥ गुणीजन

होलीके समय आनंदसे ती गाय॥१॥ शिंगार रस स्वकीया नाइका

धृष्ट नाइका भगवती देवता पङ्क्ती छंद द्वादश अलंकार क्रौं बीज

ॐ क्रौं श्री ग्रौं सिंधुरागाय नमः स्वाहा॥ इति मंत्रं जपेत॥ ॐ क्रौं बीजाय

पङ्क्ती छंदो भगवती देवता सदाशिव रिषिः सिंधुरागसिद्ध्यर्थं जपे विणा

योगः॥ धूप दीप नैवेद पुष्प चंदन ताम्बूल पूजन विधी॥ अथ ध्या

नं॥ अश्वारूढः प्रबीरो दृढ धृत कवचो रोषितः॥ खड्ग धारी दुर्गादे

देव्येक मज्ञो बिशदं पट धरो लोलिता दोबलीयान्॥ सिंधुरागः प्र

बीरान् प्रहरति समये कोपितान्॥ भूपति नामेतीह कलोका मध्ये

प्रदिशतु सततं मंगलं सज्जनानां॥१॥ इति ध्यानं॥ अथ भाषा ध्यानं

शुद्ध पट धारण कीये हूवे घोडेके ऊपर स्वार खड्ग धारी कवच पहने

हरे हुवे वीर रसमें प्रधान दुर्गामें मज्ञी मेरत लोकोंसे मित्रत्व करे

होवाले मंगलके देनेवाले वसंत

पृः

सं॰ र॰ बी॰ प्र॰ सा॰

४१

रितु है। लोस मय समूह सजनो को सुखदायक है। अथ सरग

म बनानविधी लिखते हैं॥ मध्यम मध्यग्रामी गंधार अती कोमल

मध्यग्रामी रिषभ मश्रुहूम ध्यग्रामी पंचम मम ध्यग्रामी पुनः मध्य

मम ध्यग्रामी पुनः गंधार अती कोमल मध्यग्रामी पुनः रिषभ मम

ध्यग्रामी पुनः खडज मध्यग्रामी निषाद श्रुहूमंद्र ग्रामी पुनः

खडज मध्यस्थाई पुनः रिषभ मम ध्यस्थाई पुनः गंधार अतीको

मल मध्यग्रामी पुनः मध्यम मम ध्यस्थाई पुनः पंचम मम ध्य

स्थाई॥ उलटस्थाई॥ मे मे गु ग रे रे प मे गा रे सा नि सा रे गु मे प॥
ऽ॰को॰ ऽ॰को॰ ऽ॰को॰

उतारा हर॥ अथ अंतरा खडज तार स्थाई निषाद कोमल मध्यस्थाई

पंचम मध्यस्थाई मध्यम मम ध्यस्थाई गंधार अती कोमल मध्य

स्थाई रिषभ मम ध्यस्थाई गंधार अती कोमल मध्यस्थाई खडज म

ध्यस्थाई निषाद श्रुहूमंद्र स्थाई खडज मध्यस्थाई रिषभ मध्य

स्थाई गंधार अती कोमल मध्यस्थाई मध्यम मम ध्यस्थाई पं

चम मध्यस्थाई॥ इत्यंतरा॥ सा नी प मे ग रे ग सा नि सा रे ग मे प
को श्रु ऽ॰को॰ ऽ॰को॰ श्रु ऽ॰को॰

ग्राम्यगततितार तार तित्रराग सिंधु॥ डिर म = १ आ ग ऽ कों = २ डिर रे = ३ आ प = ४ हा म = ५

आ ग ऽ कों = ६ डा रे = ७ हा सा = ८ डिर नि = १ आ सा = २ डिर रे = ३ आ ग ऽ कों = ४ हा म = ५ आ प = ६ ग प = ७

हा॥ ३ स्थायी डिर नि = १ आ नी कों = २ डिर प = ३ आ म = ४ हा ग ऽ कों = ५ आ रे = ६ आ ग ऽ कों = ७

हा प = ८ डिर नि = १ आ सा = २ डिर रे = ३ आ ग ऽ कों = ४ हा म = ५ आ प = ६ आ प = ७ हा प = ८॥

सा

३ स्थंतरा॥ आगे इसी परकार ग्रौर आवृती निवृती औकरनी हो
वे तो होसकती है ३ न्ही स्वरों मे तारस्थानमेकिरकरके बजावे
ती परकारसमपू
र्णतीरखाडव सिंधुरागगत वर्णनं॥ अथ दुतीपरकारसमपू
र्णतीरखाडव सिंधुरागगत वर्णनं॥ गततारतित्र३रागसिंधुसं
रणागतसातसुर कीलिखते हैं॥

डिर म = १ आ ग ऽ कों = २ डिर रे = ३ आ प = ४ हा म = ५ आ ग ऽ कों = ६ आ रे = ७ हा सा = ८ डिर नि = १

आ सा = २ डिर रे = ३ आ ग ऽ कों = ४ हा म = ५ आ प = ६ आ नी कों = ७ हा सा॥ ३ स्थायी॥

डिर सा = १ आ नी कों = २ डिर प = ३ आ प = ४ हा म = ५ आ ग ऽ कों = ६ आ रे = ७ हा सा = ८ डिर नि = १ आ सा = २ डिर रे = ३

पू:
सं. र. प्र. सा.
४२

ऽ कौ आ ह्रा आ आ ह्रा ड्रि आ ड्रि औ
ग म प प प म ग रे प
ह्रा आ आँ हूँ ड्रि आँ ड्रि आ ह्रा ग
म ग रे सा नि सा रे ग म प
ऽ.को म ऽ.को ग रे प
ह्रा ३ त्वं त रा ॥ ग्र प ग्र ता पा त रं ॥ ता नो न न री इ न
ग प ऽ.को
प प रे सा नि सा
मे गं

न त्वन नु न न री न ता नो मे न ना तो ॥ ३ ती ग्र ना प ग्र द रा गी ॥
ऽ कौ

इति श्री महाराजाधिराजा महाराजा नरणावीरसिंहजम्मूकाश्
मीराधीशाज्ञानुसार गोस्वामी जगन्नाथकृत संगीतरणावी
रप्रगाशसार नामग्रंथः सिंधुरागमालकोशरागनामजउ
तीवर्णनं नामाष्टमोध्यायः समाप्तः ॥८ श्रीराममरामराम ॥
श्रमं मम्मू यातस बँगगतं ॥ श्रीराममराममराममराम

त्र यु शोभण राग मालकौंश त्र तीय पुत्र वर्णनं॥ शोभण रागः॥

गं धारांश ग्रह न्यासं गं धारादिक मूर्छना॥ शोभण राग मालकौं

श पुत्र स्वनिसया मेन गानतूं॥१॥ दोहा गंधार अंश ग्रह और न्यास ग्रह को

मलकरके जान॥ शोभन पुत्र मालकौंश को गुणीजन करत

विधान॥१॥ पहले पहरे रात के रस सिंगार सो गाय॥ शोभन शोभ

न सब कहें गुनीजन मन चित्त लाय॥२॥ वार्तिक ये शोभन राग मा

लकौंश राग का तीसरा पुत्र सम्पूर्ण सात सुर का इसमें गंधार स्व

र कोमल भ धीत उतरा हुवा मध्यस्वर इं गंधार न्यास ग्रह है

ग्रह अंश न्यास का वस्तु है जिसका जिकर पीछे यंत्र पमें आचुका

है लगता है और रात को पहले पहर इसको गान करते हैं शृंग्र

र रस इस्का है गणपती इस्का देवता है॥ श्लोक॥ इडाराग का

राडा चैव सोराष्ट्री चमिश्रतः॥ रागे सा शोभनो भवती ठणी नांकच्य

ते इव॥१॥ दोहा॥ इजण सोरठ कौ राग मिले राक ही ठौर॥ शोभण राग

सुत कौंश को गुणि गा वो कर गौर॥१॥

43

खंभावती १ रुग्गो
हींडोलवेनी २ रुग्गो
ककुभ ३ रुग्गो
गौरीलगनी ३ रुग्गो
ओरवगौरी

गुणकमीराभनी भा रो

पंमारुनाना
सिंधव
होमव

अथरागरागिनीसूचिपत्रप्रारंभः भैरवराग भैरवी रामकली खटराग इनकल विभास देश-
कार साजगिरी भटेयाल भखार ललित पंचम हिंडोर वसन्त वहार अलैया सरपरदा
वेलावल देवगिरि रामगिरि ककुभ कनहडी लच्छाशाख भोगशाख देवशाख देशशाख
सूहा सूघराई गन्धारी देवगन्धार गान्धारी आसावरी योगीया आसा देसी योनपुरी लाचारी
टोडी गुजरी वराडी सारंग वृन्दावनी मधमाध वडहंस सावन्त मेवन्त लूम लूहर गोरसारङ्-
पाहाडी लंकदहन मेघमलार गोड हरखनी सूरमलार रामदासीमलार नाटमलार मू-
लतानी भीमपलासी प्रदीपकी आहारी दीपक प्रदीप धानी वरवा नटवेभराग हावडी वर्वल
मिश्राङ्ग, चोल सिन्दूरी मंगल सुभ्रांग पवश्री मालश्री जेतश्री पुरीयाधनाश्री लंकाश्री वंकाश्री
टंकाश्री मीयाकीधनाश्री सूधधनाश्री पुरवी पुरवा मारवा मालवा मालीगोरा आसागोरी
श्रीराग गोरी ललितागोरी गोधनी गोरी कलिंगगोरी चोतीगोरी ॥ इतिदिकिरण ॥
इमन इमनकल्यान कल्यान हेमराग खेमराग स्यामराग जेतराग हमीरवरातकी पुरीया कामोद
छायानट नट अडाना सहना नयकी कानहरा वागेश्वरी केदारालंकार लंकाराभरना लंका-
राभरना लंकावाअरना लंकारनाट लंकारविहाग विहागा विहागरा सोरठे देश सिंधुरा खंभाइच
परज कलिंगरा जेजेवन्ती नटनाटी जंगला पीलू काफी सिंधु सिंधुडा डाकडा जोगा चाचो ^

२ स्यामेरी स्यामरीसिन्धुरा सैधवी माधवी वंगली वराटी अवली आनन्दी सोरठ खंभावती गौंड़
गिरी सेनदी मधराग दूरवराग वेलावल विभाकर माहराग मेवाड़राग चंद्रकाम नन्दनराग वि
नोदराग मंगलराग पंचम चंद्रविंबआभास वन्तनराग कमलराग कुसम कल्लल कालिंगराग
चम्पक वहल देमाल गुणसागर विराग कल्यान सिन्धु जलधर मलकद्दा अमृतीरागनी आनंदी
सुभांग टोड़ीकावरी पुणपकी सरस्वती कुम्भारी चोराड़ी विचित्राराागिनी प्रभावती गुर्ज्री गंधारी
मध्यवी गावारामाधवी आची धीरटा मोहनीरागनी अलेपका पवियका तैलंगी कनहरी
सागरराग कुम्भ तिलक सोटना मोहनराग सोभराग भासराग कोलाहल तिलकचान्द
फूलकवेरावर विजयराग लाखकटोड़ीका रामराग कुमुद कोशिक गभीर जयनायन नटेनायण
देशासोरठ शामेरीसोठ श्रीविलास नीखादी पंचमी कोशिकी गभीर जयनायन नटेनायन
देशनोरठ शामेरीसोठ श्रीविलास नीखादी पंचमी कोशिकी मालकोश रंगाली श्रीलालिता
लोलरागणी सोरी सुमकरि समावती नाटि देवकरी भावि सुभगा कोमारी चन्दनि मालवी
प्रकाशीनि मपावति धैवति सिंदूरि आहिरी वसन्ती लीलावति प्रंगीका कक्केली अड़ाहोक
कनीट किन्नरी पिनाकि गौंड़गिरि तिलककामोद राजहंसि इन्द्राणि इन्द्रावती लीलासुखे
सुहवी कोंकानी सोमरी सामवन्ती देशपाहाड़िका देशवराड़ि कावेरी सावेरी कामरि